प्रकाशक.—
नाथूराम प्रेमी, मन्त्री—
माणिकचन्द्र जैन ग्रन्थमाला,
हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई।

सिर्फ भूमिका और अनुक्रमणिका आदिके मुद्रक—
मंगेश नरायण कुळकर्णी,
कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस,
३१८ ए, ठाकुद्वार, बम्बई।
और शेष सपूर्ण पुस्तकके मुद्रक—
ए० बोस, इंडियन प्रेस
लिमिटेड, बनारस केण्ट।

निवेदन

—:०:—

दिगम्बर जैन सम्प्रदायके शिलालेखों, ताम्रपत्रों, मूर्तिलेखों और ग्रन्थप्रशस्तियोंमें जैनधर्म और जैन समाजके इतिहासकी विपुल सामग्री विखरी हुई पड़ी है जिसको एकत्रित करनेकी वहुत है वड़ी आवश्यकता है। जब तक 'जैनहितैषी' निकलता रहा, तब तक मैं वरावर जैनसमाजके शुभचिन्तकोंका ध्यान इस ओर आकर्षित करता रहा हूँ। परन्तु अभी तक इस ओर कुछ भी प्रयत्न नहीं हुआ है और जो कुछ थोड़ासा इधर उधरसे हुआ भी है वह नहीं होनेके वरावर है।

वड़ी प्रसन्नताकी वात है कि वावू हीरालालजीकी कृपा और निस्वार्थ सेवासे आज मेरी एक वहुत पुरानी इच्छा सफल हो रही है और जैन शिलालेखसंग्रहका यह प्रथम भाग प्रकाशित हो रहा है। वावू हीरालालजी इतिहासके प्रेमी और परिश्रमशील विद्वान् हैं। उनके द्वारा मुझे वड़ी वड़ी आशायें हैं। वे संस्कृतके एम० ए० है। इलाहावाद यूनीवर्सिटीकी ओरसे उन्हें दो वर्ष तक रिसर्च स्कालर्शिप मिल चुकी है और इस समय अमरावतीके किंग एडवर्ड कालेजमें वे संस्कृतके प्रोफेसर हैं। कारंजाके जैनशास्त्रभण्डारोंका एक अन्वेषणात्मक विस्तृत सूचीपत्र सी० पी० गवर्नमेण्टकी ओरसे आपने ही तैयार किया था, जो मुद्रित हो चुका है। आपकी इच्छा है कि शिलालेखसंग्रहके और भी कई भाग प्रकाशित किये जायँ और उनके सम्पादनका भार भी आप ही लेना चाहते हैं। मुझे आशा है कि माणिकचन्द्र-ग्रन्थमालाकी प्रवन्धकारिणी कमेटी इस भागके समान आगेके भागोंको भी प्रकाशित करनेका श्रेय सम्पादन करेगी। अस्तव्यस्त और जीर्णशीर्ण अवस्थामें पड़े हुए जैन इतिहासके साधनोंको अच्छे रूपमें प्रकाशित करना वड़े ही पुण्यका कार्य है।

निवेदक—

नाथूराम प्रेमी

श्री मोदी बालचन्द्रजी

(लेखक के पिता)

समर्पण

पिताजी,

आपने अत्यन्त परिश्रम करके मुझे जो कुछ
विद्यादान व धार्मिक ज्ञान दिलाया है,
उसीके फलस्वरूप यह प्रथम
भेंट आपके करकमलोंमें
सादर समर्पित है।

आपका पुत्र,

हीरालाल

विषय-सूची

PREFACE

The inscriptions at Sravana Belgola were first collected and published by Mr. B. Lewis Rice, C.I.E., M.R.A.S., Director of Archaeological Researches in Mysore, as far back as 1889. A thoroughly revised and enlarged edition of the same was brought out by the late Director of Mysore Archaeological Researches, Práktana Vimarsha Vichakshana Rao Bahadur R. Narsinhachar, M A, M.R A.S. While the first edition contained only 144 inscriptions, Rao Bahadur Narsinhachar has brought to light hundreds of other inscriptions from the same locality and his edition contains no less than 500 of them The site may now be said to be more or less thoroughly explored.

These inscriptions have a peculiar interest for the historian in so far as all of them are associated in one way or another with the Jain Religion. Interest in historical researches has of late been awakened in almost all the important communities of India and it is a happy augury of the times that the Directors of the Manikachandra Digambara Jain Granthamala have decided to include in their distinguished series a set of volumes bringing together in a handy form, all the known inscriptions of the Digambara Jains, thus facilitating the work of the future Jain Historian. It was thought suitable and convenient to start this series with a volume of Sravana Belgola inscriptions and the work was entrusted to me

The present edition is based upon the above mentioned two editions. It has, thus, nothing new to offer to the scholar; but to the general reader, who is interested in Jain History but who for one reason or another can not go to the previous costly editions in Roman and Kanarese characters, this edition has a few advantages. The text of the inscriptions is here presented for the first time in Devanagari characters, the numbers of the inscriptions in the previous

two editions have been given and the verses have been numbered to facilitate reference, the substance of the inscriptions having portions of Kanarese in them has been given in Hindi; all the important information about Sravana Belgola and its surroundings, as contained in the previous two editions is given in the introduction and the historical importance of the inscriptions from the Jain point of view is more thoroughly discussed and the index of the names of Jain monks, poets and works has been separated from the general index.

My sincere thanks are due to the Mysore Government and its distinguished Directors of Archaeology, mentioned above, without whose previous labours this edition would have been impossible and to Pandit Nathuram Premi, the able Secretary of the Manikachandra Digambara Jaina Granthamala without whose initiative and encouragement the work would have never been undertaken.

AMRAOTI,
King Edward College,
March 21st 1928.

HIRALAL.

प्राथमिक वक्तव्य

श्रवण वेल्गोल के शिलालेख सबसे प्रथम मैसूर सरकार की कृपासे सन् १८८९ में प्रकाशित हुए थे। मैसूर पुरातत्त्वविभाग के तत्कालीन अधिकारी लूइस राइस साहब ने उस समय श्रवण वेल्गुल के १४४ लेखों का संग्रह प्रकाशित किया। इस संग्रह की भूमिका में राइस साहबने पहले पहल इन लेखों के साहित्य-सौन्दर्य व ऐतिहासिक-महत्व की ओर विद्वत्समाज का ध्यान आकर्षित किया व चन्द्रगुप्त और भद्रबाहु वाले प्रश्न का विस्तृत विवेचन कर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि चन्द्रगुप्त ने यथार्थत. भद्रबाहु मुनिसे दीक्षा ली थी व लेख नं० १ उन्हीं का स्मारक है। तबसे इस प्रश्न पर विद्वानों में बराबर वादविवाद होता आया है। उक्त संग्रह का दूसरा संस्करण अभी सन् १९२२ इस्वी में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह के रचयिता प्राक्तनविमर्ष-विचक्षण राव बहादुर आर० नरसिंहाचारजी हैं, जिन्होंने श्रवणबेल्गोल के सब लेखों की पुनः सूक्ष्मत. जाँच की व परिश्रमपूर्वक खोज करके अन्य सैकड़ो लेखों का पता लगाया। इस संस्करण में उन्होंने पाँच सौ लेखों का संग्रह किया है व एक विस्तृत व विशद भूमिका मे वहाँ के समस्त स्मारकों का वर्णन व लेखो के ऐतिहासिक महत्त्व का विवेचन किया है।

किन्तु ये संग्रह कनाड़ी व रोमन लिपिमें प्रकाशित किये जाने व बहु-मूल्य होनेके कारण बहुतसे इतिहासप्रेमियों को उनसे कुछ लाभ न हो सका और अधिकांश जैन लेखक इनका उपयोग न कर सके। वास्तवमें इन लेखोंका परिशीलन किये बिना आजकल जैन साहित्यिक, धार्मिक व राजनैतिक इतिहास के विषयमे कुछ लिखना एक प्रकारसे अनधिकार चेष्टा है, क्योंकि ये लेख प्रायः समस्त प्राचीन दिगम्बर जैनाचार्यों के कृत्यों के प्राचीनतम ऐतिहासिक प्रमाण हैं। इस प्रकार के समस्त उपलब्ध जैन लेख जब तक संग्रह रूपमें प्रकाशित न हो जाँयगे तबतक प्रामाणिक जैन इतिहास संतोषजनक रीति से नहीं लिखा जा सकता।

इसी आवश्यकता की भावना से प्रेरित होकर श्रीयुक्त पं० नाथूरामजी प्रेमी ने सन् १९२४ में उक्त लेखोंका देवनागरी संस्करण तैयार करने का मुझसे अनुरोध किया। प्रथमतः कार्य के भार का ध्यान करके मुझे इसे

स्वीकार करने का साहस न हुआ किन्तु अन्तमें लाचार होकर वह कार्य हाथ में लेना ही पड़ा। सन १९२५ में कार्य प्रारम्भ हुआ। आशा की गई थी कि कुछ मासमें ही कार्य समाप्त हो जावेगा। किन्तु कार्य बड़ा होने व मेरे अलाहाबाद से अमरावती आ जानेके कारण वह आशा पूर्ण न हो सकी। अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित हुईं और समय बहुत लग गया। किन्तु हर्षका विषय है कि अन्ततः कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो गया।

राइस साहब के संग्रह के १४४ लेखों की, श्रीयुक्त बाबू सूरजभानुजी वकील द्वारा कापी की हुई और पं० जुगलकिशोर जी मुख्तार द्वारा शुद्ध की हुई एक प्रेस कापी मुझे पं० नाथूरामजी द्वारा प्राप्त हुई। प्रथम यह विचार हुआ कि इन्हीं लेखों में नये संस्करण के कुछ चुने हुए लेख सम्मिलित कर प्रथम संग्रह प्रकाशित कर दिया जाय। किन्तु सूक्ष्म विचार करने पर यह उचित न जँचा। किसी न किसी दृष्टिसे सभी लेख आवश्यक जँचने लगे व लेखों का पाठ नये संस्करण के अनुसार रखना आवश्यक प्रतीत हुआ। प्रस्तुत संग्रह में बड़े परिश्रम से पाठ शुद्ध कर उसे सर्वप्रकार मूलक अनुसार ही रक्खा है। पञ्चमाक्षर भी मूलके अनुसार हैं यद्यपि इससे कहीं कहीं शब्दों के रूप अपरिचित से हो गये हैं। किन्तु छापे की कठिनाई के कारण कनाड़ी भाषा के कुछ वर्णों का भिन्न स्वरूप यहाँ नहीं दर्शाया जा सका। उदाहरणार्थ, *e, ē* को यहां 'ए', *o, ō* को 'ओ' *r, ṛ* को 'र' व *l, ḷ, ḻ* को 'ल' से ही सूचित किया है। प्रूफ-शोधन में यथाशक्ति कसर नहीं रक्खी गई किन्तु फिर भी कुछ छोटी मोटी अशुद्धियाँ आ ही गई हैं। उल्लेख के सुभीते के लिये लेखों की श्लोक संख्या दे दी गई है। यह बात पूर्व संस्करणों में नहीं है। जहाँ पर प्रथम और द्वितीय संस्करण के पाठोंमें कुछ विचारणीय भिन्नता ज्ञात हुई वहाँ दूसरा पाठ फुटनोटमें दे दिया गया है। बहुत अच्छा होता यदि लेखों का पूरा अनुवाद दिया जा सकता किन्तु इससे ग्रंथका आकार बहुत बढ़ जाता। अतएव जिन लेखों में थोड़ी भी कनाड़ी आई है उनका हिन्दी भावार्थ देकर ही संतोष करना पड़ा है। प्रथम १४४ लेख राइस साहब के क्रमानुसार रखकर पश्चात् का क्रम स्वतन्त्रतासे चालू रक्खा गया है। कोष्टक में नये संस्करण के नम्बर दे दिये गये हैं जिससे आवश्यकता होने पर पहले व दूसरे संस्करण से प्रसंगोपयोगी

लेख का सुगमता से मिलान किया जा सकता है। नये संस्करण के पाँच लेख यहाँ दो ही लेखों (७५, ७६)में आ गये हैं व लेख नं० ३९४ और ४०१-४०६ विशेषोपयोगी न होने के कारण छोड़ दिये गये हैं। इस प्रकार दस लेखों की जो बचत हुई उनके स्थान में एपीग्राफिआ कर्नाटिका भाग ५ में से चुनकर दस लेख सम्मिलित कर दिये गये हैं।

भूमिका का वर्णनात्मक भाग सर्वथा रा० ब० नरसिंहाचार के वर्णन के आधार पर ही लिखा गया है किन्तु ऐतिहासिक व आचार्यों के सम्बन्ध का विवेचन बहुत कुछ स्वतंत्रता से किया गया है। गोम्मटेश्वर मूर्ति की स्थापना का समय निर्णय व शिलालेख नं १ का विवेचन नरसिंहाचारजी के मतसे कुछ भिन्न हुआ है।

अन्त में हम मैसूर सरकार व उनके पुरातत्त्व विभाग के सुयोग्य अधिकारी भूतपूर्व राइस साहब व रा० ब० नरसिंहाचार के बहुत कृतज्ञ हैं। बिना उनकी अपूर्व खोजों और अनुपम प्रयास के जैन इतिहास पर यह भारी प्रकाश पड़ना व इस पुस्तक का प्रकाशित होना दुःसाध्य था। हम माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमाला के मन्त्री पं० नाथूरामजी प्रेमी के विशेष रूपसे उपकृत हैं। आपके सस्नेह प्रेरण व अपार उत्साह के बिना हमसे यह कार्य होना अशक्य था। आपने असाधारण विलम्ब होने पर भी धैर्य रक्खा जिससे ग्रंथ सुचारुरूपसे सम्पादित हो सका। पुस्तक के—विशेषतः कनाड़ी अंशों के—कम्पोजिंग व प्रूफ शोधन में प्रेसवालों को भारी कठिनाई और विलम्ब का साम्हना करना पड़ा है किन्तु उन्होंने योग्यतापूर्वक इस कार्य को निबाहा। इस हेतु इंडियन प्रेस, अलाहाबाद के मैनेजर हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका की अपूर्णताओं और त्रुटियों का ध्यान जितना स्वयं मुझे है उतना कदाचित् हमारे उदार हृदय पाठकों को न होगा; किन्तु विषयकी ओर विद्वानों का लक्ष्य दिलाने के हेतु इन त्रुटियों में पड़ना भी आवश्यक था। यदि इस पुस्तक से जैन ऐतिहासिक प्रश्नों के हल करने में कुछ भी सहायता पहुँची तो मैं अपने को कृतार्थ समझूँगा। यदि पाठकों ने चाहा और भविष्य अनुकूल रहा तो दक्षिण भारत के जैन लेखोंका दूसरा संग्रह भी शीघ्र ही पाठकों की भेंट किया जायगा।

किंग एडवर्ड कालेज, अमरावती,
फाल्गुन शुक्ला ७, सं० १९८४. } हीरालाल

शुद्धिपत्र

(भूमिका)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	५	वेल्गोल	वेल्गोल
७९	७	सल्लखना	सल्लेखना
९८	१	१६२४	१२४
१००	१	माघनन्दि आचार्यों	माघनन्दि आदि आचार्यों
१०६	१–२	जगदेव के	जगदेव नामक
११२	८	भटत	भरत
१२८	१३	वीरद्द	वीर
१२८	९	पदावली	पट्टावली
१३९	१०	दयालपाल	दयापाल
१५२	१५	पुष्पनान्द	पुष्पनन्दि

(लेख)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१	४	चौड़	चालुक्य
४८	१०	विष्णुवर्द्धनद्वारा	विष्णुवर्द्धनके मंत्री गंगराज [द्वारा
४९	१८	विष्णुवर्द्धन नरेश	गगराज मन्त्री
५५	२	पर्यो	पक्तियों
१४७	१३	एरड्डु कट्टे वस्ति	एरडुकट्टे वस्तिमें
१५७	१४	श्रा चामुण्डराज	श्रीचामुण्डराजं
१७५	११	रामचल्ल नृप	राचमल्ल नृप
१९४	१८	कुलो.. ङ्ग	कुलोत्तुङ्ग
२०७	१३	पण्डिताय्य.	पण्डिताय्यं.
२९२	२	नं. (३५४)	न. ४२४ (३५४)
३१६	अन्तिम	१८९	१९८
३१६	१२	१९७	१९९
३१९	१३	२१९ (१२५)	२१९ (११५)
३२७	१४	२५५ (४१३)	२५५ (४१४)
३७३	६	विजयराज्यय्य	विजयराजय्य
३७७	२	४७७ (३८६)	४७६ (३८६)
३८५	१	१० वीं पक्तिके पश्चात् लेखाक ४९१ छूट गया है।	

भूमिकामें प्रयुक्त संकेताक्षर

इ. ए.=इंडियन एन्टीक्वेरी।

ए. इ.=एपीग्राफिआ इंडिका।

ए. क.=एपीग्राफिआ कर्नाटिका।

मै. आ. रि.=मैसूर आर्किलाजीकल रिपोर्ट।

सा. इ. इ.=साउथ इंडियन इन्स्क्रिपशन्स।
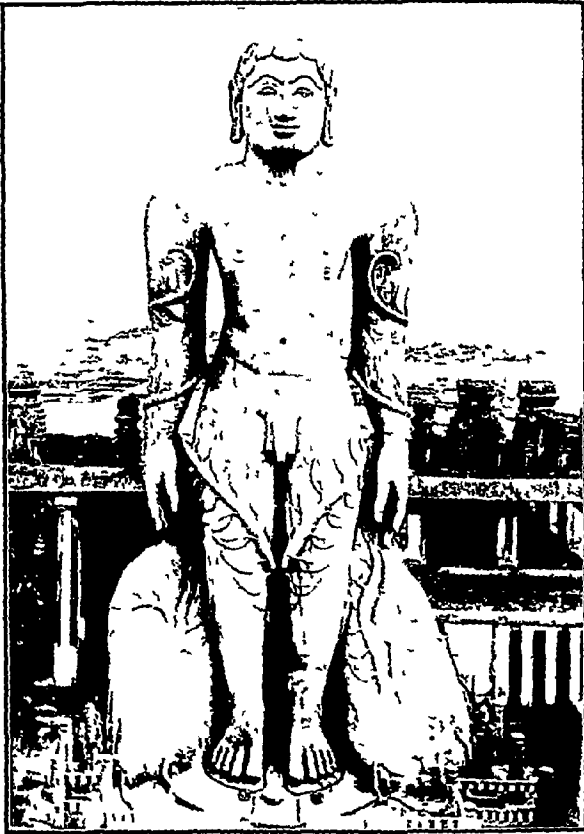
श्री गोम्मटेश (बाहूबलि)

(श्रवणबेलगोलकी मुख्य मूर्ति)

“जैनविजय” प्रेस-सूरत।

श्रवणबेल्गोल के स्मारक

समस्त दक्षिण भारत में ऐसे बहुत ही कम स्थान होंगे जो प्राकृतिक सौन्दर्य में, प्राचीन कारीगरी के नमूनों में व धार्मिक और ऐतिहासिक स्मृतियों मे 'श्रवणबेल्गुल' की बराबरी कर सकें। आर्य जाति और विशेषतः जैन जाति की लगभग अढ़ाई हज़ार वर्ष की सभ्यता का इतिहास यहाँ के विशाल और रमणीक मन्दिरों, अत्यन्त प्राचीन गुफाओं, अनुपम उत्कृष्ट मूर्त्तियों व सैकड़ों शिलालेखों में अङ्कित पाया जाता है। यहाँ की भूमि अनेक मुनि-महात्माओं की तपस्या से पवित्र, अनेक धर्म-निष्ठ यात्रियों की भक्ति से पूजित और अनेक नरेशों और सम्राटों के दान से अलंकृत और इतिहास में प्रसिद्ध हुई है।

यहाँ की धार्मिकता इस स्थान के नाम में ही गर्भित है। 'श्रवण' (श्रमण) नाम जैन मुनि का है और 'बेल्गुल' कनाड़ा भाषा के 'बेल' और 'गुल' दो शब्दों से बना है। 'बेल' का अर्थ धवल व श्वेत होता है और 'गुल' (गोल) 'कोल' का अपभ्रंश है जिसका अर्थ सरोवर है। इस प्रकार श्रवणबेल्गुल का अर्थ जैन मुनियों का धवल-सरोवर होता है। इसका तात्पर्य संभवतः उस रमणीक सरोवर से है जो ग्राम के बीचोंबीच अब भी इस स्थान की शोभा बढ़ा रहा है। सात-आठ सौ

वर्ष पुराने कुछ लेखो में भी इस स्थान का नाम श्वेत सरोवर, धवलसर: व धवलसरोवर पाये जाते हैं* ।

'बेलगोल' नाम लगभग सातवीं शताब्दि के एक लेख मे आता है,† और लगभग आठवीं शताब्दि के एक दूसरे लेख मे इसका नाम 'बेलगोल' पाया जाता है‡ । इनसे पीछे के अनेक लेखों में बेलगुल, बेल्गुल और बेलुगुल नाम पाये जाते हैं । एक लेख मे 'देवर बेलगोल' नाम भी पाया जाता है§ जिसका अर्थ होता है देव का (जिनदेव का) बेलगोल । श्रवणबेलगोल के आसपास दो और बेलगोल नाम के स्थान हैं जो हले-बेलगोल और कोडि-बेलगोल कहलाते हैं । गोम्मटेश्वर की विशाल मूर्त्ति के कारण इसका नाम गोम्मटपुर भी है+ । कुछ अर्वाचीन लेखों मे दक्षिण काशी नाम से भी इस तीर्थ-स्थान का उल्लेख हुआ है × ।

श्रवणबेलगोल ग्राम मैसूर प्रान्त में हासन ज़िले के चेन्नरायपाटन तालुके में दो सुन्दर पहाड़ियों के बीच बसा हुआ है । इनमे से बड़ी पहाड़ी (दोड्डबेट्ट) जो ग्राम से दक्षिण की ओर है 'विन्ध्यगिरि' कहलाती है । इसी पहाड़ी पर गोम्मटेश्वर की वह विशाल मूर्त्ति स्थापित है जो कोसों की दूरी से यात्रियों की दृष्टि इस पवित्र स्थान की ओर आकर्षित करती है । इसके

* देखो लेख नं० ५४ और १०८. † देखो लेख न० १७-१८
‡ देखो लेख न० ३४ § देखो लेख न० १४०
+ देखो लेख नं० १२८, १३७ × देखो लेख न० ३५५, ४८१.

अतिरिक्त कुछ वस्तियाँ (जिन-मन्दिर) भी इस पहाड़ी पर हैं। दूसरी छोटी पहाडी (चिक्क बेट्ट), जो ग्राम से उत्तर की ओर है, चन्द्रगिरि के नाम से प्रख्यात है। अधिकांश और प्राचीनतम लेख और वस्तियाँ इसी पहाड़ी पर हैं। कुछ मन्दिर, लेख आदि ग्राम की सीमा के भीतर हैं और शेष श्रवणबेल्गोल के आस-पास के ग्रामों मे हैं। अतः यहाँ के समस्त प्राचीन स्मारकों का वर्णन इन चार शीर्षकों मे करना ठीक होगा—(१) चन्द्रगिरि, (२) विन्ध्यगिरि, (३) श्रवण बेल्गोल (खास) और (४) आस-पास के ग्राम। लेख नं० ३५४ के अनुसार श्रवणबेल्गोल के समस्त मन्दिरो की संख्या ३२ है अर्थात् आठ विन्ध्यगिरि पर, सोलह चन्द्रगिरि पर और आठ ग्राम में। पर लेख में इन वस्तियों के नाम नहीं दिये गये।

चन्द्रगिरि

चन्द्रगिरि पर्वत समुद्र-तल से ३,०५२ फुट की ऊँचाई पर है। प्राचीनतम लेखों मे इस पर्वत का नाम कटवप्र* (संस्कृत) व कल्वप्पु या कल्वप्पु† (कनाड़ी) पाया जाता है। तीर्थ-गिरि और ऋषि-गिरि नाम से भी यह पहाड़ी प्रसिद्ध रही है‡। इरुवेब्रह्मदेव मन्दिर को छोड़ इस पर्वत पर के शेष सब

* देखो लेख न० १, २७, २८, २६, ३३, १९२, १९६, १८६

† देखो लेख न० ३४, ३५, १६०, १६१

‡ देखो लेख न० ३४, ३५.

जिनालय एक दीवाल के घेरे के भीतर प्रतिष्ठित हैं। इस घेरे की उत्कृष्ट लम्बाई ५०० फुट और चौड़ाई २२५ फुट है। सब मन्दिर द्राविड़ी ढङ्ग के बने हुए हैं। इनमे से सबसे प्राचीन मन्दिर ईसा की आठवीं शताब्दि का प्रतीत होता है। घेरे के भीतर के मन्दिरों की संख्या १३ है। सभी मन्दिरों का ढङ्ग प्रायः एक सा ही है। सभी में साधारणतः एक **गर्भगृह**, एक **सुखनासि** खुला या घिरा हुआ, और एक **नवरङ्ग** रहता है। नीचे इस पहाड़ी के सब मन्दिरों व अन्य प्राचीन स्मारकों का सूक्ष्म वर्णन दिया जाता है:—

१ **पार्श्वनाथ बस्ति**—इस सुन्दर और विशाल मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई ५६ × २९ फुट है। दरवाजे भारी हैं। नवरङ्ग और सामने के दरवाज़े के दोनों ओर बरामदे बने हुए हैं। बाहरी दीवाले स्तम्भों और छोटी-छोटी गुम्मटों से सजी हुई हैं। सप्तफणी नाग की छाया के नीचे भगवान् पार्श्वनाथ की १५ फुट ऊँची मनोज्ञ मूर्त्ति है। इस पर्वत पर यही मूर्त्ति सबसे विशाल है। सामने बृहत् और सुन्दर **मानस्तम्भ** खड़ा हुआ है जिसके चारों मुखों पर यक्ष-यक्षिणिओं की मूर्त्तियाँ खुदी हैं। कहा नहीं जा सकता कि इस मन्दिर के निर्माण का ठीक समय क्या है। नवरङ्ग में एक बड़ा भारी लेख खुदा हुआ है (लेख नं० ५४) जिसमें शक सं० १०५० मे मल्लिषेण-मलधारि देव के समाधि-मरण का संवाद है। पर मन्दिर के निर्माण के विषय की कोई वार्त्ता

लेख में नहीं पाई जाती। यहाँ के मानस्तम्भ के विषय में अनन्त कवि-कृत कनाड़ी भाषा के '**बेल्गोलद गोम्मटेश्वर-चरित**' नामक काव्य में कहा गया है कि उक्त मानस्तम्भ मैसूर के चिक्क देव-राज ओडेयर नामक राजा (१६७२-१७०४ ईस्वी) के समय में पुट्टैय नामक एक सेठ-द्वारा निर्माण कराया गया था। इसी काव्य के अनुसार मन्दिर की वाहरी दीवाल भी इसी सेठ ने बनवाई थी। यह काव्य लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुराना है।

२ कत्तले वस्ति—चन्द्रगिरि पर्वत पर यह मन्दिर सबसे भारी है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई १२४×४० फुट है। गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणा है। नवरङ्ग से सटा हुआ एक मुखमण्डप (सभा-भवन) भी है और एक वाहरी बरामदा भी। सामने के दरवाजे के अतिरिक्त इस सारे विशाल भवन में और कोई खिड़कियाँ व दरवाजे नहीं हैं। वाहरी ऊँची दीवाल के कारण उस एक सामने के दरवाजे से भी पूरा-पूरा प्रकाश नहीं जाने पाता। इसी से इस मन्दिर का नाम कत्तले वस्ति (अन्धकार का मन्दिर) पड़ा है। बरामदे में पद्मावती देवी की मूर्त्ति है। जान पड़ता है, इसी से इस मन्दिर का नाम पद्मावतीवस्ति भी पड़ गया है। मन्दिर पर कोई शिखर नहीं है, पर मठ में इस मन्दिर का जो मान-चित्र है उसमें शिखर दिखाया गया है। इससे जान पड़ता है कि किसी समय यह मन्दिर शिखर-बद्ध रहा है।

मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान् की छः फुट ऊँची पद्मासन मूर्त्ति बड़ी ही हृदय-ग्राही है। दोनो बाजुओ पर दो चौरी-वाहक खड़े हैं। मन्दिर के ऊपर दूसरा खण्ड भी है पर वह जीर्ण अवस्था में होने के कारण बन्द कर दिया गया है। सभा-भवन के बाहरी ईशान कोण पर से ऊपर को सीढ़ियाँ गई हैं। कहा जाता है कि महोत्सव के समय ऊपर प्रतिष्ठित स्त्रियों के बैठने का प्रबन्ध रहता था। आदीश्वर भगवान् के सिंहासन पर जो लेख है (नं० ६४) उससे ज्ञात होता है कि इस बस्ति को होयसल-नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति गङ्ग-राज ने अपनी मातृश्री पोचव्वे के हेतु निर्माण कराया था। इससे इसका निर्माण-काल सन् १११८ के लगभग सिद्ध होता है। सभा-भवन पीछे निर्मापित हुआ जान पड़ता है। इसका जीर्णोद्धार लगभग ७० वर्ष हुए मैसूरराजकुल की दो महि-लाओं—देवीरम्मणि और केम्पम्मणि—द्वारा हुआ है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस पर्वत पर केवल यही एक मन्दिर है जिसके गर्भगृह के चारो ओर प्रदक्षिणा भी है।

३ चन्द्रगुप्त बस्ति—यह चंद्रगिरि पर्वत पर सबसे छोटा जिनालय है, जिसकी लम्बाई-चौडाई केवल २२ × १६ फुट है। इसमे लगातार तीन कोठे हैं और सामने बरामदा है। बीच के कोठे में पार्श्वनाथ भगवान् की मूर्त्ति है और दायें-बायें वाले कोठों मे क्रमशः पद्मावती और कुष्माण्डिनी देवी की मूर्त्तियाँ हैं। बरामदे के दाहने छोर पर धरणेन्द्रयक्ष और

बायें छोर पर सर्वाह्णयक्ष की मूर्त्तियाँ हैं। सभी मूर्त्तियाँ पद्मासन हैं। बरामदे के सम्मुख जो बहुत ही सुन्दर प्रतोली (दरवाजा) है वह पीछे निर्मापित हुआ है। इसकी कारीगरी देखने योग्य है। घेरे के पत्थरों पर जाली का काम, जिस पर श्रुतकेवलि भद्रबाहु और मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त के कुछ जीवन-दृश्य खुदे हुए हैं, अपूर्व कौशल का नमूना है। इसी जाली पर एक जगह **'दासोजः'** ऐसा लेख है जो इस प्रतोली के बनानेवाले कारीगर का नाम प्रतीत होता है। इसी नाम के एक व्यक्ति ने लेख नं० ५० उत्कीर्ण किया है। यह लेख शक सं० १०६८ का है। यदि ये दोनों व्यक्ति एक ही हों तो यह प्रतोली शक सं० १०६८ के लगभग की बनी सिद्ध होती है। उपर्युक्त लेख की लिपि भी इसी समय की ज्ञात होती है। मन्दिर के दोनों बाजुओं के कोठों पर छोटे खुदावदार शिखर भी हैं। मध्य के कोठे के सम्मुख सभा-भवन में क्षेत्रपाल की स्थापना है जिनके सिंहासन पर कुछ लेख भी है। इस मन्दिर का नाम चन्द्रगुप्त-बस्ति पड़ने का कारण यह बतलाया जाता है कि इसे स्वयं महाराज चन्द्रगुप्त मौर्य ने निर्माण कराया था। इसमें सन्देह नहीं कि इस मन्दिर की इमारत इस पर्वत के प्राचीनतम स्मारकों में से है।

४ शान्तिनाथ बस्ति—यह छोटा सा जिनालय २४ × १६ फुट लम्बा-चौड़ा है। इसकी दीवालों और छत पर अभी तक चित्रकारी के निशान हैं। शान्तिनाथ

स्वामी की मूर्त्ति खड्गासन ११ फुट ऊँची है। मन्दिर के बनने का समय ज्ञात नहीं।

५ **सुपार्श्वनाथ बस्ति**—इस मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई २५ × १४ फुट है। सुपार्श्वनाथ स्वामी की पद्मासन मूर्त्ति तीन फुट ऊँची है, जिसके ऊपर सप्तफणी नाग की छाया हो रही है। मन्दिर के बनने के विषय की कोई वार्त्ता विदित नहीं है।

६ **चन्द्रप्रभ बस्ति**—इस मन्दिर का क्षेत्रफल ४२ × २५ फुट है। चन्द्रप्रभस्वामी की पद्मासन मूर्त्ति तीन फुट ऊँची है। सुखनासि में उक्त तीर्थंकर के यक्ष और यक्षिणी श्याम और ज्वालामालिनि विराजमान हैं। मन्दिर के सामने एक चट्टान पर **'सिवमारन बसदि'** (२५६) ऐसा लेख है। इस लेख की लिपि से ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः उसमे गङ्गनरेश शिवमार द्वितीय, श्रीपुरुष के पुत्र, का उल्लेख है। शिवमार के द्वारा जिस 'बसदि' (बस्ति) के बनने का लेख में उल्लेख है, सम्भव है वह यही चन्द्रप्रभ-बस्ति हो; क्योंकि इसके निकट अन्य और कोई बस्ति नहीं है। यदि यह अनुमान ठीक हो तो यह बस्ति सन् ८०० ईस्वी के लगभग की सिद्ध होती है।

७ **चामुण्डराय बस्ति**—यह विशाल भवन बनावट और सजावट में इस पर्वत पर सबसे सुन्दर है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई ६८ × ३६ फुट है। ऊपर दूसरा खण्ड और

एक सुन्दर गुम्मट भी है। इसमे नेमिनाथ स्वामी की पाँच फुट ऊँची मनोहर प्रतिमा है। गर्भगृह के दरवाजे पर दोनों बाजुओं पर क्रमशः यक्ष सर्वाह्न और यक्षिणी कुष्माण्डिनी की मूर्त्तियाँ हैं। बाहरी दीवाले स्तम्भों, आलों और उत्कीर्ण या उचेली हुई प्रतिमाओं से अलंकृत हैं। बाहरी दरवाजे की दोनों बाजुओं पर नीचे की ओर 'श्रीचामुण्डराजं माडिसिदं' (२२३) ऐसा लेख है। इससे स्पष्ट है कि यह वस्ति स्वयं गङ्गनरेश राचमल के मन्त्री चामुण्डराज ने निर्माण कराई थी और उसका समय ९८२ ईस्वी के लगभग होना चाहिये। पर नेमिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है (६६) कि गङ्गराज सेनापति के पुत्र 'एचण' ने त्रैलोक्यरञ्जन मन्दिर अपरनाम बोप्पणचैत्यालय निर्माण कराया था। यह लेख सन् ११३८ के लगभग का अनुमान किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि एचण का निर्माण कराया हुआ चैत्यालय कोई अन्य रहा होगा जो अब ध्वंस हो गया है और यह नेमिनाथ स्वामी की प्रतिमा वहीं से लाकर इस वस्ति में विराजमान करा दी गई है। मन्दिर के ऊपर के खण्ड में एक पार्श्वनाथ भगवान् की तीन फुट ऊँची मूर्त्ति है। उनके सिंहासन पर लेख है (नं० ६७) कि चामुण्डराज मन्त्री के पुत्र जिनदेव ने वेलगोल मे एक जिन-भवन निर्माण कराया। अनुमान किया जाता है कि इस लेख का तात्पर्य मन्दिर के इसी ऊपरी भाग से है जो नीचे के खण्ड से कुछ पीछे बना होगा।

८ शासन बस्ति—मन्दिर के दरवाजे पर जो लेख शासन नं० ५९) है, जान पडता है, उसी से इसका नाम शासनवस्ति पड़ा है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई ५५ × २६ फुट है। गर्भगृह में आदिनाथ भगवान् की पाँच फुट ऊँची मूर्त्ति है जिसके दोनों ओर चौरी-वाहक खड़े हुए हैं। सुखनासि में यक्ष यक्षिणी गोमुख और चक्रेश्वरी की प्रतिमाएँ हैं। बाहरी दीवालों मे स्तम्भो और आलों की सजावट है। बीच-बीच मे प्रतिमाएँ भी उत्कीर्ण हैं। आदिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है (नं० ६५) कि इस मन्दिर को गङ्गराज सेनापति ने "इन्दिराकुलगृह" नाम से निर्माण कराया। दर-वाजे पर के लेख में समाचार है कि शक सं० १०३९ फाल्गुण सुदि ५ को गङ्गराज ने 'परम' नाम के ग्राम का दान दिया। यह ग्राम उन्हे विष्णुवर्द्धन नरेश सें मिला था। इसी समय से कुछ पूर्व मन्दिर बना होगा।

९ मज्जिगण्णबस्ति—इसकी लम्बाई-चौड़ाई ३२ × १९ फुट है। इसमे अनन्तनाथ स्वामी की साढे तीन फुट ऊँची प्रतिमा है। बाहरी दीवाल के आसपास फूलदार चित्रकारी के पत्थरो का घेरा है। मन्दिर के नाम से अनुमान होता है कि उसे किसी मज्जिगण्ण नाम के व्यक्ति ने निर्माण कराया होगा। पर समय निश्चित किये जाने के कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं।

१० एरडुकट्टेबस्ति—इस मन्दिर का नाम उसके दायी ओर बायीं बाजू पर की सीढ़ियों पर से पड़ा है। इसकी

लम्बाई-चौडाई ५५×२६ फुट है। आदिनाथ स्वामी की मूर्त्ति पाँच फुट ऊँची है और प्रभावली से अलंकृत है। दोनों ओर चौरी-वाहक खड़े हैं। गर्भगृह के बाहर सुखनासि में यक्ष और यक्षिणी की मूर्त्तियां हैं। आदिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है (नं० ६३) कि इस मन्दिर को गङ्ग-राज सेनापति की भार्या लक्ष्मी ने निर्माण कराया था।—

११ सवतिगन्धवारणबस्ति—होय्सलनरेश विष्णुवर्द्धन की रानी का नाम शान्तल देवी और उपनाम 'सवति-गन्धवारण' (सौतों के लिए मत्त हाथी) था। इसी पर से इस मन्दिर का यह नाम पड़ा है। साधारणतः इसे गन्ध-वारण-बस्ति कहते हैं। मन्दिर विशाल है जिसकी लम्बाई-चौडाई ६९×३५ फुट है। शान्तिनाथ स्वामी की मूर्त्ति प्रभावली-संयुक्त पांच फुट ऊँची है। दोनों ओर दो चौरी-वाहक खड़े हैं। सुखनासि में यक्ष यक्षिणी किम्पुरुष और महामानसि की मूर्त्तियां हैं। गर्भगृह के ऊपर एक अच्छी गुम्मट है। बाहरी दीवालें स्तम्भों से अलङ्कृत हैं। दरवाजे पर के लेख (नं० ५६) और शान्तिनाथ स्वामी के सिंहासन पर के लेख (नं० ६२) से विदित होता है कि इस बस्ति को विष्णुवर्द्धन नरेश की रानी शान्तल देवी ने शक सं० १०४५ में निर्माण कराया था।

१२ तेरिनबस्ति—इस मन्दिर के सम्मुख एक रथ (तेरु) के आकार की इमारत बनी हुई है। इसी से इसका

नाम तेरिनबस्ति पड़ा है। इसमे बाहुबलि स्वामी की मूर्त्ति है। इसी से इसे बाहुबलि बस्ति भी कहते हैं। इसकी लम्बाई चौड़ाई ७० × २६ फुट है। बाहुबलि स्वामी की मूर्त्ति पाँच फुट ऊँची है। सन्मुख के रथाकार मन्दिर पर चारों ओर बावन जिन-मूर्त्तियाँ खुदी हुई हैं। मन्दिर दो प्रकार के होते हैं नन्दीश्वर और मेरु। उक्त रथाकार मन्दिर नन्दीश्वर प्रकार का कहा जाता है। इस पर के लेख (नं० १३७ शक सं० १०३८) से विदित होता है कि इस मन्दिर और बस्ति को विष्णुवर्द्धन नरेश के समय के पोय्सल सेठ की माता माचिकब्बे और नेमि सेठ की माता शान्तिकब्बे ने निर्माण कराया था।

१३ शान्तीश्वर बस्ति—इसकी लम्बाई-चौड़ाई ५६ × ३० फुट है। यह मन्दिर ऊँची सतह पर बना हुआ है। इसकी गुम्मट पर अच्छी कारीगरी है। गर्भगृह के बाहर सुखनासि में यक्ष-यक्षिणी की मूर्त्तियाँ हैं। पीछे की दीवाल के मध्य-भाग में एक आला है जिसमें एक खड्गासन जिन-मूर्त्ति खुदी हुई है। इस मन्दिर को कब और किसने निर्माण कराया, यह निश्चय नहीं हो सका है।

१४ कूगेब्रह्मदेवस्तम्भ—यह विशाल स्तम्भ चन्द्रगिरि पर्वत पर के घेरे के दक्षिणी दरवाजे पर प्रतिष्ठित है। इसके शिखर पर पूर्वमुखी ब्रह्मदेव की छोटी सी पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। इसकी पीठिका आठों दिशाओं में आठ हस्तियों पर प्रतिष्ठित रही है पर अब केवल थोड़े से ही हाथी

रह गये हैं। स्तम्भ के चारों ओर एक लेख है (नं० ३८) (५९) जो गङ्गनरेश मारसिंह द्वितीय की मृत्यु का स्मारक है। इस राजा की मृत्यु सन् ९७४ ईस्वी में हुई थी। अतः यह स्तम्भ इससे पहले का सिद्ध होता है।

१५ महानवमी मण्डप—कत्तले वस्ति के गर्भगृह के दक्षिण की ओर दो सुन्दर पूर्व-मुख चतुस्तम्भ मण्डप बने हुए हैं। दोनों के मध्य में एक एक लेखयुक्त स्तम्भ है। उत्तर की ओर के मण्डप के स्तम्भ की बनावट बहुत सुन्दर है। उसका गुम्मटाकार शिखर बहुत ही दर्शनीय है। उस पर के लेख नं० ४२ (६६) में **नयकीर्त्ति** आचार्य के समाधि-मरण का संवाद है जो सन् ११७६ में हुआ। यह स्तम्भ उनके एक श्रावक शिष्य नागदेव मन्त्री ने स्थापित कराया था। ऐसे ही अन्य अनेक मण्डप इस पर्वत पर विद्यमान हैं जिनमे लेख-युक्त स्तम्भ प्रतिष्ठित हैं। एक चामुण्डराय वस्ति के दक्षिण की ओर, एक एरडुकट्टे वस्ति से पूर्व की ओर और दो तेरिन वस्ति से दक्षिण की ओर पाये जाते हैं।

१६ भरतेश्वर—महानवमी मण्डप से पश्चिम की ओर एक इमारत है जो अब रसोईघर के काम में आती है। इस इमारत के समीप एक नव फुट ऊँची पश्चिममुख मूर्त्ति है जो बाहुबलि के भ्राता भरतेश्वर की बतलाई जाती है। मूर्त्ति एक भारी चट्टान मे घुटनों तक खोदी जाकर अपूर्ण छोड़ दी गई है। इस मूर्त्ति से थोड़ी दूर पर जो शिलालेख नं० २५ (६१) है

उससे अनुमान होता है कि वह किसी अरिट्टोनेमि नाम के कारीगर की बनाई हुई है। पर यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता क्योंकि लेख का जितना भाग पढ़ा जाता है उससे केवल इतना ही अर्थ निकलता कि 'गुरु अरिट्टोनेमि' ने बनवाया। पर क्या बनवाया यह कुछ स्पष्ट नहीं है। अरि-ट्टोनेमि अरिष्टनेमि का अपभ्रंश है। लेख ईसा की नवमी शताब्दि का अनुमान किया जाता है।

१७ इरुवे ब्रह्मदेव मन्दिर—जैसा कि ऊपर कह आये हैं, केवल यही एक मन्दिर इस पहाड़ी पर ऐसा है जो घेरे के बाहर है। यह घेरे के उत्तर-दरवाजे के उत्तर मे प्रतिष्ठित है। यहाँ ब्रह्मदेव की मूर्त्ति विराजमान है। सम्मुख एक वृहत् चट्टान है जिस पर जिन-प्रतिमाएँ, हाथी, स्तम्भ आदि खुदे हुए हैं। कहीं-कहीं खोदनेवालो के नाम भी दिये हुए हैं। मन्दिर के दरवाजे पर जो लेख (नं० २३५) है उसकी लिपि से वह दसवीं शताब्दि के मध्य-भाग का अनुमान किया जाता है।

१८ कञ्चिन दोणे—इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर से वायव्य की ओर एक चौकोर घेरे के भीतर चट्टान मे एक कुण्ड है। यही कञ्चिन दोणे कहलाता है। 'दोणे' का अर्थ एक प्राकृतिक कुण्ड होता है और 'कञ्चिन' का एक धातु जिससे घण्टा आदि बनते हैं। कहा नहीं जा सकता कि इस कुण्ड का यह नाम क्यों पड़ा। यहाँ कई छोटे-छोटे लेख हैं। एक लेख है '**मुरुकल्लंकदम्ब तरसि**' (२८२) अर्थात् कदम्ब की आज्ञा

से तीन शिलाएँ यहा लाई गई। इनमे की दो शिलाएँ अब भी यहाँ विद्यमान हैं और तीसरी शिला टूट-फूट गई है। कुण्ड के भीतर एक स्तम्भ है जिस पर यह लेख है—'**मानभ आनन्द-सवच्छरद्लि कट्टिसिद दोणेयु**' (२४४) अर्थात् इस कुण्ड को **मानभ** ने आनन्द-संवत्सर में बनवाया था। यह संवत् सम्भवतः शक सं० ११६६ होगा।

१९ लक्किदोणे—यह दूसरा कुण्ड घेरे से पूर्व की ओर है। सम्भवत: यह किसी लक्कि नाम की स्त्री-द्वारा निर्माण कराये जाने के कारण लक्किदोणे नाम से प्रसिद्ध हुआ है। कुण्ड से पश्चिम की ओर एक चट्टान है जिस पर कोई तीस छोटे-छोटे लेख हैं जिनमें प्राय: यात्रियों के नाम अङ्कित हैं। इनमें कई जैन आचार्यों, कवियों और राजपुरुषों के नाम हैं (नं० २८४-३१४)।

२० भद्रबाहु की गुफा—कहा जाता है कि अन्तिम श्रुत-केवली भद्रबाहु स्वामी ने इसी गुफा में देहोत्सर्ग किया था। उनके चरण इस गुफा मे अङ्कित हैं और पूजे जाते हैं। गुफा मे एक लेख भी पाया गया था (नं० ७१ (१६६) पर यह लेख अब गुफा मे नहीं है। हाल में गुफा के सन्मुख एक भद्दा सा दरवाजा बनवा दिया गया है।

२१ चामुण्डराय की शिला—चन्द्रगिरि पर्वत के नीचे एक चट्टान है जो त्क्क नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि चामुण्डराय ने इसी शिला पर खड़े होकर विन्ध्यगिरि पर्वत की

ओर बाण चलाया था जिससे गोम्मटेश्वर की विशालमूर्त्ति प्रकट हुई थी। शिला पर कई जैन गुरुओं के चित्र हैं जिनके नाम भी अङ्कित हैं।

चन्द्रगिरि पर्वत पर के अधिकांश प्राचीनतम शिलालेख या तो पार्श्वनाथ बस्ति के दक्षिण की शिला पर उत्कीर्ण हैं या उस शिला पर जो शासन बस्ति और चामुण्डराय बस्ति के सन्मुख है।

विन्ध्यगिरि

यह पर्वत दोड्डबेट्ट अर्थात् बड़ी पहाड़ी के नाम से भी प्रख्यात है। यह समुद्रतल से ३,३४७ फुट और नीचे के मैदान से लगभग ४७० फुट ऊँचा है। कभी-कभी इन्द्रगिरि नाम से भी इस पर्वत का सम्बोधन किया जाता है। पर्वत के शिखर पर पहुँचने के लिये नीचे से लगाकर कोई ५०० सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। ऊपर समतल चौक है जो एक छोटे घेरे से घिरा हुआ है। इस घेरे में बीच-बीच मे तलघर हैं जिनमें जिन-प्रतिबिम्ब विराजमान हैं। इस घेरे के चारों ओर कुछ दूरी पर एक भारी दीवाल है जो कहीं-कहीं प्राकृतिक शिलाओं से बनी हुई है। चौक के ठीक बीचो-बीच गोम्मटेश्वर की वह विशाल खड्गासन मूर्त्ति है, जो अपनी दिव्यता से उस समस्त भूभाग को अलङ्कृत और पवित्र कर रही है।

१ **गोम्मटेश्वर**—यह नग्न, उत्तर-मुख, खड्गासन मूर्त्ति समस्त संसार की आश्चर्यकारी वस्तुओं मे से है। सिर के बाल घुँघराले, कान बड़े और लम्बे, वक्षस्थल चौड़ा, विशाल बाहु नीचे को लटकते हुए और कटि किञ्चित् क्षीण है। मुख पर अपूर्व कान्ति और अगाध शान्ति है। घुटनों से कुछ ऊपर तक बमीठे दिखाये गये हैं जिनसे सर्प निकल रहे हैं। दोनों पैरो और बाहुओं से माधवी लता लिपट रही है तिस पर भी मुख पर अटल ध्यान-मुद्रा विराजमान है। मूर्त्ति क्या है मानो तपस्या का अवतार ही है। दृश्य बड़ा ही भव्य और प्रभावोत्पादक है। सिंहासन एक प्रफुल्ल कमल के आकार का बनाया गया है। इस कमल पर बायें चरण के नीचे तीन फुट चार इञ्च का माप खुदा हुआ है। कहा जाता है कि इसको अठारह से गुणित करने पर मूर्त्ति की ऊँचाई निकलती है। जो हो, पर मूर्त्तिकार ने किसी प्रकार के माप के लिये ही इसे खोदा होगा। निस्सन्देह मूर्त्तिकार ने अपने इस अपूर्व प्रयास मे अनुपम सफलता प्राप्त की है। एशिया खण्ड ही नहीं समस्त भूतल का विचरण कर आइये, गोम्मटेश्वर की तुलना करने-वाली मूर्त्ति आपको क्वचित् ही दृष्टिगोचर होगी। बड़े-बड़े पश्चिमीय विद्वानों के मस्तिष्क इस मूर्त्ति की कारीगरी पर चक्कर खा गये हैं। इतने भारी और प्रबल पाषाण पर सिद्धहस्त कारीगर ने जिस कौशल से अपनी छैनी चलाई है उससे भारत के मूर्त्तिकारो का मस्तक सदैव गर्व से ऊँचा उठा रहेगा। यह

सम्भव नहीं जान पड़ता कि ५७ फुट की मूर्त्ति खोद निकालने के योग्य पाषाण कहीं अन्यत्र से लाकर उस ऊँची पहाड़ी पर प्रतिष्ठित किया जा सका होगा। इससे यही ठीक अनुमान होता है कि उसी स्थान पर किसी प्रकृतिप्रदत्त स्तम्भाकार चट्टान को काटकर इस मूर्त्ति का आविष्कार किया गया है। कम से कम एक हज़ार वर्ष से यह प्रतिमा सूर्य, मेघ, वायु आदि प्रकृति-देवी की अमोघ शक्तियों से बातें कर रही है पर अब तक उसमे किसी प्रकार की थोड़ी भी क्षति नहीं हुई। मानो मूर्त्ति-कार ने उसे आज ही उद्घाटित की हो।

एक पहाड़ी के ऊपर प्रतिष्ठित इतनी भारी मूर्त्ति को मापना भी कोई सरल कार्य नहीं है। इसी से उसकी ऊँचाई के सम्बन्ध में मतभेद है। बुचानन साहब ने उसकी ऊँचाई ७० फुट ३ इञ्च और सर अर्थर वेल्सली ने ६० फुट ३ इञ्च दी है। सन् १८६५ में मैसूर के चीफ कमिश्नर मि० बौरिंग ने मूर्त्ति का ठीक ठीक माप कराकर उसकी ऊँचाई ५७ फुट दर्ज की थी। सन् १८७१ ईस्वी मे मस्तकाभिषेक के समय कुछ सर-कारी अफसरों ने मूर्त्ति का माप लिया था जिससे निम्न-लिखित माप मिले :—

	फुट इञ्च
चरण से कर्ण के अधोभाग तक	५०—०
कर्ण के अधोभाग से मस्तक तक (लगभग)	६—६

	फुट इञ्च
चरण की लम्बाई	९—०
चरण के अग्रभाग की चौड़ाई	४—६
चरण का अंगुष्ठ	२—९
पादपृष्ठ की ऊपर की गुलाई	६—४
जंघा की अर्ध गुलाई	१०—०
नितम्ब से कर्ण तक	२४—६
पृष्ठ-अस्थि के अधोभाग से कर्ण तक	२०—०
नाभि के नीचे उदर की चौड़ाई	१३—०
कटि की चौड़ाई	१०—०
कटि और टेहुनी से कर्ण तक	१७—०
बाहुमूल से कर्ण तक	७—०
वक्षस्थल की चौड़ाई	२६—०
ग्रीवा के अधोभाग से कर्ण तक	२—६
तर्जनी की लम्बाई	३—६
मध्यमा की लम्बाई	५—३
अनामिका की लम्बाई	४—७
कनिष्ठिका की लम्बाई	२—८

लगभग एक सौ वर्ष पुराने 'सरसजनचिन्तामणि' काव्य के कर्त्ता कविचक्रवर्त्ति शान्तराज पण्डित के बनाये हुए सोलह श्लोक मिले हैं जिनमें गोम्मटेश्वर की मूर्त्ति के माप हस्त और अंगुलों में दिये हैं। अन्तिम श्लोक से पता चलता है कि

मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय की आज्ञा से कवि ने स्वयं ये माप लिये थे। ये श्लोक नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

जयति बेलुगुल-श्री-गोमटेशोऽस्य मूर्त्तेः
परिमितमधुनाहं वच्मि सर्वत्र हर्षात्।
स्वसमयजनानां भावनादेशनार्थं
परसमयजनानामद्भुतार्थं च साक्षात् ॥ १ ॥
पादान्मस्तकमध्यदेशचरमं पादार्ध-युक्ता तु षट्-
त्रिंशद्धस्तमितोच्छ्रयोऽस्ति हि यथा श्रीदोर्वलि-स्वामिनः।
पादाद्विंशतिहस्तसन्निभमितिर्नाभ्यन्तमस्त्युच्छ्रयः
पादार्धान्वितषोडशोच्छ्रयभरो नाभेश्शिरोन्तं तथा ॥ २ ॥
चुबुकन्मूर्ध-पर्यन्तं श्रीमद्बाहुबलीशिनः।
अस्त्यङ्गुलि-त्रयी-युक्त-हस्त-षट्कप्रमोच्छ्रयः ॥ ३ ॥
पादत्रयाधिक्ययुक्त-द्विहस्तप्रमितोच्छ्रयः।
प्रत्येकं कर्णयोरस्ति भगवद्दोर्वलीशिनः ॥ ४ ॥
पश्चाद्भुजबलीशस्य तिर्यग्भागेऽस्ति कर्णयोः।
अष्ट-हस्त-प्रमोच्छ्रायः प्रमाकृद्भिः प्रकीर्तितः ॥ ५ ॥
सौनन्देः परितः कण्ठं तिर्यगस्ति मनोहरम्।
पाद-त्रयाधिक-दश-हस्त-प्रमित-दीर्घता ॥ ६ ॥
सुनन्दा तनुजस्यास्ति पुरस्तात्कण्ठ-सूच्छ्रयः।
पाद-त्रयाधिक्य-युक्त-हस्त-प्रमिति-निश्चितः ॥ ७ ॥
भगवद्गोमटेशस्यांशयोरन्तरमस्य वै।
तिर्यगायतिरस्यैव खलु षोडश-हस्त-मा ॥ ८ ॥

वक्षश्चूचुक-संलक्ष्य रेखाद्वितय-दीर्घता ।
नवाङ्गुलाधिक्ययुक्तचतुर्हस्तप्रमेशितुः ॥ ९ ॥
परितो मध्यमेतस्य परीतत्वेन विस्तृतः ।
अस्ति विंशतिहस्तानां प्रमाणं दोर्वलीशिनः ॥ १० ॥
मध्यमाङ्गुलिपर्यन्तं स्कन्धाद्दीर्घत्वमीशितुः ।
बाहु-युग्मस्य पादाभ्यां युताष्टादशहस्तमा ॥ ११ ॥
मणिबन्धस्यास्य तिर्यक्परीतत्वात्समन्ततः ।
द्विपादाधिक-षड्-हस्त-प्रमाणं परिगण्यते ॥ १२ ॥
हस्ताङ्गुष्ठोच्छ्रयोस्त्यस्यैकाङ्गुष्ठात्पद्द्विहस्त-मा ।
लक्ष्यते गोम्मटेशस्य जगदाश्चर्यकारिणः ॥ १३ ॥
पादाङ्गुष्ठस्यास्य दैर्घ्यं द्विपादाधिकता-युजं ।
चतुष्टयस्य हस्तानां प्रमाणमिति निश्चितम् ॥ १४ ॥
दिव्य-श्रीपाद-दीर्घत्वं भगवद्गोमटेशिनः ।
सैकाङ्गुल-चतुर्हस्त-प्रमाणमिति वर्णितम् ॥ १५ ॥
श्रीमत्कृष्णनृपालकारितमहासंसेक-पूजोत्सवे
शिष्ट्या तस्य कटाक्षरोचिरमृतस्नातेन शान्तेन वै ।
आनीतं कविचक्रवर्युत्तर-श्रीशान्तराजेन तद्
वीक्ष्येत्थं परिमाणलक्षणमिहाकारीदमेतद्विभोः ॥ १६ ॥

इसका निम्नलिखित तात्पर्य निकलता है:—

	हस्त अंगुल
चरण से मस्तक तक	३६$\frac{1}{2}$—०
चरण से नाभि तक	२०—०

	हस्त अंगुल
नाभि से मस्तक तक	१६$_{८}$—०
चिबुक से मस्तक तक	६—३
कर्ण की लम्बाई	२ ३/४—०
एक कर्ण से दूसरे कर्ण तक	८—०
गले की गुलाई	१० ३/४—०
गले की लम्बाई	१ ३/४—०
एक कन्धे से दूसरे कन्धे तक	१६—०
स्तन-मुख की गोल रेखा	४—०
कटि की गुलाई	२०—०
कन्धे से मध्यमा अंगुली तक	१८$_{२}$—०
कलाई की गुलाई	६ १/४—०
अंगुष्ठ की लम्बाई	२ १/४—०
चरण का अंगुष्ठ	(?) ४ १/२—०
चरण की लम्बाई	४—१

ये माप उपर्युक्त मापो से मिलते हैं। केवल चरण के अंगुष्ठ की लम्बाई में त्रुटि ज्ञात होती है।

गोम्मट स्वामी कौन थे और उनकी मूर्त्ति यहाँ किसके द्वारा, किस प्रकार, प्रतिष्ठित की गई इसका कुछ विवरण लेख नं० ८५ (२३४) में पाया जाता है। यह लेख एक छोटा सा कनाड़ी काव्य है जो सन् ११८० ईस्वी के लगभग बोप्पण कवि-द्वारा रचा गया है। इसके अनुसार गोम्मट पुरुदेव अपर

नाम ऋषभदेव प्रथम तीर्थङ्कर के पुत्र थे। इनका नाम बाहुबलि या भुजबलि भी था। इनके ज्येष्ठ भ्राता भरत थे। ऋषभदेव के दीक्षा धारण करने के पश्चात् भरत और बाहुबलि दोनो भ्राताओं मे राज्य के लिये युद्ध हुआ जिसमें बाहुबलि की विजय हुई। पर संसार की गति से विरक्त हो उन्होने राज्य अपने ज्येष्ठ भ्राता भरत को दे दिया और आप तपस्या के हेतु वन को चले गये। थोड़े ही काल में घोर तपस्या कर उन्होंने केवल ज्ञान प्राप्त किया। भरत ने, जो अब चक्रवर्त्ति राजा हो गये थे, पौदनपुर मे उनकी शरीराकृति के अनुरूप ५२५ धनुप की प्रतिमा स्थापित कराई। समयानुसार मूर्त्ति के आसपास का प्रदेश कुक्कुट-सर्पों से व्याप्त हो गया जिससे उस मूर्त्ति का नाम कुक्कुटेश्वर पड़ गया। धीरे-धीरे वह मूर्त्ति लुप्त हो गई और उसके दर्शन केवल दीक्षित व्यक्तियों को मंत्रशक्ति से प्राप्य हो गये। चामुण्डराय मंत्री ने इस मूर्त्ति का वर्णन सुना और उन्हें उसके दर्शन करने की अभिलाषा हुई। पर पौदनपुर की यात्रा अशक्य जान उन्होंने उसी के समान स्वयं मूर्त्ति स्थापित कराने का विचार किया और तदनुसार इस मूर्त्ति का निर्माण कराया। इस वार्त्ता के पश्चात् लेख मे मूर्त्ति का वर्णन है। यही वर्णन थोड़े-बहुत हेर-फेर के साथ **भुजबलिशतक, भुजबलि-चरित, गोम्मटेश्वर-चरित, राजावलिकथा** और **स्थलपुराण** में भी पाया जाता है। इनमें से पहले काव्य को छोड शेष सब कनाड़ी भाषा में हैं। ये सब ग्रंथ १६वीं

शताब्दि से लगाकर १६वीं शताब्दि तक के हैं। भुजबलि-चरित में वर्णन है कि आदिनाथ के दो पुत्र थे, भरत, रानी यशस्वती से और भुजबलि, रानी सुनन्दा से। भुजबलि का विवाह इच्छा देवी से हुआ था और वे पौदनपुर के राजा थे। कुछ मतभेद के कारण दोनों भाइयों में युद्ध हुआ और भरत को पराजय हुई। पर भुजबलि राज्य त्यागकर मुनि हो गये। भरत ने ५२५ मारु* प्रमाण भुजबलि की स्वर्णमूर्त्ति बनवाकर स्थापित कराई। कुक्कुट सर्पों से व्याप्त हो जाने के कारण केवल देव ही इस मूर्त्ति के दर्शन कर पाते थे। एक जैनाचार्य जिनसेन दक्षिण मथुरा को गये और उन्होंने इस मूर्त्ति का वर्णन चामुण्ड-राय की माता कालल देवी को सुनाया। उसे सुनकर मातश्री ने प्रण किया कि जब तक गोम्मट देव के दर्शन न कर लूँगी, दूध नहीं खाऊँगी। जब अपनी पत्नी अजितादेवी के मुख से यह संवाद चामुण्डराय ने सुना तब वे अपनी माता को लेकर पौदनपुर की यात्रा को निकल पड़े। मार्ग में उन्होंने श्रवण-बेल्गोल की चन्द्रगुप्त बस्ती में पार्श्वनाथ भगवान् के दर्शन किये और भद्रबाहु के चरणों की वन्दना की। उसी रात्रि को पद्मावती देवी ने उन्हें स्वप्न दिया कि कुक्कुट सर्पों के कारण पौदनपुर की वन्दना तुम्हारे लिये असम्भव है। पर तुम्हारी

---

* दोनों बाहुओं को फैलाने से एक हाथ की अंगुली के अग्रभाग से लगाकर दूसरे हाथ की अंगुली के अग्रभाग तक जितना अन्तर होता है उसे 'मारु' कहते हैं।

भक्ति से प्रसन्न होकर गोम्मटेश्वर तुम्हे यहाँ बड़ी पहाड़ी (विन्ध्य-गिरि) पर दर्शन देंगे। तुम शुद्ध होकर इस छोटी पहाड़ी (चन्द्रगिरि) पर से एक स्वर्ण बाण छोड़ो, और भगवान् के दर्शन करो। मात श्री को भी ऐसा ही स्वप्न हुआ। दूसरे दिन प्रातःकाल ही चामुण्डराय ने स्नान-पूजन से शुद्ध हो छोटी पहाड़ी की एक शिला पर अवस्थित होकर, दक्षिण दिशा को मुख करके एक स्वर्ण बाण छोड़ा जो बड़ी पहाड़ी के मस्तक पर की शिला में जाकर लगा। बाण के लगते ही गोम्मट स्वामी का मस्तक दृष्टिगोचर हुआ। फिर जैनगुरु ने हीरे की छैनी और मोती के हथौड़े से ज्योंही शिला पर प्रहार किया त्योंही शिला के पाषाण-खण्ड अलग जा गिरे और गोम्मटेश्वर की पूरी प्रतिमा निकल आई। फिर कारीगरों से चामुण्डराय ने दक्षिण बाजू पर ब्रह्मदेव सहित पाताल गम्ब, सन्मुख ब्रह्मदेव-सहित यक्ष-गम्ब, ऊपर का खण्ड, ब्रह्मसहित त्यागद कम्ब, अखण्ड बागिलु नामक दरवाजा और यत्र-तत्र सीढ़ियाँ बनवाई।

इसके पश्चात् अभिषेक की तैयारी हुई। पर जितना भी दुग्ध चामुण्डराय ने एकत्रित कराया उससे मूर्त्ति की जंघा से नीचे के स्नान नहीं हो सके। चामुण्डराय ने घबराकर गुरु से सलाह ली। उन्होंने आदेश दिया कि जो दुग्ध एक वृद्धा स्त्री अपनी 'गुल्लकायि' में लाई है उससे स्नान कराओ। आश्चर्य कि उस अत्यल्प दुग्ध की धारा गोम्मटेश के मस्तक पर छोड़ते ही समस्त मूर्त्ति के स्नान हो गये और सारी पहाड़ी पर दुग्ध

बह निकला। उस वृद्धा स्त्री का नाम इस समय से 'गुल्लका-यज्जि' पड़ गया। इसके पश्चात् चामुण्डराय ने पहाड़ी के नीचे एक नगर बसाया और मूर्त्ति के लिये ९६ हजार 'वरह' की आय के गाँव (६८ के नाम दिये हुए हैं) लगा दिये। फिर उन्होंने अपने गुरु अजितसेन से इस नगर के लिये कोई उपयुक्त नाम पूछा। गुरु ने कहा 'क्योंकि उस वृद्धा स्त्री के गुल्लकायि के दुग्ध से अभिषेक हुआ है, अतः इस नगर का नाम बेलगोल ठीक होगा। तदनुसार नगर का नाम बेलगोल रक्खा गया और उस 'गुल्लकायज्जि' स्त्री की मूर्त्ति भी स्थापित की गई। इस प्रकार इस अभिनव पौदनपुर की स्थापना कर चामुण्डराय ने कीर्त्ति प्राप्त की। इस काव्य के कर्त्ता पञ्च-बाण का नाम शक सं० १५५६ के एक लेख नं० ८४ (२५०) में आता है।

अन्य ग्रन्थों मे उपर्युक्त विवरण से जो विशेषताएँ हैं वे संक्षेप मे इस प्रकार हैं। दोड्डय कवि-कृत **'भुजबलिशतक'** मे कहा गया है कि सिंहनन्दि आचार्य के शिष्य राजमल्ल द्राविड देश मे मधुरा के राजा थे। ब्रह्मक्षत्र-शिखामणि चामुण्ड-राय, सिंहनन्दि आचार्य के प्रशिष्य व अजितसेन और नेमि-चन्द्र के शिष्य, उनके मन्त्री थे। राजमल्ल को किसी व्यापारी द्वारा पौदनपुर में कर्केतन-पाषाण-निर्म्मित गोम्मटेश्वर की मूर्त्ति का समाचार मिला। इसे सुनकर चामुण्डराय अपनी माता और गुरु नेमिचन्द्र के साथ राजा की आज्ञा ले, यात्रा को

निकले। जब उन्होंने श्रवणबेलगोल की छोटी पहाड़ी पर से स्वर्ण बाण चलाये तब बड़ी पहाड़ी पर पौदनपुर के गोम्मटेश्वर भगवान् प्रकट हुए। चामुण्डराय ने भगवान् के हेतु कई ग्रामों का दान दिया। उनकी धर्म-शीलता से प्रसन्न हो राजमल्ल ने उन्हें राय की उपाधि दी। १८वीं शताब्दि के बने हुए अनन्त कवि-कृत **गोम्मटेश्वरचरित** में यह वार्ता है कि चामुण्डराय के स्वर्ण बाण चलाने से गोम्मट की जो मूर्त्ति प्रकट हुई उसे उन्होंने मूर्त्तिकारों से सुघटित कराकर अभिषिक्त और प्रतिष्ठित कराई। **स्थलपुराण** में समाचार है कि पौदनपुर की यात्रा करते समय चामुण्डराय ने सुना कि बेलगोल में अठारह धनुष प्रमाण एक गोम्मटेश्वर की मूर्त्ति है। उन्होंने उसकी प्रतिष्ठा कराई और उसे एक लाख छयानवे हजार वरह की आय के ग्रामों का दान किया। चामुण्डराय को अपनी अपूर्व सफलता पर जो गर्व हुआ उसे खर्व करने के हेतु पद्मावती देवी गुल्लकायज्जि नामक वृद्धा स्त्री के वेष में अभिषेक के अवसर पर उपस्थित हुई थी। **राजावलिकथा** के अनुसार गुल्लकायज्जि कूष्मा-ण्डिनि देवी का अवतार थी। इस ग्रंथ में यह भी कहा गया है कि प्राचीन काल में राम, रावण और रावण की रानी मन्दोदरि ने बेलगोल के गोम्मटेश्वर की वन्दना की थी। सत्र-हवीं शताब्दि के चिदानन्दकवि-कृत **मुनिवंशाभ्युदय** काव्य में कथन है कि गोम्मट और पार्श्वनाथ की मूर्त्तियों को राम और सीता लङ्का से लाये थे और उन्हें क्रमशः बड़ी और छोटी

पहाड़ी पर विराजमान कर उनको पूजन-अर्चन किया करते थे। जाते समय वे इन मूर्त्तियों को उठाने मे असमर्थ हुए, इसी से वे उन्हें उसी स्थान पर छोड़कर चले गये।

उपर्युल्लिखित प्रमाणो से यह निर्विवादत. सिद्ध होता है कि गोम्मटेश्वर की स्थापना चामुण्डराय द्वारा हुई है। शिलालेख नं० ८५ (२३४), १०५ (२५४), ७६ (१७५) और ७५ (१७९) भी यही बात प्रमाणित करते हैं। शिलालेख नं० ७५, ७६ मूर्त्ति के आस-पास ही खुदे हैं और मूर्त्ति के निर्माण समय के ही प्रतीत होते हैं। चामुण्डराय कौन थे? भुजबलिशतक आदि ग्रन्थों से विदित होता है कि चामुण्डराय गङ्गनरेश राचमल्ल के मन्त्री थे। शिलालेख नं० १३७ (३४५) से भी यही सिद्ध होता है। राचमल्ल के राज्य की अवधि सन् ९७४ से ९८४ तक बाँधी गई है। अतः गोम्मटेश्वर की स्थापना इसी समय के लगभग होना चाहिये। चामुण्डराय का बनाया हुआ एक चामुण्डराय पुराण मिलता है। इसमें ग्रंथ-समाप्ति का समय शक सं० ९०० (सन् ९७८ ईस्वी) दिया हुआ है। इसमे चामुण्डराय के कृत्यो का वर्णन पाया जाता है पर गोम्मटेश्वर की प्रतिष्ठा का कहीं उल्लेख नहीं है। इससे अनुमान होता है कि उक्त ग्रन्थ की रचना के समय (सन् ९७८ ई०) तक चामुण्डराय को इस महत्कार्य के सम्पादन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। बाहुबलि-चरित्र में गोम्मटेश्वर की प्रतिष्ठा का समय इस प्रकार दिया है :—

"कल्क्यब्दे षट्शताख्ये विनुतविभवसंवत्सरे मासि चैत्रे
पञ्चम्यां शुक्लपक्षे दिनमणिदिवसे कुम्भलग्ने सुयोगे।
सौभाग्ये मस्तनाम्नि प्रकटित-भगणे सुप्रशस्तां चकार
श्रीमच्चामुण्डराजो वेल्गुलनगरे गोमटेशप्रतिष्ठाम् ॥"

अर्थात् कल्कि संवत् ६०० मे विभव संवत्सर में चैत्र शुक्ल ५ रविवार को कुम्भलग्न, सौभाग्य योग, मस्त (मृगशिरा) नक्षत्र मे चामुण्डराज ने वेल्गुल नगर मे गोमटेश की प्रतिष्ठा कराई। विद्याभूषण, काव्यतीर्थ, प्रो० शरच्चन्द्र घोषाल ने इस अनुमान पर कि यह तिथि गङ्गनरेश राचमल्ल के समय मे (सन् ९७४ और ९८४ के बीच) ही पड़ना चाहिये, उक्त तिथि को तारीख २ अप्रेल ९८० ईस्वी के बराबर माना है। उनके कथनानुसार इस तारीख को रविवार चैत्र शुक्ल ५ तिथि थी और कुम्भ लग्न भी पड़ा था। हमने इस तारीख का मि० स्वामी कन्नूपिलाई के 'इंडियन एफेमेरिस' से मिलान किया तो २ अप्रेल ९८० ईस्वी को दिन शुक्रवार और तिथि १४ पाये। न जाने प्रोफेसर साहब ने किस आधार पर उस तारीख को रविवार और पञ्चमी तिथि मान लिया है। इसके अतिरिक्त प्रोफेसर साहब की तारीख में एक और भारी त्रुटि है। ऊपर उद्धृत श्लोक मे संवत्सर का नाम 'विभव' दिया हुआ है। पर सन् ९८० ईस्वी (शक सं० ९०२) 'विभव' नहीं 'विक्रम' संवत्सर था। इन कारणों से प्रो० घोषाल की निश्चित की हुई तिथि मे सन्देह होता है।

उपर्युक्त श्लोक मे कल्कि संवत् ६०० में गोमटेश की प्रतिष्ठा होना कहा है। कल्कि कौन था और उसका संवत् कब से चला? हरिवंशपुराण, उत्तरपुराण, त्रिलोकसार और त्रिलोकप्रज्ञप्ति मे कल्कि राजा का उल्लेख पाया जाता है। कल्कि का दूसरा नाम चतुर्मुख था। त्रिलोकप्रज्ञप्ति मे कल्कि का समय इस प्रकार दिया है :—

णिव्वाणगदे वीरे चउसदइगिसट्ठिवासविच्छेदे।
जादो च सगणरिन्दो रज्जं वस्सस्स दुसय वादाला ॥९३॥
दोण्णि सदा पणवण्णा गुत्ताणं चउमुहस्स वादालं।
वस्सं होदि सहस्सं केई एवं परूवंति ॥९४॥

अर्थात्—वीर निर्वाण के ४६१ वर्ष बीतने पर शक राजा हुआ, और इस वंश के राजाओं ने २४२ वर्ष राज्य किया। उनके पश्चात् गुप्तवंशी नरेशों का २५५ वर्ष तक राज्य रहा और फिर चतुर्मुख (कल्कि) ने ४२ वर्ष राज्य किया। कोई-कोई लोग इस तरह (४६१ + २४२ + २५५ + ४२ = १०००) एक हजार वर्ष बतलाते हैं। अन्य ग्रंथों में भी कल्कि का समय महावीर के निर्वाण से १००० वर्ष पश्चात् माना गया है। पर इन ग्रंथों में इस बात पर मत-भेद है कि निर्वाण संवत् से १००० वर्ष पीछे कल्कि का जन्म हुआ या मृत्यु। ऊपर हमने जिस मत का उल्लेख किया है उसके अनुसार १००० वर्ष में कल्कि के राज्य के ४२ वर्ष भी सम्मिलित हैं। अतः इस मत के अनुसार निर्वाण सं० १००० कल्कि की मृत्यु

का है। जिन ग्रन्थों में कल्कि का उल्लेख पाया जाता है उन सबके अनुसार निर्वाण का समय शक सं० से ६०५ वर्ष, विक्रम सं० से ४७० वर्ष व ईस्वी सन् से ५२७ वर्ष पूर्व पड़ता है। अतएव कल्कि मृत्यु का समय सन् ४७२ ईस्वी आता है।

संवत् बहुधा राजा के राज्य-काल से प्रारम्भ किये जाते हैं। अतः कल्कि संवत् सन् ४७२—४२ = ४३० ईस्वी से प्रारम्भ हुआ होगा। गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का समय कल्कि संवत् ६०० कहा गया है जो ऊपर की गणना के अनुसार सन् ईस्वी १०३० के बराबर है। हमने स्वामी कन्नूपिलाई के इण्डियन एफेमेरिस से इस संवत् के लगभग उपर्युक्त तिथि, वार, नक्षत्र आदि का मिलान किया तो २३ मार्च सन् १०२८ को चैत्र सुदि ५ रविवार पाया। इस दिन मृगशिरा नक्षत्र और सौभाग्य योग भी वर्तमान थे, और दक्षिणी गणना के अनुसार यह संवत्सर भी विभव था। इस प्रकार बाहुबलिचरित में दी हुई समस्त बातें इस तिथि में घटित होती हैं, जिससे विश्वास होता है कि गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का ठीक समय सन् १०२८, २३ मार्च (शक सं० ९५१) है।*

इस तिथि के विरोध में केवल एक किंवदन्ती का प्रमाण प्रस्तुत किया जा सकता है। वह किंवदन्ती यह है कि गोम-

---

* उपर्युक्त विवेचन लिखे जाने के पश्चात् हमें मैसूर आर्किलाजिकल रिपोर्ट १९२३ देखने को मिली। इसमें डा० शाम शास्त्री ने विस्तृत रूप से इसी बात को प्रमाणित किया है।

टेश की मूर्त्ति की प्रतिष्ठा राचमल्लनरेश के समय मे ही हुई थी और इस नरेश का समय शिलालेखों के आधार पर सन् ६७४ से ६८४ तक निश्चित किया गया है। पर इस किंवदन्ती पर विशेष जोर नहीं दिया जा सकता क्योंकि एक तो इसके लिये कोई शिलालेखो का प्रमाण नही है और दूसरे यह कथन केवल भुजवलिशतक मे ही पाया जाता है, जिसकी रचना का समय ईसा की सोलहवी शताब्दि अनुमान किया जाता है। जिन अन्य ग्रन्थों मे गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का कथन है उनमे यह कही नहीं कहा गया कि यह कार्य राचमल्ल के जीते ही हुआ था। सन् ६७८ ईस्वी में रचे जानेवाले चामुण्डराय पुराण से यह निश्चित है ही कि उस समय तक मूर्त्ति की स्थापना नही हुई थी, और सन् १०२८ से पहले के किसी शिलालेख मे इस प्रतिष्ठा का समाचार नहीं पाया जाता।

एक बात और है जिसके कारण ऊपर निश्चित किया हुआ समय ही गोमटेश की प्रतिष्ठा के लिये ठीक प्रतीत होता है। कहा जाता है कि नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्ति चामुण्डराय के गुरु थे और गोमटेश की प्रतिष्ठा के समय उनके साथ थे। द्रव्य-संग्रह नामक ग्रन्थ के टीकाकार ब्रह्मदेव ने ग्रन्थ के मूलकर्त्ता नेमिचन्द्र को धाराधीश भोजदेव के समकालीन कहा है। ऊपर निश्चित किये हुए समय के अनुसार यह कथन अयुक्ति-सङ्गत नहीं कहा जा सकता क्योंकि भोजदेव

का राज्य-काल उस समय विद्यमान था। भोजदेव के सन् १०१६, १०२२ और १०४२ ईस्वी के उल्लेख मिले हैं।

कुछ वर्षों के अन्तर से गोम्मटेश्वर का मस्तकाभिषेक होता है, जो बड़ी धूमधाम, बहुत क्रियाकाण्ड और भारी द्रव्य-व्यय के साथ मनाया जाता है। इसे महाभिषेक भी कहते हैं। इस मस्तकाभिषेक का सबसे प्राचीन उल्लेख शक सं० १३२० के लेख नं० १०५ (२५४) मे पाया जाता है। इस लेख मे कथन है कि पण्डितार्य ने सात वार गोम्मटेश्वर का मस्तकाभिषेक कराया था। पञ्चवाण कवि ने सन् १६१२ ईस्वी में शान्त-वर्णि-द्वारा कराये हुए मस्तकाभिषेक का उल्लेख किया है, व अनन्त कवि ने सन् १६७७ में मैसूर नरेश चिक्कदेवराज ओडे-यर के मन्त्री विशालाक्ष पण्डित-द्वारा कराये हुए और शान्त-राज पण्डित ने सन् १८२५ के लगभग मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय द्वारा कराये हुए मस्तकाभिषेक का उल्लेख किया है। शिलालेख नं० ९८ (२२३) में सन् १८२७ मे होने-वाले मस्तकाभिषेक का उल्लेख है। सन् १९०९ मे भी मस्तकाभिषेक हुआ था। अभी तक सबसे अन्तिम अभिषेक हाल ही मे—मार्च सन् १९२५ में—हुआ है जिसके विषय में 'वीर' पत्र में यह समाचार प्रकाशित हुआ है—" ता० १५–३–२५ को श्रीमान् महाराजा कृष्णराज बहादुर मैसूर अपने दो सालों-सहित पहाड़ पर पधारे और अपनी तरफ से अभिषेक कराया। बन्दोबस्त बहुत अच्छा था। आज लगभग ३०,००० मनुष्य

अभिषेक देख सके जिसमे करीब पाँच हजार विन्ध्यगिरि पर थे और शेष सब चन्द्रगिरि पहाड़ पर इधर-उधर बैठकर दूर से अभिषेक देखते थे। महाराजा ने अभिषेक के लिए पाँच हजार रुप्या प्रदान किये। उन्होंने स्वयं गोम्मटस्वामी की प्रदक्षिणा की, नमस्कार किया तथा द्रव्य से पूजन की व कुछ रुप्ये प्रतिमाजी व भट्टारकजी को भेंट किये व भट्टारकजी को नमस्कार किया। सुबह ६ बजे से दोपहर एक बजे तक इस प्रथम अभिषेक का कार्य अतीव आनन्द व धर्म-प्रभावना के साथ हुआ। इस अभिषेक मे जल, दुग्ध, दही, केला, पुष्प, नारियल व चुरमा, घृत, चन्दन, सर्वौषधि, इक्षुरस, लाल चन्दन, बदाम, खारक गुड़, शक्कर, खसखस, फूल, चने की दाल आदि का अभिषेक उपाध्यायों द्वारा मचान पर से हुआ।"

कहा जाता है कि जब होय्सल-नरेश विष्णुवर्द्धन जैन-धर्म को छोड वैष्णव धर्मावलम्बी हो गया तब रामानुजाचार्य ने गोम्मट की मूर्त्ति को तुड़वा डाला, पर इस कथन मे कोई सत्य का अंश प्रतीत नहीं होता क्योंकि मूर्त्ति आज तक सर्वथा अक्षत है।

गोम्मटेश्वर की दो और विशाल मूर्त्तियाँ विद्यमान हैं। ये दोनों दक्षिण कनाड़ा जिले मे ही हैं; एक कारकल में और दूसरी एनूर में। कारकल की मूर्त्ति ४१ फुट ५ इञ्च ऊँची है। इसे सन् १४३२ ईस्वी मे जैनाचार्य ललितकीर्त्ति के उपदेश से वीर पाण्ड्य ने प्रतिष्ठित कराई थी। एनूर की मूर्त्ति ३५ फुट ऊँची है और सन् १६०४ मे चारुकीर्ति पण्डित के

उपदेश से चामुण्डवंशीय 'तिम्मराज' द्वारा प्रतिष्ठित की गई थी। इन तीनों मूर्त्तियों की बनावट प्राय. एक सी ही है। बमीठे, सर्प और लताएँ तीनों मे एक से ही दिखाये गये हैं।

विन्ध्यगिरि के गोम्मटेश्वर की दोनों बाजुओं पर यक्ष और यक्षिणी की मूर्त्तियाँ हैं, जिनके एक हाथ मे चौरी और दूसरे में कोई फल है। मूर्त्ति के बायीं ओर एक गोल पाषाण का पात्र है जिसका नाम 'ललितसरोवर' खुदा हुआ है। मूर्त्ति के अभिषेक का जल इसी में एकत्र होता है। इस पाषाण-पात्र के भर जाने पर अभिषेक का जल एक प्रणाली-द्वारा मूर्त्ति के सम्मुख एक कुएँ में पहुँच जाता है और वहाँ से वह मन्दिर की सरहद के बाहर एक कन्दरा में पहुँचा दिया जाता है। इस कन्दरा का नाम 'गुल्लकायज्जि बागिलु' है। मूर्त्ति के सम्मुख का मण्डप नव सुन्दर खचित छतो से सजा हुआ है। आठ छतो पर अष्ट दिक्पालो की मूर्त्तियाँ हैं और बीच की नवमी छत पर गोम्मटेश के अभिषेक के लिये हाथ मे कलश लिये हुए इन्द्र की मूर्त्ति है। ये छत बड़ी कारीगरी के बने हुए हैं। मध्य की छत पर खुदे हुए शिलालेख (नं० ३५१) से अनुमान होता है कि यह मण्डप बलदेव मन्त्री ने १२ वीं शताब्दि के प्रारम्भ में किसी समय निर्माण कराया था। शिला-लेख नं० ११५ (२६७) से विदित होता है कि सेनापति भरत-मय्य ने इस मण्डप का कठघरा (हप्पलिगे) निर्माण कराया था। शिलालेख नं० ७८ (१८२) मे कथन है कि नयकीर्त्तिसिद्धान्त-

चक्रवर्त्ति के शिष्य वसविसेट्टि ने कठघरे की दीवाल और चौबीस तीर्थंकरो की प्रतिमाएँ निर्माण कराई थीं और उसके पुत्रों ने उन प्रतिमाओं के सम्मुख जालीदार खिड़कियाँ बनवाई। शिला-लेख नं० १०३ (२२८) से ज्ञात होता है कि चङ्गाल्व-नरेश महादेव के प्रधान सचिव केशवनाथ के पुत्र चन्न बोम्मरस और नञ्जरायपट्टन के श्रावकों ने गोम्मटेश्वरमण्डप के ऊपर के खण्ड (बल्लिवाड) का जीर्णोद्धार कराया।

परकोटा—गोम्मटेश्वर की दोनों बाजुओ पर खुदे हुए शिलालेख नं० ७५ (१८०) व ७६ (१७७) से विदित होता है कि गोम्मटेश्वर का परकोटा गङ्गराज ने निर्माण कराया था। यही बात लेख नं० ४५ (१२५), ५९ (७३), ९० (२४०) व ४८६ से भी सिद्ध होती है। गङ्गराज होय्सल नरेश विष्णु-वर्द्धन के सेनापति थे। उपर्युक्त शिलालेख शक सं० १०४० व उसके पश्चात् के हैं। इसके पहले के शिलालेखों मे पर-कोटे का उल्लेख नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि शक सं० १०३९ के लगभग ही इसका निर्माण हुआ है।

परकोटे के भीतर मण्डपों मे इधर-उधर कुल ४३ जिन-मूर्त्तियाँ प्रतिष्ठित हैं, जो इस प्रकार हैं—

ऋषभ	१	सुमति	१	शीतल	२	अनन्त	१
अजित	२	सुपार्श्व	१	श्रेयांस	१	धर्म	१
संभव	२	चन्द्रप्रभ	३	वासुपूज्य	१	शान्ति	३
अभिनन्दन	२	पुष्पदन्त	२	विमल	२	कुन्थु	१

अर	१	मुनिसुव्रत	२	नेमि	२	वर्द्धमान	१
मल्लि	२	नमि	१	पार्श्व	४	वाहुवलि	१
		कुष्माण्डिनि	२		१	(अज्ञात)	

अधिकांश मूर्त्तियाँ ४ फुट ऊँची हैं। पाँच-छः मूर्त्तियाँ पाँच फुट, एक छः फुट व दो-तीन मूर्त्तियाँ तीन साढे-तीन फुट की हैं। एक चन्द्रप्रभ की व अन्तिम अज्ञात मूर्त्ति को छोडकर शेष जिन मूर्त्तियों पर लेख हैं वे सब नयकीर्त्ति सिद्धान्तदेव और उनके शिष्य वालचन्द्र अध्यात्मि के समय की सिद्ध होती हैं। लेख नं० ७८ (१८२) व ३२७ (१८७) से ज्ञात होता है कि नयकीर्त्ति के शिष्य वसविसेट्टि ने यहाँ चतुर्विंशति तीर्थंकरों की प्रतिष्ठा कराई थी। पर केवल तीन मूर्त्तियों पर वसविसेट्टि का नाम पाया जाता है (लेख नं० ३१७, ३१८, ३२७)। उपर्युक्त मूर्त्तियों मे पद्मप्रभ तीर्थंकर की कोई मूर्त्ति नहीं है। चन्द्रप्रभ की एक मूर्त्ति पर मारवाडी मे लेख है कि उसे (विक्रम) संवत् १६३५ में सेनवीरमतजी व अन्य सज्जनों ने प्रतिष्ठित कराई थी (३३१)। अज्ञात मूर्त्ति डेढ़ फुट की है। इस पर मारवाडी में लेख है कि उसे (विक्रम) संवत् १५४८ में अगुशाजी जगद......ने प्रतिष्ठित कराई (३३२)।

परकोटे के द्वारे पर दोनों वाजुओं पर छः छः फुट ऊँचे द्वारपालक हैं। परकोटे के वाहर गोम्मटदेव के ठीक सन्मुख लगभग छः फुट की ऊँचाई पर ब्रह्मदेवस्तम्भ है। इसमें ब्रह्मदेव की पद्मासन मूर्त्ति है। ऊपर गुम्मट है। स्तम्भ के नीचे कोई

पाँच फुट ऊँची 'गुल्लकायज्जि' की मूर्त्ति है, जिसके हाथ में 'गुल्लकायि' है। जन-श्रुति के अनुसार यह स्तम्भ और गुल्ल-कायज्जि की मूर्त्ति दोनों स्वयं चामुण्डराय ने प्रतिष्ठित कराये थे।

२ सिद्धर बस्ति—यह एक छोटा सा मन्दिर है जिसमें तीन फुट ऊँची सिद्ध भगवान् की मूर्त्ति विराजमान है। मूर्त्ति के दोनो ओर लगभग छः-छः फुट ऊँचे खचित स्तम्भ हैं। ये स्तम्भ महानवमी मण्डप के स्तम्भ के समान ही उच्च कारीगरी के बने हुए हैं। दायीं बाजू के स्तम्भ पर अर्हद्दास कवि का रचा हुआ पण्डितार्य की प्रशस्तिवाला बड़ा भारी सुन्दर लेख है [१०५ (२५४)] जिसके अनुसार पण्डितार्य की मृत्यु शक संवत् १३२० में हुई थी। इस स्तम्भ में पीठिका पर विराज-मान, शिष्य को उपदेश देते हुए, एक आचार्य का चित्र है। शिष्य सन्मुख बैठा है। दूसरे चित्र में जिनमूर्त्ति है। बायीं बाजू के स्तम्भ पर मङ्गराज कवि का रचा हुआ सुन्दर लेख है [१०८ (२५८)] जिसमे शक सं० १३५५ मे श्रुतमुनि के स्वर्गवास का उल्लेख है।

३ अखण्ड बागिलु—यह एक दरवाजे का नाम है। यह नाम इसलिये पड़ा क्योंकि यह पूरा दरवाजा एक अखण्ड शिला को काटकर बनाया गया है। दरवाजे का ऊपरी भाग बहुत ही सुन्दर खचित है। इसमें लक्ष्मी की पद्मासन मूर्त्ति खुदी है जिसको दोनों ओर से दो हाथी स्नान करा रहे हैं। जन-श्रुति के अनुसार यह द्वार भी चामुण्डराय ने निर्माण

कराया था। दरवाजे के दोनों ओर दायें-बायें क्रमशः बाहुबलि और भरत की मूर्त्तियाँ हैं। इन पर जो लेख हैं (३६८-३६९) उनसे विदित होता है कि ये गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव के शिष्य दण्डनायक भरतेश्वर द्वारा प्रतिष्ठित की गई हैं। इनका समय शक सं० १०५२ के लगभग प्रतीत होता है। इन मूर्तियों की प्रतिष्ठा का उल्लेख शिलालेख नं० ११५ (२६७) में भी आया है जिसके अनुसार ये मूर्त्तियाँ दरवाजे की शोभा बढ़ाने के लिये स्थापित की गई हैं। इस लेख के अनुसार इस दरवाजे की सीढ़ियाँ भी उक्त दण्डनायक ने ही निर्माण कराई हैं।

४ **सिद्धरगुण्डु**—अखण्ड दरवाजे की दाहिनी ओर एक वृहत् शिला है जिसे 'सिद्धर गुण्डु' (सिद्ध-शिला) कहते हैं। इस शिला पर अनेक लेख हैं। ऊपरी भाग की कई सतरों मे जैनाचार्यों के चित्र हैं। कुछ चित्रों के नीचे नाम भी अङ्कित हैं।

५ **गुल्लकायज्जिबागिलु**—यह एक दूसरे दरवाजे का नाम है। इस दरवाजे की दाहिनी ओर एक शिला पर एक बैठी हुई स्त्री का चित्र खुदा है। यह लगभग एक फुट का है। इसे लोगों ने गुल्लकायज्जि का चित्र समझ लिया है। इसी से उक्त दरवाजे का नाम गुल्लकायज्जिबागिलु पड़ गया। पर चित्र के नीचे जो लेख (४१८) पाया गया है उससे विदित होता है कि वह एक मल्लिसेट्टि की पुत्री का चित्र है। गुल्ल-कायि की मूर्त्ति का वर्णन ऊपर कर ही चुके हैं।

६ त्यागद ब्रह्मदेव स्तम्भ—यह चागद कंब (त्याग-स्तम्भ) भी कहलाता है क्योंकि कहा जाता है कि यहाँ दान दिया जाता था। इस स्तम्भ की कारीगरी प्रशंसनीय है। कहा जाता है कि यह स्तम्भ अधर है, उसके नीचे से रूमाल निकाला जा सकता है। यह भी चामुण्डराय-द्वारा स्थापित कहा जाता है और स्तम्भ पर खुदे हुए लेख नं० १०९ (२८१) से भी यही बात प्रमाणित होती है। इस लेख में चामुण्डराय के प्रताप का वर्णन है। दुर्भाग्यवश यह लेख हमे पूरा प्राप्त नहीं हो सका। ज्ञात होता है कि हेग्गडे कण्न ने अपना छोटा सा लेख [नं० ११० (२८२)] लिखाने के लिये चामुण्डराय का लेख घिसवा डाला। यदि यह लेख पूरा मिल जाता तो सम्भवतः उससे गोम्मटेश्वर की स्थापनादि का समय भी ज्ञात हो जाता। स्तम्भ की पीठिका की दक्षिण बाजू पर दो मूर्त्तियाँ खुदी हुई हैं। एक मूर्त्ति, जिसके दोनों ओर चवरवाही खड़े हुए हैं, चामुण्डराय की और उसके साम्हनेवाली उनके गुरु नेमिचन्द्र की कही जाती हैं।

७ चेन्नण्ण बस्ति—यह बस्ति त्यागद ब्रह्मदेव स्तम्भ से पश्चिम की ओर थोड़ी दूर पर है। इसमे चन्द्रनाथ स्वामी की २½ फुट ऊँची मूर्त्ति है। साम्हने मानस्तम्भ है। लेख नं० ४८० (३९०) से अनुमान होता है कि इसे चेन्नण्ण ने शक सं० १५९६ के लगभग निर्माण कराया था। बरामदे मे दो स्तम्भों पर क्रमशः एक पुरुष और एक स्त्री की मूर्त्ति खुदी हुई

है। सम्भव है कि ये मूर्तियाँ चेन्नण्ण और उनकी धर्मपत्नी की हों। वस्ति से ईशान की ओर दो दोणें (कुण्डों) के बीच एक मण्डप बना हुआ है। उपर्युक्त लेख में सम्भवतः इसी मण्डप का उल्लेख है।

८ ओदेगल वस्ति—इसे त्रिकूट वस्ति भी कहते हैं क्योंकि इसमें तीन गर्भगृह हैं। चन्द्रगिरि पर्वत की शान्तीश्वर वस्ति के समान यह वस्ति भी ख़ूब ऊँची सतह पर बनी हुई है। सीढ़ियों पर से जाना पड़ता है। भीतों की मजबूती के लिये इसमें पाषाण के आधार (ओदेगल) लगे हुए हैं, इसी से इसे ओदेगल वस्ती कहते हैं। बीच की गुफा में आदिनाथ की और दायीं बाईं गुफाओं में क्रमश. शान्तिनाथ और नेमिनाथ की पद्मासन मूर्तियाँ हैं। वस्ती के पश्चिम की ओर की चट्टान पर सत्ताइस लेख नागरी अक्षरों में हैं जिनमें अधिकतर तीर्थ-यात्रियों के नाम अङ्कित हैं (नं० ३७८–४०४)।

९ चौबीस तीर्थंकर वस्ति—यह एक छोटा सा देवालय है। इसमें एक अढ़ाई फुट ऊँचे पाषाण पर चौबीस तीर्थंकरों की मूर्त्तियाँ उत्कीर्ण हैं। नीचे एक कतार में तीन बड़ी मूर्त्तियाँ खुदी हुई हैं जिनके ऊपर प्रभावली के आकार में इक्कीस अन्य छोटी-छोटी मूर्त्तियाँ हैं। इस वस्ति के लेख नं० ११८ (३१३) से ज्ञात होता है कि इस चौबीस तीर्थंकर मूर्त्ति की स्थापना चारुकीर्त्ति पण्डित, धर्मचन्द्र आदि ने शक सं० १५७० में की थी।

१० ब्रह्मदेव मन्दिर—यह छोटा सा देवालय विन्ध्य-गिरि के नीचे सीढ़ियों के समीप ही है। इसमें सिन्दूर से रँगा हुआ एक पाषाण है जिसे लोग ब्रह्म या 'जारुगुप्पे अप्प' कहते हैं। मन्दिर के पीछे चट्टान पर के लेख नं० १२१ (३२१) से ज्ञात होता है कि इसे हिरिसालि के गिरिगौड के कनिष्ठ भ्राता रङ्गय्य ने सम्भवतः शक सं० १६०० में निर्माण कराया था। मन्दिर के ऊपर दूसरी मंजिल भी है जो पीछे से निर्माण कराई गई विदित होती है। इसमें पार्श्वनाथ की मूर्त्ति है।

श्रवणबेल्गोल नगर

ऊपर कहा जा चुका है कि श्रवणबेल्गोल चन्द्रगिरि और विन्ध्यगिरि के बीच बसा हुआ है। यहाँ के प्राचीन स्मारक इस प्रकार हैं:—

१ भण्डारि बस्ति—यह श्रवण बेल्गोल का सबसे बड़ा मन्दिर है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई २६६ × ७८ फुट है। इसमें एक गर्भगृह, एक सुखनासि, एक मुखमण्डप और प्राकार हैं। गर्भगृह में एक सुन्दर चित्रमय वेदी पर चौबीस तीर्थंकरों की तीन २ फुट ऊँची मूर्त्तियाँ हैं। इसी से इसे चौबीस तीर्थंकरबस्ति भी कहते हैं। गर्भगृह में तीन दरवाजे हैं जिनकी आजू-बाजू जालियाँ बनी हुई हैं। सुखनासि में पद्मा-वती और ब्रह्म की मूर्त्तियाँ हैं। नवरङ्ग के चार स्तम्भों के बीच

जमीन पर एक दस फुट का चौकोर पत्थर बिछा हुआ है। आगे के भाग और बरामदे में भी इतने इतने बड़े पत्थर लगे हुए हैं। ये भारी-भारी पाषाण यहाँ कैसे लाये गये होंगे, यह भी आश्चर्यजनक है। नवरङ्गद्वार की चित्रकारी बड़ी ही मनोहर है। इसमें लताएँ व मनुष्य और पशुओं के चित्र खुदे हुए हैं। मुख्य भवन के चारों ओर बरामदा और पाषाण का चार फुट ऊँचा कठघरा है। बस्ति के सन्मुख एक पाषाण-निर्मित सुन्दर मानस्तम्भ है। होय्सल नरेश नरसिंह (प्रथम) के भण्डारि हुल्ल द्वारा निर्माण कराये जाने के कारण यह भण्डारि बस्ति कहलाती है। लेख नं० १३७ (३४५) और १३८ (३४९) से ज्ञात होता है कि यह शक सं० १०८१ में निर्माण कराई गई थी व नरसिंह नरेश ने इसे भव्य-चूडामडि नाम देकर इसकी रक्षा के हेतु सवणेरु ग्राम का दान दिया था। उक्त लेखों में हुल्ल और उनके बस्ति-निर्माण का सुन्दर वर्णन है।

२ **अक्कन बस्ति**—नगर भर मे यही बस्ति होय्सल-शिल्पकला का एकमात्र नमूना है। इस सुन्दर भवन मे गर्भगृह, सुखनासि, नवरङ्ग और मुखमण्डप हैं। गर्भगृह मे सप्तफणी पार्श्वनाथ की पाँच फुट ऊँची भव्य मूर्त्ति है। गर्भगृह के दरवाजे पर बड़ा अच्छा खुदाई का काम है। सुख-नासि में एक दूसरे के सन्मुख साढे तीन फुट ऊँची पञ्चफणी धरणेन्द्र यक्ष और पद्मावती यक्षिणी की मूर्त्तियाँ हैं। दरवाजे के आसपास जालियाँ हैं। नवरङ्ग के चार काले पाषाण के

बने हुए आइने के सदृश चमकीले स्तम्भ और कुशल कारीगरी के बने हुए नवछत्त बडे ही सुन्दर हैं। मंदिर की गुम्मट अनेक प्रकार की जिन-मूर्त्तियों से चित्रित है, शिखर पर सिंहललाट है। दक्षिण की दीवाल सीधी न होने के कारण उसमे पत्थर के आधार लगाये गये हैं। द्वारे के पास के लेख (नं० १२४ (३२७) से ज्ञात होता है कि यह वस्ति होय्सल नरेश वल्लाल (द्वितीय) के ब्राह्मण मंत्री चन्द्रमौलि की जैन धर्मा-वलम्बिनी भार्या आचियक्क ने शक सं० ११०३ मे निर्माण कराई थी व राजा ने उसकी रक्षा के निमित्त बम्मेयनहल्लि नामक ग्राम का दान दिया था। 'अक्कन' आचियक्कन का ही संक्षिप्त रूप है इसी से इसे अक्कन वस्ति कहते हैं। यही बात लेख नं० ४२६ (३३१) व ४५४ से भी सिद्ध होती है।

३ सिद्धान्त वस्ति—यह वस्ति अकन वस्ति के पश्चिम की ओर है। किसी समय जैन सिद्धान्त के समस्त ग्रंथ इसी वस्ति के एक बन्द कमरे में रक्खे जाते थे। इसी से इसका नाम सिद्धान्त वस्ति पड़ा। कहा जाता है कि धवल, जयधवल आदि अत्यन्त दुर्लभ ग्रंथ यहीं से मूडविद्री गये हैं। इसमे एक पाषाण पर चतुर्विंशति तीर्थंकरो की प्रतिमायें हैं। बीच मे पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा है और उनके आसपास शेष तीर्थंकरों की। यहाँ के लेख नं० ४२७ (३३२) से ज्ञात होता है कि यह चतुर्विंशति मूर्त्ति उत्तर भारत के किसी यात्री ने शक सं० १६२० के लगभग प्रतिष्ठित कराई थी।

४ दानशाले बस्ति—यह छोटा सा देवालय अक्कन बस्ति के द्वार के पास ही है। इसमे एक तीन फुट ऊँचे पाषाण पर पञ्चपरमेष्ठी की प्रतिमायें हैं। चिदानन्द कवि के मुनिवंशाभ्युदय (शक सं० १६०२) के अनुसार मैसूर के चिक्क देवराज ओडेयर ने अपने पूर्ववर्ती नृप दोड्ड देवराज ओडेयर के समय मे (सन् १६५९—१६७२ ईस्वी) बेल्गोल की यात्रा की, दानशाला के दर्शन किये और राजा से उसके लिये मदनेय ग्राम का दान करवाया। यहाँ पहले दान दिया जाता रहा होगा इसी से इस बस्ति का यह नाम पड़ा।

५ नगर जिनालय—इस भवन में गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग हैं। इसमे आदिनाथ की प्रभावली संयुक्त अढ़ाई फुट ऊँची मूर्त्ति है। नवरङ्ग की बाईं ओर एक गुफा में दो फुट ऊँची ब्रह्मदेव की मूर्त्ति है जिसके दायें हाथ में कोई फल और बायें हाथ में कोड़े के आकार की कोई चीज है। पैरों मे खडाऊँ हैं। पीठिका पर घोड़े का चिह्न बना हुआ है। यहाँ के लेख नं० १३० (३३५) से ज्ञात होता है कि इस मन्दिर को होय्सल नरेश बल्लाल (द्वितीय) के 'पट्टणस्वामी' व नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्ति के शिष्य नागदेव मंत्री ने शक सं० ११११८ मे निर्माण कराया था। नगर के महाजनों-द्वारा ही इसकी रक्षा होती थी इसी से इसका नाम नगर जिनालय पड़ा। 'श्रीनिलय' भी इस मंदिर का नाम रहा है। उक्त लेख में नागदेव मंत्री द्वारा कमठपार्श्वनाथबसदि के सन्मुख 'नृत्य

रङ्ग' और अश्मकुट्टिम (पाषाणभूमि) व अपने गुरु नय-कीर्ति देव की निषद्या निर्माण कराये जाने का भी उल्लेख है। लेख नं० १२२ (३२६) के अनुसार उन्होंने नयकीर्त्ति के नाम से ही नागसमुद्र नामक सरोवर भी बनवाया। यह सरोवर अब 'जिगणेकट्टे' कहलाता है। पर लेख नं० १०८ (२५८) मे कहा गया है कि पण्डित यति के तप के प्रभाव से ही नगर जिनालय (नगर जिनास्पद) की सृष्टि हुई।

६ **मङ्गायि बस्ति**—इसमे एक गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग है। इसमें एक साढे चार फुट ऊँची शान्तिनाथ की मूर्त्ति विराजमान है। सुखनासि के द्वार पर आजू-बाजू पॉच फुट ऊँची चवरवाहियों की मूर्त्तियाँ हैं। नवरङ्ग मे वर्द्धमान स्वामी की मूर्त्ति है जिस पर लेख है, ४२९ (३३८)। मन्दिर के सन्मुख सुन्दरता से खचित दो हस्ती हैं। लेख नं० १३२ (३४१) व ४३० (३३९) से ज्ञात होता है कि यह बस्ति अभिनव चारुकीर्ति पण्डिताचार्य के शिष्य बेलगोल के मङ्गायि ने बनवाई थी। उक्त लेखो मे इसे त्रिभुवनचूडामणि कहा है। ये लेख शक की तेरहवीं शताब्दि के ज्ञात होते हैं। शान्तिनाथमूर्त्ति की पीठिका पर के लेख से विदित होता है कि वह मूर्त्ति पण्डिताचार्य की शिष्या व देवराय महाराज की रानी भीमादेवी ने प्रतिष्ठित कराई थी [लेख नं० ४२८ (३३७)]। ये देवराय सम्भवतः विजयनगर के राजा देवराज प्रथम हैं जिनका राज्य सन् १४०६ से १४१६ तक रहा था।

उक्त महावीर स्वामी की पीठिका पर के लेख से सिद्ध होता है कि उनकी प्रतिष्ठा पण्डितदेव की शिष्या बसवायि ने कराई थी। इसका भी उक्त समय ही अनुमान होता है। इसी मंदिर के एक लेख [नं० १३४ (३४२)] से विदित होता है कि इसकी मरम्मत सम्भवतः शक सं० १३३४ मे गेरसोप्पे के हिरिय अय्य के शिष्य गुम्मटण्ण ने कराई थी।

७ जैनमठ—यह यहाँ के गुरु का निवास-स्थान है। इमारत बहुत सुन्दर है, बीच में खुला हुआ आँगन है। हाल ही मे दूसरी मञ्जिल भी बन गई है। मण्डप के खम्भे अच्छी कारीगरी के बने हुए हैं। उन पर खूब चित्रकारी है। यहाँ के तीन गर्भगृहो में अनेक पाषाण और धातु की मूर्त्तियाँ हैं। इनमें की अनेक मूर्त्तियाँ बहुत अर्वाचीन हैं। इन पर संस्कृत व तामिल भाषा मे ग्रंथ अक्षरों के लेख हैं जिनसे ज्ञात होता है कि वे अधिकांश मद्रास प्रान्तीय धर्मिष्ठ भाइयों ने प्रदान की हैं। नवदेवता बिम्ब मे पञ्चपरमेष्ठी के अतिरिक्त जिनधर्म, जिनागम, चैत्य और चैत्यालय भी चित्रित हैं। मठ की दीवालों पर तीर्थंकरो व जैन राजाओं के जीवन की घटनाओं के अनेक रङ्गीन चित्र हैं। इनमें मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय के 'दसर दरबार' का भी चित्र है। पार्श्वनाथ के समवसरण व भरत चक्रवर्त्ति के जीवन के चित्र भी दर्शनीय हैं। चार चित्र नागकुमार की जीवन-घटनाओं के हैं। एक वन के दृश्य में षड्लेश्याओं के पुरुषो के चरित्र बडी उत्तम रीति

से चित्रित किये गये हैं। ऊपर की मञ्जिल में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति है और एक काले पाषाण पर चतुर्विंशति तीर्थंकर खचित हैं।

कहा जाता है कि चामुण्डराय ने गोम्मटेश्वर की मूर्त्ति निर्माण कराकर अपने गुरु नेमिचन्द्र को यहाँ का मठाधीश नियुक्त किया। यह भी कहा जाता है कि इससे पहले भी यहाँ गुरु-परम्परा चली आती थी। लेख नं० १०५ (२५४) व १०८ (२५८) में उल्लेख है कि यहाँ के एक गुरु चारु-कीर्त्ति पण्डित ने होय्सल नरेश बल्लाल प्रथम (सन् ११००-११०६) को एक बड़ी दुस्साध्य व्याधि से मुक्त किया था जिससे उन्हें बल्लालजीवरक्षक की उपाधि मिली थी।

८ कल्याणि—यह नगर के बीच के एक छोटे से सरोवर का नाम है। इसके चारों ओर सीढ़ियाँ और दीवाल हैं। दीवाल के दरवाजे शिखरबद्ध हैं। उत्तर की ओर एक सभा-मण्डप है जिसके एक स्तम्भ पर लेख है (४४४ (३६५) कि यह सरोवर चिक्कदेव राजेन्द्र ने बनवाया। मैसूर के चिक्क-देवराजेन्द्र ने सन् १६७२ से १७०४ तक राज्य किया है। अनन्त कवि-कृत गोम्मटेश्वरचरित (शक सं०१७००) में उल्लेख है कि चिक्कदेवराज ने अपने टकसाल के अध्यक्ष अण्णय्य की प्रार्थना से 'कल्याणि' निर्माण कराया। पर सरोवर के पूरे होने से प्रथम ही राजा की मृत्यु हो गई, तब अण्णय्य ने उसे चिक्कदेवराज के पौत्र कृष्णराज ओडेयर

प्रथम (सन् १७१३–१७३१) के समय मे शिखर, सभामण्डप आदि बनवाकर पूर्ण कराया। सम्भवत: यही बड़ा पुराना सरोवर रहा है जिस पर से इस नगर का नाम बेल्गुल (धवल सरोवर) पडा। उक्त पुरुषों ने सम्भवत: इसका जीर्णोद्धार कराया होगा। यह भी हो सकता है कि इस स्थान को नाम देनेवाला धवल सरोवर कोई अन्य ही रहा हो।

९ जक्किकट्टे—यह भण्डारि बस्ति के दक्षिण में एक छोटा सा सरोवर है। इसके पास की दो चट्टानों पर जैन प्रतिमाओं के नीचे के दो लेखों नं० ४४६ (३६७) और ४४७ (३६८) से ज्ञात होता है कि बोप्पदेव की माता, गङ्गराज के ज्येष्ठ भ्राता की भार्या, शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या जक्किमव्वे ने ये जिनमूर्त्तियाँ और सरोवर निर्माण कराये। लेख नं० ४३ (११७) व अन्य लेखो से सिद्ध है कि गङ्गराज होय्सल नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति थे और शक सं० १०४५ मे जीवित थे। इस लेख मे जक्किमव्वे की भी प्रशस्ति है। सारोहल्लि के एक लेख नं० ४८९ (४००) से ज्ञात होता है कि इसी धर्मपरायणा साध्वी महिला ने वहाँ भी एक बस्ति निर्माण कराई थी।

१० चेन्नगण का कुण्ड—नगर से दक्षिण की ओर कुछ दूरी पर यह कुण्ड है। इसका निर्माता वही चेन्नण्ण बस्ति का निर्माता चेन्नण्ण है। चेन्नण्ण की कृतियों का उल्लेख लेख नं० १२३ तथा ४४८-४५३ व ४६३–४६५ में है।

नं० ४८० (३६०) से इस कुण्ड का समय शक सं० १५६५ के लगभग प्रतीत होता है।

श्रवणबेल्गोल के आसपास के ग्राम

जिननाथ पुर—यह श्रवणबेल्गोल से एक मील उत्तर की ओर है। लेख नं० ४७८ (३८८) के अनुसार इसे होय्सल-नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति गङ्गराज ने शक सं० १०४० के लगभग बसाया था।

शान्तिनाथ बस्ति

यहाँ की शान्तिनाथ बस्ति होय्सल शिल्पकारी का बहुत सुन्दर नमूना है। इसमे एक गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग हैं। शान्तिनाथ की साढ़े पाँच फुट ऊँची मूर्त्ति बड़ी भव्य और दर्शनीय है। वह प्रभावली और दोनों ओर चवरवाहियों से सुसज्जित है। नवरङ्ग के चार स्तम्भ अच्छी मूँगे की कारीगरी के बने हुए हैं। इसके नवछत्त भी बड़े सुन्दर हैं। आमने-सामने दो सुन्दर आले बने हुए हैं जो अब खाली हैं। बाहिरी दीवालों पर अनेक चित्रपट हैं। कई चित्र अधूरे ही रह गये हैं। इनमे तीर्थंकर, यक्ष, यक्षिणी, ब्रह्म, सरस्वती, मन्मथ, मोहिनी, नृत्यकारिणी, गायक, वादित्रवाही आदि के चित्र हैं। नारी-चित्रों की सख्या चालीस है।

यह बस्ति मैसूर राज्य भर के जैन मंदिरों में सबसे अधिक आभूषित है। शान्तिनाथ की पीठिका के लेख नं० ४७१

(३८०) से ज्ञात होता है कि इस वस्ति को 'वसुधैकबान्धव रेचिमय्य' सेनापति ने बनवाकर सागरनन्दि सिद्धान्तदेव के अधिकार में दे दो थी। एक लेख (ए० क० अर्सीकेरे ७७ सन् १२२०) में उल्लेख है कि उक्त सेनापति कलचुरि-नरेश के मंत्री थे, पश्चात् उन्होंने होय्सल नरेश बल्लाल (द्वितीय) (सन् ११७३-१२२०) की शरण ली। इससे शान्तिनाथ वस्ति के निर्माण का समय लगभग शक सं० ११२० सिद्ध होता है। नवरङ्ग के एक स्तम्भ पर के लेख नं० ४७० (३८६) से विदित होता है कि इस वस्ति का जीर्णोद्धार पालेद पदुमन्न ने शक सं० १५५३ में कराया था।

अरेगल वस्ति

ग्राम के पूर्व में अरेगल वस्ति नाम का एक दूसरा मंदिर है। यह शान्तिनाथ वस्ति से भी पुराना है। इसमें पार्श्वनाथ भगवान् की सप्तफणी, प्रभावली संयुक्त पाँच फुट ऊँची पद्मासन मूर्त्ति है। सुखनासि में धरणेन्द्र और पद्मावती के सुन्दर चित्र हैं। मन्दिर में सफाई अच्छी रहती है। एक चट्टान (अरेगल) के ऊपर निर्मित होने से ही यह मन्दिर अरेगल वस्ति कहलाता है। पार्श्वनाथ की पीठिका पर के लेख नं० ४७४ (३८३) से विदित होता है कि वह मूर्त्ति शक सं० १८१२ में बेलगुल के भुजबलैय्य ने प्रतिष्ठित कराई है। इसका कारण यह था कि प्राचीन मूर्त्ति बहुत खण्डित हो गई थी। वह प्राचीन मूर्त्ति अब पास ही के तालाब में पड़ी हुई है और उसका छत्र वस्ति के द्वारे के पास

रक्खा हुआ है जहाँ पर कि लेख नं० १४४ (३८४) है। मदिर में चतुर्विंशति तीर्थंकर, पञ्चपरमेष्ठी, नवदेवता, नन्दीश्वर आदि की धातुनिर्मित मूर्त्तियाँ भी हैं।

ग्राम की नैऋत दिशा में एक समाधिमण्डप है। इसे शिलाकूट कहते हैं। मण्डप चार फुट लम्बा-चौड़ा और पाँच फुट ऊँचा है। ऊपर शिखर है। इसके चारों ओर दीवाले हैं पर दरवाजा एक भी नहीं है। इस पर के लेख नं ४७६ (३८६) से वह वालचन्द्रदेव के तनय की निषद्या सिद्ध होती है जिनकी मृत्यु शक सं ११३६ मे हुई। लेख मे वालचन्द्रदेव के तनय का नाम घिस गया है, पर उनके गुरु वेलिकुम्ब के नेमिचन्द्र पण्डित व निषद्या निर्मापक वैरोज के नाम लख में पढ़े जाते हैं। लेख के अन्तिम भाग मे यह भी लिखा है कि एक साध्वी स्त्री कालव्वे ने सल्लेखना विधि से शरीरान्त किया। सम्भवतः यह उक्त मृत पुरुष की विधवा पत्नी रही होगी।

ऐसा ही एक समाधिमण्डप तावरेकेरे सरोवर के समीप है। इसके पास जो लेख (नं० १४२ (३६२) है उससे विदित होता है कि यह चारुकीर्ति पण्डित की निषद्या है जिनकी मृत्यु शक सं० १५६५ में हुई।

लेख नं० ४० (६४) मे उल्लेख है कि देवकीर्ति पण्डित, जिनकी मृत्यु शक सं० १०८५ मे हुई, ने जिननाथ पुर में एक दानशाला निर्माण कराई थी।

हलेवेल्गोल—यह ग्राम श्रवणवेल्गोल से चार मील उत्तर की ओर है। यहाँ का होय्सल शिल्पकारी का बना हुआ जैनमन्दिर ध्वंस अवस्था में है। गर्भगृह में अढ़ाई फुट की खड्गासन मूर्त्ति है। सुखनासि में लगभग पाँच फुट ऊँची सप्तफणी पार्श्वनाथ की खण्डित मूर्त्ति रक्खी है। नवरङ्ग में अच्छी चित्रकारी है। बीच की छत पर देवियों-सहित रथारूढ़ अष्टदिक्पालों के चित्र हैं जिनके बीच में पञ्चफणी धरणेन्द्र का चित्र है। धरणेन्द्र के बाँयें हाथ में धनुप और दाहिने में सम्भवतः शङ्ख है। नवरङ्ग में दो चवरवाही और एक तीर्थंकर मूर्त्ति खण्डित रक्खी हुई है। नवरङ्ग के द्वार पर अच्छी कारीगरी दिखलाई गई है। इस मन्दिर के सन् १०६४ के लेख (नं० ४६२) से विदित होता है कि विष्णु-वर्द्धन के पिता होय्सल एरेयङ्ग ने वेल्गोल के मन्दिरों के जीर्णो-द्धार के लिये जैनगुरु गोपनन्दि को राचनहल्ल ग्राम का दान दिया। इस लेख व लेख नं० ५५ (६६) में गोपनन्दि की खूब प्रशंसा पाई जाती है। यह वस्ति संभवतः लगभग शक सं० १०१६ की बनी हुई है।

इस ग्राम में एक शैव और एक वैष्णव मन्दिर भी है। ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में यहाँ अधिक मन्दिर रहे हैं क्योंकि यहाँ के एक तालाब की नहर में प्रायः सारा मसाला टूटे हुए मन्दिरों का लगा हुआ है। ग्राम के मध्य में एक तालाब के पास एक खण्डित जिन प्रतिमा भी है।

साणेहल्लि—यह ग्राम श्रवणबेलगुल से तीन मील पर है। यहाँ एक ध्वंस जैन मन्दिर है। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, लेख नं० ४८६ (४००) के अनुसार इसे गङ्गराज की भावज जक्किमब्बे ने निर्माण कराया था।

लेखों की ऐतिहासिक उपयोगिता

विशेष राजवंशों से सम्बन्ध रखनेवाले लेखों का विवेचन करने से पूर्व यहाँ एक ऐसी घटना पर कुछ विचार करना आवश्यक है जिसका राजकीय व जैन-धार्मिक इतिहास से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। जैनसंघ के नायक भद्रबाहु स्वामी के साथ भारतसम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य की दक्षिण यात्रा का प्रसङ्ग जैसा जैन इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण है वैसा ही वह भारत के राजकीय इतिहास मे अनुपेक्षणीय है। लगातार कई वर्षों से इस विषय पर इतिहासवेत्ताओं में मतभेद चला आता है। यद्यपि मतभेद का अभी तक अन्त नहीं हुआ, पर अधिकांश विद्वानो का झुकाव एक ओर होने से इस विषय का प्रायः निर्णय ही समझना चाहिए। संक्षेप में, जैनसाहित्य में यह प्रसङ्ग इस प्रकार पाया जाता है—अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी ने निमित्त-ज्ञान से जाना कि उत्तर भारत में एक बारह वर्ष का भीषण दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। ऐसी विपत्ति के समय में वहाँ मुनिवृत्ति का पालन होना कठिन जान

उन्होंने अपने समस्त शिष्यों-सहित दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। भारतसम्राट् चन्द्रगुप्त ने भी इस दुर्भिक्ष का समाचार पा, संसार से विरक्त हो, राज्यपाट छोड़ भद्रबाहु स्वामी से दीक्षा ली और उन्हीं के साथ गमन किया। जब यह मुनि-संघ श्रवण बेलगोल स्थान पर पहुँचा तब भद्रबाहु स्वामी ने अपनी आयु बहुत थोड़ी शेष जान, संघ को आगे बढ़ने की आज्ञा दी और आप चन्द्रगुप्त शिष्य-सहित छोटी पहाड़ी पर रहे। चन्द्रगुप्त मुनि ने अन्त समय तक उनकी खूब सेवा की और उनका शरीरान्त हो जाने पर उनके चरणचिह्न की पूजा में अपना शेष जीवन व्यतीत कर अन्त में सल्लेखना विधि से शरीरत्याग किया।

अब देखना चाहिए कि श्रवण बेलगोल के स्थानीय इतिहास से, शिलालेखों से व साहित्य से इस बात का कहाँ तक समर्थन होता है। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त के वहाँ रहने से ही उस पहाड़ी का नाम चन्द्रगिरि पड़ा। इस पहाड़ी पर की प्राचीनतम बस्ति चन्द्रगुप्त द्वारा ही पहले-पहल निर्माण कराये जाने के कारण चन्द्रगुप्त बस्ति कहलाई। इस पहाड़ी पर की भद्रबाहु गुफा में चन्द्रगुप्त के भी चरण-चिह्न हैं। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त ने इसी गुफा में समाधिमरण किया था। सेरिङ्गपट्टम के दो शिलालेखों (ए० क० ३, सेरिङ्गपट्टम १४७, १४८) में उल्लेख है कि कल्वप्पु शिखर (चन्द्रगिरि) पर महामुनि भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त के चरण-चिह्न हैं। ये शिला-

लेख लगभग शक सं० ८२२ के हैं। श्रवणबेलगोल के लगभग शक स० ५७२ के लेख नं० १७-१८ (३१) मे कहा गया है कि 'जो जैनधर्म भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र के तेज से भारी समृद्धि को प्राप्त हुआ था उसके किञ्चित् क्षीण हो जाने पर शान्तिसेन मुनि ने उसे पुनरुत्थापित किया।' शक सं० १०५० के लेख नं० ५४ (६७) (श्लोक ४) मे भद्रबाहु और उनके शिष्य चन्द्रगुप्त का उल्लेख है। ऐसा ही उल्लेख शक सं० १०८५ के लेख नं० ४० (६४) (श्लोक ४-५) में व शक सं० १३५५ के लेख नं० १०८ (२५८) (श्लोक ८-९) में है। इन उल्लेखों में चन्द्रगुप्त की गुरुभक्ति और तपश्चरण की महिमा गाई गई है।

साहित्य मे इस प्रसङ्ग का सबसे प्राचीन उल्लेख हरिषेण-कृत 'बृहत्कथाकोष' मे पाया जाता है। यह ग्रन्थ शक सं० ८५३ का रचा हुआ है। इसमे भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त का वर्णन इस प्रकार पाया जाता है—'पौण्ड्रवर्धन देश मे देवकोट नाम का नगर था। इस नगर का प्राचीन नाम कोटिपुर था। यहाँ पद्मरथ नाम का राजा राज्य करता था। इनके एक पुरोहित सोमशर्मा और उनकी भार्या सोमश्री के भद्रबाहु नामक पुत्र हुआ। एक दिन अन्य बालकों के साथ नगर में खेलते हुए भद्रबाहु को चतुर्थ श्रुतकेवली गोवर्धन ने देखा। उन्होंने देखकर जान लिया कि यही बालक अन्तिम श्रुतकेवली होनेवाला है। अतएव माता-पिता की अनुमति से उन्होंने

भद्रबाहु को अपने संरक्षण में ले लिया और उन्हें सब विद्याएँ सिखाईं। यथासमय भद्रबाहु ने गोवर्धन स्वामी से जिन दीक्षा धारण की। एक समय विहार करते हुए भद्रबाहु स्वामी उज्जैनी नगरी में पहुँचे और सिप्रा नदी के तीर एक उपवन में ठहरे। इस समय उज्जैनी में जैनधर्मावलम्बी राजा चन्द्रगुप्त अपनी रानी सुप्रभा-सहित राज्य करते थे। जब भद्रबाहु स्वामी आहार के निमित्त नगरी में गये तब एक गृह में झूले में झूलते हुए शिशु ने उन्हें चिल्लाकर मना किया और वहाँ से चले जाने को कहा। इस निमित्त से स्वामी को ज्ञात हो गया कि वहाँ एक बारह वर्ष का भीषण दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। इस पर उन्होंने समस्त संघ को बुला-कर सब हाल कहा और कहा कि "अब तुम लोगों को दक्षिण देश को चले जाना चाहिए। मैं स्वयं यहीं ठहरूँगा क्योंकि मेरी आयु क्षीण हो चुकी है।"*

जब चन्द्रगुप्त महाराज ने यह सुना तब उन्होंने विरक्त होकर भद्रबाहु स्वामी से जिन दीक्षा ले ली। फिर चन्द्रगुप्त मुनि, जो दशपूर्वियों में प्रथम थे, विशाखाचार्य के नाम से जैन संघ के नायक हुए। भद्रबाहु की आज्ञा से वे संघ को दक्षिण के पुन्नाट† देश को ले गये। इसी प्रकार रामिल्ल, स्थूलवृद्ध,

---

* अहमत्रैव तिष्ठामि क्षीणमायुर्ममाधुना।

† पुन्नाट बड़ा पुराना राज्य रहा है। कन्नड साहित्य में यह पुन्नाड के नाम से प्रसिद्ध है। 'टाल्मी' ने इसका उल्लेख 'पौन्नट'

और भद्राचार्य अपने-अपने संघों-सहित सिंधु आदि देशों को भेजे गये। स्वयं भद्रबाहु स्वामी उज्जयिनी के 'भाद्रपद' नामक स्थान पर गये और वहाँ उन्होंने कई दिन तक अनशन व्रत कर समाधिमरण किया *। जब द्वादशवर्षीय दुर्भिक्ष का अन्त हो गया तब विशाखाचार्य संघ-सहित दक्षिण से मध्यदेश को लौट आये।

दूसरा ग्रंथ, जिसमें उपर्युक्त प्रसङ्ग आया है, रत्ननन्दिकृत भद्रबाहुचरित है। रत्ननन्दि, अनन्तकीर्ति के शिष्य ललितकीर्ति के शिष्य थे। उनका ठीक समय ज्ञात नहीं है पर वे पन्द्रहवीं सोलहवीं शताब्दि के लगभग अनुमान किये जाते हैं। इस ग्रन्थ में प्रायः ऊपर के ही समान भद्रबाहु का प्राथमिक वृत्तान्त देकर कहा गया है कि वे जब उज्जयिनी आ गये तब वहाँ के राजा 'चन्द्रगुप्त' ने उनकी खूब भक्ति की और उनसे

नाम से किया है और कहा है कि वहाँ रक्तमणि (beryl) बहुत पाये जाते हैं। यहाँ के शङ्खवर्मा आदि राजाओं की राजधानी 'कीर्तिपुर' थी। कीर्तिपुर कदाचित् मैसूर जिले के हेग्गड्डे वन्कोटे तालुके में कपिनी नदी पर के आधुनिक 'कित्तूर' का ही प्राचीन नाम है। हरिषेण और जिनसेन कवि अपने को पुन्नाट संघ के कहते हैं। यह संघ सम्भवतः 'कित्तूर' संघ का ही दूसरा नाम है जिसका उल्लेख शिलालेख नं० १९४ (८१) में आया है।

* प्राप्य भाद्रपदं देशं श्रीमदुज्जयिनीभवम्।
चकारानशनं धीरः स दिनानि बहून्यलम्॥
समाधिमरणं प्राप्य भद्रबाहुर्दिवं ययौ॥

अपने सोलह स्वप्नों का फल पूछा। इनके फल-कथन में भद्रबाहु ने कहा कि यहाँ द्वादश वर्ष का दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। इस पर चन्द्रगुप्त ने उनसे दीक्षा ले ली। फिर भद्रबाहु अपने बारह हजार शिष्यों-सहित 'कर्नाटक' को जाने के लिये दक्षिण को चल दिये। जब वे एक वन में पहुँचे तब अपनी आयु पूरी हुई जान उन्होंने विशाखाचार्य को अपने स्थान पर नियुक्त कर उन्हें संघ को आगे ले जाने के लिये कहा और आप चन्द्रगुप्ति-सहित वहीं ठहर गये। संघ चोड देश को चला गया। थोड़े समय पश्चात् भद्रबाहु ने समाधिमरण किया। चन्द्रगुप्ति उनके चरण-चिह्न बनाकर उनकी पूजा करते रहे। विशाखाचार्य जब दक्षिण से लौटे तब चन्द्रगुप्ति मुनि ने उनका आदर किया। विशाखाचार्य ने भद्रबाहु की समाधि की वन्दना कर कान्यकुब्ज को प्रस्थान किया।

चिदानन्द कवि के मुनिवंशाभ्युदय नामक कन्नड काव्य में भी भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त की कुछ वार्ता आई है। यह ग्रन्थ शक सं० १६०२ का बना हुआ है। इसमें कथन है कि "श्रुतकेवली भद्रबाहु बेलगोल को आये और चिक्कबेट्ट (चन्द्रगिरि) पर ठहरे। कदाचित् एक व्याघ्र ने उन पर धावा किया और उनका शरीर विदीर्ण कर डाला। उनके चरणचिह्न अब तक गिरि पर एक गुफा में पूजे जाते हैं.. ... ..अर्हद्बलि की आज्ञा से दक्षिणाचार्य बेलगोल आये। चन्द्रगुप्त भी यहाँ तीर्थयात्रा को आये थे। इन्होंने दक्षिणाचार्य से दीक्षा ग्रहण की

और उनके बनवाये हुए मन्दिर की तथा भद्रबाहु के चरण-चिह्नों की पूजा करते हुए वहाँ रहे। कुछ कालोपरान्त दक्षिणाचार्य ने अपना पद चन्द्रगुप्त को दे दिया।"

शक सं० १७६१ के बने हुए देवचन्द्रकृत राजावलीकथा नामक कन्नड ग्रन्थ में यह वार्ता प्रायः रत्ननन्दिकृत भद्रबाहुचरित के समान ही पाई जाती है। पर इस ग्रन्थ में और भी कई छोटी-छोटी बातें दी हुई हैं जो अधिक महत्त्व की नहीं हैं। यहाँ कथन है कि श्रुतकेवली विष्णु, नन्दिमित्र और अपराजित व पाँच सौ शिष्यों के साथ गोवर्धनाचार्य जम्बूस्वामी के समाधिस्थान की वन्दना करने के हेतु कोटिकपुर में आये। राजा पद्मरथ की सभा मे भद्रबाहु ने एक लेख, जिसे अन्य कोई भी विद्वान् नही समझ सका था, राजा को समझाया। इससे उनकी विलक्षण बुद्धि का पता चला। कार्त्तिक की पूर्णमासी की रात्रि को पाटलिपुत्र के राजा चन्द्रगुप्त को सोलह स्वप्न हुए। प्रातःकाल यह समाचार पाकर कि भद्रबाहु नगर के उपवन में विराजमान हैं, राजा अपने मन्त्रियों-सहित उनके पास गये। राजा का अन्तिम स्वप्न यह था कि एक बारह फण का सर्प उनकी ओर आ रहा है। इसका फल भद्रबाहु ने यह बतलाया कि वहाँ बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पडनेवाला है। एक दिन जब भद्रबाहु आहार के लिये नगर मे गये तब उन्होने एक गृह के सामने खड़े होकर सुना कि उस घर में एक झूले में झूलता हुआ बालक जोर-जोर से चिल्ला रहा है।

वह शिशु वारह बार चिल्लाया पर किसी ने उसकी आवाज नहीं सुनी। इससे स्वामीजी को विदित हुआ कि दुर्भिक्ष प्रारम्भ हो गया है। राजा के मन्त्रियों ने दुर्भिक्ष को रोकने के लिये कई यज्ञ किये। पर चन्द्रगुप्त ने उन सबके पापों के प्रायश्चित्त-स्वरूप अपने पुत्र सिंहसेन को राज्य दे भद्रबाहु से जिन दीक्षा ले ली और उन्हीं के साथ हो गये। भद्रबाहु अपने वारह हजार शिष्यों-सहित दक्षिण को चल पड़े। एक पहाड़ी पर पहुँचने पर उन्हें विदित हुआ कि उनकी आयु अब बहुत थोडी शेष है; इसलिये उन्होंने विशाखाचार्य को संघ का नायक बनाकर उन्हें चोल और पाड्य देश को भेज दिया। केवल चन्द्रगुप्त को उन्होंने अपने साथ रहने की अनुमति दी। उनके समाधिमरण के पश्चात् चन्द्रगुप्त उनके चरणचिह्नों की पूजा करते रहे। कुछ समय पश्चात् सिंहसेन नरेश के पुत्र भास्कर नरेश भद्रबाहु के समाधिस्थान की तथा अपने पितामह की वन्दना के हेतु वहाँ आये और कुछ समय ठहरकर उन्होंने वहाँ जिनमन्दिर निर्माण कराये, तथा चन्द्रगिरि के समीप बेल्गोल नामक नगर बसाया। चन्द्रगुप्त ने इसी गिरि पर समाधिमरण किया।

इस सम्बन्ध में सबसे प्राचीन प्रमाण चन्द्रगिरि पर पार्श्वनाथ वस्ति के पास का शिलालेख (नं० १) है। यह लेख श्रवणबेल्गोल के समस्त लेखों मे प्राचीनतम सिद्ध होता है। इस लेख मे कथन है कि "महावीर स्वामी के पश्चात् परमर्षि

गौतम, लोहार्य, जम्बू विष्णुदेव, अपराजित, गोवर्द्धन, भद्रबाहु, विशाख, प्रोष्ठिल, कृतिकार्य, जय, सिद्धार्थ, धृतिषेण, बुद्धिलादि गुरुपरम्परा में होनेवाले भद्रबाहु स्वामी के त्रैकाल्यदर्शी निमित्त-ज्ञान द्वारा उज्जयिनी में यह कथन किये जाने पर कि वहाँ द्वादश वर्ष का वैषम्य (दुर्भिक्ष) पड़नेवाला है, सारे संघ ने उत्तरापथ से दक्षिणापथ को प्रस्थान किया और क्रम से वह एक बहुत समृद्धियुक्त जनपद मे पहुँचा। यहाँ आचार्य प्रभाचन्द्र ने व्याघ्रादि व दरीगुफादि-संकुल सुन्दर कटवप्र नामक शिखर पर अपनी आयु अल्प ही शेष जान समाधितप करने की आज्ञा लेकर, समस्त संघ को आगे भेजकर व केवल एक शिष्य को साथ रखकर देह की समाधि-आराधना की।"

ऊपर इस विषय के जितने उल्लेख दिये गये हैं उनमें दो बातें सर्वसम्मत हैं—प्रथम यह कि भद्रबाहु ने बारह वर्ष के दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी की और दूसरे यह कि उस वाणी को सुनकर जैनसंघ दक्षिणापथ को गया। हरिषेण के अनुसार भद्रबाहु दक्षिणापथ को नहीं गये। उन्होंने उज्जयिनी के समीप ही समाधिमरण किया और चन्द्रगुप्ति मुनि अपर नाम विशाखाचार्य संघ को लेकर दक्षिण को गये। भद्रबाहुचरित तथा राजावलीकथा के अनुसार भद्रबाहु स्वामी ने ही श्रवण-बेलगोल तक संघ के नायक का काम किया तथा श्रवणबेलगोल की छोटी पहाड़ी पर वे अपने शिष्य चन्द्रगुप्त-सहित ठहर गये। मुनिवंशाभ्युदय तथा उपर्युल्लिखित सेरिङ्गपट्टम के दो लेख,

श्रवणबेल्गोल के लेख नं० १७-१८, ४०, ५४ तथा १०८ भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त दोनों का चन्द्रगिरि से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। पर जैसा कि ऊपर के वृत्तान्त से विदित होगा, शिलालेख नं० १ की वार्ता इन सबसे विलक्षण है। उसके अनुसार त्रिकालदर्शी भद्रबाहु ने दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी की, जैन संघ दक्षिणापथ को गया व कटवप्र पर प्रभाचन्द्र ने जैन संघ को आगे भेजकर एक शिष्य-सहित समाधि-आराधना की। यह वार्ता स्वयं लेख के पूर्व और अपर भागों मे वैषम्य उपस्थित करने के अतिरिक्त ऊपर उल्लिखित समस्त प्रमाणों के विरुद्ध पडती है। भद्रबाहु दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी करके कहाँ चले गये, प्रभाचन्द्र आचार्य कौन थे, उन्हें जैन संघ का नायकत्व कब और कहाँ से प्राप्त हो गया इत्यादि प्रश्नों का लेख में कोई उत्तर नहीं मिलता। इस उलझन को सुलझाने के लिये हमने लेख के मूल की सूक्ष्म रीति से जाँच की। इस जाँच से हमे ज्ञात हुआ कि उपर्युक्त सारा बखेड़ा लेख की छठी पंक्ति मे 'आचार्यः प्रभाचन्द्रोनामावनितल .. ... 'इत्यादि पाठ से खड़ा होता है। यह पाठ डा० फ्लीट और रायबहादुर नरसिंहाचार का है। श्रवणबेल्गोल शिलालेखों के प्रथम संग्रह के रचयिता राइस साहब ने 'प्रभाचन्द्रोना .... ' की जगह 'प्रभाचन्द्रेण . ...' पाठ दिया है। डा० टा० के० लड्डू भी राइस साहब के पाठ को ठीक समझते हैं। 'प्रभाचन्द्रो' की जगह 'प्रभाचन्द्रेण' होने से उपर्युक्त सारा बखेड़ा सहज ही

तय हो जाता है। इससे 'आचार्यः' का सम्बन्ध भद्रबाहु स्वामी से हो जाता है और लेख का यह अर्थ निकलता है कि भद्रबाहु स्वामी संघ को आगे बढ़ने की आज्ञा देकर आप प्रभाचन्द्र नामक एक शिष्य-सहित कटवप्र पर ठहर गये और उन्होंने वहीं समाधिमरण किया। इससे लेख के पूर्वापर भागों में सामञ्जस्य स्थापित हो जाता है और अन्य प्रमाणों से कोई विरोध नहीं रहता। मूल मे 'प्रभाचन्द्रोना' 'प्रभाचन्द्रेणाम' भी पढ़ा जा सकता है। इस पाठ में कठिनाई केवल यह आती है कि 'म' अक्षर का कोई अर्थ व सम्बन्ध नहीं रहता। पर इसके परिहार मे यह कहा जा सकता है कि लेख को खोदनेवाले ने 'प्रभाचन्द्रेणनाम...'की जगह भ्रम से'प्रभाचन्द्रेणाम' खोद दिया है; वह 'न' को भूल गया। ऐसी भूलें शिलालेखों मे बहुधा पाई जाती हैं। प्रभाचन्द्र के भद्रबाहु के शिष्य होने से ऊपर के समस्त प्रमाणों द्वारा यह बात सहज ही समझ मे आ जाती है कि प्रभाचन्द्र चन्द्रगुप्त का ही नामान्तर व दीक्षा-नाम होगा।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि ये भद्रबाहु और चन्द्र-गुप्त कौन थे और कब हुए। शिलालेख नं० १, जिसकी वार्त्ता पर हम ऊपर विचार कर चुके हैं, अपनी लिखावट पर से अपने को लगभग शक संवत् की पाँचवीं-छठी शताब्दि का सिद्ध करता है। अतः उसमें उल्लिखित भद्रबाहु और प्रभाचन्द्र (चन्द्रगुप्त) शक की पाँचवीं छठी शताब्दि से पूर्व

होना चाहिये। दिगम्बर पट्टावलियों में महावीर स्वामी के समय से लगाकर शक की उक्त शताब्दियों तक 'भद्रबाहु' नाम के दो आचार्यों के उल्लेख मिलते हैं, एक तो अन्तिम श्रुत-केवली भद्रबाहु और दूसरे वे भद्रबाहु जिनसे सरस्वती गच्छ की नन्दी आम्नाय की पट्टावली प्रारम्भ होती है। दूसरे भद्रबाहु का समय ईस्वी पूर्व ५३ वर्ष व शक संवत् से १३१ वर्ष पूर्व पाया जाता है। इनके शिष्य का नाम गुप्तिगुप्त पाया जाता है जो इनके पश्चात् पट्ट के नायक हुए। डा० फ्लीट का मत है कि दक्षिण की यात्रा करनेवाले ये ही द्वितीय भद्र-बाहु हैं और चन्द्रगुप्त उनके शिष्य गुप्तिगुप्त का ही नामान्तर है। पर इस मत के सम्बन्ध में कई शंकाएँ उत्पन्न होती हैं। प्रथम तो गुप्तिगुप्त और चन्द्रगुप्त को एक मानने के लिये कोई प्रमाण नहीं हैं, दूसरे इससे उपर्युक्त प्रमाणों मे जो चन्द्र-गुप्त नरेश के राज्य त्यागकर भद्रबाहु से दीक्षा लेने का उल्लेख है, उसका कुछ खुलासा नहीं होता और तीसरे जिस द्वादश-वर्षीय दुर्भिक्ष के कारण भद्रबाहु ने दक्षिण की यात्रा की थी उस दुर्भिक्ष के द्वितीय भद्रबाहु के समय में पड़ने के कोई प्रमाण नहीं मिलते। इन कारणों से डा० फ्लीट की कल्पना बहुत कमज़ोर है और अन्य कोई विद्वान् उसका समर्थन नहीं करते। विद्वानों का अधिक झुकाव अब इसी एकमात्र युक्तिसंगत मत की ओर है कि दक्षिण की यात्रा करनेवाले भद्रबाहु अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु ही हैं और उनके

साथ जाने वाले उनके शिष्य चन्द्रगुप्त स्वयं भारत सम्राट् चन्द्रगुप्त के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हैं। यद्यपि वीर निर्वाण के समय का अब तक अन्तिम निर्णय न हो सकने के कारण भद्रबाहु का जो समय जैन पट्टावलियों और ग्रंथों में पाया जाता है तथा चन्द्रगुप्त सम्राट् का जो समय आजकल इतिहास सर्व सम्मति से स्वीकार करता है उनका ठीक समीकरण नहीं होता, * तथापि दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदाय के ग्रंथों से भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त समसामयिक सिद्ध होते हैं। इन दोनों सम्प्रदायों के ग्रंथों में इस विषय पर कई विरोध होने पर भी वे उक्त बात पर एकमत हैं। हेमचन्द्राचार्य के 'परिशिष्ट पर्व' से यह भी सिद्ध होता है कि इस समय बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पड़ा था, तथा 'उस भयङ्कर दुष्काल के पड़ने पर जब साधु समुदाय को भिक्षा का अभाव होने लगा तब सब लोग निर्वाह के लिये समुद्र के समीप गाँवों मे चले गये'। इस समय चतुर्दशपूर्वधर श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु स्वामी

* दि० जैन ग्रंथों के अनुसार भद्रबाहु का आचार्यपद निर्वाण संवत् १३३ से १६२ तक २९ वर्ष रहा जो प्रचलित निर्वाण संवत् के अनुसार ईस्वीपूर्व ३९४ से ३६५ तक पड़ता है, तथा इतिहासानुसार चन्द्रगुप्त मौर्य्य का राज्य ईस्वीपूर्व ३२१ से २९८ तक माना जाता है। इस प्रकार भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त के अन्तकाल में ६७ वर्ष का अन्तर पड़ता है। श्वेताम्बर ग्रंथों के अनुसार भद्रबाहु का समय नि० सं० १५६ से १७० तदनुसार ईस्वी पूर्व ३७१ से ३५७ तक सिद्ध होता है। इसका चन्द्रगुप्त के समय के साथ प्रायः समीकरण हो जाता है।

ने बारह वर्ष के महाप्राण नामक ध्यान की आराधना प्रारम्भ कर दी थी। परिशिष्ट पर्व के अनुसार भद्रबाहु स्वामी इस समय नेपाल की ओर चले गये थे और श्रीसंघ के बुलाने पर भी वे पाटलिपुत्र को नहीं आये जिसके कारण श्रीसंघ ने उन्हें संघबाह्य कर देने की भी धमकी दी। उक्त ग्रंथ में चन्द्रगुप्त के समाधि पूर्वक मरण करने का भी उल्लेख है।

इस प्रकार यद्यपि दिगम्बर और श्वेताम्बर ग्रन्थों में कई बारीकियों मे मत-भेद है पर इन भेदो से ही मूल बातों की पुष्टि होती है क्योंकि उनसे यह सिद्ध होता है कि एक मत दूसरे मत की नकल मात्र नहीं है व मूल बातें दोनों के ग्रन्थों में प्राचीनकाल से चली आती हैं।

अब इस विषय पर भिन्न-भिन्न विद्वानों के मत देखिये। डा० ल्यूमन* और डा० हार्नले† श्रुतकेवली भद्रबाहु की दक्षिण यात्रा को स्वीकार करते हैं। टामस साहब अपनी एक पुस्तक‡ में लिखते हैं कि "चन्द्रगुप्त जैन समाज के व्यक्ति थे यह जैन ग्रन्थकारों ने एक स्वयंसिद्ध और सर्व प्रसिद्ध बात के रूप से लिखा है जिसके लिये कोई अनुमान प्रमाण देने की आवश्यकता ही नहीं थी। इस विषय में लेखों के प्रमाण बहुत प्राचीन और साधारणतः सन्देह-रहित हैं। मैगस्थनीज

* Vienna Oriental Journal VII, 382.

† Indian Antiquary XXI, 59-60.

‡ Jainism or the Early Faith of Asoka P. 23.

के कथनों से भी झलकता है कि चन्द्रगुप्त ने ब्राह्मणों के सिद्धान्तों के विपक्ष मे श्रमणों (जैन मुनियों) के धर्मोपदेशों को अङ्गीकार किया था।" टामस साहब इसके आगे यह भी सिद्ध करते हैं कि चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र और प्रपौत्र बिन्दुसार और अशोक भी जैनधर्मावलम्बी थे। इसके लिये उन्होंने 'मुद्राराक्षस' 'राजतरङ्गिणी' तथा 'आइने अकबरी' के प्रमाण दिये हैं। श्रीयुक्त जायसवाल महोदय लिखते हैं* कि "प्राचीन जैनग्रंथ और शिलालेख चन्द्रगुप्त को जैन राजर्षि प्रमाणित करते हैं। मेरे अध्ययन ने मुझे जैनग्रंथों की ऐतिहासिक वार्ताओं का आदर करने को बाध्य किया है। कोई कारण नहीं है कि हम जैनियों के इस कथन को कि चन्द्रगुप्त अपने राज्य के अन्तिम भाग मे राज्य को त्याग जिन दीक्षा ले मुनि वृत्ति से मरण को प्राप्त हुए, न मानें। मैं पहला ही व्यक्ति यह माननेवाला नहीं हूँ। मि० राइस, जिन्होंने श्रवण-बेलगोला के शिलालेखों का अध्ययन किया है, पूर्णरूप से अपनी राय इसी पक्ष मे देते हैं और मि० व्ही० स्मिथ भी अन्त में इस मत की ओर झुके हैं।" डा० स्मिथ लिखते हैं† कि "चन्द्रगुप्त मौर्य का घटना-पूर्ण राज्यकाल किस प्रकार समाप्त हुआ इस पर ठीक प्रकाश एक मात्र जैन कथाओं से ही

---

* Journal of the Behar and Orissa Research Society Vol. III.

† Oxford History of India 75-76.

पड़ता है। जैनियों ने सदैव उक्त मौर्य सम्राट् को बिम्बसार (श्रेणिक) के सदृश जैन धर्मावलम्बी माना है और उनके इस विश्वास को झूठ कहने के लिये कोई उपयुक्त कारण नहीं है। इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं है कि, शैशुनाग, नन्द और मौर्य राजवंशों के समय में जैन धर्म मगध प्रान्त मे बहुत जोर पर था। चन्द्रगुप्त ने राजगद्दी एक कुशल ब्राह्मण की सहायता से प्राप्त की थी यह बात चन्द्रगुप्त के जैनधर्मावलम्बी होने के कुछ भी विरुद्ध नहीं पड़ती। 'मुद्राराक्षस' नामक नाटक मे एक जैन साधु का उल्लेख है जो नन्द नरेश के और फिर मौर्य सम्राट् के मन्त्री राक्षस का खास मित्र था।

"एक बार जहा चन्द्रगुप्त के जैनधर्मावम्बी होने की बात मान ली तहाँ फिर उनके राज्य को त्याग करने व जैनविधि के अनुसार सल्लेखना द्वारा मरण करने की बात सहज ही विश्व-सनीय हो जाती है। जैनग्रन्थ कहते हैं कि जब भद्रबाहु की द्वादशवर्षीय दुर्भिक्षवाली भविष्यवाणी उत्तर भारत मे सच होने लगी तब आचार्य बारह हजार जैनियों को साथ लेकर अन्य सुदेश की खोज में दक्षिण को चल पड़े। महाराज चन्द्रगुप्त राज्य त्यागकर सङ्घ के साथ हो लिये। यह सङ्घ श्रवण बेलगोला पहुँचा। यहा भद्रबाहु ने शरीर त्याग किया। राजर्षि चन्द्रगुप्त ने उनसे बारह वर्ष पीछे समाधिमरण किया। इस कथा का समर्थन श्रवणबेलगोला के मन्दिरों आदि के नामों, ईसा की सातवीं शताब्दि के उपरान्त के लेखों तथा दसवीं

शताब्दि के ग्रन्थों से होता है। इसकी प्रामाणिकता सर्वतः पूर्ण नहीं कही जा सकती किन्तु बहुत कुछ सोच-विचार करने पर मेरा झुकाव इस कथन की मुख्य बातों को स्वीकार करने की ओर है। यह तो निश्चित ही है कि जब ईस्वी पूर्व ३२२ मे व इसके लगभग चन्द्रगुप्त सिंहासनारूढ़ हुए थे तब वे तरुण अवस्था मे ही थे। अतएव जब चौबीस वर्ष के पश्चात् उनके राज्य का अन्त हुआ तब उनकी अवस्था पचास वर्ष से नीचे ही होगी। अतः उनका राजपाट त्याग देना उनके इतनी कम अवस्था में लुप्त हो जाने का उपयुक्त कारण प्रतीत होता है। राजाओं के इस प्रकार विरक्त हो जाने के अन्य भी उदाहरण हैं और बारह वर्ष का दुर्भिक्ष भी अविश्वसनीय नहीं है। संक्षेपतः अन्य कोई वृत्तान्त उपलब्ध न होने के कारण इस क्षेत्र मे जैन कथन ही सर्वोपरि प्रमाण हैं।"

अब शिलालेखों मे जो राजवंशो का परिचय पाया जाता है उसका सिलसिलेवार परिचय दिया जाता है।

१ **गङ्गवंश**—इस राजवंश का अब तक का ज्ञात इतिहास लेखों, विशेषतः ताम्रपत्रों पर से सङ्कलित किया गया है। इस वंश से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक ताम्रपत्रों की डा० फ्लीट ने पूर्णरूप से जाँचकर यह मत प्रकाशित किया था कि वे सब ताम्रपत्र जाली हैं और गङ्गवंश की ऐतिहासिक सत्ता के लिये कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं है। इसके पश्चात् मैसूर पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर रावबहादुर नरसिंहाचार ने इस वंश

के अन्य अनेक लेखों का पता लगाया जो उनकी जाँच में ठीक उतरे। इनके बल से उन्होंने गङ्गवंश की ऐतिहासिकता सिद्ध की है।

इस वंश का राज्य मैसूर प्रान्त मे लगभग ईसा की चौथी शताब्दि से ग्यारहवीं शताब्दि तक रहा। आधुनिक मैसूर का अधिकांश भाग उनके राज्य के अन्तर्गत था जो गङ्गवाडि ९६००० कहलाता था। मैसूर में जो आजकल गङ्गडिकार (गङ्गवाडिकार) नामक किसानों की भारी जनसंख्या है वे गङ्गनरेशों की प्रजा के ही वंशज हैं। गङ्गराजाओं की सबसे पहली राजधानी 'कुवलाल' व 'कोलार' थी जो पूर्वी मैसूर मे पालार नदी के तट पर है। पीछे राजधानी कावेरी के तट पर 'तलकाड' को हटा ली गई। आठवीं शताब्दि में श्रीपुरुष नामक गङ्गनरेश अपनी राजधानी सुविधा के लिये बङ्गलोर के समीप मण्णे व मान्यपुर में भी रखते थे। इसी समय में गङ्गराज्य अपनी उत्कृष्ट अवस्था पर पहुँच गया था। तलकाड ईसा की ११ हवीं शताब्दि के प्रारम्भ मे चोल नरेशो के अधिकार मे आ गया और तभी से गङ्गराज्य की इतिश्रीहुई। आदि से ही गङ्गराज्य का जैनधर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। लेख नं० ५४ (६७) के उल्लेख से ज्ञात होता है कि गङ्गराज्य की नींव डालने में जैनाचार्य सिंहनन्दि ने भारीसहायता की थी। सिंहनन्द्याचार्य की इस सहायता का उल्लेख गङ्गवंश के अन्य कई लेखो में भी पाया जाता है, उदाहरणार्थ लेख नं०

३९७; उदयेन्दिरम् का दानपत्र (सा० इं० इं० २, ३८७), कूडलु का दानपत्र (मै० आ० रि० १९२१ पृ० २९); ए० क० ७, शिमोग ४; ए० क० ८ नगर ३५ व ३६ इत्यादि। इसके अतिरिक्त गोम्मटसार वृत्ति के कर्त्ता अभयचन्द्र त्रैविद्य-चक्रवर्ती ने भी अपने ग्रन्थ की उत्थानिका में इस बात का उल्लेख किया है। इन अनेक उल्लेखों से यद्यपि यह स्पष्ट नहीं ज्ञात होता कि जैनाचार्य ने गङ्गराज्य की जड़ जमाने में किस प्रकार सहायता की थी तथापि यह बात पूर्णतः सिद्ध होती है कि गङ्गवंश की जड़ जमानेवाले जैनाचार्य सिंहनन्दि ही थे। कहा जाता है कि आचार्य पूज्यपाद देवनन्दि इसी वंश के सातवें नरेश दुर्विनीत के राजगुरु थे। गङ्गवंश के अन्य अनेक प्रकाशित लेख जैनाचार्यों से सम्बन्ध रखते हैं।

लेख नं० ३८ (५९) मे गङ्गनरेश मारसिंह के प्रताप का अच्छा वर्णन है। अनेक भारी भारी युद्धों में विजय पाकर अनेक दुर्ग किले आदि जीतकर व अनेक जैन मन्दिर और स्तम्भ निर्माण कराकर अन्त में अजितसेन भट्टारक के समीप सल्लेखना विधि से बङ्कापुर मे उन्होंने शरीर त्याग किया। उन्होंने राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र (चतुर्थ) का अभिषेक किया था। यद्यपि इस लेख में उनके स्वर्गवास का समय नहीं दिया गया पर एक दूसरे लेख (ए० क० १०, मूल्बागल् ८४) में कहा गया है कि उन्होंने शक सं० ८९६ में शरीर त्याग किया था। गङ्गनरेश मारसिंह और राष्ट्रकूट नरेश कृष्णराज तृतीय इन

दोनों के बीच घनिष्ठ मित्रता थी। मारसिंह ने अनेक युद्ध कृष्णराज के लिये ही जीते थे। कूडलूर के दानपत्र (मै० आ० रि० १९२१ पृ० २६ सन् ९६३) में कहा गया है कि स्वयं कृष्णराज ने मारसिंह का राज्याभिषेक किया था।

मारसिंह के उत्तराधिकारी राचमल्ल (चतुर्थ) थे। इन्हीं के मन्त्री चामुण्डराज ने विन्ध्यगिरि पर चामुण्डरायवस्ती निर्माण कराई और गोम्मटेश्वर की वह विशाल मूर्ति उद्घाटित की (नं० ७५-७६ आदि)। लेख नं० १०९ (२८१) यद्यपि अधूरा है तथापि इसमें चामुण्डराय का कुछ परिचय पाया जाता है। उससे विदित होता है कि चामुण्डराय ब्रह्मक्षत्र कुल के थे और उन्होंने अपने स्वामी के लिये अनेक युद्ध जीते थे। इतना ही नहीं चामुण्डराय एक कवि भी थे। उनका लिखा हुआ चामुण्डराय पुराण नाम का एक कन्नड ग्रन्थ भी पाया जाता है। यह अधिकांश गद्य में है। इसमें चौबीस तीर्थंकरों के जीवन का वर्णन है। यह ग्रन्थ उन्होंने शक सं० ९०० में समाप्त किया था। इस ग्रन्थ में भी उनके कुल व गुरु अजितसेन आदि का परिचय पाया जाता है तथा किस प्रकार भिन्न भिन्न युद्ध जीतकर उन्होंने समर धुरन्धर, वीर-मार्तण्ड, रणरङ्गसिंग, वैरिकुलकालदण्ड, भुजविक्रम, समर-परशुराम की उपाधियाँ प्राप्त की थीं इसका भी वर्णन इस ग्रन्थ में है। वे अपनी सत्यनिष्ठा के कारण सत्ययुधिष्ठिर कहलाते थे। कई लेखों में उनका उल्लेख केवल 'राय' नाम से

ही किया गया है नं० १३७ (३४५)। लेख नं० ६७ (१२१) मे उल्लेख है कि चामुण्डराय के पुत्र, व अजितसेन के शिष्य जिनदेवन ने बेल्गोल मे एक जैन मन्दिर निर्माण कराया था।

इनके अतिरिक्त अन्य कई लेखो में गङ्गवंश के ऐसे नरेशों का उल्लेख मात्र आया है, जिनका अभी तक अन्य कहीं कोई विशेष परिचय नहीं पाया गया। लेख नं० २५६ (४१५) में जिस शिवमारन बसदि का उल्लेख है वह सम्भवतः गङ्गवंश के शिवमार नरेश (सम्भवत शिवमार द्वि० श्री-पुरुष के पुत्र) ने निर्माण कराई थी। लेख नं० ६० (१३८) मे किसी गङ्गवज्र अपर नाम रक्कसमणि का उल्लेख है जिनके बोयिग नाम के एक वीर योद्धा ने वद्देग और कोणेयगङ्ग के विरुद्ध युद्ध करते हुए अपने प्राण विसर्जित किये। वद्देग राष्ट्रकूटनरेश अमोघवर्ष तृतीय का उपनाम भी था। गङ्गवज्र मारसिंग नरेश की उपाधि भी थी (नं० ३ - (५९)। लेख नं० ६१ (१३९) मे लोकविद्याधर अपर नाम उदयविद्याधर का उल्लेख है। निश्चयतः नहीं कहा जा सकता कि यह भी कोई गङ्गवंशी नरेश का नाम है या नहीं, किन्तु कुछ गङ्गनरेशों की विद्याधर उपाधि थी। उदाहरणार्थ, रक्कसगङ्ग के दत्तक पुत्र का नाम राजविद्याधर था (ए० क० ८, नगर ३५) व मारसिंग की उपाधि गङ्गविद्याधर थी ३८ (५९)। अतएव सम्भव है कि लोकविद्याधर व उदयविद्याधर भी कोई गङ्गनरेश रहा हो। नं० २३५ (१५०) में गङ्गराज्य व एरेगङ्ग के महामन्त्री नर-

सिंग के एक नाती नागवर्म के सल्लेखना मरण का उल्लेख है। सूडि व कूडलूर के दान-पत्रों (ए० इ० ३, १५८; म० आ० रि० १९२५, पृ० २५) में गङ्गनरेश एरेयप्प और उनके पुत्र नरसिंग का उल्लेख है। सम्भव है कि उपर्युक्त लेख के एरगङ्ग और नरसिंग ये ही हो।

कुछ लेखों में विना किसी राजा के नाम के गंगवंश मात्र का उल्लेख है [लेख नं० १६३ (३७); १५१ (४११); २४६ (१६४); ४६९ (३७८)]। लेख नं० ५५ (६९) मे उल्लेख है कि जो जैन धर्म ह्रास अवस्था को प्राप्त हो गया था उसे गोपनन्दि ने पुनः गङ्गकाल के समान समृद्धि और ख्याति पर पहुँचाया। लेख नं० ५४ (६७) मे उल्लेख है कि श्रीविजय का गङ्गनरेशों ने बहुत सम्मान किया था। लेख नं० १३७ (३४५) मे उल्लेख है कि हुल्ल ने जिस केल्लंगेरे में अनेक वस्तियाँ निर्माण कराई थीं उसकी नीव गङ्गनरेशों ने ही डाली थी। लेख नं० ४९६ मे गङ्ग वाडि का उल्लेख है।

२ राष्ट्रकूटवंश—राष्ट्रकूटवंश का दक्षिण भारत में इतिहास ईस्वी सन् की आठवीं शताब्दि के मध्यभाग से प्रारम्भ होता है। इस समय राष्ट्रकूटवंश के दन्तिदुर्ग नामक एक राजा ने चालुक्यनरेश कीर्त्तिवर्मा द्वितीय को परास्त कर राष्ट्रकूट साम्राज्य की नींव डाली। उसके उत्तराधिकारी कृष्ण प्रथम ने चालुक्य राज्य के प्राय: सारे प्रदेश अपने आधीन कर लिये। कृष्ण के पश्चात् क्रमशः गोविन्द (द्वितीय) और ध्रुव ने राज्य

किया। इनके समय में राष्ट्रकूट राज्य का विस्तार और भी बढ़ गया। आगामी नरेश गोविन्द तृतीय के समय में राष्ट्रकूट राज्य विन्ध्य और मालवा से लगाकर काञ्ची तक फैल गया। इन्होंने अपने भाई इन्द्रराज को लाट (गुजरात) का सूबेदार बनाया। गोविन्द तृतीय के पश्चात् अमोघवर्ष राजा हुए जिन्होंने लगभग सन् ८१५ से ८७७ ईस्वी तक राज्य किया। इन्होंने अपनी राजधानी नासिक को छोड़ मान्यखेट में स्थापित की। इनके समय में जैन धर्म की खूब उन्नति हुई। अनेक जैन कवि—जैसे जिनसेन, गुणभद्र, महावीर आदि—इनके समय में हुए। गुणभद्राचार्य ने उत्तर पुराण मे कहा है कि राजा अमोघवर्ष जिनसेनाचार्य को प्रणाम करके अपने को धन्य समझता था। अमोघवर्ष स्वयं भी कवि थे। इनकी बनाई हुई 'रत्नमालिका' नामक पुस्तक से ज्ञात होता है कि वे अन्त समय में राज्य को त्यागकर मुनि हो गये थे।

"विवेकात्त्यक्तराज्येन राज्ञेयं रत्नमालिका।
रचितामोघवर्षेण सुधियां सदलंकृतिः॥"

अमोघवर्ष के पश्चात् कृष्णराज द्वितीय हुए जिनकी अकाल-वर्ष, शुभतुङ्ग, श्रीपृथ्वीवल्लभ, वल्लभराज, महाराजाधिराज, परमेश्वर परमभट्टारक उपाधियाँ पाई जाती हैं। इनके पश्चात् इन्द्र (तृतीय) हुए जिन्होंने कन्नौज पर चढ़ाई कर वहाँ के राजा महीपाल को कुछ समय के लिये सिंहासनच्युत कर दिया। इनके उत्तराधिकारियों में कृष्णराज तृतीय सबसे प्रतापी हुए

जिन्होंने राजादित्य चोल के ऊपर सन् ९४९ मे बड़ी भारी विजय प्राप्त की। इस समय के युद्धों का मूल कारण धार्मिक था। राष्ट्रकूटनरेश जैनधर्मपोषक और चोलनरेश शैव धर्म-पोषक थे। इनके समय में सोमदेव, पुष्पदन्त, इन्द्रनन्दि आदि अनेक जैनाचार्य हुए हैं। कृष्णराज के उत्तराधिकारी खोटिग-देव और उनके पीछे कर्कराज द्वितीय हुए। इनके समय में चालुक्यवंश पुनः जागृत हो उठा। इस वंश के तैल व तैलप ने कर्कराज को सन् ९७३ में बुरी तरह परास्त कर दिया जिससे राष्ट्रकूट वंश का प्रताप सदैव के लिये अस्त हो गया। जैसा कि आगे विदित होगा, लेख नं० ५७ (शक सं० ९०४) मे कृष्णराज तृतीय के पौत्र एक इन्द्रराज (चतुर्थ) का भी उल्लेख है व लेख नं० ३८ में कहा गया है कि गङ्गनरेश मार-सिंह ने इन्द्र का अभिषेक किया था। सम्भवतः राष्ट्रकूटवंश के हितैषी गङ्गनरेश ने राष्ट्रकूट राज्य को रक्षित रखने के लिये यह प्रयत्न किया पर इतिहास में इसका कोई फल देखने में नहीं आता। दक्षिण का राष्ट्रकूटवंश इतिहास के सफे से उड़ गया।

अब इस संग्रह के लेखो मे इस वंश के जो उल्लेख हैं उनका परिचय कराया जाता है।

इस वश के वद्देग व अमोघवर्ष तृतीय ने कोगोय गंग के साथ गङ्गवज्र व रक्कसमणि के विरुद्ध युद्ध किया था, ऐसा लेख नं० ६० (१३८) (अनु० शक ८६२) के उल्लेख से

ज्ञात होता है। लेख नं० १०९ (२८१) (अनु० शक ९५०) से ज्ञात होता है कि राष्ट्रकूटनरेश इन्द्र की आज्ञा से चामुण्डराय के स्वामी जगदेकवीर राचमल्ल ने वज्वलदेव को परास्त किया था। लेख नं० ३८ (५९) (शक ८९६) से विदित होता है कि राष्ट्रकूटनरेश कृष्ण तृतीय के लिये गङ्गनरेश मारसिंह ने गुर्जर प्रदेश को जीता था व राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र (चतुर्थ) का राज्याभिषेक किया था। इन उल्लेखों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि गङ्गवंश और राष्ट्रकूटवंश के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध था। इस वंश का सबसे प्राचीन लेख, जो इस संग्रह मे आया है, लेख नं० २४ (३५) (अनु० शक ७ २) है। इस लेख में ध्रुव के पुत्र व गोविन्द (तृतीय) के ज्येष्ठ भ्राता रणावलोक कम्बय्य का उल्लेख है। एक लेख (ए० क० ४, हेग्गडदेवन्कोटे ९३) से ज्ञात होता है कि जब गङ्गराज शिवमार द्वितीय को ध्रुव ने कैद कर लिया था तब राजकुमार कम्ब गङ्गप्रदेश के शासक नियुक्त किये गये थे व ए० क० ९, नेलमङ्गल ६१ से ज्ञात होता है कि कम्ब शक सं० ७२४ (ई० सन् ८०२) में गङ्गप्रदेश का शासन कर रहे थे। हाल ही मे चामराज नगर से कुछ ताम्रपत्र मिले हैं (मै० आ० रि १९२० पृ० ३१) जिनसे ज्ञात होता है कि जिस समय कम्ब का शिविर तलवननगर (तलकाड) में था तब उन्होंने अपने पुत्र शङ्करगण्ण की प्रार्थना से शक सं० ७२९ (सन् ८०७ ई०) में एक ग्राम का दान जैनाचार्य वर्धमान को दिया था। अन्य प्रमाणों से ज्ञात

हुआ है कि ध्रुव नरेश ने अपना उत्तराधिकारी अपने कनिष्ठ पुत्र गोविन्द (तृतीय) को बनाया था व कम्ब को गङ्गप्रदेश दिया था। इस हेतु कम्ब ने गोविन्द के विरुद्ध तैयारी की पर अन्त में उन्हें गोविन्द का आधिपत्य स्वीकार करना पड़ा।

लेख नं० ५७ (१३३) में इन्द्र चतुर्थ की किसी गेंद के खेल में चतुराई आदि का वर्णन है व उल्लेख है कि उन्होंने शक सं० ९०४ में श्रवणबेल्गुल में सल्लेखना मरण किया। लेख में यह भी कहा गया है कि इन्द्र कृष्ण (तृतीय) के पौत्र, गङ्गगंगेय (बूतुग) के कन्यापुत्र व राजचूडामणि के दामाद थे। यह विदित नहीं हुआ कि ये राजचूडामणि कौन थे। इन्द्र की रट्टकन्दर्प, राजमार्तण्ड, चलङ्कगव, चलदग्गलि, कीर्तिनारायण, एळेवबेडेंग, गेडेगलाभरण, कलिगलोलाण्ड और वीरर वीर ये उपाधियाँ थीं। जैसा ऊपर कहा जा चुका है, गङ्गनरेश मारसिंह ने इन्द्र का राज्याभिषेक किया था। लेख नं० ५८ (१३४) 'मावणगन्धहस्ति' उपाधिधारी एक वीर योधा पिट्ट की मृत्यु का स्मारक है। लेख में इस वीर के पराक्रम-वर्णन के पश्चात् कहा गया है कि उसे राजचूडामणि मार्गडे-मल्ल ने अपना सेनापति बनाया था। लेख की लिपि और राजचूडामणि व चित्रभानु संवत्सर के उल्लेख से अनुमान होता है कि यह भी इन्द्र चतुर्थ के समय का है।

प्रसङ्गवश लेख नं० ५४ (६७) में साहसतुङ्ग और कृष्ण-राज का उल्लेख है। अकलङ्कदेव ने अपनी विद्वत्ता का वर्णन

साहसतुङ्ग को सुनाया था (पद्य नं० २१), और परवादि-मल्ल ने अपने नाम की सार्थकता कृष्णराज को समझाई थी (पद्य नं० २६)। ये दोनों क्रमशः राष्ट्रकूटनरेश दन्तिदुर्ग और कृष्ण द्वितीय अनुमान किये जाते हैं।

३ चालुक्यवंश—चालुक्यनरेशो की उत्पत्ति राजपुताने के सोलङ्की राजपूतों मे से कही जाती है। दक्षिण मे इस राजवंश की नीव जमानेवाला एक पुलाकेशी नाम का सामन्त था जो इतिहास मे पुलाकेशी प्रथम के नाम से प्रख्यात हुआ है। इसने सन् ५५० ईस्वी के लगभग दक्षिण के बीजापुर जिले के वातापि (आधुनिक बादामी) नगर में अपनी राज-धानी बनाई और उसके आसपास का कुछ प्रदेश अपने अधीन किया। इसके उत्तराधिकारी कीर्त्तिवर्मा, मङ्गलेश और पुला-केशी द्वितीय हुए जिन्होने चालुक्यराज्य को क्रमशः खूब फैलाया। पुलाकेशी द्वितीय के समय मे चालुक्यराज्य दक्षिण भारत में सबसे प्रबल हो गया। इस नरेश ने उत्तर के महा-प्रतापी हर्षवर्धन नरेश की भी दक्षिण की ओर प्रगति रोक दी। इस राजा की कीर्त्ति विदेशो मे भी फैली और ईरान के बादशाह खुसरो (द्वितीय) ने अपना राजदूत चालुक्य राजदरबार मे भेजा। पुलाकेशी द्वितीय ने सन् ६०८ से ६४२ ईस्वी तक राज्य किया। पर उसके अन्तिम समय मे पल्लव नरेशों ने चालुक्यराज्य की नींव हिला दी। उसके उत्तराधिकारी विक्रमादित्य प्रथम के समय में इस वंश की एक शाखा ने

गुजरात में राज्य स्थापित किया। आठवीं शताब्दी के मध्य भाग में दन्तिदुर्ग नामक एक राष्ट्रकूट राजा ने इस वंश के कीर्त्तिवर्मा द्वितीय को बुरी तरह हराकर राष्ट्रकूटवंश की जड़ जमाई। चालुक्यवंश कुछ समय के लिये लुप्त हो गया।

दशमी शताब्दी के अन्तिम भाग मे चालुक्यवंश के तैल नामक राजा ने अन्तिम राष्ट्रकूट नरेश कर्क द्वितीय को हराकर चालुक्यवंश को पुनर्जीवित किया। इस समय से चालुक्यों की राजधानी कल्याणी में स्थापित हुई। इसके उत्तराधिकारियों को चोल नरेशों से अनेक युद्ध करना पड़ा। सन् १०७६ से ११२६ तक इस वंश के एक बड़े प्रतापी राजा विक्रमादित्य षष्ठम ने राज्य किया। इन्हीं के समय मे विल्हण कवि ने 'विक्रमाङ्कदेवचरित' काव्य रचा। इनके उत्तराधिकारियों के समय मे चालुक्यराज्य के सामन्त नरेश देवगिरि के यादव और द्वारासमुद्र के होय्सल स्वतंत्र हो गये और सन् ११९० में चालुक्य साम्राज्य की इतिश्री हो गई।

अब इस संग्रह के लेखों में जो इस वंश के उल्लेख हैं उनका परिचय दिया जाता है।

लेख नं० ३८ (५९) (शक ८९६) में गङ्गनरेश मारसिंह के प्रताप-वर्णन में कहा गया है कि उन्होने चालुक्यनरेश राजादित्य को परास्त किया था। नं० ३३७ (१५२) में किसी चगभचण चक्रवर्ती उपाधिधारी गोग्गि नाम के एक सामन्त का उल्लेख है। यह संभवतः वही चालुक्य सामन्त

है जिसका उल्लेख ए० क० ३, मैसूर ३७ के लेख मे पाया जाता है। इस लेख में वे 'समधिगतपञ्चमहाशब्द'' महासामन्त कहे गये हैं। जहाँ से यह लेख मिला है उसी वरुण नामक ग्राम मे अन्य भी अनेक वीरगल हैं जिनमें गोगि के अनुजीवी योद्धाओं के रण मे मारे जाने के उल्लेख हैं (मै० आ० रि० १९१६ पृ० ४६-४७)। लेख नं० ४५ (१२५) और ५९ (७३) मे उल्लेख है कि होय्सलनरेश विष्णुवर्धन के सेनापति गङ्गराज ने चालुक्य सम्राट् त्रिभुवनमल्ल पेर्माडिदेव (विक्रमादित्य षष्ठ (१०७६-११२६ ई०) को भारी पराजय दी। इन लेखों मे गङ्गराज का कन्नेगाल मे चालुक्य सेना पर रात्रि मे धावा मारने व उसे हराकर उसकी रसद व वाहन आदि सब स्वाधीन कर अपने स्वामी को देने का जोरदार वर्णन है। नं० १४४ (३८४) होय्सलवंश का लेख है पर उसके आदि में चालुक्याभरण त्रिभुवनमल्ल की राज्यवृद्धि का उल्लेख है जिससे होय्सल राज्य के ऊपर त्रिभुवनमल्ल के आधिपत्य का पता चलता है। लेख नं० ५५ (६९) में मलधारि गुणचन्द्र "मुनीन्द्र बलिपुरे मल्लिकामोद शान्तीशचरणार्चेक:" कहे गये हैं (पद्य नं० २०)। अन्य अनेक लेखों (ए० क० ७, शिकारपूर २० अ, १२५, १२६, १५३, ए० इ० १२, १४४) से ज्ञात हुआ है कि मल्लिकामोद चालुक्यनरेश जयसिंह प्रथम की उपाधि थी। इससे अनुमान किया जा सकता है कि सम्भवत: बलिपुर मे शान्तिनाथ की प्रतिष्ठा

जयसिंह नरेश ने ही कराई थी। इसी लेख मे यह भी उल्लेख है कि वासवचन्द्र ने अपने वाद-पराक्रम से चालुक्य राजधानी मे बालसरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी। लेख नं० ५४ (६७) में उल्लेख है कि वादिराज ने चालुक्य राजधानी मे भारी ख्याति प्राप्त की थी तथा जयसिंह (प्रथम) ने उनकी सेवा की थी (पद्य ४१, ४२) इसी लेख में यह भी उल्लेख है कि जिन जैनाचार्य को पांड्यनरेश ने स्वामी की उपाधि दी थी उन्हें ही आहवमल्ल (चालुक्यनरेश १०४२-१०६८ ई०) ने शब्दचतुर्मुख की उपाधि प्रदान की थी। लेख नं० १२४ (३२७) व १३७ (३४५) में होयसल नरेश एरेयङ्ग चालुक्य नरेश की दक्षिण बाहु कहे गये हैं (पद्य नं० ८)।

४ होय्सलवंश—पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में कादुर जिले के मुड़ेगेरे तालुका में 'अंगडि' नाम का एक स्थान है। यही स्थान होय्सल नरेशों का उद्गमस्थान है। इसी का प्राचीन नाम शशकपुर है जहां पर अब भी वासन्तिका देवी का मन्दिर विद्यमान है। यहां पर 'सल' नामक एक सामन्त ने एक व्याघ्र से जैनमुनि की रक्षा करने के कारण पोय्सल नाम प्राप्त किया। इस वंश के भावी नरेशों ने अपने को 'मलपरोल्गण्ड' अर्थात् 'मलपाओं' (पहाड़ सामन्तों) में मुख्य कहा है। इसी से सिद्ध होता है कि प्रारम्भ में होय्सलवंश पहाड़ी था। इस वंश के एक 'काम' नाम के नृप के कुछ शिलालेख मिले हैं जिनमें उसके कुर्ग के कोङ्गाल्व नरेशों से

युद्ध करने के समाचार पाये जाते हैं। होय्सलनरेश इस समय चालुक्यनरेश के माण्डलिक राजा थे। जिस समय ईसा की ११ वीं शताब्दि के प्रारम्भ में चोलनरेशों द्वारा गङ्ग-वंश का अन्त हो गया उस समय होय्सल माण्डलिकों को अपना प्राबल्य बढ़ाने का अवसर मिला। 'काम' के उत्तराधिकारी 'विनयादित्य' ने चोलों से लड़-भिड़कर अपना प्रभुत्व बढ़ाया यहाँ तक कि चालुक्यनरेश सोमेश्वर आहवमल्ल के महामण्डलेश्वरों में विनयादित्य का नाम गङ्गवाडि ९६००० के साथ लिया जाने लगा। विनयादित्य के उत्तराधिकारी बल्लाल ने अपनी राजधानी शशपुरी से 'वेलूर' में हटा ली। द्वारा-समुद्र में भी उनकी राजधानी रहने लगी। इन्होंने चङ्गाल्व-नरेशों से युद्ध किया था। इनके उत्तराधिकारी विष्णुवर्द्धन के समय मे होय्सल नरेशों का प्रभाव बहुत ही बढ़ गया। गङ्गवाडि का पुराना राज्य सब उनके आधीन हो गया और विष्णुवर्द्धन ने कई अन्य प्रदेश भी जीते। प्रारम्भ में विष्णु-वर्द्धन जैन धर्मावलम्बी थे पर पीछे वैष्णव हो गये थे। तथापि जैन धर्म में उनकी सहानुभूति बनी ही रही। विष्णुवर्द्धन ने लगभग सन् ११०६ से ११४१ तक राज्य किया और फिर उनके पुत्र नरसिंह ने सन् ११७३ तक। नरसिंह ने अपने पिता के समान ही होय्सल राज्य की वृद्धि की। उनके पुत्र वीर बल्लाल के समय में यह राज्य चालुक्य साम्राज्य के अन्तर्गत नहीं रहा और स्वतंत्र हो गया। वीर बल्लाल ने सन् १२२०

तक राज्य किया। इसके पश्चात् वीर बल्लाल के उत्तराधिकारियों ने होय्सल राज्य को नब्बे वर्ष तक और कायम रक्खा। सन् १३१० ईस्वी में दक्षिण पर मुसलमानों की चढ़ाई हुई। दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलेक काफूर ने होय्सल राज्य को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, होय्सलनरेश को पकड़कर कैद कर लिया और राजधानी द्वारासमुद्र का भी नाश कर डाला। द्वारासमुद्र का पूर्णतः सत्यानाश मुसलमानी फौजों ने सन् १३२६-२७ में किया।

अब इस वंश के सम्बन्ध के जो उल्लेख संगृहीत लेखों में आये हैं उनका परिचय दिया जाता है।

इस संग्रह में होय्सलवंश के सबसे अधिक लेख हैं। लेख नं० ५३ (१४३), ५६ (१३२), १४४ (३४८) व ४९३ में विनयादित्य से लगाकर विष्णुवर्धन तक, लेख नं १३७ (३४५) और १३८ (३४९) में विनयादित्य से नारसिंह (प्रथम) तक व १२४ (३२७), १३० (३३५) और ४९१ में विनयादित्य से बल्लाल (द्वितीय) तक की वंशपरम्परा पाई जाती है। नं० ५६ (१३२) में इस वंश की उत्पत्ति का इस प्रकार वर्णन पाया जाता है—"विष्णु के कमलनाल से उत्पन्न ब्रह्मा के अत्रि, अत्रि के चन्द्र, चन्द्र के बुध, बुध के पुरूरव, पुरूरव के आयु, आयु के नहुष, नहुष के ययाति व ययाति के यदु नामक पुत्र उत्पन्न हुए। यदु के वंश में अनेक नृपति हुए। इस वंश के प्रख्यात नरेशों में एक सल नामक नृपति हुए। एक

समय एक मुनिवर ने एक कराल व्याघ्र को देखकर कहा 'पोय्सल' 'हे सल, इसे मारो'। इस वृत्तान्त पर से राजा ने अपना नाम पोय्सल रक्खा और व्याघ्र का चिह्न धारण किया। इसके आगे द्वारावती के नरेश पोय्सल कहलाये और व्याघ्र उनका लाञ्छन पड़ गया। इन्हीं नरेशो में विनयादित्य हुए"। अन्य शिलालेखो (ए० क० ५, अर्सिकेरे १४१, १५७) से ज्ञात होता है कि विनयादित्य के पिता नृप काम होय्सल थे। अनेक लेखों (ए० क० ५, मञ्जराबाद ४३; अर्कल्गुड ७६; ए० क० ६, मूडूगेरे १९) से सिद्ध है कि नृप काम ने भी उसी प्रदेश पर राज्य किया था। लेख नं० ४४ (११८) मे भी नृप काम का एचि के रक्षक के रूप मे उल्लेख है (पद्य ५) अतएव यह कुछ समझ मे नहीं आता कि उपर्युक्त वंशावली में उनका नाम क्यों नही सम्मिलित किया गया। विनयादित्य के विषय मे लेख नं० ५४ (६७) में कहा गया है कि उन्होंने शान्तिदेव मुनि की चरणसेवा से राज्यलक्ष्मी प्राप्त की थी (पद्य नं० ५१), तथा लेख नं० ५३ (१४३) मे कहा गया है कि उन्होने कितने ही तालाब व कितने ही जैनमन्दिर आदि निर्माण कराये थे यहाँ तक कि ईंटों के लिए जो भूमि खोदी गई वहाँ तालाब बन गये, जिन पर्वतों से पत्थर निकाला गया वे पृथ्वी के समतल हो गये, जिन रास्तों से चूने की गाड़ियाँ निकलीं वे रास्ते गहरी घाटियाँ हो गये। पोय्सलनरेश जैनमंदिर निर्माण कराने में ऐसे दत्तचित्त थे। (पद्य नं० ४—५)।

विनयादित्य के केलेयब्बरसि रानी से एरेयङ्ग पुत्र हुए जो लेख नं० १२४ (३२७) व १३७ (३४५) में चालुक्यनरेश की दक्षिण बाहु कहे गये हैं। लेख नं १३८ (३४९) के कई पद्यों में इस नरेश के प्रताप का वर्णन पाया जाता है। वे वहाँ 'क्षत्रकुलप्रदीप' व 'क्षत्रमौलिमणि' 'साक्षात्समर-कृतान्त' व मालवमण्डलेश्वर पुरी धारा के जलानेवाले, कराल चोलकटक को भगानेवाले, चक्रगोट्ट के हरानेवाले, व कलिङ्ग का विध्वंस करनेवाले कहे गये हैं।

लेख नं० ४९२ (शक १०१५) विनयादित्य के पुत्र एरेयङ्ग के समय का है। इस लेख मे एरेयङ्ग और उनके गुरु गोपनन्दि की कीर्त्ति के पश्चात् नरेश द्वारा चन्द्रगिरि की बस्तियों के जीर्णोद्धार के हेतु गोपनन्दि को कुछ ग्रामो का दान दिये जाने का उल्लेख है। एरेयङ्ग गङ्गमण्डल पर राज्य करते थे, लेख मे इसका भी उल्लेख है। एरेयङ्ग की रानी एचलदेवी से बल्लाल, विष्णुवर्धन और उदयादित्य ये तीन पुत्र उत्पन्न हुए।

विष्णुवर्धन की उपाधियों व प्रतापादि का वर्णन लेख नं० ५३ (१४३), ५६ (१३२), १२४ (३२७), १३७ (३४५), १३८ (३४९), १४४ (३८४) और ४९३ मे पाया जाता है। वे महामण्डलेश्वर, समधिगतपञ्चमहाशब्द, त्रिभुवनमल्ल, द्वारावतीपुरवराधीश्वर, यादवकुलाम्बरद्युमणि, सम्यक्त्वचूड़ामणि, मलपरोलगण्ड, तलकाडु-कोङ्ग-नङ्गलि-कोय्तूर-उच्छङ्गि-नोलम्बवाडि-हानुगल-गोण्ड, भुजबल वीरगङ्ग आदि प्रताप-

सूचक पदवियों से विभूषित किये गये हैं। उन्होंने इतने दुर्जय दुर्ग जीते, इतने नरेशों को पराजित किया व इतने आश्रितों को उच्च पदों पर नियुक्त किया कि जिससे ब्रह्मा भी चकित हो जाता है। लेखों मे उनकी विजयों का खूब वर्णन है। लेख नं० २२९ (१३७) जो शक सं० १०३९ का है विष्णु-वर्द्धन के राज्यकाल का ही है। इस लेख में पोय्सलसेट्टि और नेमिसेट्टि नाम के दो राजव्यापारियों का उल्लेख है। इन व्यापारियों की माताओं माचिकव्वे और शान्तिकव्वे ने जिन-मन्दिर और नन्दीश्वर निर्माण कराकर भानुकीर्ति मुनि से जिन दीक्षा ले ली। यह मन्दिर चन्द्रगिरि पर तेरिन वस्ति के नाम से प्रसिद्ध है। लेख नं० ४४५ (३६६) अधूरा है पर इसमे विष्णुवर्द्धन का उल्लेख है। नं० ४७८ (३८८) से ज्ञात होता है कि इस नृपति के हिरियदण्डनायक, स्वामिद्रोहघरट्ट गङ्गराज ने वेल्गुल में जिननाथपुर निर्माण कराया। यह लेख बहुत घिस गया है। विदित होता है कि गङ्गराज ने उक्त नरेश की अनुमति से कुछ दान भी मन्दिर को दिया था। लेख में कोलग का उल्लेख है। 'कोलग' एक माप विशेष था। लेख नं० ४९३ (शक १०४७) मे विष्णुवर्द्धन के वस्तियों के जीर्णो-द्धार व ऋषियों को आहारदान के हेतु शल्य ग्राम के दान का उल्लेख है। यह दान नन्दि संघ, द्रमिड़ गण, अरुङ्ग-लान्वय के श्रीपाल त्रैविद्यदेव को दिया गया। लेख में उक्त अन्वय की परम्परा भी है। लेख नं० ४९७ में चालुक्य

त्रिभुवनमल्ल के साथ-साथ विष्णुवर्द्धन का उल्लेख है जिससे सिद्ध होता है कि विष्णुवर्द्धन चालुक्यों के आधिपत्य को स्वीकार करते थे। इस लेख में नयकीर्त्ति के स्वर्गवास का भी उल्लेख है। लेख नं० ४५ (१२५), ५९ (७३), ९० (२४०), १४४ (३८४) ३६० (२५१) तथा ४८६ (३९७) विष्णुवर्द्धन नरेश ही के समय के हैं। इन लेखों में गङ्गराज की वंशावली तथा उनके प्रतापमय व धार्मिक कार्यों का वर्णन पाया जाता है। गङ्गराज का वंशवृक्ष इस प्रकार है—

(देखो लेख नं० १४४, पृ० २९९)
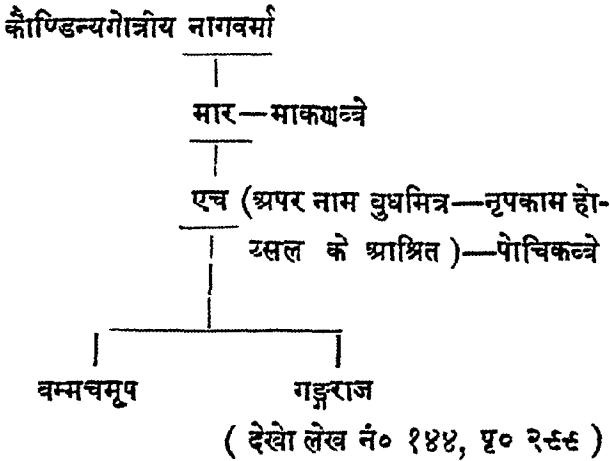
लेख नं० ४४ (११८) में गङ्गराज की ये उपाधियाँ पाई जाती हैं—समधिगतपञ्चमहाशब्द, महासामन्ताधिपति, महाप्रचण्डदण्डनायक, वैरिभयदायक, गोत्रपवित्र, बुधजनमित्र, श्रीजैनधर्मामृताम्बुधिप्रवर्द्धनसुधाकर, सम्यक्त्वरत्नाकर, आहार-

भयभैषज्यशास्त्रदानविनोद, भव्यजनहृदयप्रमोद, विष्णुवर्द्धन-भूपालहोय्सलमहाराजराज्याभिषेकपूर्णकुम्भ, धर्महर्म्योद्धरण-मूलस्तम्भ और द्रोहघरट्ट। इसी लेख मे यह भी कहा गया है कि गङ्गराज के पिता मुद्धूर के कनकनन्दि आचार्य के शिष्य थे। चालुक्यवंशवर्णन मे कहा जा चुका है कि इन्होंने कन्नेगाल में चालुक्य-सेना को पराजित किया था। उनके तलकाडु, कोङ्गु, चेङ्गिरि आदि स्वाधीन करने, नरसिंग को यमलोक भेजने, अदियम, तिमिल, दाम, दामोदरादि शत्रुओं को पराजित करने का वर्णन लेख नं० ९० (२४०) के ९, १० व ११ पद्यों में पाया जाता है। जिस प्रकार इन्द्र का वज्र, बलराम का हल, विष्णु का चक्र, शक्तिधर की शक्ति व अर्जुन का गाण्डीव उसी प्रकार विष्णुवर्द्धन नरेश के गङ्ग-राज सहायक थे। गङ्गराज जैसे पराक्रमी थे वैसे ही धर्मिष्ठ भी थे। उन्होंने गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाया, गङ्गवाडि परगने के समस्त जिनमन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया, तथा अनेक स्थानों पर नवीन जिनमन्दिर निर्माण कराये। प्राचीन कुन्दकुन्दान्वय के वे उद्धारक थे। इन्हीं कारणों से वे चामुण्ड-राय से भी सौगुणे अधिक धन्य कहे गये हैं। धर्म बल से गङ्गराज में अलौकिक शक्ति थी। लेख नं० ५९ (७३) के पद्य १४ में कहा गया है कि जिस प्रकार जिनधर्माग्रणी अत्ति-यब्बरसि के प्रभाव से गोदावरी नदी का प्रवाह रुक गया था उसी प्रकार कावेरी के पूर से घिर जाने पर भी, जिनभक्ति के

कारण गङ्गराज की लेशमात्र भी हानि नहीं हुई। जब वे कन्नेगल में चालुक्यों को पराजित कर लौटे तब विष्णुवर्द्धन ने प्रसन्न होकर उनसे कोई वरदान माँगने को कहा। उन्होंने परम नामक ग्राम माँगकर उसे अपनी माता तथा भार्या द्वारा निर्माण कराये हुए जिनमन्दिरों के हेतु दान कर दिया। इसी प्रकार उन्होंने गोविन्दवाडि ग्राम प्राप्त कर गोम्मटेश्वर को अर्पण किया। गङ्गराज शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे। लेख नं० ५६ (७३) से विदित होता है कि दण्डनायक एचिराज ने इस परम ग्राम के दान का समर्थन किया था।

गङ्गराज से सम्बन्ध रखनेवाले और भी अनेक शिलालेख हैं, यद्यपि उनमें गङ्गराज के समय के नरेश का नाम नहीं आया। लेख नं० ४६ (१२६) गङ्गराज की भार्या लक्ष्मी ने अपने भ्राता बूचन की मृत्यु के स्मरणार्थ लिखवाया था। बूचन शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे। लेख नं० ४७ (१२७) जैनाचार्य मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव की मृत्यु का स्मारक है और इसे गङ्गराज और उनकी भार्या लक्ष्मी ने लिखवाया था। लेख नं० ४८ (१२८) लक्ष्मीमतिजी ने अपनी भगिनी देमति के स्मरणार्थ लिखवाया था। लेख नं० ६३ (१३०) से ज्ञात होता है कि शुभचन्द्रदेव की शिष्या लक्ष्मी ने एक जिन मन्दिर निर्माण कराया जो अब 'एरडुकट्टे बस्ति' के नाम से प्रख्यात है। लेख नं० ६४ (७०) मे कहा गया है कि गङ्गराज ने अपनी माता पोचब्बे के हेतु कत्तले बस्ति निर्माण कराई। लेख नं०

६५ (७४) में गङ्गराज के इन्द्रकुल गृह (शासन वस्ति) बनवाने का उल्लेख है। लेख नं० ७५ (१८०) और ७६ (१७७) मे गङ्गराज द्वारा गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाये जाने का उल्लेख है। लेख नं० ४३ (११७), ४४ (११८), ४८ और (१२८) गङ्गराज द्वारा निर्माण कराये हुए क्रमशः उनके गुरु शुभचन्द्र, उनकी माता पोचिकव्वे और भार्या लक्ष्मी के स्मारक हैं। लेख नं० १४४ (३८४) में गङ्गराज के वंश का बहुत कुछ परिचय मिलता है व लेख नं० ४४६ (३६७), ४४७ (३६८) और ४८६ (४००) मे गङ्गराज के ज्येष्ठ भ्राता बम्मदेव की भार्या जक्कणव्वे के सत्कार्यों का उल्लेख है। ये सब लेख विष्णुवर्द्धन नरेश के समय के व उस समय से सम्बन्ध रखनेवाले हैं इसी लिये इनका यहाँ उल्लेख करना आवश्यक हुआ।

विष्णुवर्द्धन के समय के अन्य लेख इस प्रकार हैं। लेख नं० १४३ (३७७) में राजा के नाम के साथ ही गङ्गराज के नामोल्लेख के पश्चात् कहा गया है कि चलदङ्कराव हेडेजीय और अन्य सज्जनों ने कुछ दान किया। जान पड़ता है यह दान गोम्मटेश्वर के दायीं ओर की एक कंदरा को भरकर समतल करने के लिये दिया गया था। लेख नं० ५६ (१३२) मे विष्णुवर्द्धन की रानी शान्तलदेवी द्वारा 'सवति गन्धवारण बस्ति' के निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। इस लेख में मेघचन्द्र के शिष्य प्रभाचन्द्र की स्तुति, होटसल वंश की उत्पत्ति

व विष्णुवर्द्धन तक की वंशावलि, विष्णुवर्द्धन की उपाधियों व शान्तलदेवी की प्रशंसा व उनके वंश का परिचय पाया जाता है। शान्तलदेवी की उपाधियों मे 'उद्वृत्तसवतिगन्धवारणे' अर्थात् 'उच्छृंखल सौतों के लिये मत्त हाथी' भी पाया जाता है। शान्तलदेवी की इसी उपाधि पर से वस्ति का उक्त नाम पड़ा। लेख नं० ६२ (१३१) मे भी इस मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। इस लेख में यह भी कहा गया है कि उक्त मन्दिर मे शान्तिनाथ की मूर्ति स्थापित की गई थी। लेख नं० ५३ (१४३) (शक १०५०) मे शान्तलदेवी की मृत्यु का उल्लेख है जो 'शिवगङ्ग' में हुई। यह स्थान अब बङ्गलोर से कोई तीस मील की दूरी पर शैवों का तीर्थस्थान है। लेख मे शान्तलदेवी के वंश का भी परिचय है। उनके पिता पेर्गडे मारसिङ्गय्य शैव थे पर माता माचिकब्बे जिन भक्त थीं। लेख नं० ५१ (१४१) और ५२ (१४२) (शक १०४१) मे शान्तलदेवी के मामा के पुत्र बलदेव और उनके मामा सिङ्गिमय्य की मृत्यु का उल्लेख है। बलदेव ने मोरिङ्गेरे मे समाधिमरण किया तब उनकी माता और भगिनी ने उनकी स्मारक एक पट्टशाला (वाचनालय) स्थापित की। सिङ्गिमय्य के समाधिमरण पर उनकी भार्या और भावज ने स्मारक लिखवाया। लेख नं० ३६८ (२६५) और ३६९ (२६६) में दण्डनायक भरतेश्वर द्वारा दो मूर्त्तियों के स्थापित कराये जाने का उल्लेख है। भरतेश्वर गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव के

शिष्य थे और अन्य शिलालेखों (नागमङ्गल ३२ ए० क० ४; चिकमगलूर १६० ए० क० ६) से सिद्ध है कि वे और उनके बड़े भाई मरियाणे विष्णुवर्द्धन नरेश के सेनापति थे। लेख नं० ४० (६४) (शक १०८५) मे भी भरत के गण्डविमुक्तदेव के शिष्य होने का उल्लेख है। लेख नं० ११५ (२६७) से विदित होता है कि भरतेश्वर ने जिन दो मूर्तियो की स्थापना कराई थी वे भरत और बाहुबली स्वामी की मूर्तियाँ थीं। इस लेख मे भरतेश्वर के अन्य धार्मिक कृत्यों का भी उल्लेख है। उन्होने उक्त दोनों मूर्तियों के आसपास कटघर (हप्पलिगे) बनवाया, गोम्मटेश्वर के आसपास बड़ा गर्भगृह बनवाया, सीढ़ियाँ बनवाईं तथा गङ्गवाडि में दो पुरानी बस्तियों का उद्धार कराया और अस्सी नवीन बस्तियाँ निर्माण कराईं। यह लेख भरत की पुत्री शान्तलदेवी ने लिखवाया था। लेख नं० ६८ (१५६) और ३५१ (२२१) भी इसी नरेश के समय के विदित होते हैं उनमें कुछ जिन भक्त पुरुषों का उल्लेख है।

विष्णुवर्द्धन और लक्ष्मीदेवी के पुत्र नारसिंह प्रथम हुए जिनकी उपाधियों आदि का उल्लेख लेख नं० १३७ (३४५) और १३८ (३४६) में है। लेख नं० १३८ (३४६) मे उल्लेख है कि उक्त नरेश के भण्डारि और मन्त्री हुल्ल ने बेलगोल मे चतुर्विंशति जिनमन्दिर निर्माण कराया। यह मन्दिर भण्डारि बस्ति के नाम से प्रसिद्ध है। लेख में विनयादित्य से लगाकर नारसिंह प्रथम तक के वर्णन और हुल्ल के वंशपरिचय

के पश्चात् कहा गया है कि एक वार अपनी दिग्विजय के समय नरेश बेल्गोल में आये, गोम्मटेश्वर की वन्दना की और हुल्ल के बनवाये हुए चतुर्विंशति जिनालय के दर्शन कर उन्होंने उस मन्दिर का नाम 'भव्यचूडामणि' रक्खा क्योंकि हुल्ल की उपाधि 'सम्यक्त्वचूड़ामणि' थी। फिर उन्होने मन्दिर के पूजन, दान तथा जीर्णोद्धार के हेतु 'सवणेरु' नामक ग्राम का दान किया। लेख में यह भी उल्लेख है कि हुल्ल ने नरेश की अनुमति से गोम्मटपुर के तथा व्यापारी वस्तुओ पर के कुछ कर (टैक्स) का दान मन्दिर को कर दिया। हुल्ल वाजि-वंश के जक्किराज (यक्षराज) और लोकाम्बिका के पुत्र, लक्ष्मण और अमर के ज्येष्ठ भ्राता तथा मलधारि स्वामी के शिष्य थे। सवणेरु ग्राम का दान उन्होंने भानुकीर्ति को दिया था। वे राज्यप्रबन्ध में 'योगन्धरायण' से भी अधिक कुशल और राजनीति में बृहस्पति से भी अधिक प्रवीण थे। लेख नं० १३७ (३४५) में भी नारसिंह के बेल्गोल की वन्दना करने का उल्लेख है और इस लेख से यह भी ज्ञात होता है कि हुल्ल विष्णुवर्द्धन के समय में भी राजदरबार में थे तथा लेख नं० ६० (२४०) व ४९१ से विदित होता है कि वे अगामी नरेश बल्लाल द्वितीय के समय में भी विद्यमान थे क्योंकि उन्होंने उक्त नरेश से एक दान प्राप्त किया था। इस लेख में हुल्ल की कीर्ति और धर्मपरायणता का खूब वर्णन है। वे चामुण्डराय और गङ्गराज की श्रेणी में ही सम्मिलित किये गये हैं। उन्होंने

वङ्कापुर और कलिविट के जिनमन्दिरो का जीर्णोद्धार कराया, कोपण में जैनाचार्यों के हेतु बहुत सी जमीन लगाई, केलङ्गेरे में छः नवीन जिनमन्दिर बनवाये और बेलगोल में चतुर्विंशति तीर्थकर मन्दिर बनवाया। उन्होने गुणचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य महामण्डलाचार्य नयकीर्ति सिद्धान्तदेव को इस मन्दिर के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। लेख नं० ९० (२४०) में भी नारसिंह की बेलगोल की वन्दना का उल्लेख है। इस लेख से विदित होता है कि सवणेरु के अतिरिक्त नरेश ने दो और ग्रामों—बेक्क और कगोरे—का दान दिया था। हुल्ल की प्रार्थना से इसी दान का समर्थन बल्लाल द्वितीय ने भी किया था (४९१)। लेख नं० ८० (१७८) और ३१६ (१८१) में भी इस दान का उल्लेख है। लेख नं० ४० (६४) मे उल्लेख है कि हुल्ल ने अपने गुरु महामण्डलाचार्य देवकीर्ति पण्डितदेव की निषद्या निर्माण कराई जिसकी प्रतिष्ठा उन्होंने उनके शिष्य लक्खनन्दि, माधव और त्रिभुवनदेव द्वारा कराई। लेख नं० १३७ (३४६) में हुल्ल की भार्या पद्मावती के गुणो का वर्णन है। इस लेख मे भी हुल्ल के नयकीर्ति के पुत्र भानुकीर्ति को सवणेरु ग्राम का दान करने का उल्लेख है।

नारसिंह प्रथम और उनकी रानी एचलदेवी के बल्लालदेव द्वितीय हुए। लेख नं० १२४ (३२७) १३० (३३१) और ४९१ में इनके वंश व उपाधियों आदि का वर्णन है।

वे सनिवार सिद्धि, गिरिदुर्गमल्ल व कुम्मट और एरम्बरगे के विजेता भी कहे गये हैं। उनकी उच्छङ्गि की विजय का बड़ा वीरतापूर्ण वर्णन दिया गया है। लेख नं० ४६१ (शक १०६५) इस राज्य का सबसे प्रथम लेख है। इसमें इन नरेश और उनके दण्डाधिप हुल्ल का परिचय है। नरेश ने चतुर्विंशति तीर्थंकर की पूजन के हेतु मारुहल्लिग्राम का दान दिया व हुल्ल के अनुरोध से वेक ग्राम के दान का समर्थन किया। यह दान नयकीर्ति के शिष्य भानुकीर्ति को दिया गया। लेख नं० ६० (२४०) में गङ्गराज की कीर्ति का वर्णन, व गुणचन्द्र के पुत्र नयकीर्त्ति का, नारसिंह प्रथम की वेल्गोल की वन्दना का तथा बल्लाल द्वारा नारसिंह के दान के समर्थन का उल्लेख पाया जाता है। लेख के अन्तिम भाग मे कथन है कि नयकीर्ति के शिष्य अध्यात्मि वालचन्द्र ने एक बड़ा जिन मंदिर, एक वृहत् शासन, अनेक निषद्यायें व बहुत से तालाब आदि अपने गुरु की स्मृति मे निर्माण कराये। लेख नं० १२४ (३२७) (शक ११०३) में नरेश के मन्त्री चन्द्रमौलि की भार्या आचियक्क द्वारा वेल्गोल में पार्श्वनाथ वस्ति निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। यह वस्ति अब अक्कन वस्ति के नाम से प्रसिद्ध है। चन्द्रमौलि शम्भूदेव और अक्कब्बे के पुत्र थे। वे शिवधर्मी ब्राह्मण थे और न्याय, साहित्य, भरत शास्त्र आदि विद्याओं में प्रवीण थे। उनकी भार्या आचियक्क व आचलदेवी जिनभक्ता थी। (आचलदेवी की वंशावली

के लिये देखो लेख नं० १६२४)। उनके गुरु नयकीर्ति और बालचन्द्र थे। लेख में कहा गया है कि चन्द्रमौलि की प्रार्थना पर बल्लालदेव ने आचलदेवी द्वारा निर्मापित मंदिर के हेतु बम्मेयन हल्लिग्राम का दान दिया। लेख में और भी दानों का उल्लेख है। उक्त दान का उल्लेख उसी ग्राम के लेख नं० ४६४ (शक ११०४) तथा लेख नं० १०७ (२५६) और ४७६ (३३१) में भी है। लेख नं० १३० (३३५) मे विनयादित्य से लगाकर होय्सल नरेशों के परिचय के पश्चात् महामण्डलाचार्य नयकीर्ति की कीर्ति का वर्णन है और फिर नरेश के 'पट्टणस्वामी' नागदेव का परिचय है। देखो लेख नं० १३०)। नागदेव के अपने गुरु नयकीर्ति की निषद्या बनवाने का उल्लेख लेख नं० ४२ (६६) में भी है। नागदेव के कुछ और सत्कृत्यों और कुछ आचार्यों का परिचय लेख नं० १२२ (३२६) और ४६० (४०७) मे पाया जाता है। लेख नं० ४७१ (३८०) मे वसुधैकबान्धव रेचिमय्य के जिननाथपुर मे शान्तिनाथ की प्रतिष्ठा कराने व शुभचन्द्र त्रैविद्य के शिष्य सागरनन्दि को उस मंदिर के आचार्य नियुक्त करने का उल्लेख है। यद्यपि इस लेख में किसी नरेश का उल्लेख नहीं है तथापि अन्य शिलालेखों से ज्ञात होता है कि रेचिमय्य इन्हीं बल्लालदेव के सेनापति थे। बल्लालदेव के पास आने से प्रथम वे कलचुरि नरेशों के मन्त्री थे। (मै० आ० रि० १६०६, पृ० २१; ए० क० ५, अर्सिकेरे ७७, ए० क० ७,

शिकारपुर १६७) लेख नं० ४६५ में वल्लालदेव के समय में अपने गुरु श्रीपाल योगीन्द्र के स्वर्गवास होने पर वादिराजदेव के परवादिमल्ल जिनालय निर्माण कराने व भूमिदान देने का उल्लेख है।

इस राज्य का अन्तिम लेख नं० १२८ (३३३) (शक ११२८) का है जिसमे वीर बल्लालदेव के कुमार सोमेश्वरदेव और उनके मंत्री रामदेव नायक का उल्लेख है। इतिहास में कहीं अन्यत्र वल्लालदेव के सोमेश्वर नामक पुत्र का कोई उल्लेख नहीं पाया जाता। कुछ विद्वानो का अनुमान है कि सम्भवतः नरेश का कोई प्रतिनिधि ही यहाँ विनय से अपने को नरेश का पुत्र कहता है। (लेख के साराश के लिये देखो नं० १२८)।

वल्लाल द्वितीय के पुत्र नारसिंह द्वितीय के समय का एक ही लेख इस संग्रह मे आया है। लेख नं० ८१ (१८६) मे कहा गया है कि पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर नारसिंह के राज्य मे पदुमसेट्टि के पुत्र व आध्यात्मि बालचन्द्र के शिष्य गोम्मटसेट्टि ने गोम्मटेश्वर की पूजा के लिये बारह गद्याण का दान दिया।

नरसिंह द्वितीय के उत्तराधिकारी सोमेश्वर के समय का लेख नं० ४८८ (शक ११७०) है। इसमे सोमेश्वर की विजय व कीर्ति का परिचय उनकी उपाधियो में पाया जाता है। लेख में कहा गया है कि सोमेश्वर के सेनापति 'शान्त' ने

शान्तिनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। लेख में माघनन्दि आचार्यों की परम्परा भी दी है।

लेख नं० ९६ (२४६) (शक ११९६) में वीर नारसिंह तृतीय (सोमेश्वर के पुत्र व नारसिंह द्वितीय के प्रपौत्र) का उल्लेख है। लेख नं० १२९ (३३४) (शक १२०५) भी सम्भवत. इसी राजा के समय का है। इस लेख में होय्सल वंश की स्तुति है, और कहा गया है कि उस समय के नरेश के गुरु मेघनन्दि थे। ये ही सम्भवतः शास्त्रसार के कर्ता थे जिसका उल्लेख लेख के प्रथम पद्य में ही है। (सारांश के लिये देखो लेख नं० ९६)।

लेख नं० १०५ (२५४) (शक १३२०) के ४६ वें पद्य मे व लेख नं० १०८ (२५८) (शक १३५५) के २९ वें पद्य मे उल्लेख है कि बल्लाल नरेश की एक घोर व्याधि से चारुदत्त गुरु ने रक्षा की थी। यह नरेश इस वंश के बल्लाल प्रथम, विष्णुवर्द्धन के ज्येष्ठ भ्राता हैं जिन्होंने बहुत अल्पकाल राज्य किया था। 'भुजबलि शतक' में कहा गया है कि इस नरेश को पूर्वजन्म के संस्कार से भारी प्रेत बाधा थी जिसे चारुकीर्ति ने दूर की। इसी से इन आचार्य को 'बल्लालजीवरक्षक' की उपाधि प्राप्त हुई।

विजयनगर

जब सन् १३२७ ईस्वी में मुहम्मद तुगलक ने होय्सल राज्य का पूर्ण रूप से सत्यानाश कर डाला और होय्सल राज्य को अपने साम्राज्य में मिला लिया तब दक्षिण के अन्य राज्य सचेत हुए। वे सब दो वीर योधाओं के नायकत्व में एकत्र हुए। इन वीर योधाओं, जिनके वंश आदि का विशेष कुछ पता नहीं चलता, ने थोड़े ही वर्षों में एक राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी उन्होंने विजयनगर बनाई। उक्त दोनों वीरों के नाम क्रमशः हरीहर और बुक्क थे और वे दोनों भ्राता थे। इन्होंने मुसलमानों के बढ़ते प्रवाह को रोक दिया। इसी समय दक्षिण में मुसलमानों ने बहमनी राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी गुलबर्गा थी। अब दक्षिण में ये दोनो राज्य ही मुख्य रहे और दोनों आपस में लगातार झगड़ते रहे। सन् १४८१ के लगभग बहमनी राज्य बरार, बिदर, अहमदनगर, गोलकुण्डा और बीजापुर इन पाँच भागों में बट गया। विजयनगर नरेशों का झगड़ा बीजापुर के आदिल शाहों से चलता रहा। इनमे अधिकत. विजयनगर विजयी रहता था क्योंकि उक्त पाँचों मुसलमानी राज्यों में द्वेष था। अन्त में मुसलमानी राजाओं ने अपनी भूल पहचान ली। वे सन् १५६५ मे एक होकर तालीकोटा के मैदान पर इकट्ठे हुए और यहाँ दक्षिण भारत में हिन्दू साम्राज्य का निपटारा सदैव के लिये हो गया। विजयनगर नरेश रामराय कैद कर लिये

गये और मार डाले गये और उनकी सुन्दर राजधानी विजय-नगर विध्वंस कर दी गई। यह संक्षिप्त मे विजयनगर राज्य का इतिहास है।

अब संग्रहीत लेखों मे इस राज्य के जो उल्लेख आये हैं उन्हें देखिये।

इस राजवंश के सम्बन्ध का सबसे प्रथम और सबसे महत्व का लेख नं० १३६ (३४४) (शक १२९०) का है जिसमे बुक्कराय प्रथम द्वारा जैन और वैष्णव सम्प्रदायों के बीच शान्ति और संधि स्थापित किये जाने का वर्णन है। वैष्णवों ने जैनियों के अधिकारों में कुछ हस्तक्षेप किया था। इसके लिये जैनियों ने नरेश से प्रार्थना की। नरेश ने जैनियों का हाथ वैष्णवों के हाथ पर रखकर कहा कि धार्मिकता में जैनियों और वैष्णवो में कोई भेद नहीं है। जैनियों को पूर्ववत् ही पञ्च-महावाद्य और कलश का अधिकार है। जैन दर्शन की हानि व वृद्धि को वैष्णवों को अपनी ही हानि व वृद्धि समझना चाहिए। श्री वैष्णवों को इस विषय के शासन समस्त बस्तियों में लगा देना चाहिए। जब तक सूर्य और चन्द्र हैं तब तक वैष्णव जैन धर्म की रक्षा करेंगे। इसके अतिरिक्त लेख मे कहा गया है कि प्रत्येक जैन गृह से कुछ द्रव्य प्रति वर्ष एकत्रित किया जायगा जिससे वेल्गोल के देव की रक्षा के लिये बीस रक्षक रक्खे जावेंगे व शेष द्रव्य मंदिरों के जीर्णोद्धारादि मे खर्च किया जावेगा। जो इस शासन का उल्लंघन करेगा

वह राज्य का, संघ का व समुदाय का द्रोही ठहरेगा। इस सम्बन्ध में कदम्बहल्लि की शान्तीश्वर वस्ती का स्तम्भ लेख भी महत्व पूर्ण है। इस लेख में शैवों द्वारा जैनियों के अधिकारों की रक्षा का उल्लेख है। उसमे कहा गया है कि यमादि याग गुणों के धारक, गुरु और देवों के भक्त, कलिकाल की कालिमा के प्रक्षालक, लाकुलीश्वर सिद्धान्त के अनुयायी, पञ्चदीक्षा क्रियायों के विधायक सात करोड श्रीरुद्रो ने एकत्रित होकर मूलसंघ, देशीगण, पुस्तक गच्छ के कदम्बहल्लि के जिनालय का 'एकोटि जिनालय' की उपाधि तथा पञ्चमहावाद्य का अधिकार प्रदान किया। जो कोई इसमें 'ऐसा नहीं होना चाहिए' कहेगा वह शिव का द्रोही ठहरेगा। यह लेख लगभग शक सं० ११२२ का है।

लेख नं० १२६ (३२९) मे हरिहर द्वितीय की मृत्यु का उल्लेख है जो तारण सवत्सर (शक १३६८) भाद्रपद कृष्णा दशमी सोमवार को हुई। अन्य एक लेख (ए० क० ८, तीर्थहल्लि १२९) से भी इसी बात का समर्थन होता है। लेख नं० ४२८ (३३७) से विदित होता है कि देवराय महाराय की रानी व पण्डिताचार्य की शिष्या भीमादेवी ने मङ्गायी वस्ति मे शान्तिनाथ भगवान् की प्रतिष्ठा कराई। यह राजा सम्भवतः देवराय प्रथम है। शिलालेख से यह नई बात विदित होती है कि इस राजा की रानी जैनधर्मावलम्बिनी थी। यह लेख लगभग शक सं० १३३२ का है। लेख

नं० ८२ (२५३) (शक १३४४) मे हरिहर द्वितीय के सेनापति इरुगप का परिचय है और कहा गया है कि उन्होंने बेल्गोल, एक वनकुञ्ज और एक तालाब का दान गोम्मटेश्वर के हेतु कर दिया। लेख में इरुगप की वंशावली इस प्रकार पाई जाती है—
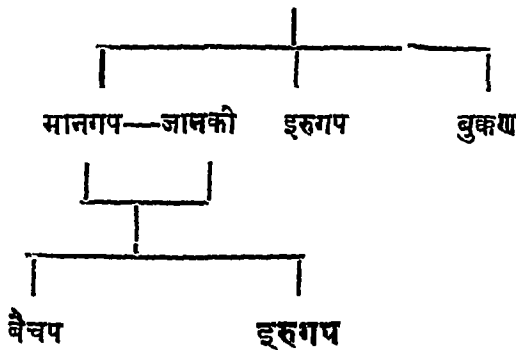
लेख में पण्डितार्य और श्रुतमुनि की प्रशंसा के पश्चात् कहा गया है कि श्रुतमुनि के समक्ष उक्त दान दिया गया था। यह लेख शक सं० १३४४ का है जिससे विदित होता है कि इरुगप देवराय द्वितीय के समय में भी विद्यमान थे। इरुगप संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। उन्होंने 'नानार्थरत्नमाला' नामक पद्यात्मक कोष की रचना की थी। उनके तीन और लेख मिले हैं (ए० इ० ७, ११५; स० इ० इ० १—१५६) जिनमें से दो शक सं० १३०४ और १३०९ के हैं जिनमें पण्डितार्य की प्रशंसा है व तीसरा शक सं० १३०७ का है और उसमें

कथन है कि इरुगप ने विजयनगर में कुंथजिनालय निर्माण कराया। लेख नं० १२५ (३२८) और १२७ (३३०) में देवराय द्वितीय की चय संवत्सर (शक १३६८) में मृत्यु का उल्लेख है।

मैसूर राजवंश

लेख नं० ८४ (२५०) शक सं० १५५६ का है। इसमें मैसूर नरेश चामराज ओडेयर द्वारा बेल्गोल के मंदिरों की जमीन के, जो बहुत दिनों से रहन थी, मुक्त कराये जाने का उल्लेख है। नरेश ने जिन लोगों को इस अवसर पर बुलवाया था उनमें भुजबलि चरित के कर्ता पञ्चबाण कवि के पुत्र बोम्यण्प व कवि बोमण्ण भी थे। इसी विषय का कुछ और विशेष विवरण लेख नं० १४० (३५२) (शक १५५६) मे पाया जाता है। इस लेख मे राजा की ओर से मंदिर की भूमि रहन करने व कराने का निषेध किया गया है। यद्यपि लेखों मे इस बात का उल्लेख नहीं है तथापि यह प्रायः निश्चय ही है कि उक्त विषय के निर्णय के लिये नरेश बेल्गोल अवश्य गये होंगे। चिदानन्द कवि के मुनिवंशाभ्युदय में नरेश की बेल्गोल की यात्रा का इस प्रकार वर्णन है। "मैसूर नरेश चामराज बेल्गोल में आये और गर्भगृह में से गोम्मटेश्वर के दर्शन किये। फिर उन्होंने द्वारे पर आकर दोनों बाजुओ के

शिलालेख पढ़वाये। उन्होंने यह ज्ञात किया कि किस प्रकार चामुण्डराय बेलोल आये थे और अपने गुरु नेमिचन्द्र की प्रेरणा से उन्होंने गोम्मटेश्वर को एक लाख छयानवे हजार 'वरह' की आय के ग्रामों का दान दिया था। इसके पश्चात् नरेश सिद्धर बस्ति में गये और वहाँ के लेखों से जैनाचार्यों की वंशावली, उनके महत्व व उनके कार्यों का परिचय प्राप्त किया। फिर उन्होंने यह पूछा कि अब गुरु कहाँ गये। बम्मण कवि, जो मन्दिर के अध्यक्षों में से थे, ने उत्तर दिया कि जगदेव के तेलुगु सामन्त के त्रास के कारण गोम्मटेश्वर की पूजा बन्द कर दी गई है और गुरु चारुकीर्ति उस स्थान को छोड़ भैरव-राज की रक्षा मे भल्लातकीपुर (गेरुसोप्पे) मे रहते हैं। इस पर नरेश ने गुरु को बुला लेने के लिये कहा और नया दान देने का वचन दिया। फिर उन्होंने भण्डारि बस्ति के दर्शन किये और चन्द्रगिरि के सब मंदिरो के दर्शन कर वे सेरिङ्ग-पट्टम को लौट गये। पदुमण सेट्टि और पदुमण पण्डित चारु-कीर्ति को लेने के लिये भल्लातकीपुर भेजे गये। उनके आने पर वे सत्कार से बेलगोल पहुँचाये गये और राजा ने वचना-नुसार दान दिया।" उपरोक्त वर्णन मे जिस जगदेव का उल्लेख आया है वह चेन्नपट्टन का सामन्त राजा था। वह शक सं० १५५२ मे चामराज द्वारा हराकर राज्यच्युत कर दिया गया।

लेख नं० ४४४ (३६५) मे चिक्कदेवराज ओडेयर द्वारा बेलगोल मे एक कल्याणी (कुण्ड) निर्माण कराये जाने का

उल्लेख है। लेख नं० ८३ (२४९) में कृष्णराज ओडेयर के शक सं० १६४५ में वेलोाल मे आने व गोम्मटेश्वर के हेतु वेल्गोल आदि कई ग्रामों के दान का व चिक्कदेवराजवाले कुण्ड के निकट बनी हुई दानशाला के हेतु कवाले नामक ग्राम के दान का उल्लेख है। लेख में कहा गया है कि गोम्मटेश्वर के दर्शन कर नरेश बहुत ही प्रसन्न हुए और पुलकितगात्र होकर उन्होने उक्त दान दिये। अनन्तकवि कृत 'गोम्मटेश्वर चरित' में भी इस नरेश की वेल्गोल-यात्रा का वर्णन है।

लेख नं० ४३३ (३५३) और ४३४ (३५४) कागज पर लिखी हुई कृष्णराज ओडेयर तृतीय की सनदें हैं जो समय-समय पर वेल्गोल के गुरु को दी गई हैं। इनमे की प्रथम सनद नरेश के मंत्री पुर्णय्य की दी हुई है और उस में कृष्ण-राज ओडेयर प्रथम के दान का समर्थन किया गया है। द्वितीय सनद स्वयं नरेश ने दी है। उसमें वेल्गोल के समस्त मंदिरों के खर्च व जीर्णोद्धार के लिये तीन ग्रामों के दान का उल्लेख है। इस लेख में समस्त मंदिरों की संख्या तेतीस दी है—विन्ध्यगिरि पर आठ, चन्द्रगिरि पर सोलह, ग्राम में आठ व मलेयूर की पहाड़ी पर एक। इससे पूर्व मठ को उक्त मंदिरों के खर्च व जीर्णोद्धार के लिये राज्य से एक सौ बीस वरह का दान मिलता था। पर यह उक्त कार्य के लिये यथेष्ट नहीं था इसी से राजमहल के

लक्ष्मी पंडित की प्रार्थना पर इसके बदले तीन ग्रामों का उक्त दान दिया गया *।

कृष्णराज ओडेयर तृतीय के समय का एक और लेख नं० ९८ (२२३) (शक १७४८) है। इस लेख में उल्लेख है कि चामुण्डराज के एक वंशज, कृष्णराज के प्रधान अङ्गरक्षक की मृत्यु गोम्भटेश्वर के मस्तकाभिषेक के दिवस हुई। इस पर उनके पुत्र ने गोम्मट स्वामी की प्रतिवर्ष पूजा के हेतु कुछ दान दिया।

वर्तमान महाराजा कृष्णराज ओडेयर चतुर्थ का नाम तिथि सहित चन्द्रगिरि के शिखर पर अंकित है जो नवम्बर १९०० ईस्वी में उनके बेलगोल आने का स्मारक है।

कदम्ब वंश

अनुमान शक की नवमी शताब्दि के लेख नं० २८२ (४४३) में काश्चिन दोणो के पास एक कदम्ब राजा की आज्ञा से तीन शिलायें लाई जाने का उल्लेख है। यह कदम्ब नरेश कौन था व शिलायें किस हेतु लाई गई थीं यह विदित करने के कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं।

---

* लेख नं० १४१ राइस साहब के संग्रह में छपा है पर श्रीयुक्त नरसिंहाचार के नये संस्करण में वह नहीं छापा गया। श्रीयुक्त नरसिंहाचार का कथन है कि यह लेख उपर्युक्त दोनों सनदों के ऊपर से तैयार किया गया है और इसका अब मठ में पता नहीं चलता (देखो लेख नं० १४१।)

नोलम्ब व पल्लव वंश

लेख नं० १०९ (२८१) में चामुण्डराज द्वारा नोलम्ब नरेश के हराये जाने का उल्लेख है। सम्भवतः यह नरेश दिलीप का पुत्र नन्नि नोलम्ब था। लेख नं० १२० (३१८) में अरकेरे के वीर पल्लवराय व उसके पुत्र शङ्कर नायक के नाम पाये जाते हैं। शङ्कर नायक का नाम लेख नं० ७३ (१७०) व २४९ (१७१) में भी पाया जाता है। ये लेख लगभग शक सं० ११४० के हैं।

चोलवंश

शक की दशवीं शताब्दि के एक अधूरे लेख नं० ४६९ (३७८) में एक चोल पेर्मडि का गङ्गों के साथ युद्ध का उल्लेख है। सम्भवतः यह नरेश राजेन्द्र चोल ही था जो गङ्गनरेश भूतराय द्वारा शक सं० ८७१ के लगभग मारा गया था जिसका कि उल्लेख अतकूर के लेख में है। लेख नं० ९० (२४०), ३६० (२५१) व ४८६ (३९७) मे गङ्गराज द्वारा चोलराज नरसिंह वर्मा व दामोदर की पराजय का उल्लेख है।

कोङ्गाल्ववंश

कोङ्गाल्व नरेशों का राज्य अर्कल्गुद तालुका के अन्तर्गत कावेरी और हेमवती नदियों के बीच था। इनके लेख शक सं० ९४२ से १०२२ तक के पाये गये हैं। इन्हीं के दक्षिण में चङ्गाल्व राज्य था। इस वंश का सबसे अच्छा परिचय लेख नं० ५०० में राजा की उपाधियों में पाया जाता है।

वहाँ इस वंश के राजा राजेन्द्र पृथ्वी 'समधिगतपञ्चमहाशब्द', 'महामण्डलेश्वर', 'ओरेयूरपुरवराधीश्वर', 'चोलकुलोदयाचलग-भस्तिमाली' व 'सूर्यवंशशिखामणि' कहे गये हैं। इससे स्पष्ट है कि कोङ्गाल्व नरेश सूर्यवंशी थे और चोलवंश से उनकी उत्पत्ति थी। ओरेयूर व उरगपूर चोल राज्य की प्राचीन राजधानी थी। इस वंश के शिलालेखों से अब तक निम्न-लिखित राजाओं के नाम व समय विदित हुए हैं—

सन् ईस्वी

बद्दिव कोङ्गाल्व........ ....
राजेन्द्र चोल पृथुवी महाराज.................१०२२
राजेन्द्र चोल कोङ्गाल्व........ . ...१०२६
राजेन्द्र पृथुवी कोङ्गाल्वदेव अदटरादित्य...१०६६–११००
त्रिभुवनमल्ल चोल कोङ्गाल्वदेव अदटरादित्य......११००

लेख नं० ५०० (शक १००१) व अन्य लेखो से स्पष्ट है कि अदटरादित्य जैनधर्मावलम्बी था। उक्त लेख में उभय-सिद्धान्त-रत्नाकर प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव की कीर्ति के पश्चात् कहा गया है कि अदटरादित्य नरेश राजेन्द्र पृथुवी कोङ्गाल्व ने गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव के लिये चैत्यालय बनवाया। यह लेख चतुर्भाषाविज्ञ सान्धिविग्रहिक नकुलार्य का लिखा हुआ है। लेख नं० ४९८ त्रिभुवनमल्ल चोल कोङ्गाल्व देव के समय का है।

चङ्गल्ववंश

इस वंश के नरेशों का राज्य पश्चिम मैसूर और कुर्ग मे था। वे अपने को यादववंशी कहते थे। उनका प्राचीन स्थान

चङ्गनाडु (आधुनिक हुणसूर तालुका) था। लेख नं० १०१ (२८८) मे कथन है कि इस वंश के एक नरेश कुलोत्तुङ्ग चङ्गाल्व महादेव के मन्त्री के पुत्र ने गोम्मटेश्वर की ऊपरी मञ्जिल का शक सं० १४२२ मे जीर्णोद्धार कराया। उक्त नरेश का उल्लेख एक और लेख में भी पाया गया है (ए. क. ४, हुणसूर ६३)

निडुगलवंश

निडुगल नरेश सूर्यवंशी थे और अपने को करिकाल चोल के वंशज कहते थे। वे ओरेयूराधीश्वर की उपाधि धारण करते थे। ओरेयूर (त्रिचनापल्ली के समीप) चोल राज्य की प्राचीन राजधानी थी। ये नरेश चोल महाराजा भी कहलाते थे। उनकी राजधानी पेञ्जेरु थी जो अब अनन्तपुर जिले मे हेमावती कहलाती है। होय्सल नरेश विष्णुवर्द्धन के समय इस वंश का एक 'इरुङ्गोल' नाम का राजा राज्य करता था। लेख नं० ४२ (६६) में उसके नयकीर्ति सिद्धान्तदेव के शिष्य होने व लेख नं० १३८ (३४९) मे उसके विष्णुवर्द्धन द्वारा हराये जाने का उल्लेख है।

उपर्युक्त राजकुलो के अतिरिक्त कुछ लेखों मे और भी फुटकर राजाओं व राजवंशों का उल्लेख है। लेख नं० १५२ (११) मे अरिष्टनेमि गुरु के समाधिमरण के समय **दिण्डिकराज** उपस्थित थे। दिण्डिक का उल्लेख एक और लेख (सा. इ. इ. २–३८१) में भी आया है पर वह लेख लगभग

सन् ८०० का है और प्रस्तुत लेख उससे कोई दो सौ वर्ष प्राचीन अनुमान किया जाता है। लेख नं० १४ (३४) की नागसेन प्रशस्ति में **नागनायक** नाम के एक सामन्त राजा का उल्लेख है। लेख नं० ५५ (६९) मे कहा गया है कि प्रभाचन्द्र **धाराधीश भोज** द्वारा व यशःकीर्ति **सिंहलनरेश** द्वारा सम्मानित हुए थे। लेख नं० ५४ (६७) में कथन है कि अकलङ्क देव ने **हिमशीतल** नरेश की सभा में बौद्धों को परास्त किया था व चतुर्मुखदेव ने **पाण्ड्यनरेश** द्वारा स्वामी की उपाधि प्राप्त की थी। लेख नं० ३७ (१४९) मे **गरुड़केसिराज** व नं० २९६ (४५७) में **बालादित्य**, वत्सनरेश, का उल्लेख है। लेख नं० ४० (६४) में सामन्त केदार नाकरस कामदेव व निम्बदेव माघनन्दि के, व दण्डनायक मरियाणे और भरत व बूचिमय्य और कोरय्य गण्डविमुक्तदेव के शिष्य कहे गये हैं। निम्ब के माघनन्दि के शिष्य होने का समाचार तेरदाल के एक लेख (इ. ए. १४, १४) मे भी पाया जाता है। शुभचन्द्र के शिष्य पद्मनन्दि ने अपनी 'एकत्वसप्तति' में उन्हे सामन्तचूडामणि कहा है। नं० ४७७ (३८७) में **सिंगयपनायक** व नं० ४१ (६५) मे बेलुकेरे के राजा **गुम्मट** का उल्लेख है। गुम्मट ने शुभचन्द्र देव की निषद्या बनवाई थी। लेख नं० १०५ (२५४) मे हरियण और माणिकदेव नामक दो सामन्त राजाओं के पण्डितार्य के शिष्य होने का उल्लेख है।

लेखों का मूल प्रयोजन

प्रस्तुत लेखों का मूल प्रयोजन धार्मिक है। इस सङ्ग्रह मे लगभग एक सौ लेख मुनिओं, आर्जिकाओ, श्रावक और श्राविकाओं के समाधिमरण के स्मारक हैं; लगभग एक सौ मन्दिर-निर्माण, मूर्तिप्रतिष्ठा, दानशाला, वाचनालय, मन्दिरों के दरवाजे, परकोटे, सिढियां, रङ्गशालायें, तालाव, कुण्ड, उद्यान, जीर्णोद्धार आदि कार्यों के स्मारक हैं, अन्य एक सौ के लगभग मन्दिरो के खर्च, जीर्णोद्धार, पूजा, अभिषेक, आहारदान आदि के लिये ग्राम, भूमि, व रकम के दान के स्मारक हैं, लगभग एक सौ साठ संघों और यात्रियो की तीर्थयात्रा के स्मारक हैं और शेष चालीस ऐसे हैं जो या तो किसी आचार्य, श्रावक, व योधा की स्तुति मात्र हैं, व किसी स्थान-विशेष का नाम मात्र अंकित करते हैं व जिनका प्रयोजन अपूर्ण होने के कारण स्पष्ट विदित नहीं हो सकता।

सल्लेखना—समाधिमरण से सम्बन्ध रखनेवाले सौ लेखो में अधिकांश—अर्थात् लगभग साठ—सातवीं आठवीं शताब्दि व उससे पूर्व के हैं और शेप उससे पश्चात् के। इससे अनुमान होता है कि सातवीं आठवीं शताब्दि में सल्लेखना का जितना प्रचार था उतना उससे पश्चात् की शताब्दियों मे नहीं रहा। समाधिमरण करनेवालों में लगभग सोलह के संख्या स्त्रियों—अर्जिकाओं व श्राविकाओं—की भी है। लेखों में कहीं पर इसे सल्लेखना, कहीं समाधि, कहीं संन्यसन,

कहीं व्रत व उपवास व अनशन द्वारा मरण व स्वर्गारोहण कहा है। अनेक स्थानों पर सल्लेखना मरण की सूचना केवल मुनियों व श्रावकों की निषधाओ (स्मारकों) से चलता है।

सल्लेखना क्यों और किस प्रकार की जाती थी इसके सम्बन्ध मे प्राचीन जैन ग्रन्थो मे समाचार मिलते हैं। इस विषय पर समन्तभद्र स्वामी कृत रत्नकरण्ड श्रावकाचार मे इस प्रकार कहा है—

उपसर्गे दुर्भिक्षे जरसि रुजायां च निःप्रतीकारे।
धर्माय तनुविमोचनमाहुः सल्लेखनामार्याः ॥ १ ॥
स्नेहं वैरं सङ्गं परिग्रहं चापहाय शुद्धमनाः।
स्वजनं परिजनमपि च क्षान्त्वा क्षमयेत्प्रियवचनैः ॥ २ ॥
आलोच्य सर्वमेनः कृतकारितमनुमतं च निर्व्याजम्।
आरोपयेन्महाव्रतमामरणस्थायि निश्शेषम् ॥ ३ ॥
शोकं भयमवसादं क्लेदं कालुष्यमरतिमपि हित्वा।
सत्वोत्साहमुदीर्य च मनः प्रसाद्यं श्रुतैरमृतैः ॥ ४ ॥
आहारं परिहाप्य क्रमशः स्निग्धं विवर्धयेत्पानं।
स्निग्धं च हापयित्वा खरपानं पूरयेत्क्रमशः ॥ ६ ॥
खरपानहापनामपि कृत्वा कृत्वोपवासमपि शक्त्या।
पञ्चनमस्कारमनास्तनुं त्यजेत्सर्वयत्नेन ॥ ६ ॥

अर्थात् "जब कोई उपसर्ग व दुर्भिक्ष पड़े व बुढ़ापा व व्याधि सतावे और निवारण न की जा सके उस समय धर्म की रक्षा के हेतु शरीर त्याग करने को सल्लेखना कहते हैं। इसके

लिये प्रथम स्नेह व वैर, संग व परिग्रह का त्याग कर मन को शुद्ध करे व अपने भाई बन्धु व अन्य जनों को प्रिय वचनों द्वारा क्षमा प्रदान करे और उनसे क्षमा करावे। तत्पश्चात् निष्कपट मन से अपने कृत, कारित व अनुमोदित पापो की आलोचना करे और फिर यावज्जीवन के लिये पञ्चमहाव्रतों को धारण करे। शोक, भय, विषाद, स्नेह, रागद्वेषादि परिणति का त्याग कर शास्त्र-वचनों द्वारा मन को प्रसन्न और उत्साहित करे। तत्पश्चात् क्रमशः कवलाहार का परित्याग कर दुग्धादि का भोजन करे। फिर दुग्धादि का परित्याग कर कञ्जिकादि शुद्ध पानी (व गरम जल) का पान करे। फिर क्रमशः इसे भी त्यागकर शक्त्यनुसार उपवास करे और पञ्चनमस्कार का चिन्तवन करता हुआ यत्नपूर्वक शरीर का परित्याग करे।" यह सल्लेखना मुनियों के लिये ही नहीं श्रावको को भी उपादेय कही गई है। आशाधरजी ने अपने धर्मामृत ग्रन्थ में कहा है—

सम्यक्त्वममलममलान्यनुगुणशिक्षाव्रतानि मरणान्ते।
सल्लेखना च विधिना पूर्णः सागारधर्मोऽयम्॥

अर्थात् शुद्ध सम्यक्त्व, अणुव्रत, गुणव्रत और शिक्षा-व्रतों का पालन व मरण समय सल्लेखना यह गृहस्थों का सम्पूर्ण धर्म है। कुछ शिलालेखों में जितने दिनों के उपवास के पश्चात् समाधि मरण हुआ उसकी संख्या भी दी है। लेख नं० ३८ (५९) में तीन दिन, नं० १३ (३३) में इक्कीस दिन, व नं० ८ (२५); ५३ (१४३) और ७२ (१९७)

मे एक माह का उल्लेख है। सबसे प्राचीन लेख समाधि-मरण के विषय के ही हैं। लेख नं० १ जो सब लेखों मे प्राचीन है, भद्रबाहु के (व कुछ विद्वानों के मतानुसार प्रभाचन्द्र के) समाधिमरण का उल्लेख करता है। इसका विवेचन ऊपर किया जा चुका है। इस लेख की लिपि छठवीं सातवीं शताब्दि की अनुमान की जाती है। इसी प्रकार जैन इतिहास के लिये सबसे महत्वपूर्ण लेख भी इसी विषय के हैं। देवकीर्ति प्रशस्ति नं० ३९-४० (६३-६४) शुभचन्द्र प्रशस्ति नं० ४१ (६५), मेघचन्द्र प्रशस्ति ४७ (१२७), प्रभाचन्द्र प्रशस्ति ५० (१४०) मल्लिषेण प्रशस्ति ५४ (६७), पण्डितार्य प्रशस्ति १०५ (२५४), व श्रुतमुनि प्रशस्ति १०८ (२५८) मे उक्त आचार्यों के कीर्ति-सहित स्वर्गवास का वर्णन है। लेख नं० १५९ (२२) मे कहा गया है कि कालत्तूर के एक मुनि ने कटवप्र पर १०८ वर्ष तक तपश्चरण करके समाधिमरण किया। इन्ही लेखों में आचार्यों की परम्परायें व गण गच्छों के समाचार पाये जाते हैं, जिनका सविस्तर विवेचन आगे किया जावेगा।

यात्रियों के लेख—जैन औपदेशिक ग्रन्थों में श्रावक-धर्म के अन्तर्गत तीर्थयात्रा का भी विधान है। जिन स्थानों पर जैन तीर्थंकरो के कल्याणक हुए हैं व जिन स्थानों से मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया है व जहाँ अन्य कोई असाधारण धार्मिक घटना घटी हो वे सब स्थान 'तीर्थ' कहलाते हैं। गृहस्थों को समय समय पर पुण्य का लाभ करने के हेतु इन स्थानों की

वन्दना करनी चाहिए। श्रवणबेल्गोल बहुत काल से एक ऐसा ही स्थान माना जाता रहा है। इस लेख-संग्रह मे लगभग १६० लेख तीर्थ-यात्रियों के हैं। इनमें के अधिकांश-लगभग १०७—दक्षिण भारत के यात्रियो के और शेष उत्तर भारत-वासियों के हैं। दक्षिणी यात्रियों के लेखो मे लगभग ५४ में केवल यात्रियों के नाम मात्र अंकित हैं, शेप लेखों में यात्रियों की केवल उपाधियाँ व उपाधियों सहित नाम पाये जाते हैं। कुछ लेखों में यह भी स्पष्ट कहा है कि अमुक यात्री व यात्रियों ने देव की व तीर्थ की वन्दना की। यात्रियो के जो नाम पाये जाते हैं उनमें से कुछ ये हैं—श्रीधरन्, वीतराशि, चावुण्डय्य, कविरत्न, अकलङ्क पण्डित, अलम्रकुमार महामुनि, मालव अमावर, सहदेव मणि, चन्द्रकीर्ति, नागवर्म्म, मारसिङ्गय्य और मल्लिपेण। सम्भव है कि इनमें के 'कविरत्न' वही कन्नड भापा के प्रसिद्ध कवि हों जिन्हें चालुक्य नरेश तैल तृतीय ने 'कविचक्रवर्त्ति' की उपाधि से विभूपित किया था व जिन्होंने शक सं० ६१५ में 'अजितपुराण' की रचना की थी। नाग-वर्म सम्भवतः वही प्रसिद्ध कनाड़ी कवि हो जिन्हें गङ्गनरेश रक्कसगङ्ग ने अपने दरबार में रक्खा था और जिन्होंने 'छन्दो-म्बुधि' और 'कादम्बरी' नामक काव्यों की रचना की थी। 'चन्द्रकीर्ति' सम्भव है वे ही आचार्य हों जिनका उल्लेख ४३ (११७) में आया है। आश्चर्य नहीं जो चावुण्डय्य और मारसिङ्गय्य क्रमशः चामुण्डराज मन्त्री और मारसिंह नरेश ही

हों। केवल उपाधियों मे से कुछ इस प्रकार हैं—समधिगत पञ्चमहाशब्द; महामण्डलेश्वर, श्रीराजन् चट्ट (राजव्यापारी), श्रीबडवरबण्ट (गरीबों का सेवक), रणधीर, इत्यादि। उपाधि-सहित नामों के उदाहरण इस प्रकार हैं—श्री ऐचय्य-विरोधि-निष्ठुर, श्रीजिनमार्गनीति-सम्पन्न-सर्पचूडामणि, श्रावत्सराज बालादित्य, अरिष्टनेमि पण्डित परसमयध्वंसक, इत्यादि। जिनके साथ मे यह भी कहा गया है कि उन्होंने देव की व तीर्थ की वन्दना की, उनमे से कुछ के नाम ये हैं—मल्लिषेण भट्टारक के शिष्य चरेङ्गय्य, अभयनन्दि पण्डित के शिष्य कोत्तय्य, श्रीवर्म्मचन्द्रगीतय्य, नयनन्दि विमुक्तदेव के शिष्य मधुवय्य, नागति के राजा इत्यादि। कुछ शिल्पियों के नाम भी हैं, जैसे—गण्डविमुक्तसिद्धान्तदेव के शिष्य श्रीधरवोज, बिदिग, वबोज, चन्द्रादित और नागवर्म्म।

इस प्रकार के शिलालेख यों तो निरुपयोगी समझ पड़ते हैं पर इतिहासखोजक के लिये कभी-कभी ये ही बड़े उपयोगी सिद्ध होते हैं। कम से कम उनसे यह बात तो सिद्ध होती ही है कि कितने प्राचीन समय से उक्त स्थान तीर्थ माना जाता रहा है और यति, मुनि, कवि, राजा, शिल्पी, आदि कितने प्रकार के यात्रियों ने समय समय पर उस स्थान की पूजा वन्दना करना अपना धर्म समझा है। इससे उस स्थान की धार्मिकता, प्राचीनता और प्रसिद्धि का पता चलता है।

उत्तर भारत के यात्रियों के लेखो की संख्या लगभग ५३ है। ये सब मारवाड़ी-हिन्दी भाषा में हैं। लिपि के अनुसार ये लेख दो भागों में विभक्त किये जा सकते हैं। ३६ लेखों की लिपि नागरी है और १७ की महाजनी। नागरी लेखों का समय लगभग शक सं० १४०० से १७६० तक है। इनमें के दो लेख स्याही से लिखे हुए हैं। इन लेखो मे के अधिकांश यात्री काष्ठा संघ के थे जिनमें के कुछ मण्डितटगच्छ के थे। यह गच्छ काष्ठा संघ के ही अन्तर्गत है। कुछ यात्रियों के साथ उनकी **वघेरवाल** जाति व **गोनासा** और **पीतला** गोत्र का उल्लेख है। कुछ लेखों में यात्रियों के निवासस्थान पुरस्थान, माडवागढ़ व गुडवटीपुर का उल्लेख है। महाजनी लिपि के १७ लेख उस विचित्र लिपि के हैं जिसे मुण्डा भाषा कहते हैं। इसकी विशेषता यह है कि इसमें मात्रायें प्रायः नहीं लगाई जातीं। केवल 'अ' और 'इ' की मात्राओं से ही अन्य सब मात्राओं का भी काम निकाल लिया जाता है। व्यञ्जनो मे 'ज' और 'झ', 'ट' और 'ठ', 'ड' और 'ण', 'भ' और 'व' मे कोई भेद नहीं रक्खा जाता। यह भाषा आगरा, अवध और पञ्जाब प्रदेशों के व्यापारी महाजनों में प्रचलित है। कुछ लेखों में टाकरी' लिपि के अक्षर भी पाये जाते हैं, जो पञ्जाब के पहाड़ी हिस्सों में प्रचलित हैं। इस पर से अनुमान किया जा सकता है कि उक्त सब प्रदेशो से यात्री इस तीर्थस्थान की वन्दना को आते थे। उल्लिखित यात्रियों मे अधिकांश अग्र-

वाल और सरावगी जातियों के थे। अग्रवालों के अन्तर्गत ही वे सब अवान्तर भेद पाये जाते हैं जिनका उल्लेख लेखों में आया है; यथा—नरथनवाला, सहनवाला, गङ्गानिया इत्यादि। अनेक यात्रियों ने अपने को 'पानीपथीय' कहा है जिससे विदित होता है कि वे 'पानीपत' के थे। लेखों में गोथल और गर्ग गोत्रों व स्थानपेठ और मांडनगढ़ स्थानों के नाम भी आये हैं। इन लेखों का समय लगभग शक सं० १६७० से १७१० तक है।

जीर्णोद्धार और दान—मन्दिरादिनिर्माण, जीर्णोद्धार और पूजाभिषेकादि के हेतु दान से सम्बन्ध रखनेवाले लेखों की संख्या लगभग दो सौ है। मन्दिरादिनिर्माण के विषय के लेखों का उल्लेख पहले मन्दिरों आदि के वर्णन में आ चुका है। यहाँ शेष लेखों में के मुख्य २ का कुछ परिचय दिया जाता है। शक सं० ११०० के लगभग के लेख नं० ८८ (२३७), ८९ (२३८) और ९२ (२४२) में गोम्मटेश्वर की पूजा के हेतु पुष्पों के लिये दान का उल्लेख है। प्रथम लेख में कहा गया है कि महापसायित विजण्ण के दामाद चिक्क मदुकण्ण ने महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव से कुछ भूमि मोल लेकर उसे गोम्मटेश की नित्य पूजा में बीस पुष्पमालाओं के लिये लगा दी। द्वितीय लेख में कथन है कि सोमेय के पुत्र कविसेट्टि ने उक्त देव की पूजार्थ पुष्पों के लिये कुछ भूमि का दान महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव को दिया। तीसरे

लेख में उल्लेख है कि बेलगोल के समस्त व्यापारियों ने 'संघ' से कुछ भूमि खरीद कर उसे मालाकार को गोम्मटेश की पूजा में पुष्प देने के लिये दान कर दी। लेख नं० ९१ (२४१) में कथन है कि बेलगोल के समस्त व्यापारियो ने गोम्मटेश और पार्श्वदेव की पूजा में पुष्पो के लिये प्रतिवर्ष कुछ चन्दा देने का वचन दिया। लेख नं० ९३ (२४३) के अनुसार चेन्नि सेट्टि के पुत्र व चन्द्रकीर्ति भट्टारक के शिष्य कल्लय्य ने कुछ द्रव्य का दान इस हेतु दिया कि कम से कम पुष्पों की छ. मालाएँ प्रतिदिवस गोम्मटदेव और तीर्थंकरों को चढ़ाई जावें। लेख नं० ९४, ९५, ९७ व ३३० (२४४, २४५, २४७, २००) मे गोम्मटेश के प्रतिदिन अभिषेक के हेतु दुग्ध के लिये दान का उल्लेख है। इन लेखो में दुग्ध का परिमाण भी दिया गया है। और बेलगोल के व्यापारी इस कार्य के प्रबन्धक नियुक्त किये गये हैं। लेख नं० १०६ (२५५) (शक स० १३३१) मे गोम्मटेश की मध्याह्न पूजन के हेतु दान का उल्लेख है।

लगभग शक सं० ११०० के लेख नं० ८६, ८७, ३६१ (२३५, २३६, २५२) मे बसविसेट्टि द्वारा स्थापित चतुर्विंशति तीर्थंकरों की अष्टविध पूजा के हेतु व्यापारियों के वार्षिक चन्दों का उल्लेख है। इसी प्रकार लेख नं० ९९-१०२, १३१, १३५, १३७, ४५४ और ४७५ में भिन्न भिन्न सत्पुरुषों द्वारा भिन्न-भिन्न देवों और मन्दिरों की भिन्न भिन्न प्रकार की सेवा और पूजा के हेतु भिन्न-भिन्न समय पर नाना प्रकार के दानों का उल्लेख है।

लेख नं० १३४ (३४२) मे कहा गया है कि हिरिय-अय्य के शिष्य गुम्मटण्ण ने चन्द्रगिरि पर की चिक्कबस्ति, उत्तरीय दरवाजे पर की तीन बस्तियों और मङ्गायि बस्ति का जीर्णोद्धार कराया। लेख नं० ३७० (२७०) के अनुसार बेगूरु के बैयण्ण ने एक बड़ा हौज और छप्पर बनवाया। नं० ४६८ (५००) के अनुसार एक साध्वी स्त्री जिण्णण्ण ने एक मन्दिर को रथ का दान दिया, व नं० ४८३ के अनुसार मदेय नायक ने एक नन्दिस्तम्भ बनवाया।

लेखों से तत्कालीन दूध के भाव का अनुमान—

अनेक लेखों मे मस्तकाभिषेक के हेतु दुग्ध के लिये दान दिये जाने के उल्लेख हैं जिनसे उस समय के दूध के भाव का कुछ ज्ञान हो सकता है। उदाहरणार्थ, शक सं० ११९७ के एक लेख नं० ९५ (२४५) में कहा गया है कि हलसूर के केतिसेट्टि ने गोम्मटदेव के नित्याभिषेक के लिये ३ मान दूध के लिये ३ गद्याण का दान दिया। यह दूध उक्त रकम के व्याज से जब तक सूर्य और चन्द्र हैं तब तक लिया जावे। गद्याण दक्षिण भारत का एक प्राचीन सोने का सिक्का है जो करीब दस आना भर होता है, और मान दक्षिण भारत का एक माप है जो ठीक दो सेर का होता है। अतएव स्पष्ट है कि १॥।=) भर (दो आना कम दो तोला) सोने के साल भर के व्याज से ३६० × ३ × २ = २१६० सेर दूध आता था। शक सं० ११२८ के लेख नं० १२८ (३३३) से ज्ञात होता

है कि उस समय आठ 'हण' का सालाना एक 'हण' ब्याज आ सकता था अर्थात् ब्याज की दर सालाना मूल रकम का अष्टमांश थी। इसके अनुसार १॥=) भर सोने का साल भर का ब्याज =)॥ (पौने चार आना) भर सोना हुआ। अतएव स्पष्ट है कि शक की बारहवी शताब्दी के लगभग अर्थात् आज से छः सात सौ वर्ष पूर्व दक्षिण भारत में पौने चार आना भर सोने का २१६० सेर दूध बिकता था। इसे आजकल के चाँदी सोने के भाव के अनुसार इस प्रकार कह सकते हैं कि उक्त समय एक रुपया का लगभग साढ़े नौ मन दूध आता था।

इसी प्रकार लेख नं० ६४ (२४४) में जो नित्यप्रति ३ मान दूध के लिये ४ गद्याण के दान का उल्लेख है उसका हिसाब लगाने से २१६० सेर दूध की कीमत पाँच आना भर सोना निकलती है। शक सं० १२०१ के लेख १३१ (३३६) में नित्यप्रति एक 'वल्ल' दूध के लिये पाँच 'गद्याण' के दान का उल्लेख है जिसके अनुसार ३६० 'वल्ल' दूध की कीमत सवा छः आना भर सोना निकलती है। बल्ल सम्भवतः उस समय 'मान' से बड़ा कोई माप रहा है*।

---

* 'गद्याण' और 'मान' का अर्थ मुझे श्रीयुक्त प० नाथूरामजी प्रेमी द्वारा विदित हुआ है। उन्होंने श्रवण बेल्गोला से समाचार मँगाकर अपने पहले पत्र में मुझे इस प्रकार लिखा था—"गद्याण = यह माप अनुमान १ तोले के बराबर होता है और एक सुवर्ण नाण्य (?) को

आचार्यों की वंशावली

जैन इतिहास की दृष्टि से वे लेख बहुत महत्वपूर्ण हैं जिनमे आचार्यों की परम्परायें दी हैं। प्रस्तुत संग्रह के दस बारह लेखों में ऐसी परम्परायें व पट्टावलियाँ पाई जाती हैं। इस सम्बन्ध में सबसे पहले हम उन लेखों को लेते हैं जिनमें उन सुगृहीतनाम आचार्यों का क्रमबद्ध उल्लेख आया है जिन्होने महावीर स्वामी के पश्चात् जैन आगम का अध्ययन और प्रचार किया। ऐसे लेख नं० १ और १०५ (२५४) हैं। इनमें उक्त आचार्यों की निम्नलिखित परम्परा पाई जाती है। मिलान के लिये साथ मे हरिवंश पुराण की गुर्वावली भी दी जाती है।

भी कहते हैं। मान = यह अनुमान एक सेर के बराबर होता है। इनका प्रचार प्राचीन काल में था अब नहीं है।" इसके पश्चात् उनका दूसरा पत्र आया जिसमें निम्नलिखित वार्ता थी—"गद्याण पुराने समय का सोने का सिक्का है जो करीब दस आने भर होता है। अब यह नहीं चलता। चार गुञ्जाओं का एक हण, नौ हणाओं का एक बरहा और दो बरहा का एक गद्याण। मान ठीक दो सेर का होता है। अब इसको 'बल्ल' बोलते हैं। खेड़ों मे इसका प्रचार है और अनाज मापने के काम में यह आता है। पहले दूध, दही, घी भी इससे मापा जाता था।" ऊपर के विवेचन मे दूसरे पत्र का ही आधार लिया गया है। इसके अनुसार 'मान' और 'बल्ल' एक ही बराबर ठहरते है पर जैसा कि ऊपर कहा गया है, प्राचीन काल का 'बल्ल' सम्भवतः मान से बड़ा रहा है।

आचार्यों की वंशावली

नं० १०५ (२५४) (शक सं० १३२०)		हरिवंश पुराण (शक सं० ७०५)	नं० १ (अनु० ७ वीं शताब्दी)
महावीर		महावीर	महावीर
११ गणधर ३ केवली	१ इन्द्रभूति। गौतम	१ गौतम	१ गौतम
	२ अग्निभूति		
	३ वायुभूति		
	४ अकम्पन		२ लोहाचार्य
	५ मौर्य	२ सुधर्म	
	६ सुधर्म। सुधर्म		
	७ पुत्र		
	८ मैत्रेय		
	९ मौण्ड्य		३ जम्बू
	१० अन्धवेल	३ जम्बू	
	११ प्रभासक। जम्बू		
५ श्रुतकेवली	१ विष्णु	१ विष्णु	१ विष्णुदेव
	२ अपराजित	२ नन्दिमित्र	२ अपराजित
	३ नन्दिमित्र	३ अपराजित	३ गोवर्धन
	४ गोवर्द्धन	४ गोवर्द्धन	४ भद्रबाहु
	५ भद्रबाहु	५ भद्रबाहु	
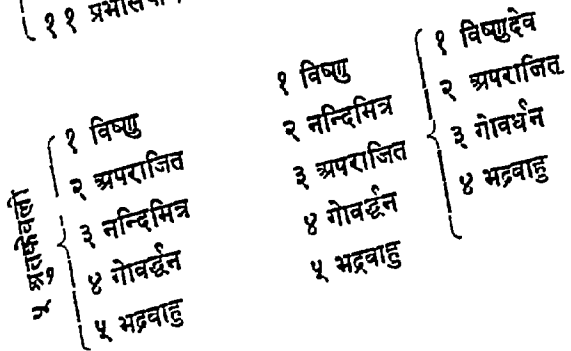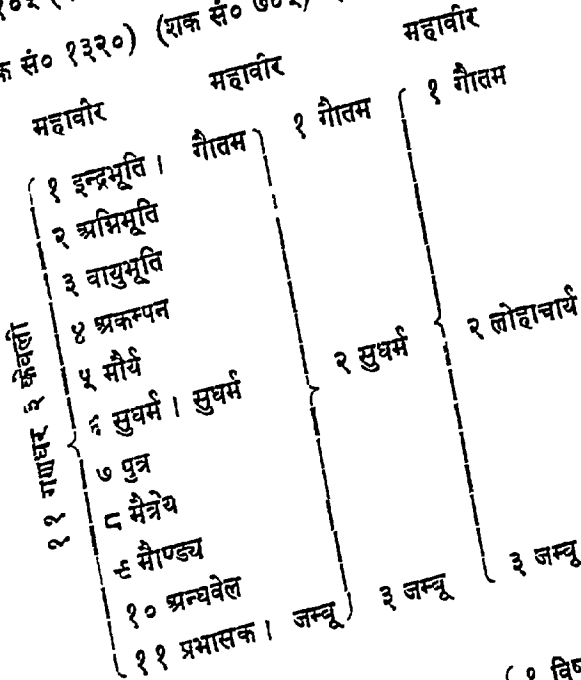
११ दशपूर्वी	१ क्षत्रिय	१ विशाख	१ विशाख
	२ प्रोष्ठिल	२ प्रोष्ठिल	२ प्रोष्ठिल
	३ गङ्गदेव	३ क्षत्रिय	३ कृत्तिकार्य (क्षत्रिकार्य)
	४ जय	४ जय	४ जय
	५ सुधर्म	५ नाग	५ नाम (नाग)
	६ विजय	६ सिद्धार्थ	६ सिद्धार्थ
	७ विशाख	७ धृतिषेण	७ धृतिषेण
	८ बुद्धिल	८ विजय	८ बुद्धिल आदि-
	९ धृतिषेण	९ बुद्धिल	
	१० नागसेन	१० गङ्गदेव	
	११ सिद्धार्थ	११ धर्मसेन	
५ एकादशाङ्गी	१ नक्षत्र	१ नक्षत्र	
	२ पाण्डु	२ यशःपाल	
	३ जयपाल	३ पाण्डु	
	४ कंसाचार्य	४ ध्रुवसेन	
	५ द्रुमसेन (धृति-सेन)	५ कंसाचार्य	
४ आचाराङ्गी	१ लोह	१ सुभद्र	
	२ सुभद्र	२ यशोभद्र	
	३ जयभद्र	३ यशोबाहु	
	४ यशोबाहु	४ लोहाचार्य	

यह अङ्गधारी आचार्यों की पट्टावली है। नामों के क्रम में जो हेर फेर पाये जाते हैं, उसका कारण यह है कि लेख नं० १०५ हरिवंश पुराण से भिन्न छन्दो में लिखा गया है। कवि को अपने छन्द में नामों का समावेश करने के लिये उनको इधर उधर रखना पड़ा है। इसी कारण कहीं कहीं नामो मे भी हेर फेर पाये जाते हैं। लेख मे यश.पाल के लिये जयपाल, धर्मसेन के लिए सुधर्म, और यशोभद्र की जगह जयभद्र नाम आये हैं। ध्रुव-सेन की जगह जो लेख में द्रुमसेन पाया जाता है, यह सम्भवतः मूल लेख के पढ़ने में भूल हुई है। लेख नं० १ मे जो अधूरी परम्परा पाई जाती है उसका कारण यह ज्ञात होता है कि वहाँ लेखक का अभिप्राय पूरी पट्टावलि देने का नहीं था। उन्होंने कुछ नाम देकर आदि लगाकर उस सुप्रसिद्ध परम्परा का उल्लेख मात्र किया है। इसी से श्रुतकेवलियों के बीच एक नाम छूट भी गया है। उक्त लेखों में यद्यपि इन आचार्यों का समय नहीं बतलाया गया, तथापि इन्द्रनन्दि-कृत श्रुतावतार से जाना जाता है कि महावीर स्वामी के पश्चात् तीन केवली ६२ वर्ष में, पाच श्रुत केवली १०० वर्ष मे, ग्यारह दशपूर्वी १८३ वर्ष मे, पाँच एकादशाङ्गी २२० वर्ष में और चार एकाङ्गी ११८ वर्ष में हुए हैं। इस प्रकार महावीर स्वामी की मृत्यु के पश्चात् लोहाचार्य तक ६८३ वर्ष व्यतीत हुए थे।

बहुत से लेखों में आगे के आचार्यों की परम्परा कुन्द-कुन्दाचार्य से ली गई है। दुर्भाग्यतः किसी भी लेख में उपर्युक्त

श्रुतज्ञानियों और कुन्दकुन्दाचार्य के बीच की पूरी गुरुपरम्परा नहीं पाई जाती। केवल उपर्युक्त लेख नं० १०५ में ही इस बीच के आचार्यों के कुछ नाम पाये जाते हैं जो इस प्रकार हैं—

१ कुम्भ
२ विनीत या अविनीत
३ हलधर
४ वसुदेव
५ अचल
६ मेरुधीर
७ सर्वज्ञ
८ सर्वगुप्त
९ महिधर
१० धनपाल
११ महावीर
१२ वीरट्ट इत्यादि

नन्दि संघ की पट्टावली में कुन्दकुन्दाचार्य की गुरुपरम्परा इस प्रकार पाई जाती है :—

इन्द्रनन्दिकृत श्रुतावतार के अनुसार कुन्दकुन्द उन आचार्यों में हुए हैं जिन्होने अंगज्ञान के लोप होने के पश्चात् आगम को पुस्तकारूढ़ किया।

कुन्दकुन्दाचार्य जैन इतिहास, विशेषतः दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के इतिहास, में सबसे महत्वपूर्ण पुरुष हुए हैं। वे प्राचीन और नवीन सम्प्रदाय के बीच की एक कड़ी हैं। उनसे पहले जो भद्रबाहु आदि श्रुतज्ञानी हो गये हैं उनके नाममात्र के सिवाय उनके कोई ग्रंथ आदि हमें अब तक प्राप्त नहीं हुए हैं। कुन्दकुन्दाचार्य से कुछ प्रथम ही जिन पुष्पदन्त, भूतबलि आदि आचार्यों ने आगम को पुस्तकारूढ़ किया उनके भी ग्रन्थों का अब कुछ पता नहीं चलता। पर कुन्दकुन्दाचार्य के अनेक ग्रन्थ हमें प्राप्त हैं। आगे के प्रायः सभी आचार्यों ने इनका स्मरण किया है और अपने को कुन्दकुन्दान्वय के कह-कर प्रसिद्ध किया है। लेखों में दिगम्बर सम्प्रदाय का एक और विशेष नाम मूल संघ पाया जाता है। यह नाम सम्भ-वतः सबसे प्रथम दिगम्बर संघ का श्वेताम्बर संघ से पृथक् निर्देश करने के लिये दिया गया। अनुमान शक संवत् १०२२ के शिलालेख नं० ५५ में कुन्दकुन्द को ही मूल संघ के आदि गणी कहा है यथा—

श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने।

श्रीकोण्डकुन्दनामाभून्मूलसंघाग्रणीर्गणी ॥

पर शिलालेख नं० ४२, ४३, ४७ और ५० (क्रमशः शकसं० १०९९, १०४५, १०३७ और १०६०) में गौतमादि मुनीश्वरों का स्मरण कर कहा गया है कि उन्हीं की सन्तान के नन्दि गण में पद्मनन्दि अपर नाम कुन्दकुन्दाचार्य हुए। लेख

नं० ५४ (शक १०५०), ४० (शक १०८५) और १०८ (शक १३५५) में गौतम स्वामी के उल्लेख के पश्चात् उन्हीं की सन्तति में भद्रबाहु और फिर उनके शिष्य चन्द्रगुप्त का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उनके ही अन्वय में कुन्द-कुन्द मुनि हुए। इन लेखों मे इस स्थल पर संघ गणादि का नाम निर्देश नहीं किया गया।

लेख नं० ४१ मे विना किसी पूर्व सम्बन्ध के यह आचार्य-परम्परा भी दी है—
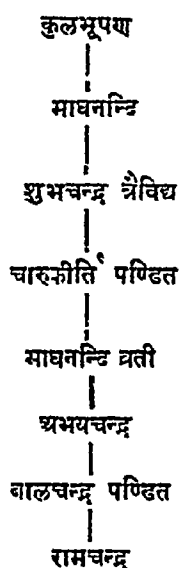
लेख नं० ४७, ४३, ५० और ४२ में नन्दिगण कुन्दकुन्दान्वय की परम्परा इस प्रकार पाई जाती है।

शक सं० १०८५ के लेख नं० ४० में निम्न प्रकार आचार्य-परम्परा पाई जाती है —

गौतमादि

(उनकी सन्तान में)

भद्रबाहु

|

चन्द्रगुप्त

(उनके अन्वय में)

पद्मनन्दि (कुन्दकुन्द)

(उनके अन्वय में)

उमास्वाति (गृद्धपिच्छ)

|

बलाकपिच्छ

(उनकी परम्परा में)

समन्तभद्र

(उनके पश्चात्)

देवनन्दि (जिनेन्द्रबुद्धि व पूज्यपाद)

(उनके पश्चात्)

अकलङ्क

(उनकी सन्तति में मूल संघ में नन्दिगण का जो देशीगण प्रभेद हुआ उसमें गोल्लदेशाधिप हुए।)
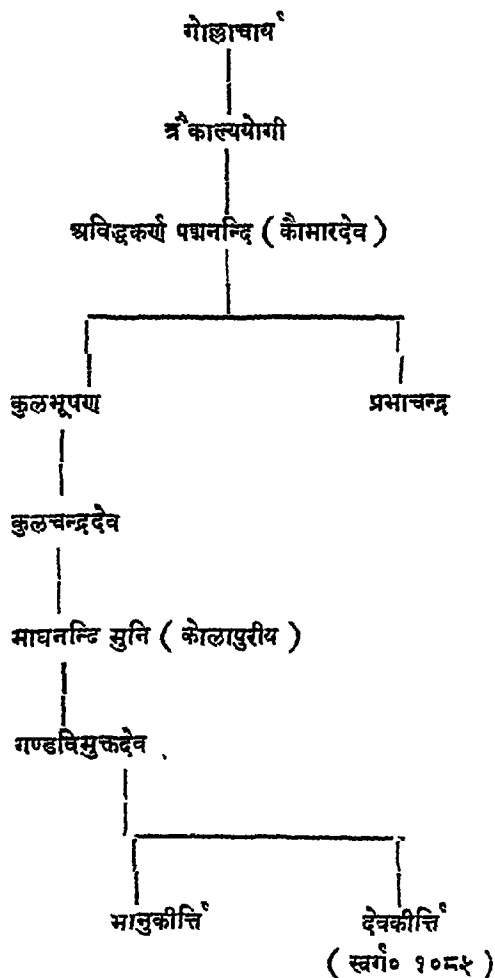
अनुमान शक सं० १०२२ के लेख नं० ५५ की आचार्य परम्परा इस प्रकार है—

मूल संघ, देशीगण, वक्रगच्छ

मूल पद्यात्मक लेख के पश्चात् आचार्यों के नामों की गद्य में पुनरावृत्ति है। इस नामावली में ऊपर के भाग से कुछ विशेषतायें पाई जाती हैं। मूलसंघ देशीगण, वक्रगच्छ कुन्दकुन्दान्वय में यहाँ देवेन्द्र सिद्धान्तदेव से प्रथम वड्डदेव का नामोल्लेख है। देवेन्द्र सिद्धान्तदेव के पश्चात् चतुर्मुखदेव का द्वितीय नाम वृषभनन्द्याचार्य दिया है। चतुर्मुखदेव के शिष्यों में महेन्द्रचन्द्र पण्डितदेव का नाम अधिक है। माघनन्दि के शिष्यों में त्रिरत्ननन्दि का नाम अधिक है। यशःकीर्त्ति और वासवचन्द्र गोपनन्दि के शिष्यों में गिनाये गये हैं। इनमें चन्द्रनन्दि का नाम अधिक है।

लेख नं० १०५ (शक १३२०) की कुन्दकुन्दाचार्य तक की परम्परा हम ऊपर देख चुके हैं। कुन्दकुन्दाचार्य से आगे इस लेख की गुरु-परम्परा इस प्रकार है—

अभयचन्द्र देव (इनके अनुज) श्रुतकीर्ति
|
श्रुतमुनि
(इनके प्रशिष्य)
अभिनव श्रुतमुनि

श्रुतकीर्ति
|
चारुकीर्ति
|
पण्डितदेव (स्वर्ग १३२०)
|
अभिनव पण्डित
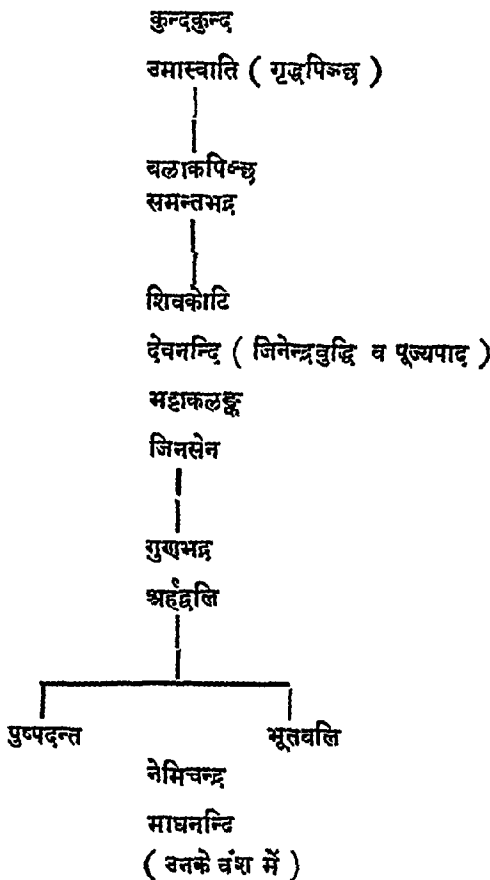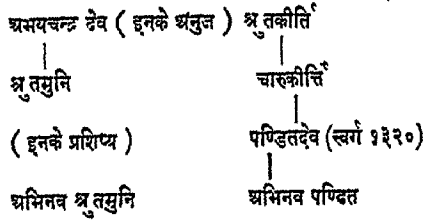
लेख नं० १०८ की परम्परा आदि से अकलङ्कदेव तक लेख नं० ४० के समान ही है। अकलङ्कदेव के पश्चात् संघ-भेद हुआ जिसकी इंगुलेश वलि की कुछ परम्परा इस प्रकार दी है।

श्रुतकीर्ति
|
चारुकीर्ति
|
पण्डित
|
सिद्धान्तयोगी
|
श्रुतमुनि (स्वर्गवास १३११)
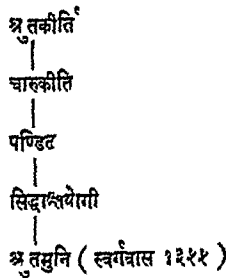
शक संवत् १२९५ के लेख नं० १११ में मूलसंघ बलात्कार गण की कुछ परम्परा निम्न प्रकार पाई जाती है। लेख बहुत घिसा हुआ होने के कारण परम्परा के ऊपर और नीचे के कुछ नाम स्पष्ट नहीं पढे गये।

मूल संघ—बलात्कार गण

....

......कीर्ति (वनवासि के)

|

देवेन्द्र विशालकीर्ति

|

शुभकीर्तिदेव भट्टारक

|

धर्मभूषणदेव

|

अमरकीर्ति-आचार्य

|

धर्मभूषणदेव (की निषद्या बनवाई गई शक सं० १२९५)
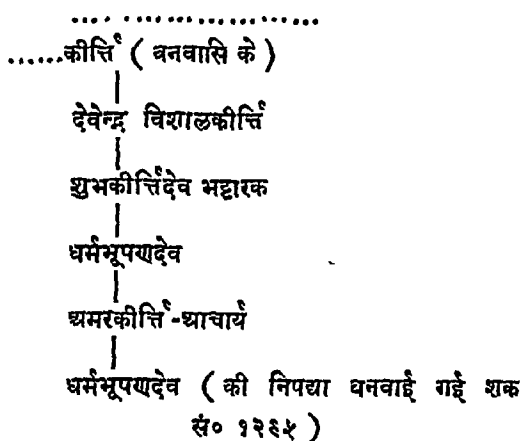
शक सं० १०४७ के लेख नं० ४९३ में नन्दि संघ, द्रमिण-गण अरुङ्गलान्वय की निम्न प्रकार परम्परा है। इस लेख में आचार्यों का गुरु-शिष्य-सम्बन्ध नहीं बतलाया गया केवल एक के पश्चात् दूसरे हुए ऐसा कहा गया है।

नन्दि संघ, द्रमिणगण, अरुङ्गलान्वय

महावीर स्वामी

|

गौतम गणधर

... .

समन्तभद्रव्रती

एक सन्धिसुमति-भट्टारक

अकलङ्कदेव वादीभसिंह

वक्रग्रीवाचार्य

श्रीनन्द्याचार्य

सिंहनन्द्याचाय

श्रीपाल भट्टारक

कनकसेन वादिराजदेव

श्रीविजयशान्तिदेव

पुष्पसेन सिद्धान्तदेव

वादिराज

शान्तिषेण देव

कुमारसेन सैद्धान्तिक

मल्लिषेण मलधारि

श्रीपाल त्रैविद्यदेव (शक सं० १०४७ मे
विष्णुवर्द्धन नरेश ने शल्य ग्राम का दान दिया।)

लगभग शक सं० १०६६ के लेख नं० ११३ में उल्लेख है कि देसी गण पुस्तक गच्छ कुन्दकुन्दान्वय के निम्नोल्लिखित आचार्यों ने मिलकर पञ्चकल्याणोत्सव मनाया—

त्रिभुवनराजगुरु भानुचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती, सोमचन्द्र सि० च०, चतुर्मुख भट्टारकदेव, सिंहनन्दि भट्टाचार्य, शान्ति भट्टारक, शान्तिकीर्त्ति, कनकचन्द्र मलधारिदेव और नेमिचन्द्र मलधारिदेव।

शक सं० १०५० का लेख नं० ५४ आचार्यों की नामावली मे और आचार्यों के सम्बन्ध की बहुत सी वार्त्ता देने में सब लेखों मे विशेष महत्वपूर्ण है। किन्तु दुर्भाग्यवश इस लेख मे आचार्यों का पूर्वापर सम्बन्ध व गुरु-शिष्य-सम्बन्ध स्पष्टत: नहीं बतलाया गया। इससे इस लेख का ऐतिहासिक महत्व उतना नहीं रहता जितना अन्यथा रहता। इस लेख के आचार्यों की नामावली का क्रम लेख मे इस प्रकार है—

वर्द्धमानजिन
गौतमगणधर
भद्रबाहु
|
चन्द्रगुप्त
कुन्दकुन्द
समन्तभद्र—वाद में 'धूर्जटि' की जिह्वा को भी स्थगित करनेवाले।
सिंहनन्दि
वक्रग्रीव—छः मास तक 'अथ' शब्द का अर्थ करनेवाले।
वज्रनन्दि (नवस्तोत्र के कर्त्ता)
पात्रकेसरि गुरु (त्रिलक्षण सिद्धान्त के खण्डनकर्त्ता)
सुमतिदेव (सुमतिसप्तक के कर्त्ता)
कुमारसेन मुनि
चिन्तामणि (चिन्तामणि के कर्ता)
श्रीवर्द्धदेव (चूडामणि काव्य के कर्ता, दण्डी द्वारा स्तुत्य)
महेश्वर (ब्रह्मराक्षसों द्वारा पूजित)

अकलङ्क (बौद्धों के विजेता, साहसतुङ्ग नरेश के सन्मुख हिमशीतल नरेश की सभा में)

पुष्पसेन (अकलङ्क के सधर्म)

विमलचन्द्र मुनि—इन्होंने शैवपाशुपतादिवादियों के लिये 'शत्रु-भयङ्कर' के भवन-द्वार पर नोटिस लगा दिया था।

इन्द्रनन्दि

परवादिमल्ल (कृष्णराज के समक्ष)

आर्य्यदेव

चन्द्रकीर्त्ति (श्रुतविन्दु के कर्त्ता)

कर्मप्रकृति भट्टारक

श्रीपालदेव मतिसागर	वादिराज-कृत पार्श्वनाथचरित (शक ९४७) से विदित होता है कि वादिराज के गुरु मतिसागर थे और मतिसागर के श्रीपाल।

हेमसेन विद्याधनञ्जय महामुनि

दयालपाल मुनि (रूपसिद्धि के कर्त्ता, मतिसागर के शिष्य) वादिराज (दयापाल के सहब्रह्मचारी, चालुक्यचक्रेश्वर जयसिंह के कटक में कीर्त्ति प्राप्त की)

श्रीविजय (वादिराज द्वारा स्तुत्य हेमसेन गुरु के समान)

कमलभद्र मुनि

दयापाल पण्डित, महासूरि

शान्तिदेव (विनयादित्य पोय्सल नरेश द्वारा पूज्य) चतुर्मुखदेव (पाण्ड्य नरेश द्वारा स्वामी की उपाधि और आहवमल्लनरेश द्वारा चतुर्मुखदेव की उपाधि प्राप्त की)

गुणसेन (मुल्लूर के)

अजितसेन वादीभसिंह

शान्तिनाथ कविताकान्त | पद्मनाभ वादिकोलाहल

कुमारसेन

मल्लिषेण मलधारि (अजितसेन पण्डितदेव के शिष्य, स्वर्गवास शक सं० १०५०)

उपर्युक्त वंशावलियों के आचार्यों मे से कुछ के विषय मे जो खास खास बातें लेखों में कही गई हैं वे इस प्रकार हैं—

कुन्दकुन्दाचार्य—ये मूल संघ के अग्रगणी थे (मूलसंघाग्रणीर्गणी) (५५)। इन्होंने उत्तम चारित्र द्वारा चारण ऋद्धि प्राप्त की थी (४०, ४२, ४३, ४७, ५०) जिसके बल से वे पृथ्वी से चार अंगुल ऊपर चलते थे (१३९) मानों यह बतलाने के हेतु कि वे बाह्य और अभ्यन्तर रज से अस्पृष्ट हैं (१०५)*।

उमास्वाति—ये गृद्धपिच्छाचार्य कहलाते थे (४०,४३, ४७, ५०) वे बलाकपिच्छ के गुरु और तत्त्वार्थसूत्र के कर्त्ता थे (१०५)*।

---

* इन आचार्य के विषय में विशेष जानने के लिये माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला के 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' की भूमिका देखिए।

समन्तभद्र—ये वादिसिंह, गणभृत और समस्तविद्या-निधि पदों से विभूषित थे (४०, ५४, ४६३) इन्होंने भस्मक व्याधि को जीता तथा पाटलिपुत्र, मालवा, सिन्धु, ठक्क (पञ्जाब), काञ्चीपुर, विदिशा (उज्जैन) व करहाटक (कोल्हापूर) में वादियों को आमन्त्रित करने के लिये भेरी बजाई। उन्होंने 'धूर्जटि'* की जिह्वा को भी स्थगित कर दिया था (५४)। समन्तभद्र 'भद्रमूर्ति' जिन शासन के प्रणेता और प्रतिवाद-शैलो को वाग्वज्र से चूर्ण करनेवाले थे (१०८)

शिवकोटि—ये समन्तभद्र के शिष्य व तत्त्वार्थसूत्रटीका के कर्त्ता थे (१०५)।

पूज्यपाद—इनका दीक्षा नाम 'देवनन्दि' था, महद्बुद्धि के कारण वे जिनेन्द्रबुद्धि कहलाए तथा इनके पादों की पूजा वनदेवता करते थे इससे विद्वानों में ये पूज्यपाद के नाम से प्रख्यात हुए (४०, १०५)। वे जैनेन्द्र व्याकरण, सर्वार्थसिद्धि (टीका), जैनाभिषेक, समाधिशतक, छन्दः-शास्त्र व स्वास्थ्यशास्त्र के कर्त्ता थे (४०)। हुमच के एक लेख (रि. ए. जै. ६६७) मे वे न्यायकुमुदचन्द्रोदय, शाक-टायन सूत्र न्यास, जैनेन्द्र न्यास, पाणिनि सूत्र के शब्दावतार

---

* 'धूर्जटि' की जिह्वा को स्थगित करने का श्रेय गोपनन्दि आचार्य को भी दिया गया है (५५, ४९२)। धूर्जटि शङ्कर की उपाधि है व इसका तात्पर्य शङ्कराचार्य से भी हो सकता है क्योंकि शङ्कराचार्य हिन्दू ग्रन्थों में शङ्कर के अवतार माने गये हैं।

न्यास, वैद्यशास्त्र और तत्त्वार्थ सूत्रटीका (सर्वार्थसिद्धि) के कर्त्ता कहे गये हैं। वे सुराधीश्वरपूज्यपाद, अप्रतिमौषधर्द्धि, 'विदेहजिनदर्शनपूतगात्र' थे। उनके पादप्रक्षालित जल से लोहा भी सुवर्ण हो जाता था (१०८)*।

गोल्लाचार्य—ये मुनि होने से प्रथम गोल्ल देश के नरेश थे। नूत्न चन्दिल नरेश के वंशचूड़ामणि थे (४७)।

त्रैकाल्ययोगी—इन्होंने एक ब्रह्मराक्षस को अपना शिष्य बना लिया था। उनके स्मरणमात्र से भूत प्रेत भाग जाते थे। उन्होंने करञ्ज के तेल को घृत मे परिवर्तित कर दिया था (४७)।

गोपनन्दि—बड़े भारी कवि और तर्क प्रवीण थे। उन्होंने जैन धर्म की वैसी ही उन्नति की जैसी गङ्गनरेशों के समय में हुई थी। उन्होंने धूर्जटि की जिह्वा को भी स्थगित कर दिया था (५५—४९२)।

प्रभाचन्द्र—ये धारा के भोज नरेश द्वारा सम्मानित हुए थे (५५)।

दामनन्दि—इन्होंने महावदि 'विष्णुभट्ट' को परास्त किया था जिससे वे 'महावादिविष्णुभट्टघरट्ट' कहे गये हैं (५५)।

जिनचन्द्र—ये व्याकरण मे पूज्यपाद, तर्क में भट्टाकलङ्क और साहित्य में भारवि थे (५५)।

---

*विशेष जानने के लिये माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला के रत्नकरण्ड श्रावकाचार की भूमिका व 'जैन साहित्य संशोधक' भा० १ अ० २, देखिए पृ० ६७-८७।

वासवचन्द्र—इन्होंने चालुक्य नरेश के कटक में बाल-सरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी (५५)।

यशःकीर्त्ति—इन्होंने सिंहल नरेश से सम्मान प्राप्त किया था (५५)।

कल्याणकीर्त्ति—साकिनी आदि भूत-प्रेतों को भगाने में प्रवीण थे (५५)।

श्रुतकीर्त्ति—'राघवपाण्डवीय' काव्य के कर्त्ता थे। यह काव्य अनुलोमप्रतिलोम नामक चित्रालङ्कार-युक्त था अर्थात् वह आदि से अन्त व अन्त से आदि की ओर एक सा पढ़ा जा सकता था। जैसा कि काव्य के नाम से ही विदित होता है वह द्व्यर्थक भी था। श्रुतकीर्त्ति ने देवेन्द्र व अन्य विपश्चियों को वाद में परास्त किया था। सम्भव है कि उक्त देवेन्द्र उस नाम के वे ही श्वेताम्बराचार्य हों जिनके विषय में प्रभावक चरित में कहा गया है कि उन्होंने दिगम्बराचार्य कुमुदचन्द्र को परास्त किया था। (लेख नं० ४० के नीचे का फ़ुटनोट देखिए।)

वादिराज—जयसिंह चालुक्य द्वारा सम्मानित हुए थे (५४)।

चतुर्मुखदेव—पाण्ड्य नरेश से स्वामी की उपाधि प्राप्त की थी।

इन आचार्यों के अतिरिक्त अन्य जिन प्रभावशाली आचार्यों का परिचय हमें लेखों से मिलता है उनका विवरण ऊपर ऐति-

हासिक विवेचन मे आ चुका है। एक बात विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि जैनाचार्यों ने हर प्रकार से अपना प्रभाव महाराजाओं और नरेशों पर जमाने का प्रयत्न किया था। इसी से वे जैन धर्म की अपरिमित उन्नति कर सके। जैनाचार्यों का राजकीय प्रभाव उठ जाने से जैन धर्म का ह्रास हो गया।

अन्य लेखो से जिन आचार्यों का जो परिचय हमें मिलता है वह भूमिका के अन्त में तालिकारूप में दिया जाता है।

संघ, गण, गच्छ और बलि भेद

मूलसंघ—ऊपर कहा जा चुका है कि लेखों मे दिगम्बर सम्प्रदाय को मूल संघ कहा है। सम्भवतः यह नाम उक्त सम्प्रदाय को श्वेताम्बर सम्प्रदाय से पृथक् निर्दिष्ट करने के लिये दिया गया है। लेखों में इस संघ के अनेक गण, गच्छ और शाखाओं का उल्लेख हैं। इनमे मुख्य **नन्दिगण** है। लेख नं० ४२, ४३, ४७, ५० आदि मे इस गण के आचार्यों की परम्परायें पाई जाती है। सबसे अधिक

नन्दिगण और देशीगण

लेखों में मूल संघ, देशीगण और पुस्तकगच्छ का उल्लेख है। यह देशीगण नन्दिगण से भिन्न नहीं है किन्तु उसी का एक प्रभेद है जैसा कि लेख नं० ४०, (शक १०८५) से विदित होता है। इस लेख मे कुन्दकुन्द से लगाकर अकलङ्क तक के

मुख्य मुख्य आचार्यों के उल्लेख के पश्चात् पद्य नं० १३ में कहा गया है कि इसी मूल संघ के नन्दिगण का प्रभेद देशी गण हुआ जिसमे गोल्लाचार्य नाम के प्रसिद्ध मुनि हुए। लेख नं० १०८ (शक १३५५) मे भी इसी के अनुसार नन्दिसंघ, देशीगण, पुस्तकगच्छ का उल्लेख है। 'नन्दिसंघे सदेशी-यगणे गच्छे च पुस्तके'। अन्य अनेक लेखों में भी (यथा ४७, ५० आदि) नन्दिगण के उल्लेख के पश्चात् देशीगण पुस्तकगच्छ का उल्लेख है। लेख नं० १०५ (शक १३२०) और १०८ (शक १३५५) में संघभेद की उत्पत्ति का कुछ विवरण पाया जाता है। लेख नं० १०५ मे कथन है कि अर्हद्बलि आचार्य ने आपस का द्वेप घटाने के लिये 'सेन', 'नन्दि', 'देव' और 'सिंह' इन चार संघों की रचना की। इनमे कोई सिद्धान्त-भेद नहीं है और इसलिये जो कोई इनमे भेद-बुद्धि रखता है वह 'कुदृष्टि' है। यह कथन इन्द्रनन्दिकृत नीति-सार के कथन से बिलकुल मिलता है।* लेख नं० १०८ मे कहा गया है कि अकलङ्क के स्वर्गवास के पश्चात् संघ देश-भेद से उक्त चार भेदों में विभाजित हो गया। इन भेदों

---

* तत्रैव यतिराजोऽपि सर्वनैमित्तिकाग्रणीः।
अर्हद्बलिगुरुश्चक्रे संघसंघट्टनं परम् ॥ ६ ॥
सिंहसंघो नन्दिसंघः सेनसंघो महाप्रभः।
देवसंघ इति स्पष्टं स्थानस्थितिविशेषतः ॥ ७ ॥
गणगच्छादयस्तेभ्यो जाताः स्वपरसौख्यदाः।
न तत्र भेदः कोऽप्यस्ति प्रव्रज्यादिषु कर्मसु ॥ ८ ॥

में कोई चारित्र-भेद नहीं है। कई लेखों (१११, १२६ आदि) मे बलात्कारगण का उल्लेख है। इन्हीं उल्लेखों से स्पष्ट है कि यह भी नन्दिगण व देशीगण से अभिन्न है।

लेख नं० १०५ में कहा गया है कि प्रत्येक संघ गण, गच्छ और वलि (शाखा) में विभाजित है। देशीगण का सबसे प्रसिद्ध गच्छ **पुस्तकगच्छ** है जिसका उल्लेख अधिकांश लेखों में पाया जाता है। इसी गण का दूसरा गच्छ 'वक्रगच्छ' है जिसकी एक परम्परा लेख नं० ५५ (लगभग शक १०८२) मे पाई जाती है।

पुस्तकगच्छ और वक्रगच्छ

लेख नं० १०५, १०८ व १२६ में देशीगण की **इंगुलेश्वरबलि** (शाखा) का उल्लेख है। वलि या शाखा किसी आचार्य-विशेष व स्थान-विशेष के नाम से निर्दिष्ट होती थी। देशीगण की एक दूसरी 'हनसोगे' नामक शाखा का उल्लेख लेख नं० ७० मे पाया जाता है। लेख घिसा हुआ होने से वहाँ यह स्पष्ट नहीं ज्ञात होता कि यह शाखा देशीगण की ही है। पर जिन आचार्यों (गुणचन्द्र व नयकीर्त्ति) को वहाँ हनसोगे शाखा का कहा है वे ही लेख नं० १२४ मे मूल संघ देशीगण, पुस्तकगच्छ के कहे गये हैं। इसी से उक्त शाखा का देशीगणान्तर्गत होना सिद्ध होता है। हनसोगे शाखा का कई अन्य लेखों में भी उल्लेख आया है। हनसोगे एक

इंगुलेश्वरवलि

हनसोगे व पनसोगे वलि

स्थान-विशेष का नाम था। कहीं-कहीं इसे पनसोगेवलि भी कहा है। (शि० ए० जै० नं० २२३, २३९, ४४६ आदि)

अनेक लेखों (२८, ३१, २११, २१२, २१४, २१८) में नविलूर संघ का उल्लेख है। इसी संघ को कहीं-कहीं (२७, २०७, २१५) नमिलूर संघ कहा है। इसी का दूसरा नाम 'मयूर संघ' पाया जाता है (२७, २९)। लेख नं० २७ में पहले नमिलूर संघ का उल्लेख है और फिर उसे ही मयूर संघ कहा है। लेख नं० २९ में इसे 'मयूर ग्राम' संघ कहा है जिससे स्पष्ट है कि यह संघ बलि व शाखा के समान स्थान-विशेष की अपेक्षा से पृथक् निर्दिष्ट हुआ है। कहीं पर स्पष्ट उल्लेख तो नहीं पाया गया पर जान पड़ता है कि यह भी देशीगण के ही अन्तर्गत है। इसी प्रकार जो लेख नं० १९४ में 'कित्तूरसंघ'* नं० २०३, २०६ में कोलातूर संघ नं० ४९६ में दिग्डिगूर शाखा व नं० २२० में 'श्रीपूरान्वय' का उल्लेख है वे सब भी देशीगण की ही स्थानीय शाखाएँ विदित होती हैं।

नविलूर, नमिलूर व मयूर संघ

---

* कित्तूर मैसूर जिले के हेग्गडेवन्कोटे तालुका में है। इसका प्राचीन नाम कीर्त्तिपुर था जो पुन्नाट राज्य की राजधानी था। कन्नड साहित्य में पुन्नाट राज्य का उल्लेख है। टालेमी ने भी 'पौन्नट' नाम से इसका उल्लेख किया है। इसी राज्य का पुन्नाट संघ प्रसिद्ध है। हरिवंश पुराण के कर्त्ता जिनसेन व कथाकोष के कर्त्ता हरिषेण पुन्नाट-सङ्गीय ही थे। सम्भवतः कित्तूर संघ पुन्नाट संघ का ही दूसरा नाम है।

लेख नं० ४९३ में **द्रमिणगण** के **अरुङ्गलान्वय** का उल्लेख है। इन्द्रनन्दि-कृत नीतिसार व देवसेन-कृत दर्शनसार में द्राविड़ संघ जैनाभासों में गिनाया गया है। पर जिस द्रमिणगण का उक्त लेख में उल्लेख है वह इस जैनाभास संघ से भिन्न है। उक्त द्रमिण संघ स्पष्टतः **नन्दि संघ** के अन्तर्गत कहा गया है।

द्रमिणगण अरुङ्गलान्वय

लेख नं० ५०० में मूल संघ **काणूरगण, तगरिलगच्छ** का उल्लेख है। सम्भवतः यह गण भी देशीगण व नन्दि संघ से सम्बन्ध रखनेवाला ही है।

काणूरगण, तगरिल गच्छ

लेख नं० ११९ मे **काष्ठा संघ मंडितटगच्छ** का उल्लेख है।

काष्ठा संघ मण्डितटगच्छ

ऊपर वर्णित लेख नं० ४०,४१,४२,४३,४७,५०,५४,५५,१०५,१०८,१११,११२ और ४१३ को छोड़ शेष लेखों में उल्लिखित आचार्यों का परिचय ।

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय शक सं० में	विशेष विवरण
१	बलदेव मुनि	कनकसेन	×	१५	श० ५७२	समाधिमरण ।
२	शान्तिसेन मुनि	×	×	१७	"	समाधिमरण । भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र ने जिस धर्म की उन्नति की थी उसके क्षीण होने पर इन मुनिराज ने उसे पुनरुत्थापित किया ।
३	अरिष्टनेमि आचार्य	×	×	१५२ (१५४) (२६७)	"	समाधिमरण । इनके अनेक शिष्य थे । समाधि के समय 'दिण्डिकराज' साक्षी थे । लेख नं० १५४ व २६७ यद्यपि क्रमशः ८ वीं व ९ वीं शताब्दि के अनुमान किये जाते हैं तथापि सम्भवतः उनमें भी इन्हीं आचार्य का उल्लेख है । लेख नं० २६७ में वे 'परसमयध्वंसक' पद से विभूषित किये गये हैं व 'मले गोल' के कहे गये हैं ।
४	वृषभनंदि आचार्य	×	×	१८९	"	इनके किसी शिष्य ने समाधिमरण किया ।
५	मौनि गुरु	×		२	श० ६२२	एक शिष्या का समाधिमरण । ये ही सम्भवतः लेख नं० ९ के गुणसेन गुरु के व लेख नं० ३१ के वृषभनन्दि गुरु के गुरु थे ।

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय शक सं० में	विशेष विवरण
६	चरितश्री मुनि	×	×	३	अ० ६२२	समाधिमरण।
७	पानप (मौनढ)	×	×	६	,,	समाधिमरण ।
८	वलदेव गुरु	धर्मसेन गुरु	×	७	,,	,, । इनके गुरु 'कित्तूर' परगने में 'वेल्माद' नामक स्थान के थे।
९	उग्रसेन गुरु	पट्टिनि गुरु	×	८	,,	,, । इनके गुरु 'मालनूर' के थे। उग्रसेनजी ने एक मास तक अनशन किया।
१०	गुणसेन गुरु	मौनि गुरु	×	९	,,	,, । लेख नं० २ में सम्भवतः इन्हीं मौनिगुरु का उल्लेख है। गुणसेन 'कोट्टर' के थे।
११	उल्लिकल गुरु	×	×	११	,,	,, ।
१२	कालावि(कलापक) गुरु	×	×	१३	,,	एक शिष्य का समाधिमरण।
१३	नागसेन गुरु	ऋषभसेन गुरु	×	१४	,,	समाधिमरण ।
१४	सिंहनंदि गुरु	वेट्टेडे गुरु	×	१९	,,	,, ।
१५	गुणभूषित	×	सन्धिगगण(?)	२१	,,	,, । लेख बहुत घिसा है, इससे भाव स्पष्ट नहीं हुआ।

१६	मेल्लगवास गुरु	×	×	२३	अ० ६२२	समाधिमरण	। ये गुरु 'हनुसूर' के थे ।
१७	नन्दिसेन मुनि	×	×	२६	"	"	।
१८	गुणकीर्त्ति	×	×	३०	"	"	।
१९	वृषभनन्दि मुनि	मौनिय आचार्य	नविलूर संघ	३१	"	"	।
२०	चन्द्रदेवाचार्य	×	×	३४	"	"	। ये आचार्य 'नदि'राज्य के थे ।
२१	मेघनन्दि मुनि	×	नमिलूर संघ	२१५	"	"	।
२२	नन्दि मुनि	×	×	२१७	"	"	।
२३	महादेव मुनि	×	×	१६३	"	"	।
२४	सर्वज्ञभट्टारक	×	×	१५३	"	"	। ये 'वेगुरा' के थे ।
२५	अक्षयकीर्त्ति	×	×	१५८	"	"	। ये दक्षिण 'मदुरा' से आये थे। इन्हें सर्प ने सताया था।
२६	गुणदेव सूरि	×	×	१६०	"	"	।
२७	मासेन (महासेन) ऋषि	×	×	१६१	"	"	।
२८	सर्वनन्दि	चिकुरापरविय(?)	×	१६२	"	"	। चिकुरा परविय का तात्पर्य चिकूर के परविय गुरु व चिकुरापरविय के गुरु हो सकता है। 'परवि' एक प्राचीन तालुके का नाम भी पाया जाता है।

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
२९	बलदेवाचार्य	×	×	१९५	अ० ६२२	समाधिमरण।
३०	पद्मनन्दि मुनि	×	×	१९६	,,	,, ।
३१	पुष्पनन्दि	×	×	१९७	,,	,, ।
३२	विशोक भट्टारक	×	कोलातूर संघ	२०३	,,	,, ।
३३	इन्द्रनन्दिआचार्य	×	×	२०५	,,	,, ।
३४	पुष्पसेनाचार्य	×	नविलूर संघ	२१२	,,	समाधिमरण।
३५	श्रीदेवाचार्य	×	×	२१३	,,	,,
३६	मल्लिसेन भट्टारक	×	×	१४९	अनु० ९वीं शताब्दि	इनके एक शिष्य ने तीर्थ वन्दना की।
३७	कुमारनंदिभट्टारक	×	×	२२७	,,	×
३८	अजितसेनभट्टारक ,, मुनि	×	×	३८ ६७	अनु० ८९९	लेख नं० ३८ में कहा गया है कि गङ्गनरेश मारसिंह ने इनके निकट समाधिमरण किया। व लेख नं० ६७ के अनुसार इनके शिष्य चामुण्डराय के पुत्र जिनदेवन ने जिन-मंदिर बनवाया।
३९	मलधारिदेव	नयनन्दि विमुक्त	×	३०४	अनु० ९७०	नयनन्दि विमुक्त के एक शिष्य ने तीर्थ वंदना की।
४०	पद्मनन्दिदेव	×	×	४९८	अ० १०००	महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल कोंगाल्व ने

					कुछ भूमि का ... दिया।
४१ प्रभाचन्द्रसिद्धान्त देव	×	×	५००	अ० १००१	चैत्यालय के हेतु कोङ्गाल्व नरेश अदटरादित्य द्वारा भूमिदान। उपाधि-उभयसिद्धान्तरत्ना-कर।
४२ गण्डविमुक्तदेव	×	मूलसंघ कानूर गण तगरिल गच्छ	,,	,,	कोङ्गाल्वनरेश राजेन्द्र पृथुवी द्वारा वस्ती-निर्माण और भूमिदान।
४३ देवनन्दि भट्टारक	×	×	४५६	अ० १०००	पोय्सलनरेश त्रिभुवनमल्ल एरेयङ्ग ने वस्तियों के जीर्णोद्धार के हेतु ग्राम का दान दिया।
४४ गोपनन्दि पण्डित देव	चतुर्मुखदेव	मू० दे० पु०	४६२	अ० १०१५	गोपनन्दि ने क्षीण होते हुए जैनधर्म का गङ्ग नरेशों की सहायता से पुनरुद्धार किया। वे षड्दर्शन के ज्ञाता थे। उपर्युक्त नरेश के गुरुओं में से थे।
४५ देवेन्द्रसिद्धान्तदेव	×	,,	,,	,,	×
४६ अकलङ्क पण्डित	×	×	१६६	अ० १०२०	चरणचिह्न है।
४७ सातनन्दि देव	×	×	२२४	,,	,,
४८ चन्द्रकीर्तिदेव	×	×	२२५	,,	एक शिष्य ने देववन्दना की।
४९ अभयनन्दिपण्डित	×	×	२२		
५० शुभचन्द्रसि० देव	कु० मलधारिदेव	मू० दे० पु०	४६, ५६, ४५, ६३, ६४६५,	अ० १०२२, १०३७, १०३९, १०४०	ये पोय्सल नरेश विष्णुवर्द्धन के मंत्री गङ्गराज दण्डनायक और उनके कुटुंब के सदस्यों के गुरु थे। इन्होंने उक्त कुटुम्ब के सदस्यों से कितने ही जिनालय निर्माण कराये,

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
				४४६, ४४७, ४८६, ४८९,	अ० १०४१	जीर्णोद्धार कराया, मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कराईं और कितनों ही को दीक्षा, संन्यास आदि दिये।
				४९	१०४२	
				४८, ६२	१०४४	
				५३	११५०	
५१	दिवाकरनन्दि	देवेन्द्र सि० देव	मू० दे० पु०	९०	अ० ११००	
				१३९	१०४१	इस लेख से यह गुरुक्रम विदित होता है— देवेन्द्र सि० देव | दिवाकरनन्दि | मलधारिदेव शुभचन्द्रदेव सि० मु०
५२	भानुकीर्त्ति मुनि	×				
५३	प्रभाचन्द्र सि० देव	मेघचन्द्र त्रै० देव	मू० दे०	२२९	१०३९	पोय्सल राजसेट्टि ने इनसे दीक्षा ली।
				५१, ५२	१०४१	इनकी एक शिष्या ने पट्टशाला (वाचना-
				४४	१०४३	लय) स्थापित कराई। ये विष्णुवर्द्धन
				५६	१०४५	नरेश की रानी शान्तलदेवी के गुरु थे।

				५३	१०५०	उसके निर्माण कराये हुए सवति गन्धवारण मन्दिर के लिये इन्हें ग्राम आदि के दान दिये गये थे।
५४	चारुकीर्तिदेव	×	×	,,	,,	लेख के लेखक नोकिमय्य के गुरु।
५५	कनकनन्दि	×	×	४४	१०४३	ये मुलूर निवासी थे (मुल्लूर कुर्ग में है)। नृपकामपोय्सल के आश्रित पुचिगाङ्क के गुरु थे।
५६	[illegible]मानदेव	×	×	५३	१०५०	इनकी और प्रभाचन्द्र सि० देव की साक्षी से शान्तलदेवी की माता ने संन्यास लिया था।
५७	रविचन्द्रदेव		मू० दे० पु०			
५८	गण्डविमुक्त सि० देव	×		३६८ २४१	१०५० अ० १०७०	इनके शिष्य दण्डनायक भरतेश्वर ने भुजबलि स्वामी का पादपीठ निर्माण कराया।
५९	नयकीर्ति	×	×	४६७	१०५०	त्रिभुवनमल्ल नरेश के राज्यकाल में नयकीर्ति का स्वर्गवास हो जाने पर कल्याणकीर्ति को जिनालय बनवाने व पूजनादि के हेतु भूमि का दान दिया गया।
६०	कल्याणकीर्ति	×	×			
६१	भानुकीर्तिदेव	×	×	१४४	अ० १०५०	
६२	माधवचन्द्रदेव	शुभचन्द्र सि०देव	मू० दे० पु०	,,	,,	
६३	नयकीर्तिदेव स० म० (तिरिग)		×	३५४	अ० १०६५	
६४	नयकीर्ति देव (द्वि०)		×			
६५	शुभकीर्तिदेव	×		१८८	अ० १०६७	

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
६६	त्रिकालयोगी	×	×	४७३	श्र० १०६७	
६७	अभयदेव	×	मूलसंघ	,,	,,	
६८	कु० मलधारि-देव	×	×	१३७	श्र० १०८०	हुल्ल मंत्री के गुरु।
६९	नयकीर्ति सि० देव (म० म०)	गुणचन्द्र सि० दे०	मू० दे० पु० हनसोगे शाखा	,,	,,	हुल्ल मंत्री ने ग्राम का दान दिया।
				७८	श्र० १०२०	
				१२२	,,	
				३१७-२०	,,	
				३२४	,,	
				३२६	,,	
				३२७	,,	
७०	दामनन्दित्रै० देव			१३८	१०८१	
				१३७	श्र० १०८७	
७१	भानुकीर्ति सि० देव			६६	,, १०९२	
				७०	,, १०९२	
७२	बालचन्द्रदेव अध्यात्मि	म० म० नय-कीर्ति देव	मू० दे० पु० हनसोगे शाखा	४९१	,, १०९५	कुन्दकुन्दाचार्य के प्राभृत त्रय पर इनकी कनाड़ी टीका पाई जाती है।
				९०	,, ११००	
७३	प्रभाचन्द्रदेव			१०४	,,	

७४	माघनन्दि भट्टारक			१८७	,,	
७५	पद्मनान्ददेव मं त्रवादि			८५	,, ११०२	
७६	नेमिचन्द्रपं० देव			१२४	,, ११०३	
				४२६	,, ,,	
				४६४	११०४	
				१३०	श्र० १११८	
				३२२		
				३२५	,, ११२०	
				३२८	,, ११२८	
				१२८	श्र० ११५३	
				८१		
७७	लक्खनन्दि मुनि	देवकीर्ति म०म०	×	३९	१०८५	देवकीर्त्ति मुनि बडे भारी कवि, तार्किक और वक्ता थे। उक्त तिथि को उनका स्वर्गवास होने पर उक्त शिष्यों ने उनकी निषद्या बनवाई।
७८	माधवचन्द्र व्रती			४६६	११०८	इनके एक शिष्य रामदेव विश्र ने जिनालय बनवाया व दान दिया।
७९	त्रिभुवनमल्ल योगी		मू० दे० पु० ×	४७५	श्र० १११०	
८०	मेघचन्द्र	गलचंद्र अध्यात्मी (हिरिय) नयकीर्त्ति देव				
८१	नयकीर्ति देव		×	२४२	श्र० १११२	
८२	धनकीर्ति देव	×				

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
८३	चन्द्रप्रभदेव म० म०	हिरियनयकीर्ति	×	८८, ८९	अ ११०८ ११२०	
८४	चन्द्रकीर्ति	×	×	२३८	अ ११२०	
८५	कनकनन्दिदेव	×	×	२५१	,,	इनकी प्रतिमा है।
८६	मल्लिषेण	×	×	४६१	,,	
८७	सागरनन्दि सि० देव	शुभचन्द्र त्रै० देव	मू० दे० पु०	४७१	,,	
८८	शुभचन्द्र त्रै० देव	माघनन्दिसि० देव	,,	,,	,,	
८९	वादिराज	×	×	४९५	अ० ११२२	
९०	मल्लिषेण मलधारि	×	×	,,	,,	
९१	श्रीपालयोगीन्द्र	×	×	,,	,,	
९२	वादिराजदेव	श्रीपाल योगीन्द्र	×	,,	,,	
९३	शान्तिसिंगपण्डित	,,	×	,,	,,	
९४	परवादिमल्ल पण्डित	,,	×	,,	,,	
९५	नेमिचन्द्र पं० देव म०म०राजगुरु	×	×	४७४	११३६	

				४३१	ग०११७०	
			×	,,	,,	
		×	×	,,	,,	
९६	अभयनन्दि	×	/	४६६	११७०	
९७	सुरकीर्त्ति	×	मू० दे० पु०	,,	,,	
९८	गुणचन्द्र	माघनन्दिसिं०च०	,,	६६	अ०११६६	
९९	भानुकीर्त्ति	भानुकीर्त्ति	×			
१००	माघनन्दि भट्टारक	गयकीर्त्ति देव		६३	अ०११६७	इन आचार्यों और अन्य सज्जनों ने चन्दा किया।
१०१	चन्द्रप्रभदेव	म० म०	×	६४,६७	,,	
		×	×	१३७	१२००	
१०२	चन्द्रकीर्त्तिभट्टारक	×	×			
१०३	प्रभाचन्द्र भट्टारक	उदगचन्द्रदे।		,,	,,	
१०४	मुनिचन्द्रदेव	म० म०	×	१२६	१२०५	होय्सलराय राजगुरु। सम्भवतः ये ही उस शास्त्रसार के कर्ता हैं जिसका उल्लेख प्रारम्भ के एक श्लोक में आया है। माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला नं० २१ में एक 'शास्त्रसार समुच्चय' नामक ग्रन्थ छपा है और भूमिका में कहा गया है कि सम्भवतः ये कुमुदचन्द्र के गुरु थे। (देखो मा० ग्र० भूमिका पृ० २३-२४)
		चन्द्रप्रभदेव	×	,,	,,	
१०५	पद्मनन्दिदेव	×	×			
१०६	कुमुदचन्द्र	×				
१०७	माघनन्दिसिं०च०					

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ,गण,गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
१०८	बालचन्द्रदेव	नेमिचन्द्र पं० देव	मू० दे० इंगलेश्वर बलि	"	"	
				४६०	श० "	
१०९	अभिनव पण्डिताचार्य	×	×	४२१	श. १२३३	
११०	पद्मनन्दिदेव	त्रैविद्यदेव	मू० दे० पु०	११४	श. १२३८	समाधि मरण।
१११	चारुकीर्ति पं० आचार्य	×	"	४३२	श. १२३९	
११२	" (अभिनव)	×	"	१३२	श. १२४७	गुरु शिष्य ने मंगायितान्ति निर्माण कराई।
				४३०	"	"
११३	मल्लिषेणदेव	लक्ष्मीसेन भट्टारक	×	२४७	श. १३२०	निषद्या।
११४	सोमसेनदेव	×	×	३७१	"	गुरु शिष्य ने वन्दना की।
११५	भुवनकीर्ति देव	×	×	३७२	"	निषद्या।
११६	सिद्धनन्दि आचार्य	×	×	३७४	"	
११७	हेमचन्द्र कीर्ति देव	शान्तिकीर्ति देव	×	११२	"	निषद्या।
११८	चन्द्रकीर्ति	×	×	१०६	१३३१	भूमिदान।
११९	पण्डिताचार्य व पण्डितदेव	×	×	४२८	श. १३३०	इनकी शिष्या देवराज महाराज की रानी
				४२९	"	भीमादेवी ने मूर्ति प्रतिष्ठा कराई।
१२०	श्रुतमुनि	पण्डितार्य मुनि	×	८२	१३४४	इनके समय दण्डनायक इरुगप ने बेलगोल

						ग्राम का दान दिया ।
१२१	जिनसेन भट्टारक (पट्टाचार्य)	×	×	४२२	श०१३६०	संघ सहित वन्दना को आये ।
			×	३६२	१३७१	
१२२	अभिनव पण्डित देव	चारुकीर्त्ति पं० देव	×	४८४	श०१४२०	
				१३३	,,	
१२३	पण्डितदेव	×	×	३७७	श०१५२०	चरणचिह्न ।
			×	११७	श०१५३१	
१२४	चारुकीर्ति भट्टारक	×	×	३३३	संवत १५-५८ (वि०)	यात्रा ।
१२५	पण्डितदेव	×	×		१५५६	इनके समक्ष मैसूर-नरेश ने मन्दिर की भूमि ऋणमुक्त कराई ।
१२६	ब्रह्म० धर्मरुचि }	अभयचन्द्रभट्टारक	×	८४	१५६५	स्वर्गवास ।
१२७	,, गुणसागर }	×	×	१४२		
१२८	चारुकीर्ति पं० देव	×	×	११८	१५७०	इनके उपदेश से बघेरवालों ने चौबीस तीर्थंकर प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई ।
	,,	चारुकीर्त्ति	बलात्कार गण	११६	१६०२	इनके साथ तीर्थ-यात्रा ।
१२९	धर्मचन्द्र		×	११६	वि० सं० १७१९	इनके साथ बघेरवालों ने तीर्थयात्रा की ।
१३०	श्रुतसागर वर्णी		×			
१३१	इन्द्रभूषण	राजकीर्ति के शिष्य लक्ष्मीसेन				

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ,गण,गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
१३१	अजितकीर्ति	चारुकीर्ति | अजितकीर्ति | शान्तिकीर्ति	देसी गण	७२	१७११	एक मास के अनशन से सल्लेखना।
१३३	चारुकीर्ति पं० आचार्य	×	मू० दे० पु०	४३३ ४३४ ४३५ ४५६ ४५७	१७३२ १७५२ १७७८ " "	मैसूर-नरेश कृष्णराज की ओर से सनदें प्राप्त कीं।
१३४	सन्मतिसागरवर्णी	चारुकीर्ति गुरु	"	४३६ ४५५	१७८० "	उनके मनोरथ से बिम्बस्थापना की गई।

संकेताक्षरों का अर्थ

अ० व अनु० = अनुमानतः। कु० = कुन्दकुन्दान्वय। त्रै० देव = त्रैविद्यदेव। पं० आचार्य = पंडिताचार्य। पं० देव = पंडितदेव। ब्रह्म = ब्रह्मचारी। म० म० = महामण्डलाचार्य। मू० दे० पु० = मूल संघ, देशीगण, पुस्तक-गच्छ। सि० देव = सिद्धान्तदेव। सि० च० = सिद्धान्त चक्रवर्ती। सि० मु० = सिद्धान्त मुनीन्द्र।
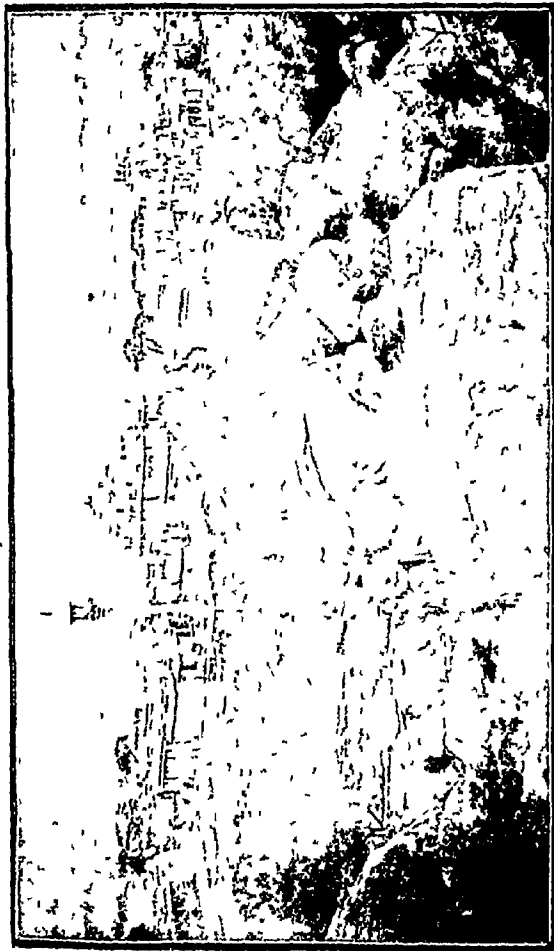
चन्द्रगिरि पर्वत ।

चन्द्रगिरि पर्वत पर के शिलालेख

पार्श्वनाथ वस्ति के दक्षिण की ओर के शिलालेख

१ (१)

(लगभग शक सं० ५२२)

सिद्धम् स्वस्ति ।

जितम्भगवता श्रीमद्धर्म्म तीर्त्थ-विधायिना ।
वर्द्धमानेन सम्प्राप्त-सिद्धि-सौख्यामृतात्मना ॥ १ ॥
लोकालोक-द्वयाधारम्वस्तु स्थास्नु चरिष्णु वा ।
*संविदालोक-शक्तिः स्वान्यश्नुते यस्य केवला ॥ २ ॥
जगत्यचिन्त्य-माहात्म्य-पूजातिशयमीयुषः ।
तीर्त्थकृन्नाम-पुण्यौघ-महार्हन्त्यमुपेयुषः ॥ ३ ॥
तदनु श्री-विशालयम् (लायाम्†) जयत्यद्य जगद्धितम् ।
तस्य शासनमव्याजं प्रवादि-मत-शासनम् ॥ ४ ॥

अथ खलु सकल-जगदुदय-करणोदित-निरतिशय-गुणा-स्पदीभूत-परमजिन-शासन-सरस्समभिवर्द्धित - भव्यजन - कमल-विकसन-वितिमिर-गुण-किरण-सहस्र-महोति **महावीर**-सवितरि परिनिर्वृते भगवत्परमर्षि - **गौतम** - गणधर - साक्षाच्छिष्य-

---

* सच्चिदा † विशालेयत्

लोहार्य्य-जम्बु-विष्णुदेवापराजित-गोवर्द्धन-भद्रबाहु-विशाख-प्रोष्ठिल-कृत्तिकार्य्य* -जयनाम-सिद्धार्थ-धृतिषेणबुद्धिलादि-गुरुपरम्परीणक्रमाभ्यागत-महापुरुष-सन्तति-समवद्योतितान्वय-भद्रबाहु-स्वामिना उज्जयन्यामष्टाङ्ग-महानिमित्त-तत्त्वज्ञेन त्रैकाल्य-दर्शिना निमित्तेन द्वादश-संवत्सर-काल-वैषम्यमुपलभ्य कथिते सर्व्वस्सङ्घ उत्तरापथाद्दक्षिणापथम्प्रस्थितः क्रमेणैव जनपदमनेक-ग्राम-शत-सङ्ख्यं मुदित-जन-धन-कनक-सस्य-गो-महिषा-जावि-कुल-समाकीर्ण्णम्प्राप्तवान् [।] अतः आचार्य्यः प्रभाचन्द्रो† नामावनितल-ललाम-भूतेऽथास्मिन्कटवप्र-नामकोपलक्षिते विविध-तरुवर-कुसुम-दलावलि-विरचना-शवल-विपुल सजल-जलद-निवह-नीलोपल-तले वराह-द्वीपि-व्याघ्रर्क्ष-तरक्षु-व्याल-मृगकुलोपचितोपत्यक-कन्दर-दरी-महागुहा-गहनाभोगवति समुत्तुङ्ग-शृङ्गे सिखरिणि जीवित-शेषमल्पतर-कालमवबुध्यात्मनः‡ सुचरित§ - तपस्समाधिमाराधयितुमापृच्छ्य निरवसेषेण सङ्घं विसृज्य शिष्येणैकेन पृथुलतरास्तीर्ण्ण-तलासु शिलासु शीतलासु स्वदेहं संन्यस्याराधितवान् क्रमेण सप्त-शतमृषीणामाराधितमिति जयतु जिन-शासनमिति ।

२ (२०)

(लगभग शक सं० ६२२)

अदेयरेनाड चित्तूर मौनिगुरवडिगल शिषित्तियर् नागमतिगन्तियर् मूरु तिङ्गल् नोन्तु मुडिप्पिदर् ।

---

* चत्रिकार्य्य † प्रभाचन्द्रेण ‡ अध्वनः § सुचकित

[अद्देयरेनाडु[1] में चित्तूर के मौनि गुरु की शिष्या नागमति गन्तियर् ने तीन मास के व्रत के पश्चात् शरीरान्त किया।]

३ (१२)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री। दुरितामूद् वृषभान्कील्लरे पोदेदज्ञानशैलेन्द्रमान्पोल्
दुर-मिथ्यात्व-प्रमूढ-स्थिरतर-नृपनान्मेट्टिगन्धंममयूदान्।
सुरविद्यावल्लभेन्द्रास्सुरवरमुनिभिस्तुत्य कल्वप्पिनामेल्
चरितश्रीनामधेयप्रभुमुनिन्व्रतगल् नोन्तुसौख्यस्थनाय्दान्॥

[पाप, अज्ञान व मिथ्यात्व को हत और इन्द्रियों का दमन कर कटवप्र पर्वत पर चरितश्री मुनि-व्रत पाल सुख को प्राप्त हुए।]

४ (१७)

(लगभग शक सं० ६२२)

......गल्नोन्तु मुडिप्पिदर्।

[व्रतधार प्राणोत्सर्ग किया।]

५ (१८)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति श्री जम्बुनाय् गिर् तीलयदोल् नोन्तु मुडिप्पिदर्।

[जम्बुनायगिर् ने व्रतपाल प्राणोत्सर्ग किया।]

६ (६)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री नेडुबोरेय पानप*-भटारर्नोन्तु मुडिप्पिदार्।

---

[1] पल्लवनरेश नन्दिवर्म के एक दानपत्र में अद्देयरराष्ट्र का उल्लेख आया है। संभव है अद्देयरेनाडु भी उसी का नाम हो (इंडि. एन्टी. ८, १६८)

*मौनद।

[नेडुबोरे के पानप भटार ने व्रतपाल प्राणोत्सर्ग किया ।]

७ (२४)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री **कित्तूरा** वेलमाददा **धर्म्मसेन**गुरवडिगला शिष्यर् **बालदेव**गुरवडिगल् सन्यासनं नोन्तु मुडिप्पिदार् ।

[कित्तूर में वेल्माद के धर्मसेनगुरु के शिष्य बलदेवगुरु ने सन्यासव्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया ।]

८ (२५)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री **मालनूर पट्टिनि** गुरवडिगल शिष्यर् **उग्रसेन**गुरवडिगल् ओन्दु तिङ्गल् सन्यासनं नोन्तु मुडिप्पिदार् ।

[मलनूर के पट्टिनिगुरु के शिष्य उग्रसेनगुरु ने एक मास तक सन्यास-व्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया ।]

९ (८)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री **अगलिय मौनिगुरवर** शिष्य **कोट्टरद गुणसेन**गुरवर्ओन्तु मुडिप्पिदार् ।

[अगलि के मौनिगुरु के शिष्य कोट्टर के गुणसेन गुरु ने व्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया ।]

१० (७)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री **पेरुमालु** गुरवडिगला शिष्य **धरणी कुत्तारेवि***गुरवि...डिप्पिदार् ।

* एचि ।

[पेरुमालुगुरु की शिष्या घण्णेकुत्तारेविगुरत्ति (?) ने ...... प्राणोत्सर्ग किया।]

११ (६)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री **उल्लिक्क**लोरवडिगल् नोन्तु......दार्।

[वल्लिकल गुरु (या उल्लिकल के गुरु) ने व्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया]

१२ (५)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्रीतीर्थद गोरवडिगल् नो.........

[तीर्थदगुरु (या तीर्थ के गुरु) ने व्रत पाल (प्राणोत्सर्ग किया)]

१३ (३३)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री **कालाविर्गु**रवडिगल शिष्यर् **तरेकाड** पेर्जेडिय नोदेय कलापकद गुरवडिगल्लिप्पत्तोन्दु दिवसं सन्यासनं नोन्तु मुडिप्पिदार्।

[तलेकाडु में पेरजेडि के कलापक* गुर कालाविर गुरु के शिष्य ने इक्कीस दिन तक सन्यास व्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया।]

१४ (३४)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री-**ऋषभसेन** गुरवडिगल शिष्यर् **नागसेन** गुरवडिगल् सन्यासनविधि इन्तु मुडिप्पिदार्।

---

* कलापक का शब्दार्थ मुञ्जतृण या समूह होता है।

नागसेनमनघं गुणाधिकं नागनायकजितारिमण्डलं ।
राजपूज्यममलश्रीयास्पदं कामदं हतमदं नमाम्यहं ॥

[ऋषभसेनगुरु के शिष्य नागसेनगुरु ने सन्यास-विधि से प्राणोत्सर्ग किया ।]

१५ (२)

(लगभग शक सं० ५७२)

श्री । उद्यानैर्ज्जितनन्दनं ध्वनदलिव्यासक्तरक्तोत्पल—
व्यामिश्रीकृत†-शालिपिञ्जरदिशं कृत्वा तु बाह्याचलं ।
सर्व्वप्राणिदयार्त्थदाब्धिभगवद्ध्यानेन‡सम्बोधयन्
आराध्याचलमस्तके **कनकसत्सेनो**त्भवत्सत्पति ॥ १ ॥
अहो बहिर्ग्गिरिन्त्यक्त्वा **बलदेव**मुनिश्श्रीमान् ।
आराधनम्प्रगृहीत्वा सिद्धलोकं गतर्पुनः ॥ २ ॥

१६ (३०)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री . . स्मडिगल् नोन्तु कालं केयदार् ।

[.. स्मडिगल ने व्रत पाल देहोत्सर्ग किया ।]

१७-१८ (३१)

(लगभग शक सं० ५७२)

श्री —**भद्रबाहु** स**चन्द्रगुप्त**मुनीन्द्रयुग्मदिनोप्पेवल् ।
भद्रमागिद धर्म्मंमन्दु वलिक्केवन्दिनिसल्कलो ॥

---

† व्यापि श्रीकृत ‡ भगवं ना (णा) नेन (नया एडीशन)

विद्रुमाधर **शान्तिसेन**मुनीशनाक्किएवेल्गोल ।
अद्रिमेलशनादि विट्टपुनर्भवक्करे आगि . . ॥

[जो जैन-धर्म भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र के तेज से भारी समृद्धि को प्राप्त हुआ था उसके किञ्चित् क्षीण हो जाने पर शान्तिसेन मुनि ने उसे पुनरुत्थापित किया। इन मुनियों ने वेल्गोल पर्वत पर अशन आदि का त्याग कर पुनर्जन्म को जीत लिया ।]

१९ (३२)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री वेट्टेडे गुरवडिगलमाणाक्करसिंङ्गणन्दिगुरवडिगल्तोन्तु-
काल-केय्दार् ।

[वेट्टेडेगुरु के शिष्य सिंहनन्दिगुरु ने व्रत पाल देहोत्सर्ग किया]

२० (२६)

(लगभग शक सं० ६२२)

....
.. ...यरुल्लरि पीठ दिल्दो नान्
.....वारि कुमाररि नच्चिकेय्येवां
स्थिरदरलिन्तुपेगुरम सुरलोकविभूति एय्दिदार् ।

[......इस प्रकार पेगुरम (?) ने सुरलोक विभूति को प्राप्त किया ।]

२१ (२९)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति **श्रीगुणभूषितमादि** वलादेरिसिद्दा निसिदिगे
-मद्दुम्मगुरुसन्तानान् सन्द्रिग-गणता-नयान् गिरितलदामे-

लति......स्थलमान् तीरदाणमार्कलगे नेलदि मानदा सद्धम्मदा गीलि ससानदि पतान् ।

[इस लेख का भाव स्पष्ट नहीं हुआ ।]

२२ (४८)

(लगभग शक सं० १०२२)

श्री अभयणन्दि पण्डितर गुड्ड कोत्तय्य वन्दिद्दि देवर बन्दिसिद ।

[अभयनन्दि पण्डित के गृहस्थ शिष्य कोत्तय्य ने यहाँ आकर देव-वन्दना की ।]

२३ (२८)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति श्रीइनुड गूरा मे॰ लगवासगुरवर् कल्वप्प बेट्टम्मेल्कालं कंय्दार् ।

[इनूट गूर के मेल्लगवासगुरु ने कल्वप्प (कटवप्र) पर्वत पर देहोत्सर्ग किया ।]

२४ (३५)

(लगभग शक सं० ७२२)

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दपदलर्केदलिध्वजसाम्या''' महामहासामन्ताधिपति श्रीवल्लभ'''हा-राजाधिराज''' मेश्वर-महाराजरा मगन्दिर् रणावलोक-श्रीकम्मय्यन् पृथुवीराज्यं गेये व'''रम*ल्व्वप्पु'''ल पेर्गोल्नप्पिना पोलदिन-

---

* चे

उडु कोट्टदु'''सेन अडिगलं **मनसिजरा**'''गनाअरसि वेनेएत्ति मौनमुज्जमिसुवल्लि कोट्टदु पोलमेरे **तट्टगेरेय** किल्करे पैगि अच्चरकल्ल मेगे अल्लिन्दा वसेल् कर्गल्‌मारदु सल्लु पेरिय आल '''वारि मरलू पुणुसपेरि'''तारेयु आलरे मेरे दुवेट्टगे निरुकल्लु कोवछदा पेरिय एलवु अल्लि कुडित्तु अरसरा श्रीकरणमु''''''
''''''''''''गादियर **दिण्डिग**गामुण्डरुम् **एन्नुवरु**'''वङ्करु-**वल्लभ**-गामुण्डरुम् **रुन्दि वञ्चरु रुपिड मारम्मनु कादलूर श्रीविक्रम**-गामुण्डरुं **कलिदुर्ग**गामुण्डरुं **अगदिपो**''''''
''''''यरर'' '''**रणपार**गामुण्डरुं **अन्दमासल उत्तम** गामुण्डरुं **नविलूर** नाल्गामुण्डरुं **वेल्गोलद गोविन्द**पा-डिय उ..ल्लामन्दुं **वेल्गोलदा** वलि **गोविन्द**पाडिगे कोट्टदु.

बहुभिर्व्वसुधाभुक्ता राजभिस्**सगरादिभिः**।
यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलं॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रमिः॥*

[श्रीवल्लभमहाराज के पुत्र महासामन्ताधिपति रणावलोक श्रीकम्बय्यन् के राज्य में मनसिज (?) की राज्ञी के व्याधि से मुक्त होने के पश्चात् मौन व्रत समाप्त होने पर कुछ भूमि का दान दिया गया था, जिसकी सीमा आदि लेख में दी है। लेख दान की शपथ के साथ समाप्त होता है।]

---

* ये दो श्लोक नये एडीशन में बहुत अशुद्ध हैं। उसमें 'यदाभूमि' के स्थान पर 'यथाभूमि' व 'स्वदत्तं' 'परदत्तं' 'हरन्ति' 'पृष्ठायां' पाठ हैं।

२५ * (६१)

(लगभग शक सं० ८२२)

श्रीमत्‌······पु···शिष्यर्‌अरिट्टोनेमि माडिसिदर्‌ सिहं

[..के शिष्य अरिट्टोनेमि ने बनवाया ।]

---

* भरतेश्वर की मूर्त्ति के दक्षिण की ओर ।

शासनवस्ति के पूर्व की ओर के शिलालेख

२६ (८८)

(लगभग शक सं० ६२२)

सुरचापंबोलं विद्युल्लतेगल तेरबोलमञ्जुबोल्तोरि बेगं।
पिरिगुं श्रीरूप-लीला-धन-विभव-महाराशिगल्निल्लवार्ग्गं ॥
परमार्त्थं मेच्चेनानीधरयियुलिरवानेन्दु सन्यासनं-गे- ।
य्दुरु मत्वन्नन्दिसेन-प्रवर-मुनिवरन्देवलोकक्के सन्दान् ॥

[रूप, लीला, धन व विभव, इन्द्र-धनुष, बिजली व ओसबिन्दु के समान क्षणिक हैं, ऐसा विचारकर नन्दिसेन मुनि ने सन्यास धार सुरलोक को प्रस्थान किया ।]

२७ (११४)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री ॥ शुभान्वित-श्रीनमिलूरसङ्घदा । प्रभावती······ ।
प्रभाव्यमी-पर्व्वतदुल्ले नोन्तुताम् । स्वभाव-सौन्दर्य्य-कराङ्ग-
राधिपर् ॥

ग्रामे मयूरसङ्घेऽस्य आर्य्यिका दमितामती ।
कटवप्रगिरिमध्यस्था साधिता च समाधिता ॥

[नमिलूरसंघ की प्रभावती ने इस पर्वत पर व्रत धार दिव्य शरीर प्राप्त किया ।]

[मयूरग्रामसंघ की आर्यिका दमितामती ने कटवप्र पर्वत पर समाधि-मरण किया ।]

२८ (८८)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री ॥ तपमान्द्वादशदा विधानमुखदिन् केय्दोन्दुताधात्रिमेल् ।
चपलिल्ला नविलूर सङ्घदमहानन्तामतीखन्तियार् ॥
विपुलश्रीकटवप्रनल् गिरियमेल्नोन्तोन्दु सन्मार्ग्गदिन् ।
उपमील्या सुरलोकसौख्यदेडेयान्तामेयिद इल्दाल् मनम् ॥

[नविलूर संघ की अनन्तामती-गन्ति ने द्वादश तप धार कटवप्र पर्वत पर यथाविधि व्रतों का पालन किया और सुरलोक का अनुपम सुख प्राप्त किया ।]

२९ (१०८)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री ॥ अनवरतन्नालम्पि भृत-शय्यममेन्ते विच्छेयं
वनदोलयोग्य... नक्कुमदि......गले...
मनवमिकुत......रदि...नोन्तुसमाधिकूडिदों
अनुपम दिव्यप्पद्धु सुरलोकद मार्गं दोलिल्दरिन्विनिम् ॥
मयूरग्रामसङ्घस्य सौन्दर्य्या-आर्य्य-नामिका ।
कटप्रगिरिशैलेच साधितस्य समाधितः ॥

[उत्साह के साथ आत्म-संयम-सहित समाधि व्रत का पालन किया और सहज ही अनुपम सुरलोक का मार्ग ग्रहण किया । (?)]

[मयूरग्रामसंघ की आर्या ने कटवप्र पर्वत पर समाधि-मरण किया ।]

३० (१०५)

(लगभग शक सं० ६२२)

अड्डादिनामननेकं गुणकीर्त्ति देन्वान्
तुङ्गोरुभक्तिवशदिन् वोरदिल्लिदेहम्
पोङ्गोल् विचित्रगिरिकूटमयंकुचेलम् ।

[गुणकीर्त्ति ने भक्ति-सहित यहां देहोत्सर्ग किया ।]

३१ (१०६)

(लगभग शक सं० ६२२)

नविलूरा श्रीसङ्घदुल्ले गुरवंनम्मौनियाचारियर्
अवराशिष्यरनिन्दितागुणयमि''वृषभनन्दोमुनी ।
भवविज्जैन-सुमार्गदुल्ले नडदोन्दाराधना-योगदिन्
अवरुं साधिसि स्वर्गलोकसुख-चित्तं......माधिगल् ।

[नविलूर संघ के मौनिय आचार्य के शिष्य वृषभनन्दि मुनि ने समाधि मरण किया ।]

३२ (११३)

(लगभग शक सं० ६२२)

वनगे मृत्युवरवानरि देन्दु सुपण्डितन् ।
अनेक-शील-गुणमालेगलिन्म गिदोप्पिदोन् ॥
विनय देवसेन-नाम-महामुनि नोन्तु पिन् ।
इन दरिल्दु पलितङ्कदे तान्दिवमेरिदान् ॥

[मृत्यु का समय निकट जान गुणवान् और शीलवान् देवसेन महामुनि व्रत पाल स्वर्ग-गामी हुए ।]

३३ (८३)

(लगभग शक सं० ६२२)

एडेपरेगीनडे केय्दु तपं सय्यममान्कोलत्तूरसङ्घ .. ।
वडे कोरेदिन्तुवाल्वुदरिदिन्नेनगेन्दु समाधि कूडिए ॥
एडे-विडियल्कवडिं कटवप्रवंएरिये निल्लदनन्धन्
पडेगमोलिप्प......न्दी-सुरलोक-महा-विभवस्थननादं ।

["अब मेरे लिये जीवन असम्भव है" ऐसा कहकर कोल-त्तूर संघ के......(?) ने समाधि-व्रत लिया और कटवप्र पर्वत पर से सुरलोक प्राप्त किया ।]

३४ (८४)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति श्री

अनवद्यनन्दि-राष्ट्रदुल्ले प्रथित-यशो ..न्दकान्वन्दु..लाम्
विनयाचार प्रभावन्वपदिन्नधिकन्चन्द्र-देवाचार्य्य नामन्
उदित-श्री-कलवप्पिनुल्ले रिषिगिरि-शिले-मेल्नोन्तुतन्देहमिक्कि
निरवद्यन्नेरि स्वर्ग्ग शिवनिलेपडेदान्साधुगलपूज्यमानन् ।

[नदिराज्य के यशस्वी, प्रभावयुक्त, शील-सदाचार-सम्पन्न चन्द्रदेव आचार्य कल्वप्प नामक ऋषिपर्वत पर व्रत पाल स्वर्ग-गामी हुए ।]

३५ (७६)

(लगभग शक सं० ६२२)

सिद्धम्

नेरेदाद व्रत-शील-नोन्पि-गुणदि स्वाध्याय-सम्पत्तिनिम् ।

करेदल्-नल्तप-धर्म्मदा-**ससिमति**-श्री-गन्तियर्व्वन्दुमेल् ॥
अरिदायुप्यमनेन्तु नोडेनगे तानिन्तेन्दु कल्वप्पिनुल् ।
तेरदाराधने-नोन्तु तीर्त्थ-गिरि-मेल् स्वर्गालयक्केरिदार् ॥

[व्रत-शील-आदि-सम्पन्न ससिमति-गन्ति कल्वप्पु पर्वत पर आई और यह कहकर कि मुझे इसी मार्ग का अनुसरण करना है तीर्थगिरि पर सन्यास धारणकर स्वर्गगामी हुई।]

कांचिन दोणो के मार्ग पर के
शिलालेख

३६ (१४५)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री **एरेयगवे** कवट्टद लो......।

[कवट्ट में एरेयगवे......]

३७ (१४६)

(लगभग शक सं० १०७२)

श्रीमतु **गरुडकेसिराज** स्थिरं जीयातु ।

३८ (५६)

(शक सं० ८६६)

कूगे ब्रह्मदेव स्तम्भ पर

(दक्षिणमुख)

स्वस्ति म......म् उदधिं कृत्वावधिं मेदिनी

...चक्र . ...धवो भुञ्जन् भुजासेर्बलात् ।

न्यश्रीजग......पतेर्गाङ्गान्वयक्ष्माभुजां

भूषा-रत्नमभू.........वनितावक्त्रेन्दुमेघोदयः ।। १ ।।

गद्यं । तस्य सकलजगतीतलोत्तुङ्गगङ्गकुलकुमुद-

कौमुदी-महातेजायमानस्य। सत्यवाक्यकोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराजस्य। कृष्णराजोत्तरदिग्विजयविदितगुर्ज्जराधि-राजस्य। वनगजमल्लप्रतिमल्लवल्लवदल्लदर्प्प-दलनप्रकटीकृतविक्र-मस्य। गण्डमार्त्तण्ड-प्रतापपरिरचित-सिंहासनादि-सकल-राज्य-चिह्नस्य। विन्ध्याटवीनिकटवर्त्ति...ण्डक-किरातप्रकरभङ्ग-करस्य। भुजबलपरि...... मान्यखेट-प्रवेशितचक्रवर्त्तिकट...विक्रम... श्रीमदिन्द्रराजपट्टबन्धोत्सवस्य।.. ...समुत्साहितसमरसज्ज-वज्जल......घ...नस्य। भयोपनतवनवासिदेशाधि...... मणिकुण्डलमदद्विपादि-समस्त-वस्तुभ ...... मनुपलब्ध-सत्कीर्त्त-नस्य। प्रणतमाटूरवंशजस्य......ज-सुवसत-भुज-बलावलेप-गज-घटाटोपगर्व्वदुर्व्वृत्तमकलनोलम्बाधिराजसमरविध्वंसकस्य। मनुन्मूलितराज्यकण्टकस्य। सञ्चूर्ण्णितोच्चङ्गिगिरिदुर्गस्य। संहृत-नरगाभिधानशबरप्रधानस्य। प्रतापावनतचेर-चोल-पाण्ड्य-पल्लवस्य। प्रतिपालितजिनशासनस्य।.........त-महाध्वजस्य। बलवदरिनृपद्रविणापहरण......कृतमहादानस्य। परिपालितसेतु बन्धभै...न्धुसम्बन्धवसुन्धरातलस्य। श्रीनोलम्बकु(लान्त)क-देवस्य। शौर्य्यशासनं धर्म्मशासनं च सञ्चरतु दिग्मण्डलान्तरमा-कल्पान्तरमाचन्द्रतारम्॥

(पश्चिममुख)

......या कै रप्पु पायान्त......तिशिखाशेखरं

...... नान्य गवाहतो ...... श्रीगङ्गचूडामणि

...वना...द...त्राणि...कं पल्लव...मा...येनामितं...

...भुजावलेपमल...कृत्वा...गं स्वयं ... गुत्तियगङ्गभूपति ...
नोलम्बान्तकः।। .....यिय... ..न्मुखं...युधि......गादसय
......प्रतिगज......विक्रमं ।।..:त्पलमिव... नोलम्बान्तकः
......भूलोकादनेक-द्र...नेकवन्धान्धक.. चोल-पल्लव...का
नन्दहेतोर...श्रीमारसिंह-चि ... तिलक-छत्र-चन्द्रस्य...चन्द्र
...व...य्र्यैर......दर्प्पं ...गं सं...ंगं...ह...रः।।...वद्घोषणा
...न्महाविजयोत्सवे......सिंहासनोर्व्वी-ध...

इत्याधिष्कृत-वीर-सङ्कर-गिरः चालुक्य-चूडामणे
राजादित्य-हरेर्द्दवाग्निरजनिश्रीगङ्ग-चूडामणि ।
दैत्येन्द्रैर्म्मधुकैटभप्रभृतिभिर्ध्वस्तैर्म्मुरद्वे ..
किं मायारिभिरित्थमुत्थितमिति क्ष्मावङ्क-शङ्काङ्क...
...लैर्न्नरगासुरस्य वसुधानन्दाश्रुमिश्रैश्शि...
दात्थैँरकरोत्सरागमवनीचक्रं नोलम्बान्तकः ।

(उत्तरमुख)

(प्रथम ८ पंक्तियाँ अस्पष्ट हैं)

......गन... . ङ्ग-क्ष्माभृतः ....
याव ... न ... ... ड ...ति...तिना......पद......क्षति ।।
......मिश्रीकृत-म...क-वीर-विस्मय-तेज.........गुत्तिय-गङ्ग
भूपमितियं विश्वं.....................कृता......तिं पतिमह
.........वष्टभ्यदुष्टावनिप-कुलमिलामिन्द्रराज...ण...कुम्ब-
हल...यक-च्छत्र.........श्रीगङ्ग-चूडामणिरिति धरणी स्तौतियं
......कीर्त्तिः ।। ......स्सम्प्रति मारसिंह-नृपतिर्व्विक्रान्त-

क........सौ यत्र...स्थिति-साहसोन्मद-महासामन्त-मत्त-द्विपम्। ...स्वामिनि पट्ट-बन्ध-महिमा-निर्व्वि...मित्युर्व्वराचक्रं यस्य पराक्रम-स्तुति-परैः व्यावर्णयत्यङ्ककैः॥ येनेन्द्र-क्षिति-वल्लभस्य जगती-राज्याभिषेकः कृतः। येना...द-मद ..पेनविजित**पाताल**मल्लानुजः। ...म्रो. रणाङ्गणे रण-पटुस्तस्यात्मजोजा......
...............रभू..... ......म...

(पूर्वमुख)

वगेयललुम्बमप्प बलदल्लन...डिसि गेल्द शौर्य्यमं
पोगल्वेनो धात्रियोल् नेगल्द वज्जलनं बिडेयट्टि देलगेयं
पोगल्वेनो **पल्लवाधिप**.. ...मं तवे कोन्द वीरमं
पोगल्वेनो पेलिमेवोगल्वेनेन्दरियें चलदुत्तरङ्गनं॥
ओलियेकोदु **पल्लवर** पन्दलेयेल्लमनेय्देदट्टिका—
पालिकरूरि सारि परमण्डलिककँल नम्मनीवुइँथ्।
ओलिगे निम्म पन्दलेगलं बरलीयदे कण्डु वाल्वु...।
ओलिय लेम्बिनं नेगल्दुदोट्टजि **मण्डलिक-त्रिणेत्रना**॥
तुङ्गपराक्रमं पलवु कालमगुर्व्विसे सुत्तिवुत्ति वि—
ट्टुङ्गडकाडुवट्टि कोललारन...मुन्नमेनिप्प पेम्पिनु—
च्चङ्गिय कोटेयं जगमसुङ्गोले कोण्ड नगल्ते मूरु लो—
कङ्गलोलम्पोगल्तेगेडेयादुदु **गुत्तिय-गङ्ग**-भूपना॥

कन्दं॥ कालनो रावणनो शिशु—
पालनो नानेनिसि नेगल्द नरगन वले त—
न्नालाल कयॄगे वन्दुदु

हेलासाध्यदोले **गङ्ग**-चूडामणिया ।
नुडिदने कावुदने एल्दे-
गिडदिरुजवनिट्ट रक्के निनगीवुदनें
नुडिदने एम्रदु कय्यदु
नुडिदुदु तप्पुगुमे **गङ्ग** चूड़ामणिया ॥

इन्तु विन्ध्याटवी-निकट-तापी-तटवुं । **मान्यखेट**-पुर-वरवुं । गोनूरुमुच्चङ्गियुं । बनवासिदेशवुं । पाभसेयकोटेयुं । मोदलागे पलवेडेयोलमरियरं पिरियरुवं कादि गेल्दु पलवेडे-गलोल महाध्वजमनेत्तिसि महादानंगेय्दु नेगल्द गङ्ग-विद्याधरं । गङ्गरोलाण्डं । गङ्गरसिङ्गं । गङ्गचूडामणि गङ्गकन्दर्प्प । गङ्गवज्रं । **चलदुत्तरङ्गं** । **गुत्तिय**गङ्गं । धर्म्मावतारं । जगदेकवीरं । नुडि-दन्तेगण्डं । अहितमार्त्तण्डं । कदनकर्क्कशं । मण्डलिक-त्रिणेत्रं । श्रीम**न्नोलम्बकुलान्तकदेवं** पलवेडेगलोलं बसदिगलुं मानस्त-म्भङ्गलुवं माडिसिदं । मङ्गलं । धर्म्म(म)ङ्गलं नमस्यं नडयिसिअलिय-मोन्दुवर्ष राज्यमं पत्तुविट्टु **बङ्कापुर**दोल् **अजितसेनभट्टारकर** श्रीपादसन्निधियोल् आराधनाविधियिमूरुदे...सं नोन्तु समाधियं साधिसिदं ॥

वृत्त ॥ एले **चोल**चितिपाल सन्तवेल्देयं नीं नीविकोल् निन्ननुं-गोले माण्डत्तिरु **पाण्ड्य पल्लव** भयङ्गोण्डोडदिर्न्निअम-ण्डलदिं पिङ्गदे निल्वदीगनिवनिन्तुं त...गङ्गम-'
ण्डलिकं देवनिवासदत्त विजयं-गेय्दं नोलम्बान्तकं ॥

[इस लेख में गङ्गराज मारसिंह के प्रताप का वर्णन है। इसमें कथन है कि मारसिंह ने (राष्ट्रकूट नरेश) कृष्णराज (तृतीय) के लिए गुर्जर देश को विजय किया; कृष्णराज के विपक्षी अल्ल का मद चूर किया; विन्ध्य पर्वत की तली में रहने वाले किरातों के समूहों को जीता; मान्यखेट में नृप (कृष्णराज) की सेना की रक्षा की, इन्द्रराज (चतुर्थ) का अभिषेक कराया; पातालमल्ल के कनिष्ठ भ्राता वज्जल को पराजित किया; वनवासीनरेश की धन सम्पत्ति का अपहरण किया; माट्टर वंश का मस्तक झुकाया, नोलम्ब कुल के नरेशों का सर्वनाश किया; काडुवट्टि जिस दुर्ग को नहीं जीत सका था उस उच्चङ्गि दुर्ग को स्वाधीन किया, शवराधिपति नरग का संहार किया; चौड़ नरेश राजादित्य को जीता; तापी-तट, मान्यखेट गोनूर, उच्चङ्गि, बनवासि व पाभसे के युद्ध जीते, व चेर, चोड़, पाण्ड्य और पल्लव नरेशों को परास्त किया व जैन धर्म का प्रतिपालन किया और अनेक जिन मन्दिर बनवाये। अन्त में उन्होंने राज्य का परित्याग कर अजितसेन भट्टारक के समीप तीन दिवस तक सल्लेखना व्रतका पालन कर बंकापुर में देहोत्सर्ग किया। लेख में वे गङ्ग चूडामणि, नोलम्बान्तक, गुत्तिय-गङ्ग, मण्डलिकत्रिनेत्र, गङ्ग-विद्याधर, गङ्गकन्दर्प, गङ्गवज्र, गङ्गसिंह, सत्यवाक्य कोङ्गणिवर्म-धर्म-महाराजाधिराज आदि अनेक पदवियों से विभूषित किये गये हैं।]

३६ (६३)

महनवमी मण्डप में

(शक सं० १०८५)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्त-भुवन-स्तुत्य-नित्य-निरवद्य-विद्या-विभव-प्रभाव-प्रह्वरुह्वरीपाल-मौलि-मणि-मयूख-शेखरीभूत-पूत-पद-नख-प्रकररुं । जितवृजिनजिनपतिमतपयपयोधिलीलासुधाकररुं । चार्व्वाकाखर्व्वगर्व्वदुर्व्वारोर्व्वीधरोत्पाटनपटिष्ठनिष्ठुरोपालम्भद-म्भोलिदण्डरुं अकुण्ठ-कण्ठ-कण्ठीरव-गभीर-भूरि-भीम-ध्वान-निर्द्दलितदुर्द्दमेद्धबौद्धमदवेदण्डरुम् । अप्रतिहत-प्रसरदसम-लसदु-पन्यसननित्यनैसित्य-पात्र-दात्र-दलितनैयायिकनयनिकरनलरुं । चपलकपिलविपुलविपिनदहन-दावानलरुं । शुम्भदम्भोद-नाद-नोदितविततवैशेषिकप्रकरमदमरालरुं । शरदमलशशधरकरनिकरनी-हारहाराकारानुवर्त्तिकीर्त्तिवल्लीवेल्लितदिगन्तरालरुमप्पश्रीमन्म-हामण्डलाचार्य्यरु श्रीमद्देवकीर्त्तिपण्डितदेवरु ।

कुर्व्वनम: कपिल-वादि-वनोग्र-वह्नये
चार्व्वाक-वादि-मकराकर-वाडवाग्नये ।
बौद्धोग्रवादितिमिरप्रविभेदभानवे
श्रीदेवकीर्त्तिमुनये कविवादिवाग्मिने ॥ २ ॥

सङ्कल्पं जल्पवल्लीं विलयमुपनयंश्चण्डवैतण्डिकोक्ति-
श्रीखण्डं मूलखण्डं झटिति विघटयन्वादमेकान्तभेदं ।
निष्पिण्डंगण्डशैलं सपदि विदलयन्सूक्तिप्रौढगर्ज्जे-
त्स्फूर्ज्जन्मेवामदोर्ज्जोजयतु विजयते देवकीर्त्तिद्विपेन्द्र: ॥ ३ ॥

चतुर्म्मुखचतुर्व्वक्त्रनिर्ग्गमागमदुस्सहा ।
देवकीर्त्तिमुखाम्भोजे नृत्यतीति सरस्वती ॥ ४ ॥

चतुरते सत्कवित्वदोलभिज्ञते शब्दकलापदोल् प्रस-

अतेमतियोल् प्रवीणते नयागम-तर्क-विचारदोल् सुपू-
ज्यते तपदोल् पवित्रते चरित्रदोलोन्दि विराजिसल् प्रसि-
द्धते मुनि-देवकीर्त्ति विबुधाग्रणिगोप्पुवुदी धरित्रियोल् ॥ ५ ॥
शकवर्षसासिरद एम्भत्तय्देनेय ॥

वर्षे ख्यात-सुभानु-नामनि सिते पक्षे तदाषाढ़के
मासे तन्नवमीतिथौ बुध-युते वारे दिनेशोदये।

श्रीमत्तार्क्किकचक्रवर्त्ति-दशदिग्वर्त्तोद्धकीर्त्तिप्रियो
जातः स्वर्गवधूमनःप्रियतमः श्रीदेवकीर्त्तिव्रती ॥ ६ ॥
जातेकीर्त्यवशेषके यतिपतौ श्रीदेवकीर्त्तिप्रभौ
वादीभेभरिपौ जिनेश्वर-मत-क्षीराब्धितारापतौ।
क्व स्थानं वरवाग्वधूर्ज्जिनमुनिव्रातं ममेति स्फुटं
चाक्रोशं कुरुते समस्तधरणौ दाक्षिण्य-लक्ष्मीरपि ॥ ७ ॥
तच्छिष्यो लुवलक्खणन्दिमुनिपः श्रीमाधवेन्दुव्रती
भव्याम्भोरुहभास्करस्त्रिभुवनाख्यानश्चयोगीश्वरः।
एते ते गुरुभक्तितो गुरुनिषद्यायाः प्रतिष्ठामिमां
भूत्याकाममकारयन्निजयशस्सम्पूर्णदिग्मण्डलाः ॥ ८ ॥

[इस लेख में अपने समय के अद्वितीय कवि, तार्किक और वक्ता महामण्डलाचार्य मुनि देवकीर्त्ति पण्डित की विद्वत्ता का व्याख्यान है। इस समय जैनाचार्य के सन्मुख सांख्यिक, चार्वाक, नैयायिक, वेदान्ती, बौद्ध आदि सभी दार्शनिक हार मानते थे।

शक सं० १०८५ सुभानु संवत्सर आषाढ़ शुक्ल ६ बुधवार को सूर्योदय के समय इन तार्किक चक्रवर्त्ति श्री देवकीर्त्ति मुनि का स्वर्ग-

वास हुआ। उनके शिष्य लक्खनन्दि, माधवेन्दु और त्रिभुवनमल्ल ने अपने गुरु की स्मारक यह निषद्या प्रतिष्ठित कराई।]

४० (६४)

उसी स्तम्भ पर

(शक सं० १०८५)

(दक्षिणमुख)

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्त्थ-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभिन्नघन-भानवे ॥१॥
श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल-जिनवरानीक-सौधोरु-वार्द्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु-वेदिः ।
शस्तस्यात्कार-मुद्रा-शबलित-जनतानन्द नादोरु-घोषः
स्थेयादाचन्द्र-तारं परम-सुख-महावीर्य्य-वीचो-निकायः ॥२॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्ग्गाः श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ बोधनिधिर्ब्बभूव ॥३॥
[श्री] भद्रस्सर्व्वतो योहि भद्रबाहुरिति श्रुतः ।
श्रुतकेवलिनाथेषु चरमर्परमो मुनिः ॥४॥
चन्द्र-प्रकाशोज्वल-सान्द्र-कीर्त्तिः श्रीचन्द्रगुप्तोऽजनि तस्य शिष्यः ।
यस्य प्रभावाद्वनदेवताभिराराधितः स्वस्य गणो मुनीनां ॥५॥
तस्यान्वये भू-विदिते बभूव यः पद्मनन्दिप्रथमाभिधानः ।
श्रीकोण्डकुन्दादि-मुनीश्वराख्यस्सत्संयमादुद्गत-चारणर्द्धिः ॥६॥
अभूदुमास्वाति मुनीश्वरोऽसावाचार्य्य-शब्दोत्तरगृद्धपिच्छः ।

तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेष-पदार्त्थ-वेदी ॥७॥

श्री **गृद्धपिच्छ**-मुनिपस्य **बलाकपिच्छः**

शिष्योऽजनिष्टभुवनत्रयवर्त्तिकीर्त्तिः।

चारित्रचञ्चुरखिलावनिपाल-मौलि-

माला-शिलीमुख-विराजितपादपद्मः ॥८॥

एवं महाचार्य्य-परम्परायां स्यात्कारमुद्राङ्कितत्वदीपः।

भद्रस्समन्ताद्गुणतोगणीशस्**समन्तभद्रो**ऽजनिवादिसिंहः ॥९॥

ततः ॥

यो **देवनन्दि**-प्रथमाभिधानो बुद्ध्या महत्या स **जिनेन्द्रबुद्धिः**।

श्री**पूज्यपादो**ऽजनिदेवताभिर्य्यत्पूजितं पाद-युगं यदीयं ॥१०॥

जैनेन्द्रं निज-शब्द-भोगमतुलं सर्व्वार्थसिद्धिः परा

सिद्धान्ते निपुणत्वमुद्धकवितां जैनाभिषेकःस्वकः।

छन्दस्सूक्ष्मधियं समाधिशतक-स्वास्थ्यं यदीयं विदा

माख्यातीह स **पूज्यपाद**-मुनिपः पूज्यो मुनीनां गणैः ॥११॥

ततश्च ॥

(पश्चिममुख)

अजनिष्टाकलङ्कं यज्जिनशासनमादितः।

अकलङ्कं बभौ येन सो**ऽकलङ्को** महामतिः ॥१२॥

इत्याद्युद्धमुनीन्द्रसन्ततिनिधौ श्रीमूलसङ्घे ततो

जाते **नन्दि**गण-प्रभेदविलसद्**देशी**गणेविश्रुते।

गोल्लाचार्य्य इति प्रसिद्ध-मुनिपोऽभूद्गोल्लदेशाधिपः

पूर्व्वं केन च हेतुना भवभिया दीक्षां गृहीतस्सुधीः ॥१३॥

श्रीमत्त्रैकाल्ययोगी समजनि महिका काय-लग्ना तनुत्रं
यस्याभूद्वृष्टि-धारानिशितशर-गणाग्रीष्ममार्त्तण्डविम्बं ।
चक्रं सद्वृत्तचापाकलित-यति-वरस्याघशत्रून्विजेतुं
गोल्लाचार्य्यस्य शिष्यस्स जयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दुः ॥१४॥

तच्छिष्यस्य ॥

अविद्धकर्णादिक**पद्मनन्दिसैद्धान्तिका**ख्योऽजनि यस्य लोके ।
कौमारदेव-व्रतिताप्रसिद्धिर्जीयात्तुसो ज्ञाननिधिस्सधीर ॥१५॥

तच्छिष्यः **कुलभूषणा**ख्ययतिपश्चारित्रवाराान्निधि-
स्सिद्धान्ताम्बुधिपारगो नतविनेयस्तत्सधर्म्मो महान् ।
शब्दाम्भोरुहभास्करः प्रथिततर्कग्रन्थकारः **प्रभा**—
चन्द्राख्यो मुनिराज-पण्डितवरः श्रीकुण्डकुन्दान्वयः ॥१६॥

तस्य श्री**कुलभूषणा**ख्यसुमुनेश्शिष्यो विनेयस्तुत-
स्सद्वृत्तः कुलचन्द्रदेवमुनिपस्सिद्धान्तविद्यानिधिः ।
तच्छिष्योऽजनि **माघनन्दि**मुनिपः **कोल्लापुरे** तीर्थकृ-
द्राद्धान्तारार्णवपारगोऽचलधृतिश्चारित्रचक्रेश्वरः ॥१७॥

एले मावि वनवञ्जदिं तिलिगोलं माणिक्यदिं मण्डना—
वलिताराधिपनिं नभं शुभदमा गिर्प्पन्विरिदंत्तुनि-
र्म्मलवीगल् **कुलचन्द्रदेव**-चरणाम्भोजातसेवाविनि—
श्वलसैद्धान्तिक**माघनन्दि**मुनियिं श्रीकोण्डकुन्दान्वयम् ॥१८॥

हिमवत्कुत्कील-मुक्ताफल-तरलतरत्तार-हारेन्दुकुन्दो—
पमकीर्त्ति-व्याप्तदिग्मण्डलनवनत-भू-मण्डलं भव्य-पद्मो-
ग्र-मरीचीमण्डलं पण्डित-तति-विनतं माघनन्द्याख्यवाचं

यमिराजं वाग्वधूटीनिटिलतटहटन्नूत्नसद्रत्नप··· ॥१९॥
...व मद-रदनिकुलमं भरदिं निर्भेदिसल्के...सरियेनिपं
वरसंयमाब्धिचन्द्रं धरेयोल् . **माघनन्दि**-सैद्धान्तेश ॥२०॥
तच्छिष्यस्य ॥

प्रवर गुड्डुगलु सामन्त**केदार**नाकरस† दानश्रेयांस सामन्त **निम्बदेव** जगदोर्व्वगण्ड सामन्त**कामदेव** ॥

(उत्तरमुख)

गुरुसैद्धान्तिक**माघनन्दि**मुनिपं श्रीमच्चमूवल्लभं
भरतं छात्रनपारशास्त्रनिधिगल् श्री**भानुकीर्त्ति**प्रभा-
स्फुरितालङ्कृत-**देवकीर्त्ति**-मुनिपरिशिष्यर्ज्जगन्मण्डन-
-र्द्दोरेये गण्डविमुक्तदेवनिनगिन्नीनामसैद्धान्तिकर् ॥२१॥

क्षीरोदादिव चन्द्रमा मणिरिव प्रख्यात रत्नाकरात्
सिद्धान्तेश्वर**माघनन्दि**यमिनो जातो जगन्मण्डनः ।
चारित्रैकनिधानधामसुविनम्रो दीपवर्त्ती स्वयं
श्रीमद्**गण्डविमुक्तदेव**यतिपस्सैद्धान्तचक्राधिपः ॥२२॥

प्रवर सधर्म्मर् ।

आवों वादिकथात्रयप्रवणदोल् विद्वज्जनं मेच्चे वि-
द्यावष्टम्भमनप्पुकेय्दु परवादिक्षोणिभृत्पक्षमं ।
देवेन्द्रं कडिवन्ददिं कडिदेले स्याद्वादविद्यास्त्रदिं
त्रैविद्य**श्रुतकीर्त्ति**दिव्यमुनिवोल् विख्यातियं ताल्दिदों ॥२३॥

श्रुतकीर्ति-त्रैविद्य—

---

† निकरस

त्रति राघवपाण्डवीयमं विभु (बु) धचम-
त्कृतियेनिसि गत-प्रत्या —
गतदिं पेल्दमलकीर्त्तियं प्रकटिसिदं ॥२४॥

अवरग्रजरु ॥

यो बौद्धक्षितिभृत्करालकुलिशश्चार्व्वाकमेघान (नि) लो
मीमांसा-मत-वर्त्ति-वादि-मदवन्मातङ्ग कण्ठीरवः ॥
स्याद्वादाब्धि-शरत्समुद्गतसुधा-शोचिस्समस्तैस्स्तुत-
स्स श्रीमान्भुवि भासते **कनकनन्दि**-ख्यात-योगीश्वरः ॥२५॥

वेताली मुकुलीकृताञ्जलिपुटा संसेवते यत्पदे
भोट्टिङ्गः प्रतिहारको निवसति द्वारे च यस्यान्तिके ।
येन क्रीडति सन्ततं नुततपोलक्ष्मीर्य्यशः (:) श्रीप्रिय—
स्सोऽयं शुम्भति **देवचन्द्र**मुनिपो भट्टारकौघाग्रणीः ॥२६॥

अवर सधर्म्म**रमाघनन्दि**-त्रैविद्य-देवरु विद्याचक्रवर्त्ति-
श्रीम**द्देवकीर्त्ति**-पण्डितदेवर शिष्यरु श्री**शुभचन्द्र**त्रैविद्य-
देवरुं **गण्डविमुक्त**वादि-चतुर्म्मुख-**रामचन्द्र**त्रैविद्यदेवरुं
वादिवज्राङ्कुश-श्रीम**दकलङ्क**त्रैविद्यदेवरुमापरमेश्वरन गुड्डुगलु
माणिक्यभण्डारि मरियाने दण्डनायकरुं श्रीमन्महाप्रधानं
सर्व्वाधिकारिपिरियदण्डनायकं**भरतिमय्यङ्गलुं**श्रीकरणद हेग्गडे
बूचिमय्यङ्गलु जगदेक-दानि हेग्गडे कोरय्यनुं ॥

अकलङ्क पितृ **वाजि**-वंश-तिलक-श्री-**यक्षराजं** निजा-
-म्बिके **लोका**म्बिके लोक-वन्दिते सुशीलाचारे दैवं दिवी—

-ना-कदम्ब-स्तुत-पाद-पद्मनकटं नागं चतुर्वेदिपा-

-लक-चूडामणि नागसिंहनेननंशोभिप्पनो हुल्लपं ॥२७॥

श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि अभिनवगङ्ग-दण्डनायक-श्रीहुल्लराजं तम्म गुरुगलप्पश्रीकोण्डकुन्दान्वयद श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद श्रीकोल्लापुरद श्रीरूप-नारायणन बसदिय प्रतिबद्धद श्रीमत्केल्लङ्गेरेय प्रतापपुरवं पुनर्भ्भ-रणवं माडिसि जिननाथपुरदलु कल्ल दानशालेयं माडिसिद श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरॆ देवकीर्त्तिपण्डितदेवर्ग्गे परोक्षविनय-वागि निसिदियं माडिसिद अवर शिष्यर्लक्खणन्दि-माधव-त्रिभुवनदेवर्महादान-पूजाभिषेक-माडि प्रतिष्ठेयं माडिदरु

मङ्गल महा श्री श्री श्री ॥

[इस लेख में गौतम गणधर से लगाकर मुनि देवकीर्त्ति पण्डितदेव की गुरु-परम्परा दी है† । कनकनन्दि और देवचन्द्र के भ्राता श्रुतकीर्त्ति त्रैविद्य मुनि की प्रशंसा में कहा गया है कि इन्होंने देवेन्द्र सदृश विपक्ष-वादियों को पराजित किया और एक चमत्कारी काव्य राघव-पाण्डवीय की रचना की जो आदि से अन्त को व अन्त से आदि को दोनों ओर पढ़ा जा सके × । प्रतापपुर की रूपनारायण बसदि का

† भूमिका देखो ।

× श्रुतकीर्त्ति की प्रशंसा के ये दोनों पद्य नागचन्द्रकृत 'रामचन्द्र-चरितपुराण' अपर नाम 'पम्प रामायण' के प्रथम आश्वास में नं० २४-२५ पर भी पाये जाते हैं । इस काव्य की रचना शक सं० १०२२ के लगभग हुई है । जिन विपक्ष-सैद्धान्तिक देवेन्द्र का यहाँ उल्लेख है वे सम्भवतः 'प्रमाणनय-तत्त्वालोकालङ्कार' के कर्त्ता वादि-प्रवर श्वेताम्बरा-

जीर्णोद्धार व जिननाथपुर में एक दानशाला का निर्माण कराने वाले महामण्डलाचार्य देवकीर्त्ति पण्डितदेव के स्वर्गवास होने पर यादव-वशी नारसिंह नरेश (प्रथम) के मंत्री हुल्लप ने यह निषद्या निर्माण कराई जिसकी प्रतिष्ठा देवकीर्त्ति आचार्य के शिष्य लक्खनन्दि, माधव और त्रिभुवनदेव ने दान सहित की।]

४१ (६५)

उसी मण्डप में

(शक सं० १२३५)

श्रीमत्स्याद्वादमुद्राङ्कितममलमहीनेन्द्रचक्रेश्वरेड्यं
जैनीयं शासनं विश्रुतमखिलहितं दोषदूरं गभीरं।
जीयात्कारुण्यजन्मावनिरमितगुणैर्व्वर्ण्यनीक-प्रवेकैः
संसेव्यं मुक्तिकन्या-परिचय-करणप्रौढमेतत्त्रिलोक्यां ॥१॥

श्रीमूलसङ्घ-देशीगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दान्वाये।
गुरुकुलमिह कथमिति चेद्ब्रवीमि सङ्क्षेपतो भुवने ॥२॥

यः सेव्यः सर्व्वलोकैः परहितचरितं यं समाराधयन्ते
भव्या येन प्रबुद्धं स्वपर-मत-महा-शास्त्र-तत्त्वं नितान्तं।
यस्मै मुक्त्यङ्गना संस्पृहयति दुरितं भीरुतां याति यस्मा—
द्यस्याशानास्ति यस्मिंस्त्रिभुवन-महितो विद्यते शीलराशिः ॥३॥

चार्य देवेन्द्र व देवसूरि हैं, जिनके विषय में प्रभावक-चरित में कहा गया है कि उन्होने वि० सं० ११८१ में दिगम्बराचार्य कुमुदचन्द्र को वाद में परास्त किया था।]

तन्मेघचन्द्रत्रैविद्यशिष्यो राद्धान्तवेदी लोकप्रसिद्धः।
श्रीवीरणंदी सोचुस्तदन्तेवासी गुणाब्धिः प्रास्ताङ्गजन्मा ॥४॥
य' स्याद्वाद-रहस्य-वादनिपुणोऽगण्यप्रभावो जना-
नन्दः श्रीमदनन्तकीर्त्तिमुनिपश्चारित्रभास्वत्तनुः।
कामोग्राहि-गर-द्विजापहरणे रूढा नरेन्द्रोऽभव-
त्तच्छिष्यो गुरुपञ्चकस्मृति-पथ-स्वच्छन्द-सन्मानसः ॥ ५ ॥
मलधारिरामचन्द्रो यमी तदीय-प्रशस्य-शिष्योऽसौ।
यच्चरणयुगलसेवापरिगतजनतेति चन्द्रतां जगति ॥ ६ ॥
परपरिणतिदूरोऽध्यात्मनस्सारधीरो
विषय-विरति-भावो जैनमार्गे-प्रभावः।
कुमत-वन-समीरो ध्वस्तमायान्धकारो
निखिलमुनिविनूतो रागकोपादिघात. ॥ ७ ॥
चित्ते शुभावनां जैनीं वाक्ये पञ्चनमस्क्रियां।
कायं व्रतसमारोपं कुर्व्वन्नध्यात्मविन्मुनि ॥ ८ ॥
पञ्चत्रिंशत्संयुत-शत-द्वयाधिक-सहस्र-नुतवर्षेषु।
वृत्तेषु शकनृपस्य तु काले विस्तीर्ण्णविलसदर्ण्णवनंमै॥ ९॥
प्रमादि (सं)वत्सरेमासे श्रावणे तनुमत्यजत्।
वक्षे कृष्णचतुर्दश्यां शुभचन्द्रो महायतिः ॥१०॥
अमरपुरममरवासं वद्गत-जिन-चैत्य-चैत्यभवनानां।
दर्शन-कुतूहलेन तु यातो यातार्त्त-रौद्र-परिणाम' ॥ ११ ॥

तच्छिष्यर् ॥

दुरितान्धकाररविहिम—

-कररोगेदर्प्पद्मणन्दिपण्डितदेवर् ।
वर-माधवेन्दु-समया—
भरणश्रीमूलसङ्घ-देशीगणदोल् ॥ १२ ॥

गुरु-रामचन्द्र-यतिपन
वर-शिष्य-शुभेन्दुमुनिय निस्तिगेय वि—
स्तरदिं माडिसिदं बेलु—
करेयविर्प राय-राज-गुरुगुम्मट्टं ॥ १३ ॥

श्रीविजय-पार्श्व-जिनवर-चरणारुण-कमल-युगल-यजन-रतः ।
बोगार-राज-नामा तद्वैयापृत्यतो हि शुभचन्द्रः ॥ १४ ॥

हेयादेय-विवेकता जनतया यस्मात्सदादीयते
तस्य श्रीकुलभूषणस्य वरशिष्योमाघनन्दिव्रती ।
सिद्धान्ताम्बुधितीरगो विशद-कीर्तिस्तस्य शिष्योऽभवत्
त्रैविद्यः शुभचन्द्र-योगि-तिलकः स्याद्वाद-विद्याञ्चितः॥१५॥

तच्छिष्य श्चारुकीर्त्ति-प्रथित-गुण-गण'पण्डितस्तस्य शिष्यः
ख्यातः श्री माघनन्दि-व्रति-पति-नुत-भट्टारकस्तस्य शिष्यः ।
सिद्धान्ताम्भोधिसीत-द्युतिरभयशशी तस्य शिष्यो महीयान्
बालेन्दुः पण्डितस्तत्पदनुतिरमलो रामचन्द्रोऽमलाङ्ग.।१६।

चित्रं सम्प्रति पद्मनन्दिनिह कृत्त'तावकीनं तपः
पद्मानन्द्यपि विश्रुताप्रमद इत्यासीस्सतां नम्रतां ।
कामं पूरयसे शुभेन्दु-पदं-भक्त्यासक्त-चेतः सदा
कामं दूरयसे निराकृत-महा-मोहान्धकारागम ॥१७॥

काम-विदारोदारः क्षमावृतोप्यक्षमो जगतिभासि

श्रीपद्मनन्दिपण्डित पण्डित-जन-हृदय-कुमुदशीतकर ॥१८॥
पण्डित-मयुदयवति शुभचन्द्र-प्रिय-शिष्य भवति
सुदयास्ति।
श्री-पद्म-नन्दि-पण्डित-यमीश भवदितर-मुनिपुनालोके।१९।
श्रीमदध्यात्मिशुभचन्द्रदेवस्य स्वकीयान्तेवासिना पद्म
नन्दि-पण्डित-देवेन माधवचन्द्रदेवेन च परोक्ष-विनय-निमित्तं
निषद्यका कारयिता ॥ भद्रं भवतु जिनशासनाय ॥

[इस लेख में शुभचन्द्र मुनि की आचार्यपरम्परा और इनके स्वर्गवास की तिथि दी हुई है। कुन्दकुन्दान्वय, मूल संघ, पुस्तक गच्छ, देशी गण में गुरुशिष्य परम्परा से मेघचन्द्र त्रैविद्य, वीरनन्दि, अनन्तकीर्त्ति, मलधारि रामचन्द्र और शुभचन्द्र मुनि हुए। शुभचन्द्र मुनि का शक सं० १२२१ श्रावण कृष्ण १४ को स्वर्गवास हुआ। इनके शिष्य पद्मनन्दि पण्डितदेव और माधवचन्द्र ने इनकी निषद्या निर्माण कराई। लेख में रामचन्द्र मुनि की आचार्य परम्परा इस प्रकार दी है। कुलभूषण, माघनन्दि व्रती, शुभचन्द्र त्रैविद्य, चारुकीर्त्ति पण्डित, माघनन्दि भट्टारक, अभयचन्द्र, बालचन्द्र पण्डित और रामचन्द्र।]

---

४७ (६६)

महानवमी मण्डप के उत्तर में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १०९९)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल-जिनवरानीक-सौधोरु-वार्द्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु-वेदिः ।
शस्त-स्यात्कार-मुद्रा-शवलित-जनतानन्द-नादोरु-घोषः
स्थेयादाचन्द्रतारं परम-सुख-महावीर्य्य-वीची-निकायः ॥२॥

श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्ग्गा श्रीगौतमाद्याप्रभविष्णवस्ते ।
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धि-युक्तास्तत्सन्ततौ नन्दिगणे बभूव ॥३॥

श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामा ह्याचार्य्यशब्दोत्तरकोण्डकुन्दः
द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥४॥

अभूदुमास्वातिमुनीश्वरोसावाचार्य्य-शब्दोत्तरगृद्धपिञ्छः ।
तदन्वये तत्सदृसो(शो)ऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेष-
पदार्त्थ-वेदी ॥५॥

श्रीगृद्धपिञ्छ-मुनिपस्य बलाकपिञ्छ-
शिष्योऽजनिष्ट भुवनत्रय-वर्ति-कीर्त्तिः ।
चारित्रचुञ्चुरखिलावनिपालमौलि-
माला-शिलीमुख-विराजित-पाद-पद्मः ॥६॥

तच्छिष्यो गुणनन्दिपण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर
स्तर्क्क-व्याकरणादि-शास्त्र-निपुणस्साहित्य-विद्यापतिः ।
मिथ्यावादिमदान्ध-सिन्धुर-घटासङ्घट्टकण्ठीरवो
भव्याम्भोज-दिवाकरो विजयतां कन्दर्प्प-दर्प्पापहः ॥ ७ ॥

तच्छिष्यास्त्रिशता विवेक-निधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता
स्तेषूत्कृष्टतमा-द्विसप्रतिमितास्सिद्धान्त-शास्त्रार्थक —
व्याख्याने पटवो विचित्र-चरितास्तेषु प्रसिद्धोमुनि —

ज्ञानानून-नय-प्रमाणनिपुणो देवेन्द्र-सैद्धान्तिकः ॥ ८ ॥

अजनि महिपचूडा-रत्नराराजिताङ्घ्रि

स्त्रिजित-मकरकेतूद्दण्ड-दोर्द्दण्ड-गर्व्वः ।

कुनय-निकर-भूध्रानीक-दम्भोलि-दण्ड

स्सजयतु विबुधेन्द्राभारती-भाल-पट्टः ॥ ९ ॥

तच्छिष्य' **कलधौतनन्दि**मुनिपस्सिद्धान्त-चक्रेश्वरः

पारावार-परीत-धारिणि-कुल-व्याप्तोरुकीर्तीश्वरः ।

पञ्चास्त्रोन्मद-कुम्भि-कुम्भ-दलन-प्रोन्मुक्त-मुक्ताफल-

प्रांशु-प्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनी-वल्लभः ॥ १० ॥

अवर्गे **रविचन्द्र**-सिद्धान्तविदर्स्सम्पूर्णचन्द्रसिद्धान्तमुनि-

प्रवररवरवर्गे शिष्यप्रवर श्री**दामनन्दि**-सन्मुनि-पतिगल् ।११।

बोधित-भव्यरस्त-मदनर्म्मद-वर्जित-शुद्ध-मानसर्

श्रीधरदेवरेम्बरवर्गग्र-तनूभवरादरा यश---।

श्रीधरर्गादि शिष्यरवरोल् नेगल्दर्म्मलधारिदेवरुं

श्रीधरदेवरुं नत-नरेन्द्र-ति (कि)रीट-तटार्च्चितक्रमर् ।१२।

आनम्रावनिपाल-जालकशिरो-रत्न-प्रभा-भासुर-

श्रीपादाम्बुरुह-द्वयो वर-तपोलक्ष्मीमनोरञ्जनः ।

मोह-व्यूह-महीध्र-दुर्द्धर-पवि' सच्छीलशालिर्ज्जग-

त्ख्यात**श्रीधरदेव** एष मुनिपो भाभाति भूमण्डले ॥१३॥

तच्छिष्यर् ॥

भव्याम्भोरुह-षण्ड-चण्ड-किरणः कर्प्पूर-हार-स्फुर-

त्कीर्त्तिश्रीधवलीकृताखिलदिशाचक्रश्चरित्रोन्नतः ।

(दक्षिणमुख)

भातिश्री जिन-पुङ्गव-प्रवचनाम्भोराशि-राका-शशी
भूमौ विश्रुत-**माघनन्दि**मुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥१४॥

तच्छिष्यर् ॥

सच्छीलश् शरदिन्दु-कुन्द-विशद-प्रोद्यद्यश-श्रीपति-
र्द्दप्यद्दर्प्पक-दर्प्प-दाव-दहन-ज्वालालि-कालाम्बुदः ।
श्रीजैनेन्द्र-वचःपयोनिधि-शरत्सम्पूर्ण-चन्द्रः क्षितौ
भाति श्री**गुणचन्द्र**-देव-मुनिपो राद्धान्त-चक्राधिपः ॥१५॥

तत्सधर्म्मर् ॥

उद्भूते नुत-**मेघचन्द्र**-शशिनि प्रोद्यद्यशश्चन्द्रिके
संवर्द्धेत तदस्तु नाम नितरां राद्धान्त-रत्नाकरः ।
चित्र तावदिदं पयोधि-परिधि-क्षोणौ समुद्रीक्ष्यते
प्रायेणात्र विजृम्भते भरत-शास्त्राम्भोजिनी सन्ततं ॥१६॥

तत्सधर्म्मर् ॥

चन्द्र इव धवल-कीर्त्तिर्द्धवलीकुरुते समस्त-भुवनं यस्य ।
त**च्चन्द्रकीर्त्ति**सञ्ज्ञ-भट्टारक-चक्रवर्त्तिनोऽस्य विभाति ।१७।

तत्सधर्म्मर् ॥

नैयायिकेभ-सिंहो **मी**मांसकतिमिर-निकरनिरसन-तपन.
बौद्ध-वन-दाव-दहनोजयतिमहानु**दयचन्द्र**पण्डितदेव. ।१८।
सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती श्री**गुणचन्द्र**व्रतीश्वरस्यं बभूव
श्री**नयकीर्त्ति**-मुनीन्द्रो जिनपति-गदिताखिलार्थवेदी शिष्यः
॥१९॥

स्वस्त्यनवरत-विनत-महिप-मुकुट-मौक्तिक-मयूख-माला-सरो-मण्डनीभूत-चारुचरणारविन्दरुं। भव्यजन-हृदयानन्दरुं। कोण्डकुन्दान्वय-गगन-मार्त्तण्डरुं। लीला-मात्र-विजिताखण्ड-कुसुमकाण्डरुं। देशीय-गण-गजेन्द्र-सान्द्र-मद-धारावभासरुं। वितरणविलासरुं। पुस्तकगच्छस्वच्छ-सरसी-सरोजरुं। वन्दि-जनसुरभूजरुं। श्रीमद्गुणचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति-चारुतर-चरण सरसीरुह-षट्चरणरुं। अशेष-दोषदूरीकरणपरिणतान्तःकरण-रुमप्प श्रीमन्नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति गले-न्तप्परेन्दडे ॥

साहित्य-प्रमदा-मुखाब्जमुकुरश्चारित्र-चूडामणि
श्रीजैनागम-वार्द्धि-वर्द्धन-सुधाशोचिस्समुद्भासतं।
यश्शल्य-त्रय-गारव-त्रय-लसद्दण्ड-त्रय-ध्वंसक —
स्म श्रीमान्नयकीर्त्ति देवमुनिपस्सैद्धान्तिकाग्रेसरः ॥२०॥

माणिक्यनन्दिमुनिप श्रीनयकीर्त्तिव्रतीश्वरस्य सधर्म्मः।
गुणचन्द्रदेवतनयो राद्धान्त-पयोधि-पारगो-भुवि भाति॥२१॥

हार-क्षीर-हराट्टहास-हलभृत्कुन्देन्दु-मन्दाकिनी—
कर्पूर-स्फटिक-स्फुरद्धरयशो-धौतत्रिलोकोदरः।
उच्चण्ड-स्मर-भूरि-भूधरपविःख्यातो बभूवक्षितौ
सश्रीमान्नयकीर्त्ति देवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥२२॥

शाके रन्ध्रनवद्युचन्द्रमसि दुर्म्मुख्याच*संवत्सरे
वैशाखेधवले चतुर्द्दशदिने वारे च सूर्य्यात्मजे।
पूर्व्वाह्णे प्रहरेगतेऽर्द्धसहिते स्वर्गं जगामात्मवान्

---

* स्य

विख्यातो **नयकीर्त्ति**-देव-मुनिपो राद्धान्त-चक्राधिपः ॥२३॥

श्रीमज्जैन-वचोब्धि-वर्द्धन-विधुस्साहित्यविद्यानिधिस्

(पश्चिम मुख)

सर्प्पद्दर्प्पक-हस्ति-मस्तक-लुठत्प्रोत्कण्ठ-कण्ठीरवः ।

स श्रीमान् **गुणचन्द्र**देवतनयस्मौजन्यजन्यावनि

स्थेयात् श्री**नयकीर्त्ति** देवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥२४॥

गुरुवादं खचराधिपङ्गे बलिगं दानक्के विण्पिङ्गे तां

गुरुवादं सुर-भूधरक्के नेगल्दा कैलास-शैलक्के तां ।

गुरुवादं विनुतङ्गे राजिसुविरुङ्गोलङ्गे लोकक्के सद्

गुरुवादं **नयकीर्त्ति**देवमुनिपं राद्धान्त-चक्राधिपं ॥२५॥

तच्छिष्यर् ॥

हिमकर-शरदभ्र-चीर-कल्लोल-जाल-स्फटिक-सित-यश-श्री-

शुभ्र-दिक्-चक्रवालः ।

मदन-मद-तिमिस्र-श्रेणितीव्रांशुमाली जयति निखिल-वन्द्यो

मेघचन्द्र-व्रतीन्द्रः ॥२६॥

तत्सधर्म्मर् ॥

कन्दर्प्पाहवकपातोद्धुरतनुत्राणोपमोरस्थली

चञ्चद्भूरमला विनेय-जनता-नीरेजिनी-भानवः ।

त्यक्ताशेष-बहिर्व्विकल्प-निचयाश्चारित्र-चक्रेश्वर.

शुम्भन्त्यण्णितटाक-वासि-**मलधारि**-स्वामिनो भूतले ॥२७॥

तत्सधर्म्मर् ॥

षट्-कर्म्म-विषय-मन्त्रे नानाविध-रोग-हारि-वैद्ये च ।

जगदेकसूरिरपि श्रीधरदेवो बभूव जगति प्रवणः ॥२८॥

तत्सधर्म्मर् ॥

नर्क व्याकरणागम-साहित्य-प्रभृति-सकल-शास्त्रार्थज्ञः ।
विख्यात-दामनन्दि-त्रैविद्य-मुनीश्वरो धरामे जयति ॥२९॥
श्रीमज्जैनमताब्जिनीदिनकरो नैय्यायिकाम्भानिल
श्चार्व्वाकावनिभृत्करालकुलिशो बौद्धाब्धिकुम्भोद्भवः ।
योमीमांसकगन्धसिन्धुरशिरोनिर्भेदकण्ठीरव—
स्त्रैविद्योत्तमदामनन्दिमुनिपस्सोऽयं भुविभ्राजते ॥३०॥

तत्सधर्म्मर् ॥

दुग्धाब्धि-स्फटिकेन्दु-कुन्द-कुमुद-व्याभासि-कीर्त्तिप्रिय-
स्सिद्धान्तोदधि-वर्द्धनामृतकर-पारात्थ्यै-रत्नाकरः ।
ख्यात-श्री-नयकीर्त्तिदेवमुनिपश्रीपाद-पद्म-प्रियो ।
भात्यस्यांभुवि भानुकीर्त्ति-मुनिपस्सिद्धान्तचक्राधिपः ॥३१॥
उरगेन्द्र-चीर-नीराकर-रजत-गिरि-श्रीसितच्छत्र-गङ्गा—
हरहासैरावतेभ-स्फटिक-वृषभ-शुभ्राभ्रनीहार-हार—।
मर-राज-श्वेत-पङ्केरुह-हलधर-वाक्-शङ्ख-हंसेन्दु-कुन्दो-
त्करचञ्चत्कीर्त्तिकान्तं धरेयोळ्सेसेदनी भानुकीर्त्ति-व्रतीन्द्रं

तत्सधर्म्मर् ॥ ॥३२॥

सद्वृत्ताकृति-शोभिताखिलकला-पूर्ण्णं स्मर-ध्वंसकः
शश्वद्विश्व-वियोगि-हृत्सुखकर-श्रीबालचन्द्रो मुनिः ।
वक्रेणान-कलेन-काम-सुहृदा चञ्चद्वियोगिद्विषा
लोकेस्मिन्नुपमीयते कथमसौ तेनाथ बालेन्दुना ॥३३॥

उच्चण्ड-मदन-मद-गज-निर्भेदन-पटुतर-प्रताप-मृगेन्द्रः ।
भव्य-कुमुदौघ-विकसन-चन्द्रो भुवि भाति **बालचन्द्र**-मुनीन्द्र.
॥३४॥

ताराद्रि-चीर-पूर-स्फटिक-सुर-सरित्तारहारेन्दु-कुन्द—
श्वेताद्यत्कीर्त्ति-लक्ष्मी-**प्रसर**-धवलिताशेषदिक्-चक्रवालः ।
श्रीमत्सिद्धान्त-चक्रेश्वर-नुत-**नयकीर्त्ति**-व्रतीशाङ्घ्रि-भक्तः

(उत्तर मुख)

श्रीमान्भट्टारकेशो जगति विजयते मेघचन्द्र-व्रतीन्द्रः ॥३५॥
गाम्भीर्य्ये मकराकरो वितरणे कल्पद्रुमस्तेजसि
प्रोच्चण्ड-द्युमणिः कलास्वपि शशी धैर्य्ये पुनर्मन्दरः ।
सर्व्वोर्व्वी-परिपूर्ण-निर्म्मल-यशो-लक्ष्मी-मनो-रञ्जनो
भात्यस्यां भुवि **माघनन्दि**मुनिपो भट्टारकाग्रेसरः ॥३६॥
वसुपूर्णसमस्ताशःक्षितिचक्रे विराजते ।
चञ्चत्कुवलयानन्द-**प्रभाचन्द्रो**मुनीश्वरः ॥३७॥

तत्सधर्म्मर् ॥

उच्चण्डग्रहकोटयो नियमितास्तिष्ठन्ति येन क्षितौ
यद्वाग्जातसुधारसोऽखिलविषव्युच्छेदकश्शोभते ।
यत्तन्त्रोद्धविधिःसमस्तजनतारोग्याय संवर्त्तते
सोऽयं शुम्भति **पद्मनन्दि**मुनिनाथो मन्त्रवादीश्वरः ॥३८॥

तत्सधर्म्मर् ॥

चञ्चच्चन्द्र-मरीचि-शारद-घन-क्षीराब्धि-ताराचल—
प्रोद्यत्कीर्त्ति-विकास-पाण्डुर-तर-ब्रह्माण्ड-भाण्डोदरः ।

वाक्कान्ता-कठिन-स्तन-द्वय-तटी-हारो गभीरस्थिर'
सोऽयं सन्नुत-**नेमिचन्द्र**-मुनिपो विभ्राजते भूतले ॥३९॥
भण्डाराधिकृत-समस्त-सचिवाधीशो जगद्विश्रुत—
श्रीहुल्लो **नयकीर्त्ति**-देव-मुनि-पादाम्भोज-युग्मप्रियः।
कीर्त्ति-श्री-निलयः परार्थ्य-चरितो नित्यं विभाति क्षितौ
सोऽयं श्रीजिनधर्म्म-रक्षणकरः सम्यक्त्व-रत्नाकरः ॥४०॥
श्रीमच्छ्रीकरणाधिपस्सचिवनाथो विश्व-विद्वन्निधि-
श्चातुर्व्वर्ण्ण-महान्नदान-करणोत्साही क्षितौ शोभते।
श्री**नीलो** जिन-धर्म्म-निर्म्मल-मनास्साहित्य-विद्याप्रिय-
स्सौजन्यैक-निधिश्शशाङ्क-विशद-प्रोद्यद्यश-श्रीपतिः ॥४१॥
आराध्यो जिनपो गुरुश्च **नयकीर्त्ति**-ख्यात-योगीश्वरो
जोगाम्बा जननी तु यस्य जनकः ( ) श्री**बम्मदेवो** विभुः।
श्रीमत्कामलता-सुता पुरपति श्री **मल्लिनाथ**स्सुतो
भात्यस्या भुवि **नागदेव**-सचिवश्चण्डाम्बिकावल्लभः ॥४२॥
सुर-गज-शरदिन्दु-प्रस्फुरत्कीर्त्ति-शुभ्री
भवदखिल-दिगन्तो वाग्वधू-चित्तकान्तः।
बुध-निधि-**नयकीर्त्ति**-ख्यात-योगीन्द्र-पादा—
म्बुज-युगकृत-सेवः शोभते **नागदेवः** ॥४३॥
ख्यातश्री**नयकीर्त्ति**देवमुनिनाथानां पयःप्रोल्लस-
त्कीर्त्तीनां परमं परोक्ष-विनयं कर्त्तुं निषध्यालयं।
भक्त्याकारयदाशशाङ्क-दिनकृत्तारं स्थिरं स्थायिनं
श्री**नाग**स्सचिवोत्तमो निजयशश्शुभ्र-दिग्मण्डलः ॥४४॥

[इस लेख में नागदेव मंत्री द्वारा अपने गुरु श्री नयकीर्त्ति योगीन्द्र की निषद्या निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। नयकीर्त्तिमुनि का स्वर्गवास शक सं० १०९९ वैशाख शुक्ल १४ को हुआ था। मुनि की विस्तार-सहित वर्णन की हुई गुरु-परम्परा में निम्नलिखित आचार्यों का उल्लेख आया है। पद्मनन्दि अपर नाम कुन्दकुन्द, उमास्वाति गृद्धपिच्छ, बलाकपिच्छ, गुणनन्दि, देवेन्द्र सैद्धान्तिक, कलधौतनन्दि, रविचन्द्र अपर नाम सम्पूर्णचन्द्र, दामनन्दिमुनि, श्रीधरदेव, मलधारिदेव, श्रीधरदेव, माघनन्दि मुनि, गुणचन्द्रमुनि, मेघचन्द्र, चन्द्रकीर्त्ति भट्टारक और उदयचन्द्र पण्डितदेव। नयकीर्त्ति गुणचन्द्रमुनि के शिष्य थे और उनके सधर्म गुणचन्द्र मुनि के पुत्र माणिक्यनन्दि थे। उनकी शिष्य-मण्डली में मेघचन्द्र व्रतीन्द्र, मलधारिस्वामी, श्रीधरदेव, दामनन्दि त्रैविद्य, भानुकीर्त्ति मुनि, बालचन्द्र मुनि, माघनन्दि मुनि, प्रभाचन्द्र मुनि, पद्मनन्दि मुनि और नेमिचन्द्र मुनि थे।]

४३ (११७)

चामुण्डराय वस्ति के दक्षिण की ओर मण्डप में प्रथम स्तम्भ पर

(शक सं० १०४५)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परम गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥१॥
श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल-जिनवरानीकसौधोरु-वार्द्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु-वेदिः।
शस्तस्यात्कार-मुद्रा-शबलित-जनतानन्द-नादोरुघोष-
स्थेयादाचन्द्रतारं परम-सुख-महा-वीर्य्य-वीची-निकायः ॥२॥

श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्न-वर्गाश्श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते।
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ नन्दिगणे बभूव ॥३॥
श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामा ह्याचार्य्यशब्दोत्तरकोण्ड-
कुन्दः।
द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥४॥
अभूदुमास्वातिमुनीश्वरोऽसावाचार्य्यशब्दोत्तरगृद्ध्र
पिञ्छः।
तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्थवेदी ॥५॥
श्रीगृद्ध्रपिञ्छ-मुनिपस्य बलाकपिञ्छश्शिष्योऽजनिष्टभुवन-
त्रयवर्त्तिकीर्त्तिः।
चारित्रचुञ्चुरखिलावनिपालमौलिमाला-शिलीमुख-विरा-
जित-पाद-पद्मः ॥६॥
तच्छिष्यो गुणनन्दिपण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वरः
तर्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापतिः।
मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुर-घटा-सङ्घट्ट-कण्ठीरवो
भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्प्प-दर्प्पापहः ॥७॥
तच्छिष्यास्त्रिशता विवेकनिधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता-
स्तेषूत्कृष्टतमाद्विसप्ततिमिता. सिद्धान्तशास्त्रार्थक-
व्याख्यानेपटवो विचित्र-चरितास्तेषु प्रसिद्धोमुनि
नानानूननयप्रमाणनिपुणोदेवेन्द्रसैद्धान्तिकः ॥७॥
अजनिमहिप-चूडा-रत्न-राराजिताङ्घ्रिर्व्विजितमकरकेतूद्द
ण्डदोर्दण्डगर्व्वः।

कुनयनिकरभूभ्रानीकदम्भोलिदण्डःसजयतु विबुधेन्द्रो
भारती-भालपट्टः ॥९॥

(दक्षिणमुख)

तच्छिष्यः**कलधौतनन्दि**मुनिपः सैद्धान्तचक्रेश्वरः
पारावारपरीतधारिणि-कुल-व्याप्तोरुकीर्त्तीश्वरः।
पञ्चाचोन्मदकुम्भि-कुम्भ-दलन-प्रोन्मुक्त-मुक्ताफल—
प्रांशुप्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनीवल्लभः ॥१०॥
अवर्गे **रविचन्द्र**सिद्धा—
न्तविदर्सम्पूर्णचन्द्र-सिद्धान्त-मुनि-।
प्रवररवरवर्गेशिष्य—
प्रवरश्री**दामनन्दि**-सन्मुनि-पतिगलु ॥११॥
बोधितभव्यरस्तमदनम्र्मद-नज्जित-शुद्ध-मानसर्
श्रीधरदेवरेम्बरवर्गप्रतनूभवरादरायशस्
श्रीधरगोद शिष्यरवरोल् नेगल्दम्म्मे**लधारि**-देवरं।
श्रीधरदेवरुंनतनरेन्द्र-किरीट-तटाच्चिंत-क्रमर् ॥१२॥
मलधारिदेवरिन्दं
बेलगिदुदु जिनेन्द्रशासनं मुन्नलि—
म्मेलमागिमत्तमीगल्
बेलगिदपुदु **चन्द्रकीर्त्ति**भट्टारकरि ॥१३॥
अवर शिष्यर् ॥
परमाप्ताखिल-शास्त्र-तत्वनिलय सिद्धान्त-चूडामणि
स्फुरिताचारपरं विनेयजनतानन्दं गुणानीकसु—

न्दरनेम्बुन्नतियिं समस्त-भुवन-प्रस्तुत्यनाद **दिवा—**
करणन्दि-व्रतिनाथनुज्वलयशो विभ्राजिताशातटं ॥१४॥
विदितव्याकरणद तर्कद सिद्धान्तद विशेषदि त्रैविद्या—
स्पदरेन्दी-धरेवण्णिपुदु **दिवाकरणन्दिदेव**सिद्धान्तिगरं।१५।
वरराद्धान्तिकचक्रवर्त्ति दुरितप्रध्वंसि कन्दर्पसि—
न्धुरसिंहं वर-शील-सद्गुण-महाम्भोराशि पङ्कजपु-
ष्कर-देवेभ-शशाङ्क-सन्निभ-यश-श्री-रूपनो हो**दिवा**-
करणन्दिव्रतिनिर्म्मदं निरुपमं भूपेन्द्रवृन्दार्च्चितं ॥१६॥

(पश्चिममुख)

वर-भव्यानन-पद्ममुल्ललरलज्ञानीकनेत्रोत्पलं
कोरगल्पापतमस्तमं परयलेत्त जैनमार्गामला—
म्बरमत्युज्वलमागले बेलगितोभूभागमं श्री**दिवा—**
करणन्दिव्रतिवाक्दिवाकरकराकारम्बोलुर्व्वीनुत ॥१७॥
यद्वक्तृचन्द्रविलसद्वचनामृताम्भःपानेनतुष्यतिविनेयचको
रवृन्द. ।
जैनेन्द्रशासनसरोवरराजहंसो जीयादसौभुवि**दिवाकरण**-
न्दिदेवः ॥१८॥

अवर शिष्यरु ॥

गण्डविमुक्तदेव-मलधारि-मुनीन्द्ररपादपद्ममं
कण्डोडसाध्यमें नेनेद भव्यजनक्रमकोण्डचण्ड —
दण्ड-विरोधि-दण्ड-नृप-दण्ड-रतत्पृथु-वज्रदण्ड-को—
दण्ड-कराल-दण्डधर-दण्डभयं-पेरपिङ्गि-पोगवे ॥१९॥

वलयुतरं बलल्चुव लतान्तशरङ्गिदिरागिवागिस
च्चलिसे पलभ्चि तूल्दवननोडिसिमेय् वगेयाद दूसरिं ।
कलेयदे निन्द कव्वुंनद कगिंद सिप्पिनमक्के-वेत्त क —
त्तलमेनिसित्तु पुत्तडहंमेय्य मलं मलधारि-देवरं ॥२०॥
मरेदुमदोम्मे लैाकिकद वार्त्तेयनाडद केत्त बागिलं
तेरेयद भानुवस्तमितमागिरे पोगद मेय्यनोम्मेयुं ।
तुरिसद कुक्कुटासनके सोलद गण्डविमुक्तवृत्तियं
मरेयद घोर-दुश्चर-तपश्चरितं मलधारिदेवर ॥२१॥

आ-चारित्र-चक्रवर्त्ति गल शिष्यरु ॥

पञ्चेन्द्रिय-प्रथित-सामज-कुम्भपीठ-निर्ल्लोट-लम्पट-महोग्र-
समग्र-सिंहः ।
सिद्धान्त-वारिनिधि-पूर्ण्ण-निशाधिनाथो वाभाति भूरिभुवने
शुभचन्द्रदेवः ॥२२॥

शुभ्राभ्राभसुरद्विपामरसरित्तारापतिस्प्रस्फुट—
ज्योत्स्ना-कुन्द-शशाङ्क-कम्बु-कमलाभाशा-तरङ्गोत्कर. ।
प्रख्य-प्रज्वल-कीर्त्तिमन्वहमिमां गायन्ति देवाङ्गना
दिकन्याः शुभचन्द्रदेव भवतश्चारित्रभूंभामिनि ॥२३॥

शुभचन्द्रमुनीन्द्रयश
स्प्रमेयोल् सरियागलारदिन्तीं चन्द्रं ।
प्रभुतेगिदे कन्दि कुन्दिद—
नभव-शिरोमणिगदेकं कन्दुं कुन्दुं ॥२४॥

एत्तलु विजयङ्गय्वद—

मत्तज़ं धर्म्मप्रभावमधिकोत्सवदि ।

• वित्तरिपुदेनलं पेल्वरे

मत्तिनवरु श्रीशुभेन्दुसैद्धान्तिगर ॥२४॥

कन्तुमदापहर्स्सकल-जीव दयापर-जैन-मार्ग्ग-रा—

द्धान्त-पयोधिगलू विषयवैरिगलुद्धत-कर्म्म-भञ्जनर् ।

स्मन्तत-भव्य पद्म-दिनकृत्प्रभरं शुभचन्द्र-देव-सि—

द्धान्तमुनीन्द्ररं पोगल्वुदम्बुधि-वेष्टित-भूरि-भूतलं ॥२५॥

(उत्तरमुख)

ख्यातश्रीमलधारिदेवयमिनश्शिष्योत्तमे स्वर्गते

हा हा श्री शुभचन्द्रदेवयतिपे सिद्धान्तचूडामणै ।

लोकानुग्रहकारिणि चितिनुतं कन्दर्प्पदर्प्पान्तकं

चारित्रोज्वलदीपिका प्रतिहता वात्सल्यवल्ली गता ॥२६॥

शुभचन्द्रे महस्मान्द्रेऽन्विक्रिते काल-राहुणा ।

सान्धकारं जगज्जातं जायतेत्थेति नाद्भुत ॥२७॥

वाणाम्भोधिनभश्शशाङ्कतुलितेजाते शकाब्दे

ततो वर्षे शोभकृताह्वये व्युपनते मासे पुन श्रावणे ।

पक्षे कृष्णविपक्षवर्त्ति नि सिते वारे दशम्यां तिथैा

स्वर्यातः शुभचन्द्रदेवगणभृत्सिद्धान्तवाराम्निधिः ॥२८॥

श्रीमद्वरगुड्ं ॥

समधिगतपञ्चमहाशब्दमहासामन्ताधिपतिमहाप्रचण्डदण्ड

नायक । वैरिभयदायक । गोत्रपवित्र । बुधजनमित्र । स्वामिद्रोहगोधूमघरट्ट । सङ्ग्रामजत्तुट्ट । विष्णुवर्द्धन-पोयसल

महाराजराज्यसमुद्धरणकलिगलाभरणश्रीजैनधर्म्मामृताम्बुधिप्रवर्द्ध-न-सुधाकर-सम्यक्त—रत्नाकराद्यनेकनामावलीसमालङ्कृतरप्पश्रीमन्महाप्रधानदण्डनायकगङ्गराजं तम्म गुरुगल् श्रीमूलसङ्घददेसियगणद पुस्तकगच्छद **शुभचन्द्र** सिद्धान्तदेवर्गे परोक्षविनयक्के निसिधिगेय निलिसि महापूजेयं माडि महादानमं गेय्दरु ॥ आमहानुभावनत्तिगे ॥ **शुभचन्द्र**सिद्धान्तदेवर गुड्डि ॥

वरजिनपूजेयनत्या—
दरदिन्दं जक्कणब्बे माडिसुवल्लुस—।
च्चरिते गुणान्विते ये—
न्दी धरणीतल मेच्चि पोगल्लुतिप्पुंदु निच्चं ॥२९॥
देरेये जक्कणिकब्बेगी भुवनदोल् चारित्रदोल् शीलदोल्
परमश्रीजिनपूजेयोल् सकलदानाश्चर्य्यदोल् सत्यदोल् ।
गुरुपादाम्बुजभक्तियोल् विनयदोल् भव्यर्कलं कन्ददा—
दरदिं मन्निसुतिप्पे पेम्पिनेडेयोल् मत्तन्यकान्ताजनम् ॥ ३०॥
श्रीमत्**प्रभाचन्द्र** सिद्धान्तदेवर गुड्ड हेग्गडेमर्द्दिमय्यंबरेदं ॥
विरुदरूवारिमुखतिलकं **बर्द्धमानाचारि** खंडरिसिद
मङ्गल महा ॥ श्री श्री ॥

[इस लेख में पोय्सल महाराज गङ्गनरेश विष्णुवर्द्धन द्वारा उनके गुरु शुभचन्द्र देव की निषद्या निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। शुभचन्द्र देव का स्वर्गारोहण शक सं० १०४५, श्रावण कृष्ण १० को हुआ था। इनके गुरु परम्परा-वर्णन में मलिधारिदेव और श्रीधरदेव के उल्लेख तक के प्रथम ग्यारह श्लोक वे ही है जो उपर्युक्त शिलालेख नं० ४२ (६६) के हैं। इसके पश्चात् चन्द्रकीर्त्ति भट्टारक, दिवाकरनन्दि,

गण्डविमुक्तदेव मलधारि मुनीन्द्र और शुभचन्द्र देव का उल्लेख है। लेख में विष्णुवर्द्धन नरेश की भावज जवकणब्बे की जैन धर्म में भारी श्रद्धा का भी उल्लेख है। यह लेख प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य हेग्गडे मर्डिमय्य द्वारा रचित और वर्द्धमानाचारि द्वारा उत्कीर्ण है।]

४५ (११८)

उसी मण्डप में द्वितीय स्तम्भ पर

(शक सं० १०४३)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात् त्रैलोक्य नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥१॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥

नमस्सिद्धेभ्यः ॥

जनताधारनुदारनन्यवनितादूरं वचस्सुन्दरी
वनवृत्तस्तनहारनुभरणधीरं मारनेनेन्दपै।
जनकं तानने माकणब्बे विबुधप्रख्यातधर्म्मप्रयु-
क्के निकामात्त-चरित्रे तायंनलिदेनेचं महाधन्यनो ॥३॥

कन्द ॥ वित्रस्तमलं बुधजनमित्रं
द्विजकुलपवित्रनेचं जगदोलु।
पात्रं रिपुकुलकन्दखनित्रं
कौशिडन्य गोत्रनमलचरित्र ॥४॥

वृ [त्त] ॥ परमजिनेश्वरं तनगेदेय्वमलुर्कोयिनोल्पु-वेत्त सु-
स्फुरदुरितचयकंनकनन्दिमुनीश्वररुत्तमोत्तम—

गुरुगलुदात्तवित्तनवदात्तयशं नृपकामवोय्सलं
पेरेद महीशनेन्दोडेले वण्णिपरार्नेगल्देचिगाङ्कन ॥५॥

कं [द] ॥ मनुचरितनेचिगाङ्कन
मनेयोल् मुनिजनसमूहमुं बुधजनमुं ।
जिनपूजने जिनवन्दने
जिनमहिमेगलावकालमुं शोभिसुगुं ॥६॥

आमहानुभावनर्द्धाङ्गियेन्तप्पलेन्दोडे ।
उत्तम-गुण-ततिवनिता—
वृत्तियनोलकोण्डुदेन्दु जगमेल्लं क—।
य्येत्तुविनममलगुणस—
म्पत्तिगे जगदोलगे पोचिकब्वेये नान्तलु ॥७॥
तनुवं जिनपतिनुतियि ।
धनमं मुनिजनदतृप्तियि सफलमिदि—
न्ननगेम्बी नम्बुगेयोल्
मनमं जगदोलगे पोचिकब्वेयेनिरिपलु ॥८॥
जन विनुतनेचिगाङ्कन—
मनस्सरोहँसि गङ्गराजचमूना—
थन जननि जननि भुवन—
क्केने नेगल्दल् पोचिकब्वे गुणदुन्नतियि ॥९॥
एनिसिद पोचाम्बिके परि—
जनमुं बुधजनमु मोम्मेंगोम्में मनन्त—
ण्णाले तणिदु परसे पुण्यम—

[न] नन्तमं नेरपि परपि जसमंजगदोलु ॥१०॥

व [चन] ॥ इन्तेनिसिदापोचाम्बिके बेल्गोलद तीर्थं मोदलागनेकतीर्थगलोलु पलवुं चैत्यालयङ्गल माडिसि महादान गेय्दु ॥

वृ [त्त] ॥ अदनिन्नेनेम्बेनानोन्दमलद सुकृतमं नोड रोमाञ्च माद—

प्पुदु पेल्वुद्योगदिन्दं स्मरियिपदेनमो वीतरागाय गार्ह-
स्थ्यद योपिद् भावदी कालद परिणतियिं गेय्दु सल्लेखनास-
म्पददिन्दं देविपोचाम्बिके सुरपदमं लीलेयिं सूरेगोण्डल् ॥११॥

सकवर्ष १०४३ नेय सार्व्वरि संवत्सरदाषाढ़ सुद्ध ५ सोमवारदन्दु सन्यसनमं कैकोण्डु एकपार्श्वनियमदिं पञ्चपदमनुच्चारिसुत्त देवलोकक्के सन्दलु ॥ आ जगज्जननियपुत्रं ॥ समधिगतपञ्चमहाशब्द महासामन्ताधिपति महाप्रचण्डदण्डनायकं । वैरिभयदायकं । गोत्रपवित्रं । वुधजनमित्र । श्रीजैनधर्म्मामृताम्बुधिप्रवर्द्धनसुधाकरं । सम्यक्त्वरत्नाकरं । आहाराभयभैषज्य-शास्त्रदानविनोद । भव्यजनहृदयप्रमोद । **विष्णुवर्द्धन** भूपालहोय्सलमहाराजराज्याभिषेकपूर्ण्णकुम्भ । धर्म्महर्म्योद्धरणमूलस्तम्भ । नुडिदन्तेगण्डपगेवरं वेङ्कोण्ड । द्रोहघरट्टाद्यनेक नामावलीसमालङ्कृतनप्प श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं गङ्गराजं तन्नात्माम्बिके पोचलदेवियरु दिवक्के सललु परोक्षविनयक्केन्दी निसिधिगेय निलिसि प्रतिष्ठे गेय्दु महादानपूजार्च्चनाभिषेकङ्गलं माडिद मङ्गलमहा श्री श्री ॥

श्री प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवगुड्डं पेर्गडे चावराजं बरेदं ॥
रूवारिहोय्सलाचारियमगं वर्द्धमानाचारि बिरुदरूवारि-
मुखतिलकं कण्डरिसिद ॥

[इस लेख में 'मार' और 'माकणब्बे' के सुपुत्र 'एचि' व 'एचिगाङ्क' की भार्या 'पोचिकब्बे' की धर्मपरायणता और अन्त में संन्यास-विधि से स्वर्गारोहण का उल्लेख है । पोचिकब्बे ने अनेक धार्मिक कार्य किये । उन्होंने बेल्गोल में अनेक मन्दिर बनवाये । शक सं० १०४३, आषाढ़ सुदि ५ सोमवार को इस धर्मवती महिला का स्वर्गवास हो जाने पर उसके प्रतापी पुत्र महासामान्ताधिपति, महाप्रचण्ड दण्डनायक, विष्णुवर्द्धन महाराज के मंत्री गङ्गराज ने अपनी माता की स्मारक यह निषद्या निर्माण कराई ।

यह लेख प्रभाचन्द्र सिद्धान्त देव के गृहस्थ शिष्य चावराज का रचा हुआ और होय्सलाचारि के पुत्र वर्धमानाचारि द्वारा उत्कीर्ण है]

४५ (१२५)

एरडु कट्टे वस्ति के पश्चिम की ओर एक पाषाण पर ।

(लगभग शक सं० १०४०)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसे ॥ २ ॥
स्वस्ति 'समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर द्वारवतीपुर वराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलपरोल्

गण्डाद्यनेकनामावली-समालङ्कृतरप्प श्रीमन्महामण्डलेश्वरं **त्रिभुवनमल्ल** तलकाडुगोण्ड भुज-बलवीर-गङ्ग **विष्णुवर्द्धन** होय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा चन्द्रार्क्कतारं मलुत्तंइरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ जनताधारनुदारनन्यवनितादूर वचस्सुन्दरी-
धनवृत्त-स्तन-हारनुग्ररणधीर मारनेनेन्दपै ।
जनकं तानेने **माकणब्बे** विबुधप्रख्यातधर्म्मप्रयु-
क्ते निकामात्तचरित्रे तायेनलिदेनेचं महाधन्यनो ॥ ३ ॥

कन्द ॥ वित्रस्तमलं बुधजन—
मित्र द्विजकुलपवित्रनेचम् जगदोलु ।
पात्रमृरिपुकुलकन्दखनित्रं
कौण्डिन्यगोत्रन मलचरित्र ॥ ४ ॥
मनुचरितनेचिगाङ्कन
मनेयोलुमुनिजनसमूहमुं बुधजनमुं ।
जिनपूजनेजिनवन्दने
जिनमहिमेगलाव कालमुं शोभिसुगुं ॥ ५ ॥
उत्तमगुणवतिवनिता-
वृत्तियनोलकोण्डुदेन्दु जगमेल्लं कै-
य्येत्तुविनममलगुणस-
म्पत्तिगे जगदोलगे पोचिकब्बेयेनोन्तलु ॥ ६ ॥

म्मन्तेनिसिदेचिराजन पोचिकब्बेय पुत्रनखिल-तीर्थकर-परम-देव-परम-चरिताकर्ण्णनोदीर्ण्ण-विपुल-पुलक-परिकलित वार

बाणनुवसम-समर-रस-रसिक-रिपु-नृप-कलापावलेप-लोप-लोलुप-कृपाणनुवाहाराभय-भैषज्य-शास्त्रदान-विनोदनुं सकल - लोक-शोकापनोदनुं ॥

वृत्त ॥ वज्रं वज्रभृतो हलं हलभृतश्चक्रं तथा चक्रिण
    श्शक्तिश्शक्तिधरस्य गाण्डिवधनुर्गाण्डीव-कोदण्डिनः ।
    यस्तद्वत् वितनोति विष्णुनृपतेष्कार्य्यं कथं मादृशै-
    र्गङ्गो गाङ्ग-तरङ्गरञ्जित-यशो-राशिस्सवर्ण्णो भवेत् ॥ ७ ॥

इन्तेनिप श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं द्रोहघरट्टगङ्गराजं चालुक्यचक्रवर्त्ति त्रिभुवनमल्ल पेर्म्माडिदेवनदलं पन्निर्व्वर्-स्सामन्तर्व्वेरसुकण्णेगालबीडिनलुविट्टिरे ॥

कन्द ॥ तेगेवारुवमं हारुव
    वगेयं तनगिरुल बवरवेनुत सवङ्गं ।
    बुगुवकटकिगरनलिरं
    पुगिसिदुदु भुजासि गङ्गदण्डाधिपन ॥ ८ ॥

वचन ॥ एम्बिनमवस्कन्दकेलियिन्दमनिवरुं सामन्तरुमं भङ्गिसि
    तदीयवस्तु-वाहनसमूहमं निजस्वामिगे तन्दु कोट्टुनिज-
    भुजावष्टम्भकेमेच्चि मेच्चिदें बेडिकोल्लेने ॥

कन्द । परमप्रसादमं पडेदु
    राज्यमं धनमनेनुमं बेडदन-
    स्वरमागे बेडिकोण्डं
    परमननिदनर्हदर्च्चनार्च्चितचित्त ॥ ९ ॥

अन्तुबेडिकोण्डु ॥

वृत्त ॥ पसरिसेकीर्त्तनं जननिपोचल-देवियरस्थिवट्ट मा-
डिसिदजिनालयकमोसेदात्म-मनोरमे लचिदेविमा-।
डिसिद जिनालयकमिदुपूजनेयोजितमेन्दुकोट्टुस-
न्तोममनजन्त्रमाम्पनेनेगङ्गचमूपनिदेनुदात्तनो ॥ १० ॥

अक्कर ॥ आदियागिर्प्पुदार्हत-समयके मूलसङ्घं कोण्डकुन्दान्वयं
वादुवेडदं वलयिपुदलिय देसिगगणद पुस्तकगच्छद ।
वाघ-विभवद कुक्कुटासनमलधारिदेवर शिष्यरेनिप पेम्पिङ्ग
आदमंसेदिर्प्पशुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवरगुरुंगङ्ग-चमूपति ११।
गङ्गवाडिय बसदिगलेनितोलवनितुमन्तानेव्दे पोसयिसिदं
गङ्गवाडिय गोम्मटदेवर्गे सुत्तालयमनेव्दे माडिसिदं ।
गङ्गवाडिय तिगुलरं वेङ्कोण्डु वीरगङ्गङ्गे निमिर्च्चिकोट्ट
गङ्गराजना मुन्निन गङ्गररायङ्गं नूर्मडियन्यनल्ते ॥ १२ ॥

[यह लेख शिलालेख नं० ५६ (७३) के प्रथम पैंतीस पद्यों का उद्धरण मात्र है। देखो नं० ५९]

४६ (१२६)

एरडु कट्टे वस्तिके पश्चिम की ओर मण्डप में पहले स्तम्भ पर

(शक सं० १०३७)

(उत्तरमुख)

भद्रमस्तु जिनशासनस्य ॥

जयतु दुरितदूरः क्षीरकूपारहारः
प्रथितपृथुलकीर्तिर्ग श्री शुभेन्द्रव्रतीशः ।

गुणमणिगणसिंधु शिशष्टलोकैकबन्धुः
विबुधमधुपफुल्ल. फुल्लबाणादिसल्लः ॥१ ॥
श्रीवधुचन्द्रलेखं सुरभूरुहदुद्भवदिं पयोधिवे-
लावधु पेम्पुवेत्तवोल निन्दिते नागले चारुरूपली- ।
लावति दण्डनायकिति लक्कलेदेमति बूचिराजनं-
म्बीविभु पुट्टे पेम्पु वडेदाज्जिंसिदलु पिरिदप्प कीर्त्तिय ॥ २ ॥
श्रावयव्वेय मगनेन्तप्पनेन्दडे ॥

स्वस्ति समस्तभुवनभवनविख्यातख्यातिकान्तानिकामकमनीयमुखकमलपरागपरभागसुभगीकृतात्मीयवक्त्रनुं । स्वकीयकायकान्तिपरिहसितकुसुमचापगात्रनुं । आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोदनुं । सकललोकशोकामनोदनुं । निखिलगुणगणाभरणनुं । जिनचरणशरणनुमेनिसिद बूचणं ।

वृत्त ॥ विनयद सीमे सत्यद तवर्म्मने शौचद जन्मभूमि ये—
न्दनवरतं पोगल्वुदु जनं विबुधोत्करकैरवप्रबो-
धनहिमरोचियं नेगर्द्द बूचियनुद्धपरात्थसद्गुणा-
भिनवदधीचियं सुभटभीकरविक्रमसव्यसाचियं ॥ ३ ॥

आ-यण्णं **सकवर्ष १०३७ नेय विजयसंवत्सरद-वैशाखसुद्ध १० आदित्यवार** दन्दु सर्व्वसङ्गपरित्यागपूर्व्वकं मुडिपिदं ॥

(पश्चिममुख)

पद्य ॥ त्यागंसर्व्वगुणाधिकं तदनुजं शौर्य्यं च तद्बान्धवं
धैर्य्यं गर्व्वगुणातिदारुणरिपुं ज्ञानं मनोऽन्यं सतां ।

शेषाशेषगुणं गुणैकशरणं श्रीवूचणोऽस्याहितं
सत्यं सत्यगुणीकरोति कुरुते किं वा न चातुर्य्यभाक् ॥ ४ ॥
यो वीर्य्ये गजवैरिभूयमतुले दानक्रमे वूचणो
यस्साक्षात्सुरभूजभूयमवनौ गम्भीरताया विधौ ।
यो रत्नाकरभूयमुन्नति-गुणे यो मेरुभूयं गत-
स्सोऽन्ते सान्तमना मनीषिलषितं गीर्व्वाणभूयगतः ॥ ५ ॥
माराकारइति प्रसिद्धतरइत्यत्यूर्ज्जित-श्रीरिति
प्राप्तस्वर्गपतिप्रभुत्वगुणइत्युच्चैर्म्मनीषीति च ।
श्रीमद्गङ्गचमूपते प्रियतमा लक्ष्मीसहृक्षा शिला—
स्तम्भं स्थापयतिस्म वूचणगुणप्रख्यातिवृद्धिं प्रति ॥ ६ ॥
धरे लघुत्वाव्तु विश्रुतविनेयनिकायमनाथमाव्तुवाक्-
तरुणियुमीगली जगदोलार्ग्गमनादरणीयेयादले—
न्दिरदे विषादमादमोदवुत्तिरे भव्यजनान्त [रङ्ग] दोलु
निरुपमनेय्दिदं नेगर्द वूचियणं दिविजेन्द्रलोकमं ॥७॥
श्री मूलसङ्घद देसिगगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्रसिद्धान्त-
देवर गुड्डं वूचणन निशिधिगे ॥

[इस लेख में 'नागले' माता के सुपुत्र 'वूचिराज' व वूचण के सौन्दर्य, शौर्य और सद्गुणों का उल्लेख है। यह तेजस्वी और धर्मिष्ट पुरुष शक सं० १०३७ वैशाख सुदि १० रविवार को सर्व-परिग्रह का त्यागकर स्वर्गगामी हुआ। उनके स्मरणार्थ सेनापति गङ्ग ने एक पाषाण-स्तम्भ आरोपित कराया।

वूचिराज के गुरु मूल संघ, देशीगण पुस्तक गच्छ के शुभचन्द्र सिद्धान्त देव थे।]

४७ (१२७)

उसी मण्डप में द्वितीय स्तम्भ पर

(शक सं० १०३७)

(दक्षिणमुख)

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थ-ध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ १ ॥
श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमलजिनवरानीकसौधोरुवार्द्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्यबोधोरु-वेदिः ।
शस्तस्यात्कारमुद्राशबलितजनतानन्दनादोरुघोषः
स्थेयादाचन्द्रतारं परमसुखमहावीर्य्यवीचीनिकायः ॥ २ ॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्ग्गाः श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते ।
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ **नन्दि**गणे बभूव ॥३॥
श्री**पद्मनन्दी**त्यनवद्यनामाह्याचार्य्यशब्दोत्तर**कोण्डकुन्दः** ।
द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥४॥
अभूदु**मास्वाति**मुनीश्वरोऽसावाचार्य्यशब्दोत्तरगृद्धपिञ्छः ।
तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्त्थवेदी ॥५॥
श्रीगृद्धपिञ्छमुनिपस्य**बलाक**पिञ्छः
शिष्योऽजनिष्टभुवनत्रयवर्त्तिकीर्त्तिः ।
चारित्रचुञ्चुरखिलावनिपालमौलि-
मालाशिलीमुखविराजितपादपद्मः ॥६॥
तच्छिष्योगु**णनन्दि**पण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर-
स्तर्क्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापतिः ।

मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टकण्ठीरवो
भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्प्पदर्प्पापहः ॥७॥
तच्छिष्याखिशता विवेकनिधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता-
स्तेपूत्कृष्टतमा द्विसप्ततिमितास्सिद्धान्तशास्त्रार्थक-
व्याख्याने पटवो विचित्रचरितास्तेषु प्रसिद्धो मुनिः
नानानूननयप्रमाणनिपुणो देवेन्द्रसैद्धान्तिकः ॥८॥
अजनि महिपचूडारत्नराराजिताङ्घ्रि -
र्व्विजितमकरकेतूद्दण्डदोर्द्दण्डगर्व्वः ।
कुनयनिकरभूध्रानीकदम्भोलिदण्ड
स्सजयतु विबुधेन्द्रो भारतीभालपट्ट. ॥९॥
तच्छिष्यः कलधौतनन्दिमुनिपस्सैद्धान्तचक्रेश्वरः
पारावारपरीतधारिणिकुलव्याप्तोरुकीर्त्तीश्वरः ।
पञ्चाचोन्मदकुम्भिकुम्भदलनप्रोन्मुक्तमुक्ताफल—
प्रांशुप्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनीवल्लभः ॥१०॥
तत्पुत्रको महेन्द्रादिकीर्त्तिर्म्मदनशङ्कर. ।
यस्य वाग्देवता शक्ता श्रीर्ति मालामयूयुजत् ॥११॥
तच्छिष्यांवीरणन्दीकवि-गमक-महावादि-वाग्मित्वयुक्तो
यस्य श्रीनाकसिन्धुत्रिदशपतिगजाकाशगङ्गाशकीर्त्ति ।
गायन्त्युच्चैर्द्दिगन्ते त्रिदशयुवतयः प्रीतिरागानुबन्धात्
सोऽयं जीयात्प्रमादप्रकरमहिधराभीलदम्भोलिदण्डः ॥१२॥
श्रीगोल्लाचार्य्यनामा समजनि मुनिपश्शुद्धरत्नत्रयात्मा
सिद्धात्माधर्त्थ-सार्त्थ-प्रकटनपटु-सिद्धान्त-शास्त्राब्धि-वीची—

सङ्ग्रातचालिताहः प्रमदमदकलालीढवुद्धिप्रभावः
जीयाद्भू पाल-मौलि-द्युमणि-विदलिताङ्घ्र्यब्जलक्ष्मीविलासः ॥
पेर्ग्गडे चावराजं बरेदंमङ्गल ॥

(पश्चिममुख)

वीरणन्दि विवुधेन्द्रसन्ततौ नूलचन्दिलनरेन्द्रवंशचू-
डामणिः प्रथितगोल्लदेशभूपालकः किमपि कारणेन सः ॥१४॥
श्रीमत्**त्रैकाल्ययोगी** समजनि महिकाकायलग्नातनुत्रं
यस्याभूद्वृष्टिधारा निशित-शर-गणा ग्रीष्ममार्त्तण्डविम्वं।
चक्रंसद्वृत्तचापाकलितयतिवरस्याघशत्रून्विजेतुं
गोल्लाचार्य्यस्य शिष्यस्सजयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दुः ॥१५॥
तपस्सामर्थ्यतो यस्य छात्रोऽभूद्ब्रह्मराक्षसः।
यस्य स्मरणमात्रेण मुञ्चन्ति च महाग्रहाः ॥१६॥
प्राज्याज्यतां गतं लोके करञ्जस्य हि तैलकं।
तपस्सामर्थ्यतस्तस्य तपः किं वर्ण्णितुं क्षमं ॥१७॥
त्रैकाल्य-योगि-यतिपाग्र-विनेयरत्न-
स्सिद्धान्तवार्द्धिपरिवर्द्धनपूर्णचन्द्रः।
दिग्नागकुम्भलिखितोज्ज्वलकीर्त्तिकान्तो
जीयादसाव**भयनन्दि**मुनिर्ज्जगत्यां ॥१८॥
येनाशेषपरीषहादिरिपवस्सम्यग्जिताः प्रोद्धताः
येनाप्ता दशलक्षणोत्तममहाधर्म्माख्यकल्पद्रुमाः।
येनाशेष-भवोपताप-हननस्वाध्यात्मसंवेदनं
प्राप्तं स्वादभयादिनन्दिमुनिपस्सोऽयं कृतार्थो भुवि ॥१९॥

तच्छिष्यस्सकलागमार्थनिपुणो लोकज्ञतासंयुत-
स्सच्चारित्रविचित्रचारुचरितस्सौजन्यकन्दाङ्कुरः ।
मिथ्यात्वाब्जवनप्रतापहननश्रीसोमदेवप्रभु-
र्जीयात्सत्सकलेन्दुनाममुनिपः कामाटवीपावकः ॥२०॥
अपिच **सकलचन्द्रो** विश्वविश्वम्भरेश
प्रणुतपदपयोजः कुन्दहारेन्दुरोचि. ।
त्रिदशगजभुवङ्गव्योमसिन्धुप्रकाश
प्रतिमविशदकीर्त्तिर्व्याप्तविश्वान्तरालः ॥२१॥
शिष्यस्तस्य दृढव्रतश्शमनिधिस्सत्संयमाम्भोनिधिः
शीलानां विपुलालयस्समितिभिर्युक्तिस्त्रिगुप्तिश्रितः ।
नानासद्गुणरत्नरोहणगिरिर् प्रोद्यत्तपो जन्मभूः
प्रख्यातो भुवि **मेघचन्द्र**मुनिपस्त्रैविद्यचक्राधिपः ॥ २२ ॥
त्रैविद्ययोगीश्वर-मेघचन्द्रस्याभूत्**प्रभाचन्द्र**मुनिस्सुशिष्यः ।
शुम्भद्व्रताम्भोनिधिपूर्णचन्द्रो निर्धूतदण्डत्रितयो विशल्यः २३
पुष्पास्त्रानून-दानोत्कट-कट-करटिच्छेद-दृप्यन्मृगेन्द्रः
नानाभव्याब्जषण्डप्रतति-विकसन-श्रीविधानैकभानुः ।
संसाराम्भोधिमध्योत्तरणकरणतायानरत्नत्रयेशः
सम्यग्जैनागमार्थान्वित-विमलमतिः श्री **प्रभाचन्द्र**
योगी ॥ २४ ॥

(उत्तरमुख)

श्रीभूपालकमौलिलालितपदस्सज्ज्ञानलक्ष्मीपति—
श्चारित्रोत्करवाहनश्शितयशश्शुभ्रातपत्राञ्चितः ।

त्रैलोक्याद्भुतमन्मथारिविजयस्सद्धर्म्मचक्राधिपः
पृथ्वीसंस्तवतूर्य्यघोषनिनदस्त्रैविद्यचक्रेश्वरः ॥ २५ ॥
शाब्दौघस्य शिरोमणिः प्रविलसत्तर्कज्ञचूड़ामणिः
सैद्धान्तेद्धशिरोमणिः प्रशमवद् व्रातस्य चूड़ामणिः ।
प्रोद्यत्संयमिनां शिरोमणिरुदग्भव्यरत्नामणि-
र्जीयात्सन्नुतमेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचूड़ामणिः ॥ २६ ॥
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रयमिनः पत्युर्म्ममासि प्रिया
वाग्देवी दिसहावहित्थहृदया तद्वश्यकर्म्मार्त्थिनी ।
कीर्त्तिर्व्वारिधिदिक्कुलाचलकुले खादात्मा प्रष्टुम-
प्यन्वेष्टुं मणिमन्त्रतन्त्रनिचयं सा सम्भ्रमाभ्राम्यति ॥२७॥
तर्क्कन्यायसुवज्रवेदिरमलार्हत्सूक्तितन्मौक्तिकः
शब्दग्रन्थविशुद्धशङ्खकलितस्स्याद्वादसद्विद्रुमः ।
व्याख्यानोर्जितघोषणर् प्रविपुलप्रज्ञोद्धवीचीचयो
जीयाद्विश्रुत**मेघचन्द्र**-मुनिपस्त्रैविद्य-रत्नाकरः ॥ २८ ॥

श्रीमूलसङ्घकृत-पुस्तक-गच्छ-देशी
योद्यद्गणाधिपसुतार्क्किकचक्रवर्त्ती ।
सैद्धान्तिकेश्वरशिखामणि**मेघचन्द्र**-
स्त्रैविद्यदेव इति सद्विबुधा(:) स्तुवन्ति ॥ २९ ॥

सिद्धान्ते जिन-**वीरसेन**-सदृशः शास्त्राब्ज-भा-भास्करः
षट्तर्केष्व**कलङ्कदेव**विबुधः साक्षादयं भूतले ।
सर्व्व-व्याकरणे विपश्चिदधिपः श्री**पूज्यपाद**स्स्वयं
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रमुनिपो वादीभपञ्चाननः ॥ ३० ॥

रुद्राणीशस्य कण्ठं धवलयति हिमज्योतिषोजातमङ्कं
पीतं सौवर्णशैलं शिशुदिनपतनुं राहुदेहं नितान्तं ।
श्रीकान्तावल्लभाङ्गं कमलभववपुर्म्मेघचन्द्रव्रतीन्द्र—
त्रैविद्यस्याखिलाशावलयनिलयसत्कीर्त्तिचन्द्रातपोऽसौ ॥३१॥
मुनिनाथं दशधर्म्मधारि दृढषट्-त्रिंशद्गुणं दिव्य-वा-
णनिधानं निनगिल्जुचापमलिनीज्यासूत्रमोरेन्दे पू-
विन वाणङ्गलुमयदे हीननधिकङ्गाचेपमंमाप्पुदा—
व नयं दर्प्पक मेघचन्द्र मुनियोल् माणनिन्नदोर्द्दप्पेमं ॥३२॥
मृदुरेखाविलासं चावराज-वलहदल्बरेदुद विरुद रूवा-
रिमुख-तिलकगङ्गाचारि कण्डरिसिद शुभचन्द्रसिद्धान्त-
देवरगुड्ड ।

(पूर्वमुख)

श्रवणीयं शब्दविद्यापरिणति महनीयं महातर्क्कविद्या—
प्रवणत्वं श्लाघनीयं जिननिगदित-संशुद्धसिद्धान्तविद्या-
प्रवणप्रागल्भ्यमेन्देन्दुपचितपुलकं कीर्त्तिसल् कूर्त्तु-विद्व-
त्रिवहं त्रैविद्यनाम-प्रविदितनेसेदं मेघचन्द्रव्रतीन्द्र ॥३३॥
क्षमेगीगल् जीवनं तीविदुदतुलतप श्रीगे लावण्यमीगल्
समसन्दिर्द्दत्तु तन्नि श्रुतवधुगधिकप्रौढियायतीगलेन्द-
न्दे महाविख्यातियं तालिददनमलचरित्रोत्तमं भव्यचेतो-
रमणं त्रैविद्यविद्योदितविशदयशं मेघचन्द्रव्रतीन्द्र ॥३४॥
इदे हंसीवृन्दमीण्टल् बगेदपुदु चकोरीचयं चञ्चुविन्दं
कदुकल् सार्द्दप्पुदीशं जडेयोलिरिसलेन्दिर्द्दपं सेज्जेगेरल् ।

पदेदप्पं कृष्णनेम्बन्तेसेदु विस-लसत्कन्दलीकन्दकान्त
पुदिदत्तो **मेघचन्द्र**व्रतितिलकजगद्वर्त्तिकीर्त्तिप्रकाश ॥३५॥
पूजितविदग्धविबुधस-
माजं त्रैविद्य-**मेघचन्द्र**-व्रति रा-
राजिसिदं विनमितमुनि-
राजं वृषभगणभगणताराराजं ॥३६॥

सक वर्ष १०३७ नेय मन्मथसंवत्सरद मार्ग्ग-सिर सुद्ध १४ बृहवारं धनुलग्नद पूर्व्वाह्णदारुघलिगेयप्पागलु श्रीमूलसङ्घद देसिगगणद पुस्तकगच्छद श्री**मेघचन्द्र**त्रैविद्य देवर्त्तम्मग्रशानकालमनरिदु पल्यङ्काशनदोलिद्दु आत्मभावनेयं भाविसुत्तुं देवलोकक्के सन्दराभावनेयेन्तप्पुदेन्दोडे ॥

अनन्त-बोधात्मकमात्मतत्त्वं निधाय चेतस्यपहाय हेयं ।
त्रैविद्यनामा मुनि**मेघचन्द्रो** दिवं गतोबोधनिधिर्व्विशिष्टाम् ॥

अवरग्रशिष्यरशेष-पद-पदार्त्थ-तत्त्व-विदरु सकलशास्त्रपारावारपारगरु गुरुकुलसमुद्धरणरुमप्प श्री **प्रभाचन्द्र**-सिद्धान्त-देवर्त्तम्म गुरुगलगे परोक्षविनेयं कारणमागि श्री**कब्बप्पु**-तीर्त्थदलु तम्म गुड्डं ॥

समधिगतपञ्चमहाशब्द महासामन्ताधिपति महाप्रचण्ड दण्डनायक वैरिभयदायकं गोत्रपवित्रं बुधजनमित्र स्वामिद्रोह-गोधूमघरट्ट सङ्ग्रामजत्तलट्ट **विष्णुवर्द्धन**भूपालहोय्सलमहाराज-राज्य-समुद्धरण कलिगलाभरण श्रीजैनधर्म्मामृताम्बुधि-प्रवर्द्धन-सुधाकर सम्यक्तरत्नाकर श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकगङ्गराजनु-

मातन मनस्सरोवरराजहंसे भव्यजनप्रशंसे गोत्र-निधाने रुक्मिणी
समाने लक्ष्मीमतिदण्डनायकितियुमन्तवरिन्दमतिशयमहा-
विभूतियिं सुभलग्नदोलु प्रतिष्ठेय माडिसिदर् आमुनीन्द्रोत्तमर्
डनिसिधिगेयन् अवर तपःप्रभावमेन्तप्पुदेन्दोडे ॥

समदोद्यन्मार-गन्ध-द्विरद-दलन १-कण्ठीरव क्रोध-लोभ-
द्रुम-मूलच्छेदनं दुर्द्धरविषयशिलाभेद-वज्र-प्रतापं ।
कमनीयं श्रीजिनेन्द्रागमजलनिधिपारं प्रभाचन्द्र-सिद्धान्तमु-
नीन्द्रं मोहविध्वंसनकरनेसेदं धात्रियोल् योगिनाथ ॥ ३८ ॥

चावराज बरेद ॥

मत्तिन मातवन्तिरलि जीर्ण्णजिनाश्रयकोटियं क्रमं
बेत्तिरे मुन्निनन्तिरनितुर्व्वलोल् नेरे माडिसुत्तम-
स्युत्तमपात्रदानदोदवं मेरेवुत्तिरे गङ्गवाडितो-
म्वत्तरु मासिरं कोपणमादुदु गङ्गणदण्डनाथनिं ॥ ३९ ॥

सोभेयनं कैकोण्डुदो
सौभाग्यद-कणियेनिप्प लक्ष्मीमतियि-
न्दीभुवनतलदोला हा-
राभयभैसज्यशास्त्र-दान-विधान ॥४०॥

[यह लेख मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव की प्रशस्ति है। प्रथम श्लोक को छोड़ आदि के नव पद्य वे ही हैं जो शिलालेख नं० ४२ (६६) में भी पाये जाते हैं। उनमें कुन्दकुन्दाचार्य, उमास्वाति गृद्ध पिच्छ, बलाक पिच्छ, गुणनन्दि, देवेन्द्र सैद्धान्तिक और कलधौतनन्दि मुनि का उल्लेख है।

१ द्विरदन-घल

कलधौतनन्दि के पुत्र महेन्द्रकीर्त्ति हुए जिनकी आचार्य परम्परा में क्रम से वीरनन्दि, गोल्लाचार्य, त्रैकाल्ययोगी, अभयनन्दि और सकल-चन्द्र मुनि हुए। लेख में इन आचार्यों के तप और प्रभाव का अच्छा वर्णन है। त्रैकाल्ययोगी के विषय मे कहा गया है कि तप के प्रभाव से एक ब्रह्मराक्षस उनका शिष्य होगया था। उनके स्मरणमात्र से बड़े बड़े भूत भागते थे, उनके प्रताप से करञ्ज का तैल घृत में परिवर्तित होगया था। सकलचन्द्रमुनि के शिष्य मेघचन्द्र त्रैविद्य हुए जो सिद्धान्त में वीरसेन, तर्क में अकलङ्क और व्याकरण मे पूज्यपाद के समान विद्वान् थे।

शक सं० १०३७ मार्गसिर सुदि १४ बृहस्पतिवार को उन्होंने सद्ध्यानसहित शरीर-त्याग किया। उनके प्रमुख शिष्य प्रभाचन्द्र सिद्धान्त देव ने महाप्रधान दण्डनायक गङ्गराज द्वारा उनकी निषद्या निर्माण कराई।

लेख चावराज का लिखा हुआ है।]

४८ (१२८)

उसी मण्डप में तृतीय स्तम्भ पर

(शक सं० १०४४)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं॥ १ ॥
जयतु दुरितदूरः चोरकूपारहारः
प्रथितपृथुलकीर्त्तिश्रीशुभेन्दुव्रतीशः।
गुणमणिगणसिन्धुः शिष्टलोकैकबन्धुः
विबुध-मधुप-फुल्लः फुल्लबाणादि-सल्लः॥ २ ॥

अवर गुड्डि ॥

परमपदार्थनिर्ण्णयमनान्त विदग्धते दुर्न्नयङ्गलोल्
परिचयमेन्दुमिल्लदतिमुग्धते तन्निनियङ्गे चित्तदोल् ।
पिरिदनुरागमं पडेव रूपु विनेयजनान्तरङ्गदोल्
निरुपमभक्तियं पडेव पेम्पिनु लक्ष्मलेगेन्दुमन्वितं ॥ ३ ॥

चतुरतेयोल् लावण्य दो-
लतिशयमेने नेगल्द देवभक्तियोलिन्ती
क्षितियोलगे गङ्गराजन
सति लक्ष्म्यम्बिकेयोलितरसतियर्दोरेये ॥ ४ ॥

सौभाग्यदोलमद्दीदं
सोभास्पदमादरूपिनोलिं प्रत्य-
क्षोभूत लक्ष्मियेन्दपु-
दी भूतलमिनितुमेय्दे लक्ष्मीमतियं ॥ ५ ॥

शोभेयनें कय्कोण्डुदो
सौभाग्यद कणियेनिप्प लक्ष्मीमतियि-
न्दी भुवन-तलदोलाहा-
राभय-भैश(ष)ज्यशास्त्रदानविधानं ॥ ६ ॥

वितरणगुणमदे वनिता-
कृतियं कय्कोण्डुदेनिप महिमेय लक्ष्मी-
मतियेलवो देवताधि-
ष्टितेयल्लदे केवलं मनुष्याङ्गनेये ॥ ७ ॥

इभगमने हरिणलोचने

शुभलक्षणे गङ्गराजनङ्गने ता-
नभिनवरुग्मिणियेनलौ
त्रिभुवनदोल् पोल्वरोलरे लक्ष्मीमतियं ॥ ८ ॥

श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद श्रीमत्-शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवर गुड्डि दण्डनायकिति लक्कव्वे सक वर्षं १०४४ नेय प्लव सम्वत्सरद शुद ११ शुक्रवारदन्दु सन्यसनं गेय्दु समाधिवेरसि मुडिपि देवलोकक्के सन्दल् ॥

परोक्षविनेयक्के निषिधिगेयं श्रीमद्दण्डनायक-गङ्गराजं निलिसि प्रतिष्ठेमाडि महादानमहापुजेगलं माडिदरु मङ्गल महा श्री श्री ॥

[इस लेख में दण्डनायक गङ्गराज की धर्मपत्नी लक्ष्मीमति के गुण, शील और दान की प्रशंसा की गई है। इस धर्मपरायण साध्वी महिला ने शक सं० १०४४ में संन्यास-विधि से शरीर त्याग किया। वह मूलसंघ पुस्तक-गच्छ देशीगण के शुभचन्द्राचार्य की शिष्या थी। अपनी साध्वी स्त्री की स्मृति में दण्डनायक गङ्गराज ने यह निषद्या निर्माण कराई।]

४९ (१२९)

उसी मण्डप में चतुर्थ स्तम्भ पर

(शक सं० १०४२)

(उत्तरमुख)

भद्रमस्तु जिनशासनस्य ॥

जयतु दुरितदूरः चीरकूपारहारः

प्रथितपृथुलकीर्त्तिश्श्री शुभेन्द्र ब्रतीशः।
गुणमणिगणसिन्धु' शिष्ट लोकैकबन्धुः
विबुधमधुपफुल्ल' फुल्लबाणादिसल्लः ॥ १ ॥

श्रीवधुचन्द्रलेखे सुरभूरुहदुद्भवदि पयोधि-वे-
लावधु पेम्पु वेत्तवोलनिन्दिते नागले चारुरूपली-
लावति दण्डनायकिति लक्कले देमति बूचिराजने
म्वी विभु पुट्टे पेम्पु वडेदार्ज्जिसिदल् पिरिदप्पकीर्त्तियं ॥२॥

वचन ॥ आ यब्बेय मगलेन्त्वप्पलेन्दडे। स्वस्ति निस्तुषाति-जितवृजिन-भाग - भगवदर्हदर्हणीयचारुचरणारविन्दद्वन्द्वानन्दव-न्दनवेलाविलोकनीयाद्माथमाण—लक्ष्मीविलासेयुं। अपहसनी-यस्वीयजीवितेशजीवितान्तजीवनविनोदानारतरतरतिविलासेयुं। कालेयकालराक्षसरक्षाविकलसकलवाणिजत्राणतिप्रचण्डचा-मुण्डातिश्रेष्ठराजश्रेष्ठिमानसराजमानराजहंसवनिताकल्पेयुं। परमजिनमतपरित्राणकरणकारणीभूत —जिनशासनदेवताकारा-कल्पेयु। अभिरामगुणगणवशीकरणीयतानुकरणीयधरणीसुतेयुं। श्रीसाहित्यसत्यापितक्षीरोदसुतेयुं। सद्धर्म्मानुरागमतियुंएनिसि-ददेमियक ॥

पद्य ॥ श्रीचामुण्डमनोमनोरथरथव्यापारणैकक्रिया
श्रीचामुण्डमनस्सरोजरजसाराजद्द्विरेफाङ्गना।
श्रीचामुण्डगृहाङ्गणोद्गतमहाश्रीकल्पवल्ली स्वयं
श्रीचामुण्डमनःप्रिया विजयतांश्रीदेमवत्यङ्गना ॥ ३ ॥

(पश्चिममुख)

आहारं त्रिजगज्जनाय विभयं भीताय दिव्यौषधं
व्याधिव्यापदुपेतदीनमुखिने श्रोत्रे च शास्त्रागमं ।
एवं देवमतिस्सदैव ददती प्रप्रचये स्वायुषा—
मर्हद्देवमतिंविधाय विधिना दिव्या वधू प्रोदभू ।। ४ ।।
आसीत्परक्षोभकरप्रतापाशेषावनीपालकृतादरस्य ।
चामुण्डनाम्नो वणिज:प्रियास्त्री मुख्यामती या भुविदे-
मतीति ।। ५ ।।

भूलोक-चैत्यालय-चैत्य-पूजा-व्यापार-कृत्यादरतोऽवतीर्णा
स्वर्गात्सुरस्त्रीतिविलोक्यमाना पुण्येनलावण्यगुणेनयात्र ।।६।।
आहारशास्त्राभयभेषजानां दायिन्यलंवर्णचतुष्टयाय ।
पश्चात्समाधिक्रिययायुरन्ते स्वस्थानवत्स्व: प्रविवेशयोच्चै: ।।७।।
सद्धर्म्मशत्रुं कलिकालराजं जित्वा व्यवस्थापितधर्म्मवृत्या ।
तस्याजयस्तम्भनिभंशिलाया स्तम्भंव्यवस्थापयतिस्म लक्ष्मी :।।८।।

श्रीमूलसङ्घद देसिगगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवर गुड्डि सकवर्ष १०४२ नेय विकारिसंवत्सर-दफाल्गुणब ११ बृहवारदन्दु सन्यासन विधियि देमियक मुडिपिदलु ।।

[इस लेख में चामुण्ड नाम के किसी प्रतिष्ठित और राजसन्मानित वणिक् की धर्मवती भार्या 'देमति' व 'देवमति' की प्रशंसा है । इस महिला की माता का नाम 'नागवे' व उसके एक भाई और बहिन के नाम क्रमश: बूचिराज और लक्कले थे । दान-पुण्य के कार्यों में जीवन

स्वीन कर इस महिला ने शक सं० १०४७, फाल्गुण वदि ११ बृहस्पति वार को सन्यास-विधि से शरीर त्याग किया। यह महिला शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या थी।]

५० (१४०)

गन्धवारण बस्ती के प्रथम मण्डप में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १०६८)

(पूर्वमुख)

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने।
कुतीर्थ्यध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ १ ॥
श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमलजिननगानीकसंधारुवार्द्धिः
ध्वस्ताघप्रमेयप्रचयविषयकैवल्यबोधोरुवेदिः।
शस्त्यात्कारमुद्राशबलितजनतानन्दनादोरुघोष.
स्थेयादाचन्द्रतारं परमसुखमहावीर्य्यवीचीनिकायः ॥ २ ॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गाः श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते।
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ नन्दिगणे बभूव ॥ ३ ॥
श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामा ह्याचार्य्यशब्दोत्तरकोण्डकुन्दः।
द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥ ४ ॥
अभूदुमास्वाति मुनीश्वरोऽसावाचार्य्यशब्दोत्तरगृद्ध-
पिञ्छः।
तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्थवेदी ॥५॥
श्रीगृद्धपिञ्छमुनिपस्य बलाकपिञ्छः
शिष्योऽजनिष्ट भुवनत्रयवर्त्तिकीर्त्तिः।

चारित्रचञ्चुरखिलावनिपालमौलि-
मालाशिलीमुखविराजितपादपद्मः ॥ ६ ॥
तच्छिष्यो **गुणनन्दि**पण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर-
स्तर्क्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापतिः ।
मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टकण्ठीरवो
भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्प्पदर्प्पापहः ॥ ७ ॥
तच्छिष्यास्त्रिशता विवेकनिधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता-
स्तेषूत्कृष्टतमा द्विसप्ततिमितास्सिद्धान्तशास्त्रार्थक-
व्याख्याने पटवो विचित्रचरितास्तेषु प्रसिद्धो मुनिः
नानानूननयप्रमाणनिपुणो **देवेन्द्र**सैद्धान्तिकः ॥ ८ ॥
अजनि महिपचूड़ारत्नराराजिताङ्घ्रि -
र्व्विजितमकरकेतूद्दण्डदोर्द्दण्डगर्व्वः ।
कुनयनिकरभूध्रानीकदम्भोलिदण्ड
स्सजयतु **विबुधेन्द्रो** भारतीभालपट्टः ॥ ६ ॥
तच्छिष्यः **कलधौतनन्दि**मुनिपस्सैद्धान्तचक्रेश्वरः
पारावारपरीतधारिणिकुलव्याप्तोरुकीर्त्तीश्वरः ।
पञ्चाक्षोन्मदकुम्भिकुम्भदलनप्रोन्मुक्तमुक्ताफल—
प्रांशुप्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनीवल्लभः ॥ १० ॥
तत्पुत्रको **महेन्द्रादिकीर्त्तिर्म्मदनशङ्करः** ।
यस्य वाग्देवता शक्ता श्रौती मालामयूयुजत् ॥ ११ ॥
तच्छिष्यो **वीरणन्दी** कवि-गमक-महावादि-वाग्मित्वयुक्तो
यस्य श्रीनाकसिन्धुत्रिदशपतिगजाकाशसङ्काशकीर्त्तिः ।

गायन्त्युच्चैर्द्दिगन्ते त्रिदशयुवतय: प्रीतिरागानुबन्धात्
सोऽयं जीयात्प्रमादप्रकरमहिधराभीलदम्भोलिदण्ड: ॥१२॥
श्री**गोल्लाचार्य्य**नामा समजनि मुनिपश्शुद्धरत्नत्रयात्मा
सिद्धात्माद्यर्त्थ-सार्त्थ-प्रकटनपटु-सिद्धान्त शास्त्राब्धि-वीची-
सङ्घातक्षालिताङ्ह: प्रमदमदकलालीढबुद्धिप्रभाव:
जीयाद्भूपाल-मौलि-द्युमणि-विदलिताङ्घ्रि रुञ्जलक्ष्मी-
विलास: ॥ १३ ॥

वीरणन्दिविबुधेन्द्रसन्ततौ नूत्नचन्दिलनरेन्द्रवंशचू-
डामणि. प्रथितगोल्लदेशभूपालक: किमपि कारणेन स: ॥१४॥
श्रीमत्**त्रैकाल्ययोगी** समजनि महिकाकायलग्नातनुत्रं
यस्याभूद्वृष्टिधारा निशित-शर-गणा ग्रीष्ममार्त्तण्डबिम्बं ।
चक्रंसद्वृत्तचापाकलितयतिवरस्याघशत्रून्विजेतुं
गोल्लाचार्य्यस्य शिष्यस्सजयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दु. ॥१५॥
गङ्गणण लिखित

(दक्षिणमुख)

तपस्सामर्त्थ्यता यस्य छात्रोऽभूद्ब्रह्मराक्षस: ।
यस्य स्मरणमात्रेण मुञ्चन्ति च महाग्रहा: ॥ १६ ॥
प्राज्याज्यतां गतं लोके करञ्जस्य हि तैलकं ।
तपस्सामर्त्थ्यतस्तस्य तप: किं वर्ण्णितुंक्षमं ॥ १७ ॥
त्रैकाल्य-योगि-यतिपाग्र-विनेयरत्न-
स्सिद्धान्तवार्द्धिपरिवर्द्धनपूर्णचन्द्र: ।
दिग्नागकुम्भलिखितोज्ज्वलकीर्त्तिकान्तो

जीयादसावभयनन्दिमुनिर्ज्जगत्यां ॥ १८ ॥

येनाशेषपरीषहादिरिपवस्सम्यग्जिताः प्रोद्धताः
येनाप्ता दशलक्षणोत्तममहाधर्म्माख्यकल्पद्रुमाः ।
येनाशेष-भवोपताप-हननं स्वाध्यात्मसंवेदनं
प्राप्तं स्यादभयादिनन्दिमुनिपस्सोऽयं कृतार्थो भुवि ॥ १९ ॥

तच्छिष्यस्सकलागमार्थनिपुणो लोकज्ञतासंयुत-
स्सच्चारित्रविचित्रचारुचरितस्सौजन्य कन्दाङ्कुरः ।
मिथ्यात्वाञ्जवनप्रतापहननश्श्रीसोमदेवप्रभु—
र्जीयात्सत्सकलेन्दु नाममुनिपः कामाटवीपावकः ॥ २० ॥

अपिच सकलचन्द्रो विश्वविश्वम्भरेश-
प्रणुतपदपयोजः कुन्दहारेन्दुरोचिः ।
त्रिदशगजसुवज्रव्योमसिन्धुप्रकाश-
प्रतिमविशदकीर्त्तिर्व्वाग्वधूकर्ण्णपूरः ॥ २१ ॥

शिष्यस्तस्य दृढव्रतश्शमनिधिस्सत्संयमाम्भोनिधिः
शीलानां विपुलालयस्समितिभिर्य्युक्तिस्त्रिगुप्तिश्रितः ।
नानासद्गुणरत्नरोहणगिरिः प्रोद्यत्तपोजन्मभूः
प्रख्यातो भुवि मेघचन्द्र मुनिपस्त्रैविद्यचक्राधिपः ॥२२॥

श्रीभूपालकमौलिलालितपदस्सज्ज्ञानलक्ष्मीपति—
श्चारित्रोत्करवाहनश्शितयशश्शुभ्रातपत्राश्वितः ।
त्रैलोक्याद्भुतमन्मथारिविजयस्सद्धर्म्मचक्राधिपः
पृथ्वीसंस्तवतूर्य्यघोषनिनदस्त्रैविद्यचक्रेश्वरः ॥ २३ ॥

शाब्दौघस्य शिरोमणिः प्रविलसत्तर्क्काङ्गचूडामणिः
सैद्धान्तेपुशिरोमणिः प्रशमवद्-व्रातस्य चूडामणि ।
प्रोद्यत्संयमिनां शिरोमणिरुदश्चद्भव्यरत्नामणि—
र्जीयात्सन्नुतमेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचूडामणिः ॥ २४ ॥
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रयमिनः पत्युर्म्ममासि प्रिया
वाग्देवी दिसहात्रहित्थहृदया तद्वश्यकर्म्मार्त्थिनी ।
कीर्त्तिर्व्वारिधि दिक्कुलाचलकुलस्वादात्म [. .] प्रण्टुम-
प्यन्वेष्टुं मणिमन्त्रतन्त्रनिचयं सा सम्भ्रमाभ्राम्यति ॥२५॥
तर्क्कन्यायसुवज्रवेदिरमलार्हत्सूक्तितन्मौक्तिक.
शब्दग्रन्थविशुद्धशङ्खकलितस्स्याद्वादसद्विद्रुमः ।
व्याख्यानोर्ज्जितघोषणः प्रविपुलप्रज्ञोद्भवीचीचयो
जीयाद्विश्रुतमेघचन्द्र-मुनिपस्त्रैविद्य-रत्नाकरः ॥ २६ ॥

श्रीमूलसङ्घकृत-पुस्तक-गच्छ-देशी
योद्यद्गणाधिपसुतार्किकचक्रवर्ती ।
सैद्धान्तिकेश्वरशिखामणिमेघचन्द्र—
स्त्रैविद्यदेव इति सद्विबुधा (:) स्तुवन्ति ॥ २७ ॥

सिद्धान्ते जिनवीरसेन-सदृशश्शास्त्राब्ज-भा-भास्करः
षट्तर्केष्वकलङ्कदेवविबुधस्साक्षादयं भूतले ।
सर्व्व-व्याकरणे विपश्चिदधिपः श्रीपूज्यपादस्स्वयं
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रमुनिपो वादीभपञ्चाननः ॥ २८ ॥
लिखिता मनोहर परनारीसहोदरनप्प गङ्गणणन लिखित

(पश्चिममुख)

रुद्राणीशस्य कण्ठं धवलयति हिमज्योतिषोजातमङ्कं
पीतं सौवर्ण्णशैलं शिशुदिनपतनुं राहुदेहं नितान्तं ।
श्रीकान्तावक्षभाङ्गं कमलभववपुर्म्मेघचन्द्रव्रतीन्द्र-
त्रैविद्यस्याखिलाशावलयनिलयसत्कीर्त्तिचन्द्रातपोऽसौ ॥२९॥

मूवत्तारं गुणदिं
भावजनं कट्टि पेट्ट-वेल्लेदर् वृषदि ।
भाविपडे मेघचन्द्र-
त्रैविद्यरदेन्तो शान्तरसमं तलेदर् ॥ ३० ॥

मुनिनाथं दशधर्म्मधारिदृढषट्त्रिंशद्गुणं दिव्यबा-
ण-निधानं निनगिच्चु चापमलिनीज्यासूत्रमोरोन्देपू—
विन बाणङ्गलुमयूदे हीननधिकङ्गात्तेपमं माल्पुदा—
अ नयं दर्प्पक मेघचन्द्रमुनियोल् माण्निन्नदोर्द्दर्प्पमं ॥३१॥

श्रवणीयं शब्दविद्यापरिणतिमहनीयं महातर्क्कविद्या—
प्रवणत्वं श्लाघनीयं जिननिगदितसंशुद्धसिद्धान्तविद्या—
प्रवणप्रागल्भ्यमेन्देन्दुपचितपुलकं कीर्त्तिसल् कूर्त्तु विद्व-
न्निवहं त्रैविद्यनामप्रविदितनेसेदं मेघचन्द्रव्रतीन्द्रं ॥ ३२ ॥

क्षमेगीगल् जौवनं तीविदुदतुलतपःश्रीगे लावण्यमीगल्
समेसन्दिर्द्दत्तु तन्नि श्रुतवधुगधिकप्रौढियाय्तो गलेन्द-
न्दे महाविख्यातियं तालिददनमलचरित्रोत्तम भव्यचेतो—
रमणं त्रैविद्यविद्योदितविशदयशं मेघचन्द्र व्रतीन्द्रं ॥३३॥

इदे हंसीवृन्दमीण्टल् बगेदपुदु चकोरीचयं चञ्चुविन्दं
कदुकल् सार्द्दप्पुदोशं जडेयोलिगिरिसलेन्दिर्द्दपसेञ्जेगेरल् ।

पदेदप्पं कृष्णनेम्बन्तेसेदु विसलसत्कन्दलीकन्दकान्तं
पुदिदत्ती **मेघचन्द्र**व्रतितिलकजगद्वर्त्तिकीर्त्तिप्रकाशं ॥३४॥
पूजितविदग्धविबुध-स—
माजं त्रैविद्यमेघचन्द्रव्रतिरा—
राजिसिदं विनमितमुनि—
राजं वृषभगणभगणताराराजं ॥ ३५ ॥
स्तब्धात्मरत्नतनुशर—
लुब्धरने वोगल्वे पोगले जिनशासन-दु—
ग्धाब्धिसुधांशुवनखिल क—
कुद्ववलिमर्क्कीर्त्ति **मेघचन्द्र**व्रतियं ॥ ३६ ॥

तत्सधर्म्मरु ॥

श्री**बालचन्द्र**मुनिराजपवित्रपुत्र.
प्रोद्दसवादिजनमानलतालवित्रः ।
जीयादयं जितमनोजभुजप्रताप:
स्याद्वादसूक्तिशुभगश्**शुभकीर्त्ति**देव. ॥ ३७ ॥
किंवापस्मृतिविस्मृत: किमुफणिग्रस्त· किमुग्रग्रह-
व्यग्रोऽस्मिन्स्तवदश्रुगद्गदवचोम्लानाननं दृश्यते ।
तज्ज्ञाने**शुभकीर्त्ति**देवविदुपा विद्वेपिभापाविप-
ज्वालाजाङ्गुलिकेन जिह्मितमतिर्व्वादीवराकस्त्वयं ॥ ३८ ॥
वनदर्प्पोन्नद्धवौद्ध-चितिधरपविर्यीवन्दनी वन्दनी वन्—
दनेसन्नैयायिकोद्यत्तिमिरतरणियी वन्दनी वन्दनी वन्-
दनेसन्मोमांसकोद्यत्करि-करिरिपु यी वन्दनी वन्दनी वन

दने पो पो वादि पोगेन्दुलिवुद्ध शुभकीर्त्तिद्धकीर्त्तिप्रघोषं॥३९॥
वितथोक्तियल्तजंपशु—
पतिसाङ्गियेनिप्प मूवरुं शुभकीर्त्ति—
व्रतिसन्निधियोल् नामो—
चितचरितरेंताडर्हडितरवादिगलल्लवे ॥ ४० ॥
सिङ्गद सरमं केल्द म–
तङ्गजदन्तलुकि बलुकलल्लदे सभेयोल् ।
पोङ्गि शुभकीर्ति-मुनिपनो—
लेङ्गल नुडियल्के वादिगलोन्तेलदेयें ॥ ४१ ॥
पो साल्वुदु वादि वृथा–
यासं विबुधोपहासमनुमनोप—
न्यासं निन्नीतेथे—
वासं संदपुदे वादिवज्राङ्कुशनोल् ॥ ४२ ॥

गङ्गण्णन लिखित ॥ सेवणुबक्षरदेव रूवारिरामोजन भग दासोज कण्डरिसिद ॥

(उत्तरमुख)

त्रैविद्ययोगीश्वरमेघचन्द्रस्याभूत्प्रभाचन्द्र-
मुनिस्सुशिष्यः ।
शुम्भद्व्रताम्भोनिधिपूर्णचन्द्रो निर्द्धूतदण्डत्रितयो विशल्यः ।४३।
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रसुतपःपीयूषवारासिजः
सम्पूर्णोत्तयवृत्तनिर्म्मलतनुःपुष्यद्बुधानन्दनः ।
त्रैलोक्यप्रसरद्यशः शुचिरुचिःयः प्रात्थपोषागमः

सिद्धान्ताम्बुधिवर्द्धनो विजयते ऽपूर्व्वप्रभाचन्द्रमाः ॥४४॥

संसाराम्भोधिमध्योत्तरणकरणयानरत्नत्रयेशः ।

सम्यग्जैनागमार्त्थान्वितविमलमतिःश्रीप्रभाचन्द्रयोगी ॥४५॥

सकलजनविनूतं चारुबोधत्रिनेत्रं

सुकरकविनिवासं भारतीनृत्यरङ्गम् ।

प्रकटितनिजकीर्तिं दिव्यकान्तामनोज्ञं

सकलगुणगणेन्द्रं श्रीप्रभाचन्द्रदेवं ॥ ४६ ॥

तत्सधर्म्मर् ॥

गणधररं श्रुतदोल् चा-

रण-रिपयरनमलचरितदोल् योगिजना-

ग्रणिगणयंन्नदे मिक्कर—

नेणयंम्बुदे वीरणन्दिसैद्धान्तिकराल् ॥ ४७ ॥

हरिहर-हिरण्यगर्भर—

नुरवणियिं गेल्द कामनं दीप्ततपो—

भरदिन्दुरिपिदरंने वि—

स्तरिसदराव्वीरणन्दिसैद्धान्तिकरं ॥ ४८ ॥

यन्मूर्त्तिर्ज्जगतां जनस्य नयने कर्प्पूरपूरायते ।

यत्कीर्त्तिः ककुभां श्रियः कचभरे मल्लीलतान्तायते ॥

.... ।

जेजीयाद्भुविवीरणन्दिमुनिपो राद्धान्तचक्राधिपः ॥४९॥

वैदग्धश्रीवधूटीपतिरन्नगुणालङ्कृतिर्म्मेघचन्द्र-

त्रैविद्यस्यात्मजातो मदनमहिभृतो भेदने वज्रपातः ।

सैद्धान्तव्यूहचूड़ामणिरनुपलचिन्तामणिर्भूजनानां
योऽभूत्सौजन्यरुन्द्रश्रियमवतिमहो **वीरणन्दी** मुनीन्द्रः ॥५०॥

श्री**प्रभाचन्द्र** सिद्धान्तदेवर गुड्डि **विष्णुवर्द्धन** भुज-
७७ **वीरगङ्ग बिट्टिदेव**न हिरियरसि पट्टमहादेवी ॥

शान्तल-देविय सद्गुण-
वन्तेगे सौभाग्यभाग्यवतिगे वचश्री-
कान्तेयुमच्युत [......]
कान्तेयुमेणेयल्लदुलिद सतियर्दोरेये ॥ ५१ ॥

शान्तल-देविय तायि ।

दानमननूनमं कः
केनार्त्थी येन्दु कोट्टु जिननं मनदोल् ।
ध्यानिसुतं मुडिपिदलिन्
नेनेम्बुदो माचिकब्बे येन्दुन्नतियम् ॥ ५२ ॥

सकवर्षं १०६८ नेय **क्रोधनसंवत्सरद् आश्विज-
सुद्ध-दशमी बृहवार** दन्दु धनुलग्नद पूर्व्वाह्लद् आरुघलिगे-
यप्पागल् श्री**मूल**सङ्घद **कोण्डकुन्दा**न्वयद **दे**शिगगणद पुस्तक-
गच्छद श्री **मेघचन्द्र**त्रैविद्यदेवर हिरियशिष्यरप्प श्री **प्रभाचन्द्र**
सिद्धान्तदेवरु स्वर्गस्तरादरु ॥

[इस लेख के प्रथम इकतीस पद्य शिलालेख नं० ४७ (१२७) के प्रथम बत्तीस पदों के समान ही हैं, केवल ४७ वें लेख में पद्य नं० २३ और २४ और इस लेख में पद्य नं० ३० अधिक है । कुन्दकुन्दाचार्य से प्रारम्भ कर मेघचन्द्र व्रती तक की गुरु-परम्परा का वर्णन करने के

पश्चात् लेख में मेघचन्द्र के गुरुभाई बालचन्द्र मुनिराज का उल्लेख है। तत्पश्चात् शुभकीर्ति आचार्य का उल्लेख है जिनके सम्मुख वाद में बौद्ध, मीमांसकादि कोई भी नहीं ठहर सकता था। इसके पश्चात् लेख में मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव के शिष्य प्रभाचन्द्र और वीरनन्दि का उल्लेख है। प्रभाचन्द्र आगम के अच्छे ज्ञाता और वीरनन्दि भारी सैद्धान्तिक थे। लेख के अन्तिम भाग में विष्णुवर्द्धन-नरेश की पटरानी शान्तलदेवी की धर्मपरायणता का भी उल्लेख है। वे प्रभाचन्द्र की शिष्या थीं। प्रभाचन्द्रदेव का स्वर्गवास शक स० १०६८ आसोज सुदि १० बृहस्पतिवार को हुआ। यह लेख उन्हीं का स्मारक है।]

५१ (१४१)

उसी स्थान के द्वितीय मण्डप में प्रथम स्तम्भ पर

(शक स० १०४१)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

सकल-जन-विनूतं चारु-बोध-त्रिनेत्रं
सुकरकविनिवासं भारतीनृत्यरङ्गं।
प्रकटितनिजकीर्त्तिर्दिव्यकान्तामनोज
सकलगुणगणेन्द्रं श्रीप्रभाचन्द्रदेव ॥ २ ॥

अवर गुड्डनेन्तप्पनेन्दडे ॥

स्वस्ति समस्तभुवनजनवन्द्यमानभगवदर्हत्सुरभिगन्धि-गन्धोदककणव्यक्तमुक्तावलीकृतोत्तंशहंस सुजनमनःकमलिनी-राजहंस महाप्रचण्डदण्डनायक। शत्रुभयदायक। प्रतिहित

प्रकारन् । एकाङ्गवीर । सङ्ग्रामराम । साहसभीम । मुनिजन-विनयजनबुधजनमनस्सरोवरराजहंसननूनदानाभिनवश्रेयांस । जिनमतानुप्रेक्षाविचक्षण । कृतधर्म्मरक्षण । दयारसभरितभृङ्गार । जिनवचनचन्द्रिकाचकोरनुमप्प श्रीमतु बलदेवदण्डनायकनेने नेगर्दे ॥

पलरुं मुन्निल पुण्यदोन्दोदविनि भाग्यके पक्कादोडं
चलदि तेजदिनोल्पिनि गुणदिनादौदार्य्यदिं धैर्य्यदि ।
ललनाचित्तहरोपचारविधियिं गांभीर्य्यदि सौर्य्यदि
बलदेवङ्गे समानमप्परोलरे मत्तन्यदण्डाधिपरु ॥ ३ ॥

बलदेवदण्डनायक—
नलङ्घ्यभुजबलपराक्रमं मनुचरितं ।
जलनिधिवेष्टितधात्री—
तलदोलु समनारो मन्त्रिचूडामणियोलु ॥ ४ ॥

आ महानुभावनर्द्धाङ्गलक्ष्मियेन्तप्पलेन्दडे ॥

सतिरूपमल्तु नोर्प्पडे
क्षितियोल् सौभाग्यवतियनुन्नतमतियं ।
पतिहितेयं गुणवतियं
सततंकीर्त्तिपुदु बाचिकब्बेयं भुवनजनं ॥ ५ ॥

अवर्गों सुपुत्रर्प्पुट्टिद—
रवनितलं पोगले रामलक्ष्मीधर र-
न्तवरिर्व्वर्ग्गुणगणदिं
रवितेज न्नागदेवनुं सिङ्गणनुं ॥ ६ ॥

(पश्चिम मुख)

अन्तरोलगे ॥

देरेयारी भुवनङ्गलोलु दिटके केलु सम्यक्त्वदोलु सत्यदोलु
परमश्रीजिनपूजेयोलु विनयदोलु सौजन्यदोलु पेम्पिनोलु ।
परमोत्साहदे मार्प्पदानदेडेयोलु सौचव्रताचारदोलु
निरुतं नोप्पंडे नागदेवने वल धन्यंपेरर्द्धन्यरे ॥ ७ ॥

अन्तेनिप नागदेवन
कान्ते मनोरमणसकलगुणगणधरणी—
कान्तेगवधिकं नोप्पंडे
कोन्तिय देरेयेनिसि नागियक्कं नेगरद्लु ॥ ८ ॥

अन्तवरिर्व्वर तनयं
मन्ततमखिलोर्व्वियोलगे जसवेसेविनेगं ।
चिन्तितवस्तुवनीयलु
चिन्तामणिकामधेनुवेनिपं वल्ल ॥ ९ ॥

एन्तेन्तु नोप्पंडं गुण—
वन्तं कलिसुचिदयापरं सत्यविदं ।
भ्रान्तेनेनुतं वुधर—
श्रान्तं कीर्त्तिपुदु धात्रियोलु वल्लणनं ॥ १० ॥

आतननुजाते भुवन—
ख्यातियनेरे तालिद दानगुणदुन्नतियिं ।
सीतादेविगवधिकं
भूतलदोलगेच्चियक्कनेनेमेच्चदरारु ॥ ११ ॥

आजगज्जननि योब्बुट्टिदं ॥

भाविसिपञ्चपदङ्गल—

नोवदे परिदिक्कि मोहपासद तोडरं ।

देव-गुरु-सन्निधानद—

ला विभु बलदेवनमरगतियं पडेद ॥ १२ ॥

सकवर्ष १०४१नेय सिद्धार्थि[1] संवत्सरद मार्ग्गशिर-शुद्धपाडिव सोमवारदन्दु मोरिङ्गेरेय तीर्त्थदलु संन्यसनविधियि मुडिपिद ॥

आतन जननि नागियक्कनु एचियक्कनु परोच्चविनयक्के कब्बप्पुनाडोल् ओम्मालिगेय हलुपट्टसालेय माडिसि तम्म गुरुगल् प्रभाचन्द्रसिद्धान्त-देवर काल कर्च्चिधारापूर्व्वकं माडिकोट्टरु आरेयकेरेयुमं आ केरेय मूडण देसेयलु खण्डुग बेद्दले ॥

[इस लेख में किसी बल्ल व बल्लण नामक धर्मवान् पुरुप के संन्यासविधि से शरीर त्याग करने पर उसकी माता और भगिनी द्वारा उसकी स्मृति में एक पट्टशाला (वाचनालय) स्थापित करने और उसके चलाव के लिए कुछ ज़मीन दान करने का उल्लेख है। बल्लण के वंश का यह परिचय दिया गया है कि वह एक बड़े पराक्रमी दण्डनायक बलदेव और उनकी पत्नी बाचिकब्बे का पौत्र और धर्मवान् नागदेव और उसकी स्त्री नागियक्क का पुत्र था। उसकी भगिनी का नाम एचियक्के था। बल्लण ने शक सं० १०४१ मगसिर सुदि १ सोमवार को शरीर त्याग किया। इस के पश्चात् उक्त दान दिया गया और यह लेख लिखा गया। लेख के द्वितीय पद्य में प्रभाचन्द्रदेव का उल्लेख है।]

---

१ सिद्धार्थ।

लेख में यह सम्वत् सिद्धार्थि सम्वत्सर कहा गया है पर मिलान करने से शक सं० १०४१ विकारी और शक सं० १०६१ सिद्धार्थी पाया जाता है। लेख में सम्वत की भूल है।

५२ (१४२)

उसी मण्डप में द्वितीय स्तम्भ पर

(शक सं० १०४१)

(पूर्व्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्त्यनवरतप्रबलरिपुबलविषमसरावनीमहामहारिसंहारक-रणकारणप्रचण्डदण्डनायकमुखदर्प्पणकर्णजपकुभृत्कुलिश जिन-धर्म्महर्म्यमाणिक्यकलश मलयजमिलितकाश्मीरकालागरुधूपधूम-ध्यामलीकृतजिनार्च्चनागार। निर्व्विकार मदनमनोहराकार। जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्ग वीरलक्ष्मीभुजङ्गनाहाराभयभैष-ज्यशास्त्रदानविनोद जिनधर्म्मकथाकथनप्रमोदनुमप्प श्रीमतुबल-देवदण्डनायकनेनेनेगर्द ॥

स्थिरनं बाप्पमराद्रियिन्दवधिकं गम्भीरने बाप्पु सा-

गरदिन्दग्गलमन्तु दानियं सुरोर्व्वीजकं मारण्हलम्।

सुरराजङ्गेण येन्दु कीर्त्तिपुदुकय्कोण्डर्फार सन्ततं

धरेयेल्लंबलदेवमात्यननिलालोकैकविख्यातनं ॥ २ ॥

बलदेव दण्डनायक—

नलङ्घ्यभुजबलपराक्रमं मनुचरितं।

जलनिधिवेष्टितधात्री—
तलदोलु समनारो मन्त्रिचूडामणियोलु ॥ ३ ॥
पलरुं मुन्निन पुण्यदोन्दोदविनिंभाग्यकेपकादोडं
चलदिं तेजदिनोल्पिनिं गुणदिनादौदार्य्यदिंधैर्य्यदि ।
ललनाचित्तहरोपचारविधियिं गाम्भीर्य्यदिं सौर्य्यदिं
वलदेवङ्गे समानमप्परोलरे मत्तन्यदण्डाधिपरु ॥ ४ ॥
आ वलदेवङ्ग मृग—
शावेचणेयेनिप वाचिकव्वे गवखिलो—
र्व्वीवन्धु पुट्टिदं गुण—
लोवरनदटलेव सिङ्गिमय्यनुदारं ॥ ५ ॥
जिनधर्म्माम्बरतिग्मरोचिसुचरित्रं भव्यवंशोत्तम
सिष्टिनिधानं मन्त्रिचूडामणि वुधविनुतं गोत्रवंशाम्बरार्कं ।
वनिताचित्तप्रियं निर्म्मलननुपमनत्युत्तमं कूरे कूर्प्पं
विनयाम्भोराशि विद्यानिधिगुणनिलयं धात्रियोलिसङ्गि-
मय्यं ॥ ६ ॥

(पश्चिममुख)

जिनपदभक्तनिष्टजनवत्सलनाश्रितकल्पभूरुहं
मुनिचरणाम्बुजातयुगभृङ्गनुदारननूनदानि म—
त्तिन पुरुषर्ग्गे पोलिपुददार्होरियेम्बिनेगं नेगर्द्दनी—
मनुजनिधाननेन्दु पोगल्गुं धरे पेर्ग्गडे सिङ्गिमय्यन ॥ ७ ॥
एने नेगल्द सिङ्गिमय्यन
वनिते मनोरथन लक्ष्मियेनिपलु रूपि ।

जनविनुतं सिरिय देविय—
ननुनयदि पोगल्वुदखिल भूतलवेल्लं ॥ ८ ॥

वचन ॥ आ महानुभावनवसानकालदोलु ॥

परमश्री जिनपादपङ्करुहमं सद्भक्तियिं तालिद नि—
र्भरदि पञ्चपदङ्गलं नेनेयुनं दुर्म्मोहसन्दोहमं ।
त्वरितं खण्डिसुतं समाधिविधियिं भव्याब्जिनीभास्करं
निरुतं पेर्गडे सिङ्गिमय्यनमरेन्द्रावासमं पोर्दिदं ॥ ९ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाकल्याणाष्ट-महाप्रातिहार्य्य-चतुस्त्रिंश-दतिशयविराजमान-भगवदर्हत्परमेश्वर-परमभट्टारक - मुखकमल-विनिर्ग्गतसदसदादिवस्तुस्वरूपनिरूपणप्रवण - राद्धान्तादिसकल-शास्त्रपारावारगपरमतपश्चरणनिरतरुमप्प श्रीमन्मण्डलाचार्य्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्डि नागियक्क सिरियब्बेयुं सकवर्ष १०४१ नेय सिद्धार्त्थसम्वत्सरद कार्त्तिक सुद्ध द्वादस सोमवा-रदन्दु महापूजेयं माडिनिशिधियं निरिसिदरु ॥

[महाधर्मवान्, कीर्त्तिवान् और बलवान् दण्डनायक बलदेव और उसकी धर्मपत्नी बाचिकब्बे का पुत्र सिङ्गिमय हुआ जो उदारचरित और गुणवान् था। उसकी धर्मपत्नी का नाम सिरिय देवी था। सिङ्गिमय ने समाधिमरण कर स्वर्गलोक प्राप्त किया। मण्डलाचार्य प्रभाचन्द्र के शिष्य सिरियब्बे और नागियक्क ने सिङ्गिमय्य की स्मृति में शक सं० १०४१ कार्त्तिक सुदि १२ सोमवार को यह निषद्या निर्माण कराई]

[नोट—जैसा कि लेख नं० ४१ के नोट में कहा जा चुका है शक सं० १०४१ सिद्धार्थी नहीं था जैसा कि इस लेख में भी मूल से कहा गया है]

५३ (१४३)

उसी मंडप में तृतीय स्तम्भ पर—

(शक सं० १०५०)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ १ ॥

श्रीमद् यादववंशमण्डनमणिः क्षोणीशरक्षामणि-
र्लक्ष्मीहारमणिः नरेश्वरशिरःप्रोत्तुङ्गशुम्भन्मणिः ।
जीयान्नीतिपथेक्षदर्प्पणमणिः लोकैकचूडामणि
श्श्रीविष्णुर्व्विनयार्च्चितो गुणमणिः सम्यक्तचूड़ामणिः ॥ २ ॥

एरेदमनुजङ्गे सुर-भू-
मिरुहं शरणेन्दवङ्गे कुलिशागारं ।
परवनितेगनिलतनयं ।
धुरदोलु पेणर्देङ्गे मृत्तु विनेयादित्यं ॥ ३ ॥

एने तानुं केरे देगुलङ्गलेनितानुं जैनगेहङ्गल-
न्तेनेतुं नार्कलनूर्गलं प्रजेगलं सन्तोषदिं माडिदं ।
विनयादित्यनृपालपोय्सलने सन्दिर्द्दा वलिन्द्रङ्गे मे-
लेने पेम्पं पोगलवन्ननात्रनो महागम्भीरनं धीरनं ॥ ४ ॥

इट्टिगेगेन्दगल्द कुलिगल्केरेयादवु कल्लुगे गोण्ड पेर्-
व्वेट्टु धरातलक्के सरियादवु सुण्णद भण्डि बन्द पे-

र्व्वट्टेये पञ्चमादुवेन्ने माडिसिदं जिनराजगेहमं
नेट्टने पोय्सलेसनेने वण्णि पराम्मले राजराजनं ॥ ५ ॥
कन्दं ॥ आ पोय्सल भूपङ्गे म-
हीपाल कुमारनिकरचूडारत्नं ।
श्रीपति-निज-भुज-विजय-म-
हीपति जनियिसिदनदटनेरेयङ्गनृप ॥ ६ ॥
वृत्त ॥ विनयादित्यनृपालनात्मजनिलालोकैककल्पद्रुम
मनुमार्ग्ग जगदेकवीरनेरेयङ्गोर्व्वीश्वरं मिक्कना-
तनपुं रिपुभुमिपालकमदस्सम्मर्दनं विष्णुव-
र्द्धन भूपं नेगल्दं धरावलेयदोल् आराजकण्ठीरवं ॥ ७ ॥
कन्दं ॥ आ नेगल्देरेयङ्ग नृपा—
लन सूनुव्वहद्वैरिमर्दनं सकलधरि—
त्री नाथनर्त्थि जनता—
भानुसुतं विष्णुभूपनुदयं गेय्दं ॥ ८ ॥
अरिनरपसिरास्फालन—
करनुद्धतवैरिमण्डलेश्वरमदसं—
हरणं निजान्वयैका—
भरणं श्री विट्टि देवनी वरदेव ॥ ९ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं। द्वारावतीपुरवराधीश्वर। यादवकुलाम्बरद्युमणि। सम्यक्त्वचूडामणि। मलपरोलगण्ड। चलकेचलु गण्डन्। आलिमुन्निरिव। सौर्य्येमं मेरे व। तलकाडुगोण्ड। गण्डप्रचण्ड। पट्टिपेरुमाल-

निजराज्याभ्युदयैकरचणदचक। अविनयनरपालकजनशिचक।
चक्रगोट्ट वनदावानलन्। अहितमण्डलिककालानल। तोण्ड-
मण्डलिकमण्डलप्रचण्डदोर्व्वानल। प्रबलरिपुबलसंहरणकारण।
विद्विष्टमण्डलिकमदनिवारणकरण। नोलम्बवाडिगोण्ड।
प्रतिपचनरपाललक्ष्मियनिर्कुलिगोण्ड। तप्पं तप्पुव। जय
श्रीकान्तेयनप्पुव। कूरेकूर्प्पं सौर्य्यसं तेर्प्पं। वीराङ्गना-
लिङ्गितदचिणदोर्द्दण्ड। नुडिदन्ते गण्ड। अदियमनहृदय-
शूल। वीराङ्गनालिङ्गित लोल। उद्धताराति कञ्जवनकुञ्जर।
सरणागतवज्रपञ्जर। सहजकीर्त्तिध्वज। सङ्ग्रामविजयध्वज।
चेङ्गिरेय मनोभङ्ग। वीरप्रसङ्ग। **नरसिङ्गवर्म्म**निर्म्मूलनं। कल-
पालकालानलं। हानुङ्गलु गोण्ड। चतुर्म्मुख गण्ड। चतुरचतु-
र्म्मुखन्। आहवषण्मुख। सरस्वतीकर्णावतंसन्। उन्नतविष्णुवंस।
रिपुहृदयसेल्ल। भीतरंकोल्ल। दानविनोद। चम्पकामोद।
चतुस्समयसमुद्धरण। गण्डराभरण। विवेकनारायण। वीरपारा-
यण। साहित्यविद्याधर। समरधुरन्धर। पोयूसलान्वयभानु।
कविजनकामधेनु। कलियुगपार्त्थ। दुष्टर्गोधूर्त्त। सङ्ग्रामराम।
साहसभीम। हयवत्सराज। कान्तामनोज। मत्तगजभगदत्तन्।
अभिनवचारुदत्त। नीलगिरिसमुद्धरण। गण्डराभरण। कोङ्ग-
रमारि। रिपुकुलनलप्रहारि। तेरेयुरनलेव। कोयतूरतुलिव।
हेञ्जेरुदिसापट्ट। सङ्ग्रामजत्तलट्ट। पाण्ड्यनंबेङ्कोण्ड। उच्चङ्गि
गोण्ड। एकाङ्गवीर। सङ्ग्रामधीर। पोम्बुच्चनिर्द्धाटण। साविमले
निर्लोटण। वैरिकालानलन्। अहितदावानल। शत्रुनरपाल-

दिशापट्ट मित्रनरपालललाटपट्ट । घट्टवनलिव । तुलुवर सेलेव । गोयिन्दवाडिभयङ्करन् । अहितबलसङ्कर । रोद्दवतुलिव । सिलगरं पिडित्र । रायरायपुरसूरेकार । वैरिभङ्गार । वीरनारायण । सौर्य्यपारायण । श्रीमतुकेशवदेवपादाराधक । रिपुमण्डलिकसाधकाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृतनुं गिरिदुर्गवनदुर्गजलदुर्गाद्यनेकदुर्गङ्गलनश्रमदिं कोण्ड चण्डप्रतापदिं गङ्गवाडितोम्भत्तरु-सासिरमुमं लोक्किगुण्डिवर मुण्डिगे साध्यम्माडि । मत्तं ॥

वृत्त—एलेयोलदृष्टरनुद्धतारिगल नाटन्दोत्ति बेङ्कोण्डुदो—
र्व्वलदिं देशमनावगं तनगे साध्यं माडिरलु गङ्गम—
ण्डलमेन्दोलेगे तेत्तु मित्तु बेसनं पूण्दिर्प्पिनं विष्णु पो—
य्सलनिर्द्द सुखदिन्दे राज्यदोदविन्दं सन्ततोत्साहदिं ॥१०॥
एत्तिद नेत्तलत्तलिदिराद-नृपालकरल्कि बल्कि क—
ण्डित्तु समस्तवस्तुगलनालुतनमंसलेपुण्दु सन्ततं ।
सुत्तलुमोलगिप्परेने मुन्निनवर्गमनेकरादव—
र्गत्तलगं पोगर्त्तेगेने वण्णिपनावनो विष्णुभूपनं ॥ ११॥

अन्तु त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्कतारं बरं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि पिरियरसि पट्टमहादेवि सान्तलदेवी ॥

(दक्षिणमुख)

स्वस्त्यनवरतपरमकल्याणाभ्युदयसहस्रफलभोगभागिनि

द्वितीयलक्ष्मीलक्षणसमानेयुं । सकलगुणगणानूनेयुं । अभिनव रुग्गुमिणीदेवियुं । पतिहितसत्यभावेयुं । विवेकैकबृहस्पतियुं । प्रत्युत्पन्नवाचस्पतियुं । मुनिजनविनेयजनविनीतेयुं । चतुस्समय-समुद्धरणेयुं । व्रतगुणशीलचारित्रान्तःकरणेयुं । लोकैक विख्यातेयुं । पतिव्रताप्रभावप्रसिद्धसीतेयुं । सकलवन्दिजन-चिन्तामणियुं । सम्यक्तचूडामणियुं । उद्वृत्तसवतिगन्ध-वारणेयुं । पुण्योपार्ज्जनकरणकारणेयुं । मनोजराजविजेयपताकेयुं । निजकलाभ्युदयदीपिकेयुं । गीतवाद्यसूत्रधारेयुं । जिनसमयसमु-दितप्राकारेयुं । जिनधर्म्मकथाकथनप्रमोदेयुं । आहाराभयभैषज्य-शास्त्रदानविनोदेयुं । जिनधर्म्मनिर्म्मलेयुं । भव्यजनवत्सलेयुं । जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्गेयुमप्प ॥

कंद ॥ आ नेगर्द विष्णुनृपन म—
नो-नयन-प्रिये चलालनीलालकि च—
न्द्रानने कामन रतियलु
तानेणे तोणे सरिसमाने शान्तलदेवी ॥ १२ ॥

वृत्त । धुरदोलु विष्णुनृपालकङ्गे विजयश्रीवक्षदोलु सन्ततं
परमानन्ददिनोलु निल्व विपुलश्रीतेजदुद्दानियं ।
वरदिग्भित्तियनेय्दिसलूनेरेव कीर्तिश्रीयेनुतिप्पुंदी
धरेयोलु शान्तलदेविय नेरेये बण्णिप्पण्णानेवण्णिपं ॥ १३ ॥

कलिकाल विष्णुवक्ष—
स्थलदोलुकलिकाललक्ष्मि नेलसिदलेने शा—

न्तलदेविय सौभाग्यम—
नेल गलवण्णि सुवेनेम्बनेवण्णिसुव ॥ १४ ॥

शान्तलदेविगे सद्गु ण—
मन्तेगे सौभाग्यभाग्यवतिगे वचःश्री—
कान्तेयुमगजेयुमच्युत—
कान्तेयुमेणेयल्लदुलिद सतियर्द्दोरेये ॥ १५ ॥

अक्कर ॥ गुरुगलु प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवरे पेत्ततायि गुणनिधि-
माचिकव्वे

पिरियपेर्ग्गडे मारसिङ्गय्यं तन्दे मावनुं पेर्ग्गडे सिङ्गिमय्य ।
अरसं विष्णुवर्द्धननृपं वल्लभं जिननाथंतनगेन्दु मिष्टदेय्वं
अरसि शान्तलदेविय महिमेयंवण्णिसलुवक्कुमेभूतलदोलु॥१६॥

सकवर्षं १०५० मूरेनेय विरोधिकृत्सम्वत्सरद. चैत्र शुद्धपञ्चमी
सोमवारदन्दु सिवगङ्गेय तीर्थदलु मुडिपि स्वर्ग्गतेयादलु ॥

वृत्त ॥ ई कलिकालदोल् मनुबृहस्पतिबन्दि जनाश्रयं जग—
व्यापितकामधेनुवभिमानि महाप्रभुपण्डिताश्रयं ।
लोकजनस्तुतं गुणगणाभरणं जगदेकदानिय—
व्याकुलमन्त्रियेन्दुपोगल्गुं धरे पेर्ग्गडे मारसिङ्गन ॥ १७ ॥

दोरेयेपेर्ग्गडे मारसिङ्ग विभुविङ्गी कालदोलु [......]
पुरुषार्थङ्गलोलत्युदारतेयोलं धर्म्मानुरागङ्गलोलु ।
हरपादाम्बुजभक्तियोलु नियमदोलु शीलङ्गलोलु तानेनलु
सुरलोकक्के मनोमुदंबेरसु पोदं भूतलं कीर्त्तिसलु ॥ १८ ॥

कन्द ॥ अनुपम-शान्तल देवियु—
मनुनयदिं तन्दे मारसिङ्गय्यनुमिं-
बिने जननि-माचिकब्बेयु—
मिनिबरु मोडनोडने मुडिपि स्वर्गतरादरु ॥ १६ ॥
लेखक बोकिमय्य ।
(पश्चिममुख)
अरसि सुरगतियनेय्‌दिद—
लिरलागेनगेन्दु बन्दु बेलुगोलदल्लु दु—
र्द्धर-सन्यासनदि [न्दं]
परिणते तायि माचिकब्बे तानुं तोरेदल्लु ॥ २० ॥
वृत्त ॥ अरेमगुल्दिर्दकण्मलर्गलोडुव पञ्चपदं जिनेन्द्रनं
स्मरियिसुबोजे बन्धुजनमं बिडिपुन्नति सन्यसकेव
न्दिरलो सेदोन्दुतिङ्गलुपवासदोलिम्बिनेमाचिकब्बे ता
सुरगतिगेय्‌दिदल्लु सकलभव्यरसन्निधियोल्लु समाधियिं ॥२१॥
कन्द ॥ आ मारसिङ्ग मय्यन
कामिनिजिनचरणभक्ते गुणसंयुतं उ-
द्दाम-पतिब्रते पन्दी—
भूमिजनं पोगल्ले माचिकब्बेये नेगल्दल्लु ॥ २२ ॥
जिनपदभक्ते बन्धुजनपूजितेयाश्रितकामधेनुका—
मन सतिगं महासतिगुणाभरणि दानविनोदे सन्ततं ।
मुनिजनपादपङ्करुहभक्ते जनस्तुते मारसिङ्गम—
य्यन सति माचिकब्बे येने कीर्त्तिसुगुं धरे मेच्चिनिश्चलं ॥२३॥

जिननाथं तनगाप्तनागे वलदेवं तन्दे पेत्तव्वे स—
द्वनितामेसरे वाच्चिकव्वे येने तम्मं सिङ्गणं सन्दमान्—
तनदिन्दग्गद माचिकव्वे सुर-लोकक्कोदलेन्देन्दुमे—
दिनियेल्लं पोगलुत्तमिप्पुदेने वण्णिप्पणानेवण्णिपं ॥ २४ ॥

कन्द ॥ पेण्डिर्स्सन्यासनं गोण्डवरोलगिनितंवल्लरारेम्बिनं कै-
कोण्डागलुघोरवीरव्रतपरिणतेयं मेच्चि सन्तोषदिन्दं ।
पाण्डित्य चित्तदोलु तल्तिरे जिनचरणाम्भोजमं भाविसुत्तं
कोण्डाडलुधात्रितन्नं सुरगतिवडेदलुलीलेयिं माचिकव्वे ॥२५॥

दानमननूनमं कः
केनार्त्थी येन्दु कोट्टु जिननं मनदोलु ।
ध्यानिसुतं मुडिपिदलि—
न्नेनेम्चुदो माचिकव्वेयोन्दुन्नतियं ॥२६॥

इन्तु तम्म गुरुगलु **प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवरं वर्द्धमानदेवरं रविचन्द्रदेवरं** समस्तभव्यजनङ्गल सन्निधियोलु सन्यसनमं कैकोण्डवर पेल्व समाधियं केलुत्त मुडिपिदलु ॥

पण्डितमरणदिनी भू—
मण्डलदोलु माचिकव्वेयन्तेवोलार्कें—
कोण्डिन्तु नेगल्दलरिगल—
खण्डितमं घोर-वीर-सन्यासनम ॥ २७ ॥

अवर वंशावतारमेन्तेन्दडे ॥

कन्द ॥ जिनधर्म्मनिर्म्मलं भ—
व्य-निधानं गुणगणाश्रयं मनुचरितं ।

मुनिचरण-कमल-भृङ्ग
जन-विनुतं **नागवर्म्म**दण्डाधीशं ।। २८ ।।

वृत्त ।। अनुपम-नागवर्म्मनकुलाङ्गने पेम्पिन चन्दिकब्बे स--
ज्जननुते मानिदानिगुणिमिक्कपतिव्रते सीलदिन्दे मे---
दिनिसुतेगं मिगिलुपोगलल्लानरियें गुणदङ्ककार्त्तियं
जिनपदभक्तेयं भुवनसंस्तुतेयं जगदेकदानियं ।।२९।।

अवर्गों सुपुत्रं वुधजन —
निवहक्कार्त्तीव कामधेनु वेनुत्तं ।
भुवनजनं पोगलल्दु मि—
क्कनुदयं गेय्दनुत्तमं **बलदेव** ।।३०।।

वृत्त ।। सकलकलाश्रयं गुणगणाभरणं प्रभु पण्डिताश्रयं
सुकविजनस्तुतं जिनपदाब्जभृङ्गननूनदानिलौ—
किकपरमार्त्थमेम्बेरडुमन्नेरे बल्लनेनुत्ते दण्डना—
यक बलदेवनं पोगल्वुदम्बुधि-वेष्टित-भूरि-भूतलं ।।३१।।

मुनिनिवहक्के भव्यनिकरक्के जिनेश्वर-पूजेगल्गे मि—
क्कनुपमदानधर्म्मदोदविङ्गे निरन्तरमोन्दे मार्गदिं ।
मनेयोलनाकुलं मडुवेयन्दद पाङ्गिनोलुण्वुदेन्दडिं
मनुजनिधाननं पोगल्वने वोगल्वं **बलदेव**मार्त्थन ।।३२।।

स्थिरने मेरु-गिरीन्द्रदिन्दे मिगिले गम्भीरने वाय्पु सा-
गरदिन्दगल मेन्तु दानिये सुरोर्व्वीजक्केमेलु भोगिये ।
सुरराजङ्गेणे येन्दु कीर्त्तिपुदु कय् कोण्डल्करिं सन्ततं
धरेयोल् श्रीबलदेवमांत्यननिलालोकैकविख्यातन ।।३३।।

कन्द ॥ बलदेव-दण्डनायक—

नलङ्घ्य-भुजबल-पराक्रमं मनुचरितं ।

जलनिधिवेष्टितधात्री—

वलदोल्लु समनारो मन्त्रिचूड़ामणियोल्लु ॥२४॥

श्रीमत् चारुकीर्त्तिदेवर गुड्ड लेखकबोकिमय्य वरद विरुदरूवारि-मुखतिलक गङ्गाचारिय तम्म कांवाचारि कण्डरिसिद॥

(उत्तर मुख)

स्वस्त्यनवरतप्रबलरिपुबलविषमसमरावनिमहामहारिसंहार-करणकारण । प्रचण्डदण्डनायकमुखदर्प्पण । कथकमागध-पुण्यपाठककविगमकिवादिवाग्मिजनतादारिद्रसन्तर्प्पण । जिन-समयमहागगनशोभाकरदिवाकर । सकलमुनिजननिरन्तरदान-गुणाश्रयश्रेयांस । सरस्वतीकर्ण्णावतंस । गोत्रपवित्र । पराङ्ग-नापुत्र । बन्धुजनमनोरञ्जन । दुरितप्रभञ्जन । क्रोधलोभानृत-भयमानमदविदूर । गुत्तचारुदत्तजीमूतवाहनसमानपरोपका-रोदार । पापविदूर । जिनधर्म्मनिर्म्मल । भव्यजनवत्सल । जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्गन् । अनुपमगुणगणोत्तुङ्ग । मुनिचरणसरसिरुहभृङ्ग । पण्डितमण्डलीपुण्डरीकवनप्रसङ्ग । जिनधर्म्मकथाकथनप्रमोदनुं । आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनो-दनुमप्प श्रीमत् बलदेव दण्डनायकनेने नेगल्द ॥

आ बलदेवङ्ग मृग—

शावेक्षणे यनिप बाचिकब्बेगव खिलो—

र्व्वी-बन्धु पुट्टिदं गुणि—

लोबरनदटलेव सिङ्गिमय्यनुदारं ॥३५॥

वृत्त ॥ जिनपतिभक्तनिष्टजनवत्सलनाश्रितकल्पभूरुहं

मुनिचरणाम्बुजातयुगभृङ्गनुदारननूनदानि म–

त्तिन पुरुषर्ग्गे पोलिसुवडार्द्दोरेयेम्बिनेगं नेगल्दनी-

मनुज निधाननेन्दु पोगल्गुं धरे पेग्गडे सिङ्गिमय्यन ॥३६॥

जिनधर्म्माम्बरतिग्मरोचि सुचरित्रं भव्यवंशोत्तमं सि–

ष्टनिधानं मन्त्रिचिन्तामणि बुधविनुतं गोत्रवंशाम्बरार्क्कं ।

वनिताचित्तप्रियं निर्म्मलननुपमनत्युत्तमं कूरे कूर्प्पं

विनयाम्भोराशि विद्यानिधि गुणनिलयं धात्रियोलिसङ्गिमय्यं ॥

॥ ३७ ॥

कन्द ॥ श्रीयादेवि गुणाग्रणि–

यी युगदोलु दानधर्म्मचिन्तामणि भू–

देविय कोन्ती देविय

दोरेयन्न सिङ्गिमय्यन वधुव ॥ ३८ ॥

स्वस्त्यनवरतपरमकल्याणाभ्युदयसतसहस्रफलभोगभागिनि द्वितीयलक्ष्मीसमानेयुं । सकलकलागमानूनेयुं विवेकैकबृहस्पतियुं मुनिजनविनेयजनविनीतेयुं पतिव्रताप्रभावप्रसिद्धसीतेयुं सम्यक्त चूड़ामणियुं उद्वृत्तसवतिगन्धवारणेयुं आहाराभयभैषज्यशास्त्र दानविनोदेयुं अप्प श्रीमद्विष्णुवर्द्धन-पोय्सलदेवर पिरियरसिपट्ट-महादेवि शान्तलदेवियश्रीबेल्गोलतीर्थदोलु सवतिगन्धवारण जिनालयमं माडिसियिदक्केदेवतापूजेगं रिषिसमुदायकाहारदानक्कं जीर्णोद्धारक्कं कल्कणिनाड मोट्टेनविलेयुमं गङ्गसमुद्रद नडुवयल-

लयय्वत्तुकोलगगर्दैय तोण्टमुमं नाल्वत्तुगधाणपोन्ननिक्कि कट्टिसि चारुगिङ्गे विलसनकट्टमुमं श्रीमद्विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेवरं बेडि-कोण्डु सकवर्ष सायिरद नाल्वत्तयूदेनेय शोभकृत्सम्वत्सरद चैत्रशुद्धपडिवबृहस्पतिवारदन्दु तम्म गुरुगलु श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पोस्तकगच्छद श्रीमन्मेघचन्द्रत्रैविद्यदेवरशिष्यरप्प प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर्गे पादप्रक्षालनं माडि सर्व्वबाधापरिहार-वागि बिट्टदत्ति ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दिन्तिदनेय्दे काव पुरुषर्गायुं महाश्रीयुम—
केयिदं कायदे काय्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वाणरा-
सियोलेक्कोटिमुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदो-
न्दयशं सार्गुमिदेन्दु सारिदपुवी शैलाक्षर सन्ततं ॥३९॥

श्लोक ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां ।
षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रमिः ॥४०॥

[यह लेख तीन भागों में विभक्त है । आदि से वत्तीसवें पद्य तक इसमें द्वारावती के यादव व शीय पोय्सल नरेश विनयादित्य व उनके पुत्र और उत्तराधिकारी एरेयङ्ग व उनके पुत्र और उत्तराधिकारी विष्णु-वर्द्धन का वर्णन है । विष्णुवर्द्धन बड़ा प्रतापी नरेश हुआ । इसने अनेक माण्डलिक राजाओं को जीतकर अपना राज्य-विस्तार बढ़ाया । इसकी पटरानी शान्तलदेवी जैनधर्मावलम्बिनी, धर्मपरायणा और प्रभा-चन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या थी । इसने शक सं० १०५० चैत्र सुदि ५ सोमवार को शिवगङ्गे नामक स्थान पर शरीर त्याग किया । शान्तलदेवी के पिता का नाम मारसिङ्गय्य और माता का नाम माचिकब्बे था । इन्होंने शान्तलदेवी के पश्चात् शरीरत्याग किया ।

लेख के दूसरे भाग मे,'जो पद्य २० से ३४ तक जाता है, शान्तल देवी की माता माचिकव्वे का वेल्गोल में आकर एक मास के अनशन व्रत के पश्चात् संन्यास विधि से देहत्याग करने का वर्णन है और पश्चात् उसके कुल का वर्णन है। दण्डाधीश नागवर्म और उनकी भार्या चन्दिकव्वे के पुत्र प्रतापी बलदेव दण्डनायक और उनकी भार्या बाचिकव्वे से ही माचिकव्वे की उत्पत्ति हुई थी। माचिकव्वे ने अपने गुरु प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव, वर्धमानदेव और रविचन्द्रदेव की साक्षी से संन्यास ग्रहण किया था।

लेख के अन्तिम भाग में बलदेव दण्डनायक और उनके पुत्र सिङ्गिमय्य की प्रशस्ति के पश्चात् शान्तलदेवी द्वारा सवति गन्धवारण नामक जिन मन्दिर निर्माण कराये जाने और उसकी आजीविका आदि के लिये विष्णुवर्द्धन नरेश की अनुमति से कुछ भूमि का दान दिये जाने का उल्लेख है। यह दान मूलसंघ, देशिय गण, पुस्तक गच्छ के मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव के शिष्य प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव को दिया गया था।]

[नोट—लेख में शक सं० १०५० विरोधिकृत् कहा गया है। पर ज्योतिष गणना के अनुसार शक सं० १०५० कीलक व सं० १०५३ विरोधिकृत् सिद्ध होता है। आगे का लेख (५४) शक १०५० कीलक संवत्सर का ही है। दान शोभकृत् (शुभकृत्) संवत् मे दिया गया था जो विरोधिकृत् से आठ वर्ष पूर्व (शक सं० १०४४) में पड़ता है।]

५४ (६७)

पार्श्वनाथ बस्ति में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १०५०)

(उत्तरमुख)

श्रीमन्नाथकुलेन्दुरिन्द्र-परिषद्वन्द्यश्रुत-श्री-सुधा--
धारा-धौत-जगत्तमोऽपह-महः-पिण्ड-प्रकाण्डं महत् ।
यस्मान्निर्म्मल-धर्म्म-वार्द्धि-विपुलश्रीर्व्वर्द्धमाना सतां
भर्त्तुर्भ्भव्य-चकोर-चक्रमवतु श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥१॥

जीयादर्त्थयुतेन्द्रभूतिविदिताभिख्यो गणी गौतम--
स्वामी सप्तमहर्द्धिभिस्त्रिजगतीमापादयन्पादयोः ।
यद्बोधाम्बुधिमेत्य वीर-हिमवत्कुत्कीलकण्ठाद्बुधा--
म्भोदात्ता भुवनं पुनाति वचन-स्वच्छन्द-मन्दाकिनी ॥२॥

तीर्थेश-दर्शनभवत्रय-हक्सहस्र-विस्रब्ध-बोध-वपुषश्श्रु-
तकेवलीन्द्राः ।
निर्भिन्दतां विबुध-वृन्द-शिरोभिवन्द्यास्फूर्ज्जद्वचः-कुलिशतः
कुमताद्रिमुद्राः ॥३॥

वर्ण्यः कथन्नु महिमा भण भद्रबाहो-
र्म्मोहोरु-मल्ल-मद-मर्द्दन-वृत्तबाहोः ।
यच्छिष्यताप्तसुकृतेन स चन्द्रगुप्त-
श्शुश्रूष्यतेस्म सुचिरं वन-देवताभिः ॥ ४ ॥

वन्द्योविभुर्भुवि न कैरिह **कौण्डकुन्दः**
कुन्द-प्रभा-प्रणयि-कीर्त्ति-विभूषिताशः ।
यश्चारु-चारण-कराम्बुजचञ्चरीक-
श्चक्रे श्रुतस्य भरते प्रयतः प्रतिष्ठाम् ॥ ५ ॥

वन्द्योभस्मक-भस्म-सात्कृति-पटुः पद्मावती-देवता-
दत्तोदात्त-पदस्व-मन्त्र-वचन-व्याहूत-चन्द्रप्रभः ।
आचार्य्यस्स **समन्तभद्र**गणभृद्येनेह काले कलौ
जैनं वर्त्म समन्तभद्रमभवद्भद्रं समन्तान्मुहुः ॥ ६ ॥

चूर्णि ॥ यस्यैवंविधा वादारम्भसंरम्भविजृम्भिताभिव्यक्तय-
स्सूक्तयः ॥

वृत्त ॥ पूर्व्वं पाटलिपुत्र-मध्य-नगरे भेरी मया ताड़िता
पश्चान्मालव-**सिन्धु**-**ठक्क**-विषये **काञ्चीपुरे वैदिशे** ।
प्राप्तोऽहं **करहाटकं** बहु-भटं विद्योत्कटं सङ्कटं
वादार्त्थी विचराम्यहन्नरपते शार्द्दूल-विक्रीडितं ॥ ७ ॥

अवटु-तटमटतिझटिति स्फुट-पटु-वाचाटधूर्ज्जटेरपिजिह्वा ।
वादिनि समन्तभद्रे स्थितवति तव सदसि भूप कास्था-
न्येषां ॥ ८ ॥

योऽसौ घाति-मल-द्विषद्बल-शिला-स्तम्भावली-खण्डन —
ध्यानासिः पटुरर्हतो भगवतस्सोऽस्य प्रसादीकृतः ।
छात्रस्यापि स **सिंहनन्दि**-मुनिना नोचेत्कथं वा शिला-
स्तम्भोराज्य-रमागमाध्व-परिघस्तेनासिखण्डो घनः ॥ ९ ॥

वक्रग्रीव-महामुने-र्दश-शत-ग्रीवोऽप्यहीन्द्रो यथा—
जातं स्तोतुमलं वचोत्रलमसौ किं भग्न-वाग्मि-व्रजं ।
योऽसौ शासन-देवता-बहुमतो ह्री-वक्त्र-वादि-ग्रह—
ग्रीवोऽस्मिन्नथ-शब्द-वाच्यमवदद् मासान्समासेन षट् ॥१०॥

नवस्तोत्रं तत्र प्रसरति कवीन्द्राः कथमपि
प्रणामं वज्रादौ रचयत परन्नन्दिनि मुनौ ।
नवस्तोत्रं येन व्यरचि सकलार्हत्प्रवचन-
प्रपञ्चान्तर्भाव-प्रवण-वर-सन्दर्भ्भ सुभगं ॥ ११ ॥

महिमा स पात्रकेसरिगुरोः परं भवति यस्य भक्त्यासीत्
पद्मावती सहाया त्रिलचण-कदर्थनं कर्त्तुं ॥ १२ ॥

सुमति-देवममुं स्तुतयेन वस्सुमति-सप्तकमाप्ततयाकृतं ।
परिहृतापथ-तत्त्व-पथार्त्थिनांसुमति-कोटि-विवर्त्ति-भवार्त्ति-
हृत् ॥ १३ ॥

उदेत्य सम्यग्दिशि दच्चिणस्या कुमारसेनो मुनिरस्तमापत् ।
तत्रैव चित्रं जगदेक-भानोस्तिष्ठत्यसौ तस्य तथा प्रकाशः ॥१४॥

धर्म्मार्थकामपरिनिर्वृतिचारुचिन्तश्चिन्तामणिःप्रतिनिकेतम-
कारियेन ।
स स्तूयते सरससौख्यभुजा-सुजातश्चिन्तामणिर्म्मुनिवृषा
न कथं जनेन ॥१५॥

चूड़ामणिः कवीनां चूड़ामणि-नाम-सेव्य-काव्य-कविः ।
श्रीवर्द्धदेव एव हि कृतपुण्यः कीर्त्तिमाहर्त्तुं ॥१६॥

चूर्ण्णि ॥ य एवमुपश्लोकितो **दण्डिना** ॥

जह्नोः कन्यां जटाग्रेण बभार परमेश्वरः ।
श्रीवर्द्धदेव सन्धत्से जिह्वाग्रेण सरस्वतीं ॥१७॥

पुष्पास्त्रस्य जयो गणस्य चरणम्भूभृच्छिखा-घट्टनं
पद्भ्यामस्तु **महेश्वरस्त**दपिन प्राप्तुं तुलामीश्वरः ।
यस्याखण्ड-कलावतोऽष्ट-विलसद्दिक्पाल-मौलि-स्खलत्—
कीर्त्तिस्वस्सरितो **महेश्वर** इह स्तुत्य स्स कैस्स्यान्मुनिः
॥ १८ ॥

यस्सप्तति-महा-वादान् 'जिगायान्यानथामितान् ।
ब्रह्मरक्षोऽर्च्चितस्सोऽर्च्यो **महेश्वर**-मुनीश्वरः ॥ १९ ॥

तारा येन विनिर्ज्जिता घट-कुटी-गूढावतारा समं
बौद्धैर्य्यो धृत-पीठ-पीडित-कुदृग्देवात्त-सेवाञ्जलिः ।
प्रायश्चित्तमिवाङ्घ्रि-वारिज-रज-स्नानं च यस्याचरत्
दोषाणां सुगतस्स कस्य विषयो **देवाकलङ्कः**कृती ॥२०॥

चूर्ण्णि ॥ यस्येदमात्मनोऽनन्य-सामान्य-निरवद्य-विद्या-विभवोप-
वर्ण्णनमाकर्ण्यते ॥

राजन्**साहसतुङ्ग** सन्ति वहवः श्वेतातपत्रा नृपाः
किन्तुत्वत्सदृशा रणे विजयिनस्त्यागोन्नता दुर्ल्लभाः ।
त्वद्वत्सन्ति बुधा न सन्ति कवयो वादीश्वरा वाग्मिनो
नाना-शास्त्र-विचारचातुरधियः काले कलौ मद्विधाः ॥२१॥

नमो **मल्लिषेण**-मलधारि-देवाय ॥

(पूर्वमुख)

राजन्सर्व्वारि-दर्प्प-प्रविदलन-पटुस्त्वं यथात्र प्रसिद्ध—
स्तद्वत्ख्यातोऽहमस्यां भुवि निखिल-मदोत्पाटनः पण्डितानां।
नोचेदेषोऽहमेते तव सदसि सदा सन्ति सन्तो महान्तो
वक्तुं यस्यास्ति शक्तिः स वदतु विदिताशेष-शास्त्रो यदि स्यात् ॥
॥ २२ ॥

नाहङ्कार-वशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलं
नैरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्य-बुद्धया मया ।
राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदग्धात्मनो
बौद्धौघान्सकलान्विजित्य सुगतः पादेन विस्फोटितः ॥२३॥

श्रीपुष्पसेन-मुनिरेव पदम्महिम्नो
देवस्स यस्य समभूत्स भवान्सधर्म्मा ।
श्रीविभ्रमस्य भवनन्ननु पद्ममेव
पुष्पेषुमित्रमिह यस्य सहस्रधामा ॥२४॥

विमलचन्द्र-मुनीन्द्र-गुरोर्ग्गुरु प्रशमिताखिल वादिमदं पदं ।
यदि यथावदवैष्यत पण्डितैर्न्नुतदान्ववदिष्यतवाग्विभोः
॥ २५ ॥

चूर्णि ॥ तथाहि । यस्यायमापादित-परवादि-हृदय-शोकः पत्रा-लम्बन-श्लोकः ॥

पत्रं शत्रु-भयङ्करोरु-भवन-द्वारे सदा सञ्चरन्—
नाना-राज-करीन्द्र-वृन्द-तुरग-व्राताकुले स्थापितम् ।
शैवान्पाशुपतांस्तथागतसुतान्कापालिकान्कापिला—

तुद्दिश्योद्धत-चेतसा **विमलचन्द्रा**शाम्बरेणादरात् ॥२६॥

दुरित-ग्रह-निग्रहाद्भयं यदि भो भूरि-नरेन्द्र-वन्दितम् ।
ननु तेन हि भव्यदेहिनो भजतश्श्रीमुनिमिन्द्र**नन्दिनम्**
॥ २७ ॥

घट-वाद-घटा-कोटि-कोविदः कोविदां प्रवाक् ।
परवादिमल्ल-देवो देव एव न संशयः ॥२८॥

चूर्णि ॥ येनेयमात्म-नामधेय-निरुक्तिरुक्तानाम पृष्टवन्तं **कृष्ण-राजं** प्रति ॥

गृहीत-पक्षादितरः परस्स्यात्तद्वादिनस्ते परवादिनस्स्युः ।
तेषां हि मल्लः **परवादिमल्ल**स्तन्नाममन्नाम वदन्तिसन्तः
॥ २९ ॥

आचार्य्यवर्य्यो यति**रार्य्यदेवो** राद्धान्त-कर्त्ता
ध्रियतां स मूर्ध्नि ।
यस्स्वर्ग्ग-यानोत्सव-सीम्नि कायोत्सर्गस्थितः
कायमुदुत्ससर्ज ॥३०॥

श्रवण-कृत-तृणोऽसौ संयमं ज्ञातु-कामैः
शयन-विहित-वेला-सुप्त-लुप्तावधानः ।
श्रुतिमरभसवृत्योन्मृज्य पिच्छेन शिश्ये
किल मृदु-परिवृत्या दत्त-तत्कीट-वर्त्मा ॥३१॥

विश्वं यश्श्रुत-बिन्दुनावरुरुधे भावं कुशाग्रीयया
बुध्येवाति-महीयसा प्रवचसा बद्धं गणाधीश्वरैः ।
शिष्यान्प्रत्यनुकम्पया कृशमतीनैदं युगीनान्सुगी-

स्तं वाचाच्चर्चत **चन्द्रकीर्त्ति**-गणिनं चन्द्राभ-कीर्त्तिं बुधाः

॥३२॥

सद्धर्म्म-कर्म्म-प्रकृति प्रणामाद्यस्योग्र-कर्म्म-प्रकृति-प्रमोक्षः ।
तत्रास्त्रि **कर्म्म-प्रकृति**न्नमामो भट्टारकं दृष्ट-कृतान्त-पारम्

॥ ३३ ॥

अपि स्व-वाग्व्यस्त-समस्त-विद्यस्त्रैविद्य-शब्देऽप्यनुमन्यमानः ।
श्रीपालदेवः प्रतिपालनीयस्सवा यतस्तत्व-विवेचनी धीः

॥ ३४ ॥

तीर्थ्य श्री**मतिसागरो** गुरुरिला-चक्रं चकार स्फुर-
ज्ज्योतिः-पीत-तमर्पयः-प्रविततिः पूतं प्रभूताशयः ।
यस्माद्दू रि-परार्द्ध-पावन-गुण-श्रीवर्द्धमानोल्लस-
द्रन्नोत्पत्तिरिला-तलाधिप-शिरश्शृङ्गारकारिण्यभूत् ॥३५॥
यत्राभियोक्तरि लघुर्ल्लघु-धाम-सोम-सौम्याङ्गभृत्स च भवत्यपि-

भूति-भूमिः ।

विद्या-धनञ्जय-पद विशदंदधानो जिष्णु स एव हि महा-

मुनि**हेमसेनः** ॥३६॥

चूर्णि ॥ यस्यायमवनिपति-परिषदि निग्रह-मही-निपात-भीति-
दुस्थ-दुर्गर्व्व-पर्व्वतारूढ़-प्रतिवादिलोकः प्रतिज्ञाश्लोक. ॥

तर्क्के व्याकरणे कृत-श्रमतया धीमत्तयाप्युद्धतो
मध्यस्थेषु मनीषिषु क्षितिभृतामग्रे मया स्पर्द्धया ।
यः कश्चित्प्रतिवक्ति तस्य विदुषो वाग्मेय-भङ्ग परं
कुर्व्वेऽवश्यमिति प्रतीहि नृपतेहे **हेमसेनं** मतं ॥३७॥

हितैषिणां यस्य नृणामुदात्त-वाचा निवद्धा हित-रूप-सिद्धिः।
वन्द्यो **दयापाल**-मुनिः स वाचा सिद्धस्सताम्मूर्द्धनि यः
प्रभावैः ॥ ३८ ॥

यस्य श्री**मतिसागरो** गुरुरसौ चञ्चद्यशश्चन्द्रभूः
श्रीमान्यस्य स **वादिराज**-गणभृत्स ब्रह्मचारी विभोः।
एकोऽतीव कृती स एव हि **दयापाल**व्रती यन्मन—
स्यास्तामन्य-परिग्रह-ग्रह-कथा स्वे विग्रहे विग्रहः ॥३९॥
त्रैलोक्य-दीपिका वाणी द्वाभ्यामेवोदगादिह।
जिनराजत एकस्मादेकस्मा **द्वादिराजतः** ॥४०॥
आरुह्याम्बरमिन्दु-बिम्ब-रचितौत्सुक्यं सदा यद्यश-
श्छत्रं वाक्चमरीज-राजि-रुचयोऽभ्यर्ण च यत्कर्ण्णयोः।
सेव्यःसिंहसमर्च्च्य-पीठ-विभवः सर्व्व-प्रवादि-प्रजा-
दत्तोच्चैर्जयकार-सार-महिमाश्री**वादिराजो**विदां ॥४१॥
चूर्ण्णि ॥ यदीय-गुण-गोचरोऽयं वचन-विलास-प्रसरः कवीनां।
नमोऽर्हते ॥

(दक्षिणमुख)

श्रीमच्चालुक्य-चक्रेश्वर-जयकटके वाग्वधू-जन्म-भूमौ
निष्काण्डण्डिण्डिमः पर्य्यटति पटु-रटो **वादिराज**स्य
जिष्णोः।

जह्यु द्वद्वाद-दर्प्पो जहिहि गमकता गर्व्व-भूमा जहाहि
व्याहारेर्ष्यो जहीहि स्फुट-मृदु-मधुर-श्रव्य-काव्यावलेपः
॥ ४२ ॥

पाताले व्याल-राजो वसति सुविदितं यस्य जिह्वा-सहस्रं
निर्ग्गन्ता स्वर्गतोऽसौ न भवति धिषणो वज्रभृद्यस्यशिष्यः ।
जीवेतान्तावदेतौ निलय-वल-वशाद्वादिनः केऽत्रनान्ये
गर्व्वं निर्म्मुच्य सर्व्वं जयिनमिन-सभे **वादिराजं** नमन्ति
॥ ४३ ॥

वाग्देवी सुचिरप्रयोग-सुदृढ़-प्रेमाणमप्यादरा-
दादत्ते मम पार्श्वतोऽयमधुना श्री**वादिराजो** मुनिः ।
भो भो पश्यत पश्यतैप यमिनां किं धर्म्म इत्युच्चकै-
रब्रह्मण्य-पराः पुरातनमुनेर्व्वाग्वृत्तयः पान्तु वः ॥४४॥
गङ्गावनिश्वर-शिरो-मणि-बद्ध-सन्ध्या-रागोल्लसच्चरण-चारु-
नखेन्दु-लक्ष्मीः ।
श्रीशब्द-पूर्व्व-विजयान्त-विनूत-नामा धीमानमानुष-गुणोऽ-
स्ततमः प्रमांशुः ॥४५॥

चूर्णि ॥ स्तुतो हि स भवानेष श्री**वादिराज**-देवेन ॥
यद्विद्या-तपसोः प्रशस्तमुभयं श्री**हेमसेने** मुनौ
प्रागासीत्सुचिराभियोग-बलतो नीतं परामुन्नतिं ।
प्रायः श्रीविजये तदेतदखिलं तत्पीठिकायां स्थिते
सङ्क्रान्तं कथमन्यथानतिचिराद्विद्येदृगीदृक् तपः ॥४६॥
विद्योदयोऽस्ति न मदोऽस्ति तपोऽस्ति भास्व-
न्नोग्रत्वमस्ति विभुतास्ति न चास्ति मानः ।
यस्यश्रये **कमलभद्र**-मुनीश्वरन्तं
यः ख्यातिमापदिह शाम्यदयैर्ग्गुणौघैः ॥४७॥

स्मरण-मात्र-पवित्रतमं मनो भवति यस्य सतामिह तीर्त्थिनां।
तमतिनिर्म्मलमात्म-विशुद्धये **कमलभद्र**सरोवरमाश्रये
॥ ४८ ॥

सर्व्वाङ्गैर्य्यमिहालिलिङ्ग सुमहाभागं कलौ भारती
भास्वन्तं गुण-रत्न-भूषण-गणैरप्यग्रिमं योगिनां।
तं सन्तस्तुवतामलङ्कृत-**दयापाला**भिधानं महा-
सूरिं भूरिधियोऽत्र पण्डित-पदं यत्रैव युक्तं स्मृताः ॥४९॥

विजित-मदन-दर्प्पः श्री**दयापाल**देवो
विदित-सकल-शास्त्रो निर्जिताशेषवादी।
विमलतर-यशोभिर्व्याप्त-दिक्-चक्रवालो
जयति नत-महीभृन्मौलि-रत्नारुणाङ्घ्रिः ॥५०॥

यस्योपास्य पवित्र-पाद-कमल-द्वन्द्वन्नृपः **पोय्सलो**
लक्ष्मीं सन्निधिमानयत्स **विनयादित्यः** कृताज्ञाभुवः।
कस्तस्यार्हति **शान्तिदेव**-यमिनस्सामर्त्थ्यमित्थं तथे-
त्याख्यातुं विरलाः खलु स्फुरदुरु-ज्योतिर्दृशा स्तादृशाः ॥५१॥

स्वामीति **पाण्ड्य**-पृथिवी-पतिना निसृष्ट-
नामाप्त-दृष्टि-विभवेन निज-प्रसादात्।
धन्यस्स एव मुनिरा**हवमल्ल**भूभु—
गास्थायिका-प्रथित-शब्द-**चतुर्म्मुखाख्यः** ॥५२॥

श्रीमुल्लूर-विदूर-सारवसुधा-रत्नं स नाथो गुणो
नाल्लूणेन महीक्षितागुरु-महःपिण्डशिरो-मण्डनः।

आराध्यो गुणसेन-पण्डित-पतिस्स स्वास्थ्यकामैर्ज्जनै
यत्सूक्तागद-गन्धतोऽपि गलित-ग्लानिं गतिं लम्भिताः ॥५३॥

वन्दे वन्दितमादरादहरहस्स्याद्वाद-विद्या-विदां
स्वान्त-ध्वान्त-वितान-धूनन-विधौ भास्वन्तमन्यं भुवि ।
भक्त्या त्वाजितसेन मानतिकृतां यत्सन्नियोगान्मनः—
पद्मं सद्म भवेद्विकास-विभवस्योन्मुक्त-निद्रा-भरं ॥५४॥

मिथ्या-भाषण-भूषणं परिहरेतौद्धत्य...न्मुञ्चत
स्याद्वादं वदतानमेत विनयाद्वादीभ-कण्ठीरवं ।
नो चेत्तद्गु.. गर्ज्जित-श्रुति-भय-भ्रान्ता स्थ यूयं यत-
स्तूर्ण्णं निग्रह-जीर्ण्णकूप-कुहरे वादि-द्विपाः पातिनः ॥५५॥

गुणाः कुन्द-स्पन्दोड्डमर-समरा वगमृत-वाः—
प्लव-प्राय-प्रेयः-प्रसर-सरसा कीर्त्तिरिव सा ।
नखेन्दु-ज्योत्स्नाङ्घ्रेन्नृप-चय-चकोर-प्रणयिनी
न कासां श्लाघानां पदमजितसेन व्रतिपतिः ॥५६॥

सकल-भुवनपालानम्र-मूर्द्धावबद्ध—
स्फुरित-मुकुट-चूडालीढ-पादारविन्दं ।
मदवदखिल-वादीभेन्द्र-कुम्भ-प्रभेदी
गणभृदजितसेनो भाति वादीभसिंहः ॥५७॥

चूर्ण्णि ॥ यस्य संसार-वैराग्य-वैभवमेवंविधास्स्ववाच स्सूचयन्ति ।

प्राप्तं श्रीजिनशासनं त्रिभुवने यद्दुर्ल्लभं प्राणिनां
यत्संसार-समुद्र-मग्न-जनता-हस्तावलम्बायितं ।

यत्प्राप्ताः परनिर्व्यपेक्ष-सकल-ज्ञान-श्रियालङ्कृता-
स्तस्मात्किं गहनं कुतो भयवशः कावात्र देहे रतिः ॥५८॥
आत्मैश्वर्य्यं विदितमधुनानन्त-बोधादि-रूपं
तत्सम्प्राप्त्यै तदनु समयं वर्त्तते ऽत्रैव चेतः।
त्यक्तान्यस्मिन्सुरपति-सुखे चक्रि-सौख्ये च तृष्णा
तत्तुच्छार्थैरलमलमधी-क्षोभनैर्लोकवृत्तैः ॥५९॥
अजानन्नात्मानं सकल-विषय-ज्ञान-वपुष
सदा शान्तं स्वान्तःकरणमपि तत्साधनतया।
वही-रागद्वेषैः कलुषितमनाः कोऽपि यततां
कथं जानन्नेनं क्षणमपि ततोऽन्यत्र यतते ॥६०॥

(पश्चिममुख)

चूर्णिः॥ यस्य च शिष्ययोः**कविताकान्त-वादिकोला-
हला**परनामधेययोः **शान्तिनाथपद्मनाभ**-पण्डितयोरखण्ड-
पाण्डित्य-गुणोपवर्णनमिदमसम्पूर्णं ॥

त्वामासाद्य महाधियं परिगता या विश्व-विद्वज्जन-
ज्येष्ठाराध्य-गुणाचिरेण सरसा वैदग्ध्य-सम्पद्गिरा।
कृत्स्नाशान्त-निरन्तरोदित-यशश्श्रीकान्त शान्ते न तां
वक्तुं सापि सरस्वती प्रभवति ब्रूमः कथन्तद्वयं ॥६१॥
व्यावृत्त-भूरि-मद-सन्तति विस्मृतेर्ष्या-
पारुष्यमात्त-करुणारुति-कान्दिशीकं।
धावन्ति हन्त परवादिगजास्त्रसन्तः
श्रीपद्मनाभ-बुध-गन्ध-गजस्य गन्धात् ॥६२॥

दीक्षा च शिक्षा च यतो यतीना जैनंतपस्तापहरन्दधानात्
कुमारसेनोऽवतु यच्चरित्रं श्रेयः पथोदाहरणं पवित्रं ॥६३॥
जगद्दरिम-वस्मर-स्मर-मदान्ध-गन्ध-द्विप-
द्विधाकरण-केसरी चरण-भूष्य-भूभृच्छिखः ।
द्वि-षड्-गुण-वपुस्तपश्चरण-चण्ड-धामोदयो
दयेत मम **मल्लिषेण-मलधारिदेवो** गुरुः ॥६४॥
वन्दे तं **मलधारिणं** मुनिपति मोह-द्विषद्-व्याहति-
व्यापार-व्यवसाय-सार-हृदयं सत्संयमोरु-श्रियं ।
यत्कायोपचयीभवन्मलमपि प्रऽरक्त-भक्ति-क्रमा-
नम्राकम्र-मनो-मिलन्मल-मपि-प्रक्षालनैकक्षम ॥६५॥
अतुच्छ-तिमिर-च्छटा-जटिल-जन्म-जीर्णाटवी-
दवानल-तुला-जुपा पृथु-तपः-प्रभाव-त्विषां ।
पदं पद-पयोरुह-भ्रमित-भव्य-भृङ्गावलि-
र्म्ममोल्लसतु **मल्लिषेण**-मुनिराण्मनो-मन्दिरं ॥६६॥
नैर्म्मल्याय मलाविलाङ्गमखिल-त्रैलोक्य-राज्यश्रिये
नैष्किञ्चन्यमतुच्छ-तापहृदयेन्यश्चद्भुताशन्तप ।
यस्यासौ गुण-रत्न-रोहण-गिरिः श्री **मल्लिषेणो** गुरु-
र्व्वन्द्यो येन विचित्र-चारु-चरितै र्द्धात्री-पवित्री-कृता ॥६७॥
यस्मिन्नप्रतिमा क्षमाभिरमते यस्मिन्दया निर्द्दया-
श्लेषा यत्र-समत्वधीः प्रणयिनी यत्रास्पृहा सस्पृहा ।
कामं निर्वृ ति-कामुकस्त्वयमथाप्यग्रेसरो योगिना-
माश्चर्य्याय कथन्ननाम चरितैश्श्री**मल्लिषेणो** मुनिः ॥६८॥

यः पूज्यः पृथिवीतले यमनिशं सन्तस्स्तुवन्त्यादरात्
येनानङ्ग-धनु-र्ज्जितं मुनिजना यस्मै नमस्कुर्व्वते।
यस्मादागम-निर्णयोयमभृतां यस्यास्ति जीवेदया
यस्मिन्श्री **मलधारि**णिव्रतिपतौ धर्म्मोऽस्ति तस्मै नमः ॥६९॥
धवल-सरस-तीर्थे सैष सन्यास-धन्यां
परिणतिमनुतिष्ठं नन्दिमां निष्ठितात्मा।
व्यसृजदनिजमङ्गं भङ्गमङ्गोद्भवस्य
प्रथितुमिव समूलं भावयन्भावनाभिः ॥७०॥

चूर्णि ॥ तेन श्रीमद **जितसेन**-पण्डित-देव-दिव्य-श्री-पाद-कमल-मधुकरी-भूत-भावेन महानुभावेन जैनागमप्रसिद्धसल्लेखना-विधि-विसृज्यमान-देहेन समाधि-विधि-विलोकनोचित-करण-कुतूहल-मिलित-सकल-सङ्घ-सन्तोष-निमित्तमात्मान्तःकरण-परिणति-प्रकाशनाय निरवद्यं पद्यमिदमाशु विरचितं ॥

आराध्यरत्न-त्रयमागमोक्तं विधाय निश्शल्यमशेषजन्तोः
क्षमां च कृत्वा जिनपादमूले देहं परित्यज्य दिवंविशामः ॥७१॥

शाके शून्य-शराम्बरावनिमिते संवत्सरे कीलके
मासेफाल्गुनके तृतीय-दिवसेवारेसितेभास्करे।
स्वातौ श्वेत-सरोवरे सुरपुरं यातो यतीनां पति-
र्म्मध्याह्ने दिवसत्रयानशनतः श्री **मल्लिषेणो** मुनिः ॥७२॥

श्रीमन्मलधारि-देवरगुड्डं विरुद-लेखक-**मदनमहेश्वरं मल्लिनाथं** बरेदं विरुद-रूवारि-मुख-तिलकं गङ्गाचारि-कण्डरिसिदं ॥

५५ (६९)

कत्तिले बस्ती के द्वारे से दक्षिण की ओर एक स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० १०२२)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥ २ ॥

श्लोक ॥ श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्री कोण्डकुन्द-नामाभून्मूलसङ्घाग्रणी गणी ॥ ३ ॥
तस्यान्वयेऽजनि ख्याते ..देशिके गणे ।
गुणी देवेन्द्रसैद्धान्त-देवो देवेन्द्र-वन्दित. ॥ ४ ॥

तच्छिष्यरु ॥

जयति चतुर्म्मुख-देवो योगीश्वर-हृदय-वनज-वन-दिननाथः ।
मदन-मद-कुम्भि-कुम्भस्थल-दलनोल्बण-पटिष्ठ-निष्ठुर-सिंहः ॥ ५ ॥

योन्दोन्दु दिग्विभागदो—
लोन्दोन्दष्टोपवासदि कायोत्स-
र्गोन्दलेने नेगल्दु तिङ्गल्—
सन्दडे पारिसि चतुर्म्मुखाख्येयनाल्दरु ॥ ६ ॥

अवर्गेलिगं शिष्यराद-
प्रविमल-गुणरमल-कीर्त्ति-कान्ता-पतिगल् ।
कवि-गमकि-वादि-वाग्मि—
प्रवर-नुतच्चतुरसीति-सङ्ख्यं यनुल्लर् ॥ ७ ॥

अवरोलगे **गोपणन्दि** —
प्रवर-गुणरदिष्ट-मुद्राघातयश-
ष्कविता पितामहर्त्तं—
र्कं-वरिष्ठर्व्वेकगच्छदोल् पेसर्व्वेडेदर् ॥ ८ ॥

जयति भुवि **गोपनन्दी** जिनमतलसदमृतजलधितुहिनकरः
देशीयगणग्रगण्यो भव्याम्बुज-षण्ड-चण्डकरः ॥ ९ ॥

वृत्त ॥ तुङ्गयशोभिराममनभिमान-सुवर्ण-धराधरं तपो-
मङ्गल-लक्ष्मि-वल्लभनिलातलवन्दितगोपनन्दिया—
वङ्गमसाध्यमप्प पलकालदनिन्द-जिनेन्द्र-धर्म्ममं
गङ्गनृपालरन्दिन विभूतिय रुढियनेय्दे माडिदं ॥ १० ॥

जिनपादाम्भोज-भृङ्गं मदन-मद-हरं कर्म्म-निर्म्मूलनं वाग्-
वनिता-चित्त-प्रियं वादि-कुल-कुधर-वज्रायुधं चारु-विद्व-
ज्जन-पात्रं भव्य-चिन्तामणि सकल-कला-कोविदं काव्यकश्रा-
सननेन्दानन्ददिन्दं पोगले नेगल्दनी **गोपणन्दि**व्रतीन्द्रं
॥ ११ ॥

मलेयदे **शाङ्ख्य** मट्टविरु **भौतिक** पोङ्गि कडङ्गि बागदि-
र्त्तोलतोलबुद्ध **बौद्ध** तले-दोरदे वैष्णवडङ्गडङ्गु वाग्—

वलद पोडर्प्पु वेड गड चार्व्वक चार्व्वक निम्म दर्प्पम
सलिपनं गोपणन्दि-मुनिपुङ्गवनेम्ब मदान्ध-सिन्धुरं ॥१२॥

(दक्षिण मुख)

तगयल् जैमिनि-तिप्पिकोण्डु परियल् वैशेषिकं पोगदु-
ण्डिडंगयोत्तल् सुगतं कडङ्गि वले-गोयल्क्षपादम्बिडल्—
पुगं लोकायतनेय्दे शाङ्ख्य नडसल्कम्मम्म षट्तर्क्क-वी-
थिगलोलत्तूल्दितुगोपणन्दि-दिगिभ-प्रोद्भासि-गन्धद्विपं ॥
॥ १३ ॥

दिटनुडिवन्यवादि-मुख-मुद्रितनुद्धतवादिवाग्वलो-
द्भट-जय-काल-दण्डनपशब्द-मदान्ध कुवादि-दैत्य-धू-
र्ज्जटि कुटिल-प्रमेय-मद-वादि-भयङ्करनेन्दु दण्डुलं
स्फुट-पटु-घोषदिक्-तटमनेय्दितु वाकु-पटु-गोपनन्दिय
॥१४॥

परम-तपो-निधान वसुधैक-कुटुम्ब जैनशासना-
म्बर-परिपूर्णचन्द्र सकलागम-तत्त्व-पदार्थ-शास्त्र-वि-
स्तर-वचनाभिराम गुण-रत्न-विभूषण गोपणन्दि नि-
न्नोरेगिनिसप्पडं दोरेगलिल्लेणे-गाणेनिला [तला] प्रदोल्
॥ १५ ॥

कन्द ॥ एननंननेले पेल्वेनण्ण स-
न्मान-दानिय गुण-न्नवङ्गलं ।
दान-शक्त्यभिमान-शक्ति वि-
ज्ञान-शक्ति सले गोपणन्दिय ॥१६॥

अवर सधर्म्मरु ॥

श्रीधाराधिप **भोजराज**-मुकुट-प्रोताश्म-रश्मि-च्छटा-
च्छाया-कुङ्कुम-पङ्क-लिप्त-चरणाम्भोजात-लक्ष्मीधवः ।
न्यायाब्जाकरमण्डने दिनमणिश्शब्दाब्ज-रोदोमणि-
स्थेयात्पण्डित-पुण्डरीक-तरणिश्रीमान्**प्रभाचन्द्र**मा: ॥१७॥
श्री**चतुर्म्मुख**-देवानां शिष्योऽधृष्य:प्रवादिभिः ।
पण्डितश्री**प्रभाचन्द्रो** रुद्रवादि-गजाङ्कुशः ॥ १८ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

बौद्धोर्व्वीधर-शम्बः **नय्यायिक**-कञ्ज-कुञ्ज-विधु-बिम्बः ।
श्री**दामनन्दि**विबुधः क्षुद्र-महा-वादि-**विष्णुभट्ट**घरट्ट
॥ १९ ॥

तत्सधर्म्मरु ॥

मलधारिमुनीन्द्रोऽसौ **गुणचन्द्रा**भिधानकः ।
बलिपुरे मल्लिकामोद-**शान्तीश**-चरणार्च्चकः ॥२०॥

तत्सधर्म्मरु ॥

श्री**माघनन्दि**-सिद्धान्त-देवो देवगिरि-स्थिरः ।
स्याद्वाद-शुद्ध-सिद्धान्त-वेदी वादि-गजाङ्कुशः ॥२१॥
सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वर्द्धन-विधुः साहित्य-विद्यानिधिः
बौद्धादि प्रवितर्क्क-कर्कश-मतिःशब्दागमे भारतिः ।
सत्यायुत्तम-धर्म्म-हर्म्य-निलयस्सद्वृत्त-बोधोदयः
स्थेयाद्विश्रुत**माघनन्दि**-मुनिप श्री**वक्रगच्छा**धिपः ॥२२॥

भवर सधर्म्मरु ॥

जैनेन्द्रे पूज्य [पादः] सकल-समय-तर्कें च भट्टाकलङ्कः
साहित्ये भारविस्स्यात्कवि-गमक-महावाद-वाग्मित्व-रुन्द्रः ।
गीते वाद्ये च नृत्ये दिशि विदिशि च संवर्त्ति सत्कीर्त्ति-
मूर्त्तिः
स्थेयाच्छ्रीयोगिबृन्दार्च्चितपदजिनचन्द्रो वितन्द्रो-
मुनीन्द्रः ॥ २३ ॥

भवर सधर्म्मरु ॥

(पश्चिममुख)

वन्द्यापुर-मुनीन्द्रोऽभूद् देवेन्द्रो रुन्द्र-सद्गुणः ।
सिद्धान्ताद्यागमार्थज्ञो सज्ज्ञानादि-गुणान्वित' ॥ २४ ॥

भवर सधर्म्मरु ॥

वासवचन्द्र-मुनीन्द्रो रुन्द्र-स्याद्वाद-तर्क-कर्कश-धिषणः ।
चालुक्य-कटक-मध्ये बाल-सरस्वतिरितिप्रसिद्धिप्राप्तः
॥२५॥

इवर्गे सहोदर-सधर्म्मरु ॥

श्रीमान्यशःकीर्त्ति-विशालकीर्त्तिस्स्याद्वाद-तर्काब्ज-
विबोधनार्कः ।
बौद्धादि-वादि-द्विप-कुम्भ-भेदी श्रीसिंहलाधीश-कृतार्घ्य-
पादः ॥२६॥

भवर सधर्म्मरु ॥

मुष्टि-त्रय-प्रमिताशन-तुष्टःशिष्ट-प्रिय-स्त्रिमुष्टि-मुनीन्द्रः ।

दुष्टपरवादि-मल्लोत्कृष्टश्री**गोपनन्दि**-यतिपतिशिष्यः ॥२७॥

अवर सधर्म्मरु ॥

मलदा [धा] रि **हेमचन्द्रो गण्डविमुक्तश्च गौल**-
मुनिनामा ।

श्री **गोपनन्दि**-यति-पति-शिष्योऽभूच्छुद्ध-दर्शनज्ञानाद्याः॥
॥ २८ ॥

कन्द ॥ धारिणियोल् मनसिजसं—

ह्वारिगलं नेनेयलुग्रपापं किडुगुं ।

सूरिगलनमल-गुण-स-

न्धारिगलं **गौल-देव-मल**धारिगलं ॥ २९ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

श्री **मूलसङ्घ**गतदोषमेघे **देशीगणे** सच्चरितादिसद्गुणे ।

भारत्यतुच्छे वरवक्रगच्छे जातः सुभावः **शुभकीर्त्ति** देवः॥
॥ ३० ॥

आजिरगे कीर्त्ति-नर्त्तकिगाजिर भूगोलवागे **शुभकीर्त्ति**
बुधं ।

राजावलि-पूजितनें राजिसिदनो **वक्रगच्छ देशीयगणं**
॥ ३१ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

श्री **माघनन्दि**सिद्धान्तामृत-निधि-जात-**मेघचन्द्रस्य**

श्रीसोदरस्य भुवन-ख्याताभय**चन्द्रिका** सुता जाता
॥ ३२ ॥

भवर नवर्न्नर ॥

कल्याणकीर्ति नामाभूद्भव्य-कल्याण-कारकः ।
शाकिन्यादि-महाग्रा च निर्द्धाटन-दुर्द्धरः ॥ ३३ ॥

भवर नवर्न्नर ॥

सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-सूत-सुवचो-लक्ष्मी-ललाटेक्षण-
शब्द-व्याहृति नायिकान्य(क)चकोरानन्दचन्द्रोदय ।
माद्दिन्द-प्रमदाकटाक्ष-विशिख-व्यापार-शिक्षागुरुः
स्थेयाच्छ्रि-श्रुत-बालचन्द्रमुनिपः श्रीवक्रगच्छाधिपः ॥३४॥

श्रीमूलसङ्घ-कमलाकर-राजहंसा
देशीय-सद्गण-गुण-प्रवराब्जवंसः ।
श्रीपाश्रिजनागम-सुधार्णव-पूर्णचन्द्र
श्रीवक्रगच्छ-तिलको मुनिबालचन्द्र ॥३५॥

सिद्धान्ताखिलनागमार्त्थ-निपुण-व्याख्यानसच्छुद्धिथि
शुद्धात्मात्मक-तत्वनिर्ण्णय-वचो-विन्यासदि प्रौढिसं- ,
बद्ध-व्याकरणार्त्थ-शास्त्र-भरतालङ्कार-साहित्यदि
राद्धान्तोत्तम-बालचन्द्र-मुनियन्तात्म्यतिरा ... ॥ ३६ ॥

विश्वाशा-भरित-स्व-शीतलकर-प्रभ्राजितस्मागर-
श्रीद्व तत्कलानतः श्रवनयानन्दस्तवामीश्वरः ।
काम-ध्वंसन-भूपितः क्षितितले जातो यथार्त्थाह्वय-
स्सोऽयं विश्रुत-बालचन्द्र-मुनिपस्सिद्धान्त-चक्राधिपः ॥ ३७ ॥

(उत्तरमुख)

श्रीमूलसङ्घद देशीयगणद वक्रगच्छद कोण्डकुन्दान्वयद परियलिय **वड्डुदेवर** वलिय। **देवेन्द्र**सिद्धान्तदेवरु। अवर शिष्यरु **वृषभनन्द्या**चार्य्यरेम्ब **चतुर्म्मुख**देवरु। अवर शिष्यरु **गोपनन्दि**-पण्डितदेवरु। अवर सधर्म्मरु **महेन्द्र-चन्द्र**-पण्डित-देवरु। देवेन्द्र-सिद्धान्तदेवरु। **शुभकीर्त्ति**-पण्डित-देवरु- **माघनन्दि**-सिद्धान्त-देवरु। **जिनचन्द्र**-पण्डित-देवरु। **गुणचन्द्र**-मलधारि-देवरु। अवरोलगे**माघनन्दि**-सिद्धान्त-देवरशिष्यरु। **त्रिरत्ननन्दि**-भट्टारक-देवरु। अवर सधर्म्मरु **कल्याणकीर्त्ति**भट्टारकदेवरु। **मेघचन्द्र**-पण्डित-देवरु। **बालचन्द्र**-सिद्धान्त-देवरु। आ **गोपनन्दि**पण्डित-देवर शिष्यरु **जसकीर्त्ति**-पण्डित-देवरु। **वासवचन्द्र**-पण्डित-देवरु। **चन्दनन्दि**पण्डितदेवरु। **हेमचन्द्र**-मलधारि गण्डविमुक्तरेम्ब **गौल**देवरु **त्रिमुष्टि**-देवरु।

[यह लेख कुछ आचार्यों की प्रशस्तिमात्र है। लेख के अन्तिम भाग मे उपरिवर्णित आचार्यों के नामों की पुनरावृत्ति है। ये सब आचार्य मूलसंघ देशिय गण और वक्र गच्छ के देवेन्द्र सिद्धान्तदेव के समकालीन शिष्य थे। चतुर्मुखदेव इसलिए कहलाये क्योंकि उन्होंने चारों दिशाओं की ओर प्रस्तुत मुख होकर आठ आठ दिन के उपवास किये थे। गोपनन्दि अद्वितीय कवि और नैयायिक थे जिनके सम्मुख कोई वादी नहीं ठहरते थे। प्रभाचन्द्र धाराधीश भोजदेव द्वारा सम्मानित हुए थे। माघनन्दि, और जिनचन्द्र भारी कवि, नैयायिक और

वैयाकरण थे। देवेन्द्र चङ्कापुर के आचार्यों के नायक थे। वासवचन्द्र ने अपने वाद-पराक्रम से चालुक्य राजधानी में बालसरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी। यशःकीर्त्ति सैद्धान्तिक सिंहल द्वीप के नरेश द्वारा सम्मानित हुए थे। त्रिमुष्टि मुनीन्द्र बड़े सैद्धान्तिक थे और तीन मुष्टि अन्न का ही आहार करते थे। मलधारि हेमचन्द्र और शुभकीर्त्तिदेव बड़े सदाचारी आचार्य थे। कल्याणकीर्त्ति शाकिनी आदि भूत प्रेतों को भगाने की विद्या में निपुण थे। बालचन्द्र आगम और सिद्धान्त के अच्छे ज्ञाता थे।]

५६ (१३२)

गन्धवारण बस्ति के पूर्व की ओर

(शक सं० १०४५)

त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रसुतपःपीयूषवाराशिजः
सम्पूर्ण्णाक्षयवृत्तनिर्म्मलतनुःपुष्यद्बुधानन्दनः।
त्रैलोक्य प्रसरद्यशश्शुचिरुचिर्य्यैर्प्रास्तदोपागमः
सिद्धान्ताम्बुधिवर्द्धनो विजयते पूर्व्वः प्रभाचन्द्रमाः ॥ १ ॥

श्रीसोदराम्बुजभवाद्युदिताऽत्रिरत्रि-
जातेन्दुपुत्र-बुधपुत्र-पुरूरवस्तः।
आयुस्ततश्च नहुषो नहुषाद्ययातिः
तस्माद्यदुर्यदुकुले बहवो बभूवुः ॥ २ ॥

ख्यातेषु तेषु नृपतिः कथिवः कदाचित्
कश्चिद्वने मुनिवरंश्व(व्य)-चलः करालं।

शार्दूलकं प्रतिह **पोय्सल** इत्यतोऽभू-
त्तस्याभिधा मुनिवचोऽपि चमूरलक्ष्मः ॥ ३ ॥
ततो द्वारवतीनाथा **पोय्सला** द्वीपिलाञ्छना ।
जाताश्शशपुरे तेषु **विनयादित्य**भूपतिः ॥ ४ ॥
स श्रीवृद्धिकरं जगज्जनहितं कृत्वा धरां पालयन्
श्वेतच्छत्रसहस्रपत्रकमले लक्ष्मीं चिरं वासयन् ।
दोर्द्दण्डे रिपुखण्डनैकचतुरे वीरश्रियं नाटयन्
चिक्षेपाखिलदिक्षु शिक्षितरिपुस्तेजःप्रशस्तोदयः ॥ ५ ॥
श्रीमद्यादव**वंश**मण्डनमणिः क्षोणीशरक्षामणि-
र्लक्ष्मीहारमणिः नरेश्वरशिरःप्रोत्तुङ्गशुम्भन्मणिः ।
जीयान्नीतिपथेक्षदर्प्पणमणिर्लोकैकचूडामणि-
श्श्रीविष्णुर्व्विनयार्जितो गुणमणिस्सम्यक्त्वचूड़ामणिः ॥६ ॥

कन्द ॥ एरेद मनुजङ्गे सुरभू—
मिरुहं शरणेन्दवङ्गे कुलिशागारं ।
परवनितेगनिलतनयं
धुरदोल् पोणर्दङ्गे मृत्यु **विनयादित्य** ॥ ७ ॥
बलिदडे मलेदडे मलपर—
तलेयोल् बलिङुवनुदितभयरसवसदिं ।
चलियद मलेयद मलेपर—
तलेयोल् कैयिङुवनोडने विनयादित्यं ॥ ८ ॥
आ पोय्सल भूपङ्ग म—
होपाल-कुमार-निकर-चूडारत्नं ।

श्रीपतिनिज-भुजविनयम—
द्वीपति जनियिसिदनदटनेरेयङ्गनृपं ॥ ६ ॥

वृत्त ॥ अनुपमकीर्त्ति मूरेनेय मारुति नाल्कनेयुग्रवह्नियय्-
देनेयसमुद्रमारेनेय पूगणेयेल्लनेयुर्व्वरेपने-
ण्टेनेय कुलाद्रियोम्भतनेयुद्घसमेतहस्तिप—
त्तेनेय निधानमूर्त्तियेने पोल्वरारेरेयङ्गदेवन ॥ १० ॥
अरिपुरदोल्धगद्धगिलुदन्धगिलेम्बुदरातिभूमिपा-
लरशिरदोलगरिलगरिगरोगरिलेम्बुदु वैरिभूतले-
शर करुलोल् चिमिल्चिमि चिमीचिमिलेम्बुदुकोपवह्निदु-
र्द्धरतरमेन्दोडल्कुरदे कादुवरारेरेयङ्गदेवन ॥ ११ ॥

कन्द ॥ आ नेगल्द् एरेग नृपालन
सूनु बृहद्वैरिमर्द्दनं सकलधरि-
त्री-नाथनर्त्थिजनता-
भानुसुतं जिष्णु विष्णुवर्द्धननेसेदं ॥ १२ ॥
उदेयं गेयलोडनोडन-
न्तुदितोदितमागे सकलराज्याभ्युदयं ।
मदवदराति-नृपालक-
पदविदलननमम विष्णुवर्द्धन भूपं ॥१३॥

वृत्त ॥ केलरं किर्त्तिकि वेरं विदुर्दुकेलरनत्युग्रसङ्ग्रामदोलुवा—
ल्दले गोण्डाचेपदिन्दं केलर तलेगलं मेट्टि मिन्दुग्रकोप ।
मलेवत्युद्वृत्तरंतोत्तलदुलिदु निजप्राज्यसाम्राज्यमं तो-
लूवलदिं निष्कण्टकं माडिदनधिकवलं विष्णु जिष्णुप्रतापं॥१४॥

दुर्व्वाराारिधराधरेन्द्रकुलिशं श्रीविष्णुभूपालना-
हेंव्वेट्टिलु सेडेदोडि पोगि भयदिन्दावन्दनीवन्दनेन्द् ।
उर्व्वीपालर कड्ड लोकमनितुं तद्रूपमागिर्प्पिनं
सर्व्वं विष्णुमयं जगत्तेनिपिदें प्रत्यक्षमागिर्द्दुदो ॥१५॥

वचन ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं द्वारावती-
पुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्तचूडामणि मल-
परोलगण्डाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृतनु । मत्तं चक्रगोट्ट
तलकाडु नीलगिरि कोङ्गु नङ्गलि कोलालं तेरेयूरु कोय-
तूरु कोङ्गलियू उच्चङ्गि तलेयूरु पोम्बुच्चंवन्धासुरचौक
बलेयवट्टण येन्दिवु मोदलागनेक दुर्ग्गं त्रयङ्गलनश्रमदिं कोण्डु
चण्ड-प्रतापदिं गङ्गावाडि तोम्भत्तरु सासिरमुमनुण्डिगे साध्यं
माडिसुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिर्द्द श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभु-
वनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन पोय्-
सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क-
तारं वरं सलुत्तमिरे ॥

कन्द ॥ आ नेगर्द्द विष्णुनृपन म—
नो नयनप्रिये चलालनीलालकि च-
न्द्रानने कामन रतियलु ।
तानेणो तोणे सरि समाने शान्तल देवि ॥ १६ ॥

वृत्त ॥ अग्गद मारसिङ्ग न मनोनयनप्रियें माचिकब्बेय-
न्तग्गदकीर्त्ति वेत्तेसेवरग्रतनूभवे विष्णुवर्द्धनङ्ग-
ग्गद चित्तवल्लभेयेनल्कभिवर्ण्णिपरारो लक्ष्मिग-

न्सगलमप्प मान्तनद **शान्तलदेविय** पुण्यवृद्धियं ॥१७॥

धुरदोलुविष्णुनृपालकङ्गे विजयश्रीवच्चदोलसन्ततं
परमानन्ददिनोतु निल्व विपुलश्रीतेजदुद्दानियं ।
वर दिग्भित्तियनेय्दिसल्तेरेवकीर्त्तिश्रीयेनुत्तिर्प्पुदी-
दरेयोल् **शान्तलदेवियं** नेरेये वर्ण्णिप्पातने वर्ण्णिपं ॥ १८ ॥

कन्द ॥ **शान्तल देविय** गुणमं
शान्तलदेवियसमस्तदानोन्नतियं ।
शान्तलदेवियशीलम-
चिन्त्यं भुवनैकदानचिन्तामणियं ॥ १९ ॥

वचन ॥ स्वस्त्यनवरतपरमकल्याणाभ्युदयशतसहस्रफलभोगभा-गिनी द्वितीयलक्ष्मी समानेयुं । सकलकलागमानूनेयुं । अभिनवरुग्मिणीदेवियुं । पतिहितसत्यभावेयुं । विवेकैकबृहस्प-तियुं । प्रत्युत्पन्नवाचस्पतियुं । मुनिजनविनेयजनविनीतेयुं । पवित्रताप्रभावप्रसिद्धसीतेयुं । सकलवन्दिजनचिन्तामणियुं । सम्यक्त्वचूडामणियुं । उद्वृत्तसवतिगन्धवारणेयुं । चतुःसमयस-मुद्धरकरणाकारणेयुं । मनोजराजविजयपताकेयुं । निजकुलाभ्युदय दीपकेयुं । गीतवाद्यनृत्यसूत्रधारेयुं । जिनसमय समुदितप्राका-रेयुं । आहाराभयभैषज्यशास्त्रदान-विनोदेयुमप्प **विष्णुवर्द्धनपो-यसलदेवर** पिरियरसि पट्टमहादेवी **शान्तलदेवि शकवर्ष सासिर** ४० यूदेनेय **शोभकृतु** संवत्सरद चैत्रसुद्धपाडिवबृह-स्पतिवारदन्दु श्री वेल्गोलद तीर्थदोल् सवतिगन्धवारणजिना-

लयमं माडिसि देवता पूजेगर्षिसमुदायकाहारदानक्क कल्कणिनाड मोट्टेनविलेयं तम्म गुरुगल् श्रीमूलसङ्घद देसियगणद पुस्तकगच्छद श्रीमन्**मेघचन्द्र** त्रैविद्यदेवर शिष्यर् **प्रभाचन्द्र** सिद्धान्त देवर्गे पादप्रज्ञालनं माडि सर्व्वबाधापरिहारवागि बिट्ट दत्ति ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दिन्तिदनेय्दे कावपुरुषगर्गायुं महाश्रीयु म-
    केयिदं कायदे काव्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोल् बाणरा-
    सियोलेकोंटिमुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदो-
    न्दयसं सार्ग्गुमिदेन्दु सारिदपुवी शैलाक्षरंसन्ततं ॥ २० ॥

श्लोक ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां ।
    षष्टिर्व्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ २१ ॥

एल्लसनकट्टव केरेयागि कट्टिसि **सवतिगन्धहस्तिबसदिगे** सरुगिगे देवियरु जिनालयक्के बिट्टरु ॥ श्रीमत् पिरियरसि पट्टमहादेवि **शान्तलदेवियरु** तावु माडिसिद सवतिगन्धवारणद बसदिगे श्रीमद्**विष्णुवर्द्धन** पोय्सल देवर बेडिकोण्डु **गङ्गसमुद्र**द केलगण नड्डुवयलय्वत्तु कोलग गर्द्दे तोटवं श्रीमत्**प्रभाचन्द्र**-सिद्धान्तदेवर कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं माडि बिट्ट दत्ति इदनलिदवं **गङ्गेय** तडियोले हदिनेण्टु कोटि कविलेयं कोन्द महापातक ॥ मङ्गलमहा श्री श्री ॥

(दक्षिण पार्श्वपर) श्रीमत्प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यरु **महेन्द्रकीर्त्ति** देवरु मुन्नूरहदिमूरु कम्बिन होलविगेय **शान्तलदेविय** बसदिगे माडिसि कोट्टरु मङ्गलमहा श्री श्री ।

[यह लेख शान्तलदेवी के दान का स्मारक है। लेख में यादवकुल की उत्पत्ति ब्रह्मा और चन्द्र से बतलाई है। इस कुल में 'सल' नामक एक राजा हुआ। एक बार वन में किसी साधु ने एक व्याघ्र की ओर संकेत कर इस राजा से कहा 'पोय्सल' (हे सल, इसे मारो)। तभी से इस राजा का नाम पोय्सल पड़ गया और उसने सिंह का चिह्न अपने मुकुट पर धारण किया। तब से इस वंश का नाम पोय्सल पड़ गया। लेख में इस वंश के विनयादित्य, एरेयङ्ग और विष्णुवर्द्धन नरेशों के प्रताप का वर्णन है। विष्णुवर्द्धन की पटरानी शान्तलदेवी, जो पातिव्रत, धर्मपरायणता और भक्ति में रुक्मिणी, सत्यभामा, सीता जैसी देवियों के समान थी, ने सवति गन्धवारणबस्ति निर्माण कराकर अभिषेक के लिए एक तालाब बनवाया और उसके साथ एक ग्राम का दान मन्दिर के लिए प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव को कर दिया।]

[नोट—लेख की ठीक तारीख़ 'सासिरद नल्वत्तयदनेय' है, परन्तु खोदनेवाले की भूल से जब 'नल्वत्त' छूट गया और 'सासिरदयदनेय' खुद गया तब उसने 'सासिरद, के 'द' को ४० में बदलकर जितना अच्छा उससे हो सका उसे शुद्ध कर दिया। यद्यपि पढ़ते समय इससे ठीक अर्थ निकल आता है परन्तु देखने में यह बड़ा विचित्र मालूम होता है।]

५७ (१३३)

गन्धवारण बस्ति के उत्तर की ओर स्तम्भ पर।

(शक सं० ६०४)

(उत्तर मुख)

संसारवनमध्येऽस्मिनृजूंस्तद्वान् जन-द्रुमान्।
आलोक्यालोक्य सद्वृत्तान्छिनत्ति यमतक्षकः ॥ १ ॥

श्रीराजरकृष्णराजेन्द्रन मगन मगं सत्यशौचद्रयाल-
ङ्कारं श्रीगङ्गगाङ्गेयन मगल मगं वीरलक्ष्मीविलासा-
गारं श्रीराजचूड़ामणियलियनिर्दें पेम्पो पेलेन्दलम्पि
भूरिक्ष्माचक्रमुंबण्णिसे सले नेगल्दं रट्टकन्दर्प्पदेवं ॥ २ ॥
परभूमीश्वरभीकरंकरनिंशातोग्रासि शत्रुक्षिती-
श्वरविध्वंसपरं पराक्रमगुणाटोपं विपक्षावनी—
श्वरपक्षक्षयकारणं रणजयोद्योगं द्विषन्मेदिनी-
श्वरसंहारहविर्भुजं भुजबलं श्रीराजमार्त्तण्डन ॥३॥
इरियल्कण्मुबरीयलाररेबर् पुण्डीवराराततुमा-
न्तिरियलकन्मरदाव गण्डगुणमावौदार्य्यं मेन्दलकदा-
न्तिरिवण्मुं पिरिदीव पेम्पुमेसेदोप्पिलदप्पुवार्व्वेण्णिसल्
नेरेवर्व्वीरद चागदुन्नतिकेयं श्री राजमार्त्तण्डन ॥४॥
किडद जसक्के ताने गुरियादचलं नेरेदर्त्थिगर्त्थमं ।
कुडुव चलं तोदलूनुडियदिर्प्प चलं परवेण्णोलोतोदं-
बड़द चलं शरण्गे वरेकाव चलं परसैन्यमं पेर-
ङ्गुडे गुडदट्टि कोल्व चलमाल्द चलं चलदङ्ककार्न ॥५॥
इरु पेरदेननिं पोगलुतिल्दपुदीवनेगल्ते कल्पभू-
मिरुहदिनग्गलं नुड़ि सुराचलदिन्दचलं पराक्रमं ।
खरकरतेजदिं बिसिदु चागल नन्निय बीरदन्दमी-
दोरेतेने बण्णिसलूनेरेवरारलवं चलदङ्ककारन ॥ ६ ॥
श्रोगसुग मल्लदुल्लुदने पेल्दपेनेन्दुमतर्क्यविक्रमं
मृगपति गल्लदिल्ले गड सन्द गभीरते वार्द्धिगल्लदि-

ल्लेगडजगत्प्रसिद्धिगेलते.........महोन्नति-न्वे...ग······
···············मेल्लमोलवानरिवें···············॥७॥

(पूर्वमुख)

दुस्थितेलोककल्पतरुवेम्बुदु वैरिनरेन्द्रकुम्भिकु-
म्भस्थल-पाटन-प्रवण-केसरियेम्बुदु कामिनीजनो-
रस्थलहारमेम्बुदु महाकविचित्तसरोरुहाकरा-
वस्थितहंसनेम्बुदु समस्तमहीजनमिन्द्रराजनं ॥ ८ ॥
पुसिवुदे तक्कु कोट्टलिपि कोल्वुदे मन्तणमन्यनारिगा-
टिसुवुदे चित्तमीयदुदे विन्नणमारुमनेय्दे कुत्तुव-
भ्विसुवुदे कल्व कलिपयेंने मत्तवर पेसर्गोण्डदेन्तु पो-
लिसुवुदो पेलिमीगडिन राजतनूजरोलिन्द्रराजनं ॥ ९ ॥
निखिलविनमन्नरेश्वर-
मुखाब्जनेत्रोत्पलालकालोलशिली-
मुखनिकर-दिनेसेवुदु पदनख-
कमलाकरविलासमहितर जवन ॥ १० ॥
मन्निसि पिरिदीवंतोद-
लं नुडियन्तोडट्टुं माणनलरिन्दमिदे-
नुन्नतिवडेदुदो चागद
नन्निय वीरद नेगल्ते चलदग्गलिया ॥ ११ ॥
शरदमृतकिरणरुचियिं
चराचरव्याप्तियिं जगज्जननुतियिं
करमेसेदिल्दपुदेनी-

श्वरमूर्त्तिये कीर्त्तिं कीर्त्तिनारायणन ॥ १२ ॥
नुडिवर्बीरमनोन्दुगण्डु सेडेवर्चागकेमुयूवाम्परी-
वड़े पलगच्चुवरामे सैाच्चिगलेमेन्दिर्प्पर्प्परखोयरोल्-
गळर्ग नम्मिगे बीगुवर्नुडितोदल् दोसक्के पक्कादेदं
वळगण्डर् कलिकालदोल् कलिगलोल् गण्डं बरं गण्डरे ॥१३॥

(दक्षिणमुख)

श्रीगे विजयक्के विद्देगे
चागक्कदटिङ्ग् जसके पेम्पिङ्गि नित—
क्कीगरमिदेन्दु कन्दुक-
दागमदोले नेगल्गुमल्ते बीरर बीर ॥ १४ ॥
श्रोलगं दक्षिण सुकरदुष्करमं पोरगण सुकरदुष्करभेदमं
श्रोलगे वामद विषममनल्लिय विषम दुष्करम निन्नदर पोरग-
गलिके येनिपति विपममनदरतिविषम दुष्करमेम्व दुष्कर्म
पलेयोलोर्व्वने चारिसल्वल्लंनाल्कुप्रकरणमुमनिन्द्रिराजं
॥ १५ ॥

चारिसे नाल्कु प्रकरण-
चारणे मूनूर मूवतेण्टेनिसिदवा-
चारणेगलनमदिं
चारिसुगुं कोटि तेरदिनेलेवेडेङ्ग् ॥ १६ ॥
वलसुवेरुव सुलिवगलिवन्तप्प चारणदोषमल्लदे पोट्टव-
ट्टलेगे समनागेगिरिगेय कोल्मुट्टि मिगलुं नेललुमणमीयदिन्तो-

न्दलवियंल्वरे पोरगोलगेडदोलं वलदोलं कडुगडुपिन्ने वर्प्पे
वलयन्दप्पदे चारिसुवोजेयं रट्टकन्दर्प्पनन्ताव' वल्लं ॥१७॥
मेलसिन निलिरिदु गिरिगेय-
नल्लेदोर्गोङ्कोलोलोलगे पोरगणे मेलेवो—
ल्पलवडे चारिप वहलिके-
यलविदुकेवलमे कीर्त्तिनारायणन ॥ १८ ॥
गिरिगे मेलसिन्दं किरिदक्क कालोल्पु नाल्वरललविग-किरिदुमक्क—
तुरगं वेट्टर्दिं पिरिदक्क वलयमु भूवलयदिनत्त पिरिदुमक्के।
गिरिगे कोल्वलि वलयमिन्तिनितुमं वगेवोड्ड' करमरि-दिन्तिवरोल्-
इरदे पत्तेण्टुवलयं चारिसदन्नं भोगमिक्कवनन्ननिन्द्रराजं ॥ १९ ॥

कडुपुगलुद वलंगड
वेडेङ्गुगल वेरे भङ्गिगल ललिगलिदें।
कडुजाणेने वटिकयूवर-
मडर्दपुल्लेने चिदमेलेरु मेलेवचेडेङ्ग' ॥ २० ॥
नेगल्द मण्डलमाले त्रिमण्डल यामकमण्डलमर्द्धचन्द्रमार्ग्ग
वगेवोडरिदप्प सर्व्वतोभद्रमुदवलं चक्रव्यूहं वलमेगलं।
पोगलिसल्तक्क पेरवु दुष्करदेलेपङ्गलनश्रमदिनेलेयोल्

जगदोलेलेवबेडेङ्गनोर्व्वने बल्ल...न्तारालं मान्तरमे ॥ २१ ॥

(पश्चिम मुख)

उद्दवल मेलेवरेम्बुदे-
बिद्दं मुन्नल्लि कडुपिनोल्बहु विधदि-
न्दुद्दवलमेलेदु मुरिगुं ।
बिद्दमेनल्बलल पोरगनेलेवबेडेङ्ग ॥ २२ ॥

एरकमल्लदे पोल्लदागेरगि देरेकोण्डे कोल्ल तेरनल्लदे नेरेये बरले तक्कदियल्लि बीसुवल्लिलये बीसलरिदेयिल्ल । परियनादिट्टे मुरिवल्लि कडुपिनोल् मुरिद्दयिल्लिल्लिय बिन्नणव-न्नेरेये कल्पदे बीररबीरनं गिडेगला-भरणनं नोडि कल्ला ॥ २३ ॥

आसुवनुं कूकुवनुं
बीसुवनुं गल्डये नेगल्द तक्कदियोलेनु-
त्तासदेयु कुक्कदेयुं
बिसन्देयुबिद्दमेलेगुमेलेवबेडेङ्ग ॥२४॥

एरगलरियदे जिण्टुकम्मगुल्दुंबरलणमरियदेतप्पंपिन्दु
तेरननरियदे भङ्गमनिक्कियुम्मूरदेगल्लदे कट्टाडियुं ।
मुरिये पोयिसिदनुरेयं कोन्दु धरेगेडे तगर्गेड यिवत्तेनिसदे
नेरेये कडुजाणनेनिसरके बक्कुंमे गेडेगलाभरणन कल्लदन्नं
॥ २५ ॥

कालाल कयूगल तुरगद
कालाल तिथिवुगलोलल्लि बञ्चिसुतेलेगुं ।

गेल्गुमेने नेगल्द मार्ग्गदे
गेल्गुमे पिणेदल्लि कीर्त्तिनारायणनं ॥२६॥
वनधिनभोनिधिप्रमितसङ्ख्ये शकावनिपाल कालमं।
नेनेयिसे चित्रभानुपरिवर्त्तिसे **चैत्रसितेतराष्टमी-**
दिन-युत-**भौमवार** दोलनाकुलचित्तदे नोन्तु तल्दिदं
जननुत**निन्द्रराज**नखिलामरराजमहाविभूतियं ॥२७॥

[यह लेख राष्ट्रकूट नरेश कृष्णराज (तृतीय) के पौत्र इन्द्रराज की मृत्यु का स्मारक है। इन्द्रराज गङ्गगाङ्गेय का दौहित्र और राज-चूड़ामणि का दामाद था। 'रट्टकन्दर्पदेव' 'राजमार्त्तण्ड' 'कलिगलोक्गण्ड' 'चीरर बीर' आदि इन्द्रराज की प्रताप सूचक उपाधियाँ थीं। १४ वें से लगाकर २६ वें पद्य तक इन्द्रराज के एक गेंद के खेल में नैपुण्य का विवरण है। पर अनेक शब्दों का अर्थ अज्ञात होने के कारण इन पद्यों का पूरा-पूरा भाव स्पष्ट नहीं हो सका है। सम्भवत' यह 'पोलो' के सदृश कोई खेल रहा है। क्योंकि उक्त पद्यों में गेंद, घोड़ों और खेल के दण्डों का उल्लेख है। इन्द्रराज की मृत्यु शक सं० ६०४ चैत्र सुदि ८ भौमवार को हुई।]

५८ (१३४)

तेरिन बस्ति के पश्चिम की ओर एक स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० ६०४)

(उत्तर मुख)

............वोर वेल्पडिगु......दन्ददे पोगलिसेम्बेने...

गिय...दिसिमा...लदो...नु...मे...गदेन ...न्न... तेसु...
पोदिसुवेल्तेयुरि... वीडि... नगिसुगुवेम्न... वपेद...क्केये
मावन-गन्ध-हस्तिथ ॥

श्रदिरदिदिच्चिर्चनिन्दरि...नेने पायिसि तन्न मिण्डमुं
कुदुरेय येम्बिवुं बेरसि वीलवदु मेणिदिरे...देहु काल् गुदि—
गोले ताने..

(पूर्व मुख)

साधिसि पोग .. ..निरदे............दिव.........
बेरित.........न्तलिय......ल्दरि...लय.........ल्दन्तवन्नो
......पेनकेल.........बोलगदोल्ताग्रे.........उनता......
यविट्टनेवे .....अलिपि......य..................ण्डलु—

घलिदु निजाधिपं वेससिदेर्व्वेसनं कुसिदिर्म्मेकेल्दुवा-
ल्वलिपननव्यवस्थितननोर्व्वेसकल्कुव जोलगल्लरं
पलियेदे यिल्लदोल्पलेयुतिप्पुदु मावन गन्धहस्तियं ॥
परबलवेयदि कयदुवेडेयाडुव ताणदोलल्लि बीरम
परवधु वट्टेलातरेडेयाडुवताणदोलल्लि सौचमं ।
परिकिसि सन्दरिल्ल पेररोर्व्वरुवेन्नलिदण्मु सौचमे-
म्बरदरेल ....॥

(दक्षिण मुख)

...............................वागेदि—
ट्टिगरन...वुद दोरेगे वर्कुमे मावनगन्धहस्तियं ॥
श्रोडनेय नायकर्कुदिदु तागुमे...मलन वक्कदोड्डुपु—

णवडुविनविल्दु सन्दु सवकट्टलिदल्लिगे नूङ्कि वीरम-
च्चलिविनमामे तल्तिरिदु गेल्देवरातियनेन्दु पोव्वरि-
नुडिवलिगण्डरं नगुवुदोट्टजि मावनगन्धहस्तियं ॥
अणुगिनोले राजचूडा-
मणिमार्गोडे मल्लनीये गेल्वे लेपद वि-
न्नण..... ....

(पश्चिममुख)

....

.. ललागं कर्णे पारुवल्लि नित्तरिसुवुदरियेंगतियनें
एनेनेगल्द पिट्टुगं वीडिनसीचीरने प्रचण्डभुजदण्डंमावनगन्ध-
हस्ति कविजनविनुतं मोनेसुट्टे गण्डनाहवसौण्ड वरेचित्र-
भानुसम्वत्सरमधिकापाढवहुल दसमीदिनदोल्गुरु-
चरणमूलदोल्सुभपरिणामदे पिट्टनिन्द्रलोकक्कोगद ॥

[यह लेख एक मावन गन्धहस्ति नामक वीर योधा की मृत्यु का स्मारक है। युद्ध में अद्वितीय वीरता के कारण इसे एक राजा राजचूडामणि मार्गेडेमल्ल ने अपनी सेना का नायक बनाया था। चित्रभानु सम्वत्सर की आपाढ वदि १० को इस वीर का प्राणान्त हुआ। यह लेख बहुत घिस गया है इससे पूरा पूरा नहीं पढा गया। शक सं० ६०४ चित्रभानु संवत्सर था। लेख की लिखावट से भी यह समय ठीक सिद्ध होता है।]

५६ (७३)

शासन वस्ति के सामने एक शिला पर।

(शक सं० १०३६)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमो वीतरागाय नमस्सिद्धेभ्यः ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द-महामण्डलेश्वरं द्वारवती-पुरवराधीश्वरं यादव - कुलाम्बर-द्यु-मणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलपरोल्गण्डाद्यनेकनामावली-समालङ्कृतरप्प श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुज-बल-वीर-गङ्ग-विष्णुवर्द्धन-होय्सल-देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ जनताधारनुदारनन्यवनितादूरं वचस्सुन्दरी-
घन-वृत्त-स्तन-हारनुग्र-रणधीरं मारनेनेन्दपै ।
जनकं तानेने माकणब्बे विबुध-प्रख्यात-धर्म्मे-प्रयु-
क्त-निकामात्त-चरित्रे तायेनलिदेनेचं महाधन्यनो ॥ ३ ॥

कन्द ॥ विनस्तमलं बुध-जन-मित्रं द्विजकुलपवित्रनेचं जगदोलु ।
पात्रं रिपु-कुल-कन्द-खनित्रं कौण्डिन्य-गोत्रनमलचरित्रं ॥४॥
मनुचरितनेच्चिगाङ्कन

मनेयोल्तु मुनिजन समूहमुं बुधजनमुं ।
जिनपूजने जिनवन्दने ।
जिनमहिमेगलावकालमुं सोभिसुगुं ॥ ५ ॥
उत्तम-गुण-ततिवनिता—
वृत्तियनोलकोण्डुदेन्दु जगमेल्लमूक—
ध्येत्तुविनममल-गुण-स-
म्पत्तिगे जगदोलगं पोचिकब्बेये नोन्तलु ॥ ६ ॥
अन्तेनिसिद् **एचिराजन पोचिकब्बेय** पुत्रनखिलती-
र्थंकरपरमदेवपरमचरिताकर्ण्णनोदीर्ण्ण-विपुल-पुलक-परिकलित
वारवाणनुवसम-समर-रस-रसिक-रिपुनृपकलापावलेप-लोप-लो-
लुप-कृपाणनुवाहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-विनोदनुं सकललोक-
शोकापनोदनु ।
वृत्त ॥ वज्रंवज्रभृतो हलं हलभृतश्चक्रं तथा चक्रिण-
श्शक्तिश्शक्तिधरस्य गाण्डिवधनुर्गाण्डीवकोदण्डिनः ।
यस्तद्वद्वितनोति विष्णुनृपतेष्कार्य्यं कथं मादृशै
र्गङ्गो गङ्ग-तरङ्ग-रञ्जितयशो-राशिस्स-वर्ण्यो भवेतु ॥ ७ ॥
इन्तेनिप श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं द्रोहघरट्टं **गङ्गराजं**
चालुक्य-चक्रवर्त्ति-त्रिभुवनमल्ल-पेर्म्माडिदेवन दलं पन्निर्व्व-
र्स्सामन्तर्व्वेरसुकण्णेगाल-वीडिनलु विट्टिरे ॥
कन्द ॥ तेगे वारुवमं हारुव
वगेयं तनगिरुलववरमेनुत सवङ्गं ।
वुगुव कटकिगरनलिरं

पुगिसिदुदु भुजासि गङ्ग-दण्डाधिपन ॥ ८ ॥

वचन ॥ एम्बिनमवस्कन्दकेलियिन्द　मनिबरुं सामन्तरुमं

भङ्गिसितदीय-वस्तुवाहन-समूहमं निजस्वामिगे तन्दु कोट्टु

निजभुजावष्टम्भक्के मेच्चिमेच्चिदेवेदि कोळिमेने ॥

कन्द ॥ परम-प्रसादमं पडे—

दु राज्यमं धनमनेनुमं बेडदन —

स्वरमागे बेडिकोण्डं

परमननिदनर्हदर्च्चनाञ्चित-चित्तं ॥ ९ ॥

अन्तु बेडिकोण्डु—

वृत्त ॥ पसरिसे कीर्त्तनंजननि पोचलदेवियरर्त्थिवट्टु मा-

डिसिद जिनालयक्कमोसेदात्म-मनोरमे लच्मिदेवि मा-

डिसिद जिनायलक्कमिदु पूजन योजितमेन्दु कोट्टु स-

न्तोसमनजस्रमाम्पनेने गङ्गचमूपनिदेनुदात्तनो ॥ १० ॥

अक्कर ॥ आदियागिप्पुंदार्हत-समयक्के मूलसङ्घं कोण्डकुन्दा-

न्वयं

वादु बेडदं बलयिपुदळिय देसिगगणद पुस्तकगच्छद ।

बोधविभवद कुक्कुटासन-मलधारि-देवर शिष्यरेनिप पेम्पि-

ङ्गादमेसेदिर्प्प शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्ड गङ्गचमूपति ११

गङ्गवाडिय बसदिगळेनितोळवनितवानेय्दे पोसयिसिदं

गङ्गवाडिय गोम्मटदेवर्गं सुत्तालयमनेय्दे माडिसिदं ।

गङ्गवाडिय तिगुळरं बेङ्कोण्डु वीरगङ्गङ्गे निमिर्च्चिकोट्टं

गङ्गराजना मुन्निन गङ्गररायङ्गं नूर्म्मडिधन्यनल्ते ॥ १२ ॥

एत्तिदनेल्लिगल्लि नेलेवीडने माडिदनेल्लिगल्लि काणू
पत्तिदुदेल्लिगल्लि मनमावेडेयेयूदिदुदेल्लिगल्लि स-
म्पत्तिन जैनगेहमने माडिसे देशदोलेल्लिगल्लिगे-
त्तत्तलुमावगं पलेय माल्केवोलादुदु गङ्गराजनिं ॥ १३ ॥
जिनधर्म्माग्रणियत्ति मब्बरसियं लोकं गुणगोल्वुदे-
केने गोदावरि निन्द कारणदिनीगलु गङ्गदण्डाधिना-
थनुमं कावेरि पेच्चिर्दे सुत्ति पिरिदुं नीरोत्तियु मुट्टिति-
ल्लेने सम्यक्तद पेम्पर्निनेरेये वण्णिप्पण्णने वण्णिपं ॥१४॥
इन्तेनिप दण्डनायक गङ्गराजं सकवर्ष १०३९ नेय हेमण
म्बि संवत्सरद फाल्गुण शुद्ध ५ सोमवार दन्दु तम्म गुरुगलु **शुभचन्द्र**-सिद्धान्तदेवर कालंकच्चि परमनं कोट्टरू ॥ दण्डनायक एचिराजनुं तनगभिवृद्धियागे सलिसिदं । परमन सीमान्तरं मूडलु सल्ल्यद कल्ल हल्लवे गडि । तेङ्कलु कडिद कुम्मरि होर-गागि । हडुवलु वेर्कनोलगेरेय **मा**विनकेरेय गद्देयोलगागि ।
बेलुगोलक्के होद वट्टे गडि । वडगलु मेरे । नेरिल-केरेय मूडण कोडियिं तेङ्कण होसगेरेय-च्चुगट्टादुदेल्ल । आ होसगेरेय वडगण कोडियिन्दं मूड होद नीरुवक्केयिन्दं । अयूकनकट्टद । ताइवल्लदिन्दं । तेङ्कलादुदेल्लविनितुं परमङ्ग सीमेयागि विट्ट दत्ति ॥ ईधर्म्ममं प्रतिपालि-सिदर्गे महापुण्यमक्कुं ॥
वृत्तं ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेयूदे काव-पुरुषगर्गायुं महाश्रीयुम
क्केयिदं कायदे काय्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोल् वाणरा-

सियोलेल्कोटि मुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदो-
न्दयसं सार्ग्गुमिदेन्दु सारिदपु वीशैलाचरं सन्ततं ॥ १५ ॥

श्लोक ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेद्वसुन्धरां ।
षष्टिर्व्वर्ष सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ १६ ॥
बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यानि यानि यथा धर्म्मं तानि तानि तथा फलं ॥ १७ ॥
विरुद-रूवारि-मुखतिलकं **वर्द्धमानाचारि** खण्डरिसिदं ॥

[यह लेख एक दान का स्मारक है। मार और माकिणब्बे के पुत्र एचिराज हुए। एचिराज और पोचिकब्बे के पुत्र महाप्रतापी गङ्ग-राज हुए। ये होयसल नरेश विष्णुवर्द्धन के महादण्डनायक थे। इन्होंने तिगुलों (तैलङ्गों) को परास्त कर गङ्गवाडि देश को बचा लिया तथा चालुक्य-नरेश त्रिभुवनमल्ल पेर्माडिदेव की सेना को जीतकर अपने भारी पराक्रम का परिचय दिया। उनकी स्वामि-भक्ति तथा विजय-शीलता से प्रसन्न होकर विष्णुवर्द्धन नरेश ने उन्हें पारितोषिक माँगने को कहा। उन्होंने 'परम' नामक ग्राम माँगा। इस ग्राम को पाकर उन्होंने उसे अपनी माता पोचल देवी तथा अपनी भार्या लक्ष्मीदेवी द्वारा निर्मापित जिन-मन्दिरों की आजीविका के हेतु अर्पण कर दिया। यह लेख इसी दान का स्मारक है। गङ्गराज जैसे पराक्रमी थे वैसे धर्मिष्ठ भी थे। इस दान के अतिरिक्त इन्होंने गङ्गवाडि परगने के समस्त जिन-मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया, गोम्मट स्वामी का परकोटा बनवाया तथा अनेक स्थलों पर नये-नये जिन-मन्दिर निर्माण कराये। लेख में कहा गया है कि इन कृत्यों से क्या गङ्गराज गङ्गराय (चामुण्ड राय-गोम्मट स्वामी के प्रतिष्ठाकारक) की अपेक्षा सौ गुने अधिक धन्य

नहीं कहे जा सके ? लेख में परम ग्राम की सीमा दी हुई है जिससे विदित होता है कि यह ग्राम श्रवण बेल्गोल के समीप ही ईशान दिशा में था। उक्त दान शक संवत् १०३६, फाल्गुण सुदि ५ सोमवार को दिया गया था। गङ्गराज कुन्दकुन्दान्वय देशीगण पुस्तक गच्छ के कुक्कुटासन मलधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्त देव के शिष्य थे। दान की रक्षा के हेतु लेख में कहा गया है कि जो कोई इस दान-द्रव्य में हस्तक्षेप करेगा वह कुरुक्षेत्र व बनारस में सात करोड़ ऋषियों, कपिल गौओं व वेदज्ञ पण्डितों के घात का पापी होगा।]

६० (१३८)

बाहुबलि बस्ति के पूर्व की ओर प्रथम वीरगल् पर

(लगभग शक सं० ८६२)

श्रीगाश्रयवेने तेज-

कागरवेने नेगल्द गङ्गवज्रन लेङ्क

न्वोगायूचनेम्वरवेरा-

ल्बोगेय (वोथिग) मार्प्पडेगोरण्टनण्नन वण्ट ॥ १ ॥

रक्तसमणिय कोणेयगङ्गन कालेगदोल्तन्न सावं निश्चटिस

कालेगकिडे रक्तसमणिय कलिपि तन्न बलमुं मार्व्वलमुं तन्नने पोगले।

श्रोडने कालग वयिसिद घोळयिलर्प्पेरपिङ्ग मार्व्वलं

बिडे कडिकय्दा नूङ्कि किडे तन्न बल पेरवागदळि व-

न्दडिगेडदन्दे वजियोले पायिसि मूलमेळमं पडल्

वडिसि पोगल्तेयं पडेदु णान्तुदु बोयिगनान्तानिबटं ॥२॥

श्रदिरि...लिक वद्देगन कोणेयगङ्गन मोत्तमेळमं

बेदरुविनं तेरल्चि पलरुं तुलिलाल्गलनिक्कि तन्न बी-
रद...लदेल्गेयं परबलं पोगलल्बडिकं...मागि बि-
ल्ददटिनलुर्केयं मेरेदु सावुदु बोयिगनन्तिलाग्रदोल् ॥३॥
नट्ट-सरल्गलिन्दिदक (क्नवयको) यिंकिडि केय्दुबेडिरो-
ल्लिट्ट निसान्तहेतुगलिनादमगुर्व्विसिबट्टु बीलुवो-
ल्तोट्टने नोन्दु बील्वेडेये(ल् नय्य) गोण्डु विमान म...लं
मुट्टलुमित्तरिन्न गल बोयिगनं दिविजेन्द्र-कान्तेय... ॥४॥

[यह एक वीरगल है। इसमें उल्लेख है कि गङ्गवज्र (नरेश) अपर नाम रक्कसमणि के बोयिग नाम के एक वीर योद्धा ने 'वद्देग' और 'कोणेय गङ्ग' के विरुद्ध युद्ध करते हुए अपने प्राण विसर्जित किये। युद्ध में इसने ऐसी वीरता दिखाई कि जिसकी प्रशंसा उसके विपक्षियों ने भी की]

६१ (१३६)

उसी स्थान के द्वितीय वीरगल् पर

(लगभग शक सं० ८७२)

श्री-युवतिगे निज-विजय-
श्री-युवतिये सवतियेनिसे रण-मूर्ख-नृपा-
ग्रायदोलायद मेय्-गलि
बायिकनेम्ब नेगल्तेयं प्रकटिसिदन् ॥१॥
श्री-दयितन **बायिकन** म-
नो-दयितेगे जभदोलेसेद जावय्यगे ताम्

आदर्तनयर्पेलल्
मादुवरं दोयिलम्मनेम्वर् पेसरिं ॥२॥
अवरोड-वुट्टिदोलरिविन
तवरेने धर्मदगुन्तियेंने नेगल्दलभू-
भुवनक्के **सावियब्बिगम्**
अवनिजेगं दोरेयेनल्के पेण्डिरुमोलरे ॥३॥
धोरन तनयं विवुधो-
दारं धरेगेसेद लोक-विद्याधरनन्त
आ-रमणिगे पतियेने पेरर्
आरुमनासतिय पेम्पिनोल् पोलिपुदे ॥४॥
श्रावक-धर्म्मदोल् दोरेयेनल् पेररिल्लेने सन्द **रेवति**-
श्रावकि ताने सज्जनिकेयोल् **जनकात्मजे** ताने रूपिनोल्-
देवकि ताने पेम्पिनोल**रुन्धति** ताने जिनेन्द्र-भक्ति-सद्-
भावदे **सावियब्बे** जिन-शासन-देवते ताने काणिरे ॥५॥
उदयविद्याधरनप्प **सायिब्बेन्द्र**

(उसी पाषाण के शिखर पर)

···रियिसिददि······मा मा ·····द जन······न्दे मूप...
...रदि········ लि···प···मु······यनि······न प···नुडिद-
गिदन्दरागि पसियानिवगानादेनेदल्लि मुनोल् कादि यलि······
विल्दवरन जननि **सायिब्बे** कण्ड······डिदरदे केय्यार जि···
मालाम्रद······करिप···लिनेतुमदे नुडियिडे···द्रागि···नुडिदु

नुव गदल् बगियुरल्लि सत्तल् .....वेत्त......यब्बे सायलेन्दु पेण्डतियें..... वोत्तपनलोगलें पलरुं तोलगिद रायद चल मसल बलगि गन्दिनिप्पण्डतियिन् ।

[यह भी एक वीरगल है जिसमें पराक्रमी और प्रसिद्ध बायिक और जावय्ये की पुत्री 'सावियब्बे' का परिचय है। सावियब्बे का पति 'धोर' का पुत्र 'लोक विद्याधर' था। यह स्त्री रेवती, देवकी, सीता, अरुन्धती आदि सदृश रूपवती, पतिव्रता और धर्मप्रिया थी। वह पक्की श्राविका थी। जिन भगवान् में उसकी शासन देवता के सदृश भक्ति थी। उसने 'बगियुर' नामक स्थान पर अपने प्राण विसर्जित किये]

[नोट—लेख का अन्तिम भाग जिसमें इस वीराङ्गना के प्राण-त्याग का वर्णन है, बहुत घिस गया है इससे स्पष्ट नहीं है। ऐसा कुछ विदित होता है कि यह सती स्त्री अपने पति के साथ युद्ध में गई थी और वहाँ लड़ते-लड़ते इसने वीरगति पाई। लेख के ऊपर जो चित्र खुदा है उसमें यह स्त्री घोड़े पर सवार हुई हाथ में तलवार लिये हुए एक हाथी पर सवार वीर का सामना करती हुई चित्रित की गई है। हाथी पर चढ़ा हुआ पुरुष इस पर वार करता हुआ दिखाया गया है। 'सायिब्बे' सावियब्बे का संक्षेप रूप है]

६२ (१३१)

गन्धवारण वस्ति में शान्तीश्वर की मूर्त्ति के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० १०४४)

प्रभाचन्द्र-मुनीन्द्रस्य पद-पङ्कजषट् पदा ।

शान्तला शान्ति-जैनेन्द्र-प्रतिबिम्बमकारयत् ॥१॥

(सिंहपीठ पर)

उक्तौ वक्र-गुणं दृशोस्तरलतां सद्विभ्रमं भ्रूयुगे
काठिण्यं कुचयोर्न्नितम्ब-फलके धरसेऽतिमात्र-क्रमम् ।
दोषानेव गुणीकरोषि सुभगे सौभाग्य-भाग्यं तव
व्यक्तं **शान्तल-देवि** वक्तुमवनौ शक्नोति को वा कविः ॥२॥

राजते राज-सिंहीव पार्श्वे **विष्णु**-महीभृतः ।
विख्याता **शान्तला**ख्या सा जिनागारमकारयत् ॥३॥

[नोट—गन्धवारण बस्ति का निर्माण शान्तल देवी ने शक सं० १०४४ विरोधिकृत् संवत्सर में व उससे कुछ पूर्व कराया था। देखो लेख नं० ५३ (१४३)]

६३ (१२०)

एरडु कट्टे वस्ति आदीश्वर की मूर्त्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०४०)

शुभचन्द्र-मुनीन्द्रस्य सिद्धान्ते **सिद्ध-नन्दिनः** ।
पद-पद्म-युगे लक्ष्मीर्लक्ष्मीरिव विराजते ॥१॥

या सीता पतिदेवताव्रतविधौ क्षान्तौ क्षितिर्य्या पुन-
र्य्या वाचा वचने जिनार्च्चनविधौ या चेलिनी केवलम्
कार्य्ये नीतिवधू रणे जय-वधूर्य्या गङ्गसेनापतेः

सा लक्ष्मीर्व्वसतिं गुणैक-वसति र्व्यातीतनूतनाम् ॥ २ ॥

श्रीमूलसङ्घद देसिग गणद पुस्तकान्वय ॥

६४ (७०)

कत्तले बस्ति की ऊपर की मञ्जिल में आदीश्वर की मूर्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक स० १०४०)

भद्रमस्तु श्रीमूलसङ्घद देशिकगणद श्रीशुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डं दण्डनायक-ग(ङ्गर)य्यनु तम्म तायि पोचव्वेगे माडिसिदी बसदि मङ्गलं ॥

[दण्डनायक गङ्गरय्य (या गङ्गपय्य) शुभचन्द्रसिद्धान्तदेव के शिष्य, ने यह बस्ती अपनी माता पोचव्वे के लिए निर्माण कराई। (आगे का लेख देखो)]

६५ (७४)

शासन बस्ति में आदीश्वर की मूर्त्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०४०)

आचार्य्यश्शुभचन्द्रदेवयतिपो राद्धान्त रत्नाकर-

स्तातोऽसौ बुधमित्रनामगदितो माता च पोचाम्बिका ।

यस्यासौ जिनधर्म्मनिर्म्मलरुचिश्श्रीगङ्गसेनापति-

र्ज्जैनं मन्दिरमिन्दिराकुलगृहं सद्भक्तितोऽचीकरत् ॥ १ ॥

६६ (१२०)

चामुण्डराय वस्ति में नेमीश्वर की मूर्त्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०६०)

गङ्गसेनापतेस्सूनुर् एचणो भारतीचणः ।
त्रैलोक्यरञ्जनं जैनचैत्यालयमचीकरत् ॥ १ ॥
बुधबन्धुस्सतां बन्धुरेचणः कमलाचणः ।
वोप्पणापरनामाङ्कचैत्यालयमचीकरत् ॥ २ ॥

६७ (१२१)

ऊपर की मञ्जिल में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति के पादपीठ पर

(लगभग शक स० ६६२)

जिन गृहमं वेल्गोलदोल्
जनमेल्लं पोगले मन्त्रि-चामुण्डन न-
न्दननोलविं माडिसिद
जिन-देवणनजितसेन-मुनिवर गुड्डं ॥ १ ॥

[चामुण्ड के पुत्र और अजितसेन मुनि के शिष्य जिनदेवण ने बेल्गोल में जिन मन्दिर निर्माण कराया ।]

६८ (१५६)

काञ्चिन दोणे के एक स्तम्भ पर

(शक सं० १०५६)

(उत्तर मुख)

श्रीमत्-परम-गम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्नरप्प श्रीमत् **त्रिभुवनमल्ल** चलद-ङ्कराव होय्सल-सेट्टियरु अय्यावलेय युण्डिगेय **दम्मिसेट्टिय** मगं **मल्लि-सेट्टिगे चलदङ्कराव**-होय्सलसेट्टिय् एन्दु पेसरुकोट्ट-रिन्तु **सकवर्ष १०५८ सौम्यसंवत्सरद** माघ-मासद शुक्ल-पक्षद सङ्क्रमणदन्दु तन्नवसानमनरिदु तन्न बन्धुगलं बिडिसि समचित्तदोलु मुडिपि स्वर्गास्थनादं ॥

(पश्चिम मुख)

आतन सति एन्तप्पलेन्दडे ॥

तुरवम्भरसग सुग्गवेग सुपुत्रि स्वस्ति श्रीजिन-गन्धोदक-पवित्री - कृतोत्तमाङ्ग युरुं आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोदेयरप्प **चट्टिकब्बे** तन्न पुरुष **चलदङ्कराव होय्सल** सेट्टिगं वनगं तन्न मग **बूचणङ्ग** परोक्ष-विनेयमागि माडिसिद निसिधिगे ॥

[त्रिभुवनमल्ल चलदङ्कराबहोय्सलसेट्टि ने दम्मिसेट्टि के पुत्र मल्लिसेट्टि को चलदङ्कराबहोय्सलसेट्टि की उपाधि प्रदान की । मल्लिसेट्टि 'अय्यावले' के एक राज्यकर्मचारी (युण्डिगेय) थे । इनकी पत्नी जैनधर्म-परायणा चट्टिकब्बे थी जिसके पिता और माता के नाम

क्रमशः तुरगम्मरस और सुग्गव्वे थे। इसी साध्वी स्त्री ने अपने पति की यह निषद्या निर्माण कराई।]

[नोट—मद्यावले सम्भवत बम्बई प्रान्त के कलादि जिलान्तर्गत आधुनिक 'ऐहोले' का ही प्राचीन नाम है। लेख में शक १०५६ सौम्य संवत्सर का उल्लेख है। पर ज्योतिष-गणना के अनुसार शक १०५६ पिङ्गल संवत्सर था और सौम्य संवत्सर उससे आठ वर्ष पूर्व शक सं० १०५१ में था। अतएव लेख का ठीक समय शक सं०१०५१ ही प्रतीत होता है]

६८ (१५८)

काञ्चिन दोणे के प्रवेशद्वार के निकट पड़े हुए एक टूटे पाषाण पर*

(लगभग शक सं० १०९२)

(प्रथम मुख)

....

..................................व्यावृत्तविच्छित्तये।

...क...कलिकल्मषप्रनुदिनं श्रीबालचन्द्रंमुनिं

पश्याम श्रुत-रत्न-रोहणधरं धन्यास्तु नान्ये वयं ॥१॥

प्रचुर-कलान्वितरकुटिलरचञ्चलसुंद-पत्न-वृत्त-

दोंपापचय-प्रकाशरेंनेबालचन्द्र देवप्रभावमेनच्चरिये ॥२॥

श्री बालचन्द्र ....

* यह पाषाण अब नहीं मिलता।

(द्वितीय मुख)

.........भद्रमप्प त्रिलो......वरविहितपूर्त्त नित्य-कीर्त्ति..चित्य-समुचितचरितो य...र-धृत...धुविनू......यित्वाहं भुजविम्बचितमणि ....कर त्वं चिरादिमु......सम... ......गतिभिस्स......चत्रियरुद्ध-श्रीकवि......नध......... श्रीवर्ह...

(तृतीय मुख)

....रानो बभा......चित्रतनूभृताम......यतेतरा...। सकल......वन्द्य पादारविन्दं स...ममूर्त्ति सर्व्वसत्वा...वक-दुरित-राशिभन्यद......नुविजित - मकरकेतु.........त्तिंत्र-तीन्द्रं। भानो... ..सुविक...चक्रा .....रो तत्पद् भव......

[यह लेख बहुत टूटा हुआ है। इसमें बालचन्द्र मुनि की कीर्ति वर्णित रही है। द्वितीय पद्य पम्परामायण (आश्वास १ पद्य ८) में भी पाया जाता है।]

७० (१५५)

ब्रह्मदेव मन्दिर के निकट पड़े हुए एक टूटे पाषाण पर

(लगभग शक सं० १०९२)

......दा...न्वयद हन...य वलिय श्रीगुणचन्द्रसिद्धान्त-देवरप्रशिष्यरु श्रीनयकीर्त्तिसिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्री-

दावणन्दित्रैविद्य-देवरुं भानुकीर्त्तिसिद्धान्तदेवरुं श्री अध्या-
त्मिबालचन्द्रदेवरु ॥

परमागमवारिधि (हिम-
किर)णं राद्धान्तचक्रि नयकीर्त्तियमी-
श्वरशिष्यन......लचित्
परिणतनध्यात्मि बा(लच)न्द्र मुनीन्द्रं ॥ १ ॥
बालचं.. ...

[यह लेख अधूरा ही पढ़ा गया है। इन (सोगे) शाखा के गुणचन्द्र सिद्धान्तदेव के प्रमुख शिष्य नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवर्ति के दाम नन्दि त्रैविद्य देव, भानुकीर्ति सिद्धान्तदेव और अध्यात्मि बाल-चन्द्र ये तीन शिष्य हुए। बालचन्द्र की प्रशंसा का जो पद्य यहाँ है वह उनकी प्राभृतत्रय की टीका के अन्त में भी पाया जाता है। देखो शिलालेख न १० (२४०) पद्य २२]

७१ (१६६)

भद्रबाहु गुफा के भीतर पश्चिम की ओर चट्टान पर* (नागरी अक्षरों में)

(लगभग शक सं० १०३२)

श्रीभद्रबाहु स्वामिय पादमं जिनचन्द्र प्रणमतां।

---

* यह लेख अब नहीं मिलता।

७२ (१६७)

भद्रबाहु गुफा के बाहर पश्चिम की ओर चट्टान पर

(शक स० १७३१)

शालिवाहन शकाब्दा: १७३१ नेय शुक्लनामसंवत्सरद भाद्रपद व ४ बुधवारदल्लि । कुन्दकुन्दान्य (न्वय) देसिगणद श्री चारु। शिष्यराद अजितकीर्त्ति-देवरु अवर शिष्यरु शान्ति-कीर्त्ति देवर शिष्यराद अजितकीर्त्तिदेवरु मासोपवासवं सम्पूर्णं माडि ई गवियल्लि देवगतरादरु ।

[कुन्दकुन्दान्वय देशीगण के चारु (कीर्ति पण्डितदेव) के शिष्य अजितकीतिदेव के शिष्य शान्तकीर्ति देव के शिष्य अजितकीर्ति देव ने एक मास के उपवास के पश्चात् शक सं० १७३१ भाद्रपद वदि ४ बुधवार को स्वर्गगति प्राप्त की ।]

७३ (१७०)

भद्रबाहु गुफा के मार्ग पर चरणचिह्न के पास चट्टान प

(सम्भवत: शक सं० ११३९)

स्वस्ति श्री ईश्वर संवत्सरद मलयाल कोदयु-सङ्करनु इल्लिर्द्दु एच गद्देय हडुवण हुणिसेय मूरुगुण्डिगे

[इस स्थान पर खड़े होकर 'मलयाल कोदयु सङ्कर' ने आर्द्र भूमि के पश्चिम की ओर इमली के वृक्ष के समीप की तीन शिलाओं

पर बाण चलाये। लेख में संवत्सर का नाम ईश्वर दिया हुआ है। शक ११३६ ईश्वर सवत्सर था]

७४ (१६५)

प्राकार के बाहर दक्षिण भागस्थ तालाब के उत्तर की ओर चट्टान पर

(सम्भवत: शक सं० ११६८)

स्वस्ति श्रीपराभवसंवत्सरद मार्ग्गसिर बहुल अष्टमी शुक्रवारदन्दु मलेयाल अध्याडि-नायक हिरिय-बेट्टदि चिक्कबेट्टक्केच्च ॥

['मलयाल अध्याडि नायक' ने विन्ध्यगिरि से चन्द्रगिरि का निशाना लगाया। लेख में पराभव संवत्सर का उल्लेख है। शक ११६८ पराभव संवत्सर था]

विन्ध्यगिरि पर्वत पर के शिलालेख

७५ (१७६-१८०)

गोम्मटेश्वर की विशालमूर्त्ति के वामचरण के पास

नागरी अक्षरोंमें

श्री चावुण्डे-राजें करवियले।

(लगभग शक सं० ६५०)

श्रीगङ्गराजे सुत्ताले करवियले।

(लगभग शक सं० १०३६)

[चामुण्डराज ने (मूर्ति) प्रतिष्ठित कराई। गङ्गराज ने परकोटा निर्माण कराया।]

७६ (१७५, १७६, १७७)

दक्षिणचरण के पास

(पूर्वद हले कन्नड़ अक्षरों मे) श्राचामुण्डराजं माडिसिदं।

(ग्रन्थ और वट्टेलुत्तु,, ,,) श्रीचामुण्डराजन् सेयूव्वित्तान्।

(कन्नड अक्षरों में) श्रीगङ्गराज सुत्तालयवं माडिसिदं।

[तात्पर्य पूर्वोक्त और समय भी पूर्वानुसार]

७७ (१८४)

पद्मासन पर

(लगभग शक सं० १०७२)

स्वस्ति समस्तदैत्यदिविजाधिप-किन्नर-पन्नगानम-
न्मस्तक-रत्ननिर्ग्गत-गभस्तिशतावृत-पाद......।
प्रास्त-समस्त-मस्तक-तमः-पटलं जिनधर्म्मशासनम्
विस्तरमागेनिल्के धरे-वारुधि-सूर्य्यशशाङ्करुल्लिनं ॥ १ ॥

[जैनशासन सदा जयवन्त हो ।]

७८ (१८२)

वाम हस्त की ओर बमीठे पर

(लगभग शक सं० ११२२)

श्रीनयकीर्त्तिसिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुड्ड श्रीबसविसे-
ट्टियरु सुत्तालयद भित्तिय माडिसि चव्वीसतीर्त्थकरं माडिसिदरु
मत्तं श्री बसविसेट्टियर सुपुत्ररु नम्बिदेवसेट्टि बोकि
सेट्टि जिन्निसेट्टि बाहुबलि-सेट्टि तम्मय्य माडिसिद
तीर्त्थकर मुन्दण जालान्दरवं माडिसिदरु ॥

[नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्ति के शिष्य बसविसेट्टि ने परकोटे की दीवाल बनवाई और चौबीस तीर्थंकरों को प्रतिष्ठित कराया व उनके पुत्र नम्बिदेव सेट्टि, बोकिसेट्टि, जिन्निसेट्टि और बाहुबलि सेट्टि ने तीर्थंकरों के सम्मुख जालीदार वातायन बनवाया ।]

विन्ध्यगिरि पर्वत ।

७९ (१८३)

उपर्युक्त लेख के नीचे जहाँ से मूर्त्ति के अभिषेक के लिए व्यवहार में लाया हुआ जल बाहर निकलता है

(लगभग शक सं० ११२२)

श्रीललित सरोवर

८० (१७८)

दक्षिण हस्त की ओर बमीठे पर

(लगभग शक सं० १०८०)

श्रीमन्महामण्डलेश्वर प्रतापहोयसल **नारसिंहदेवर** कैयलु महाप्रधान हिरियभण्डारि **हुल्लमय्य** गोम्मटदेवर पारिश्वदेवर चतुर्व्विंशतितीर्त्थकर अष्टविधार्च्चनेगं रिषियराहारदानक्कं सवणेरं बिडिसि कोट्ट दत्ति ।

[महाप्रधान हुल्लमय्य ने अपने स्वामी होय्सल नरेश नारसिंह देव से सवणेरु (नामक ग्राम पारितोषक में) पाकर उसे गोम्मट स्वामी की अष्टविध पूजन और ऋषि मुनि आदि के आहार के हेतु अर्पण कर दिया]

८१ (१८६)

तीर्थंकर सुत्तालय में

(सम्भवतः शक सं० ११५३)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज-परमेश्वरं **द्वारा**वतीपुरवराधीश्वरं **याद**वकुलाम्बरद्युमणि सर्वज्ञ-चूडामणि मगरराज्यनिर्म्मूलनं **चोल**राज्य-प्रतिष्ठाचार्य्यं श्री-मत्प्रतापचक्रवर्त्ति होयसल-श्रीवीर**नारसिंह**देवरसरु पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तिरलु तत्पादपद्मोपजीवियुं श्रीमन्नय**कीर्त्ति**-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्रीमदध्यात्म**बालचन्द्र**देवर गुड्डं स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्ननुं जिनगन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गनुं सद्धर्म्म-कथाप्रसङ्गनुं चतुर्व्विधदानविनोदनुमप्प **पदुम**सेट्टिय मग **गोम्मट**सेट्टि **खरसंवत्सरद पुष्य शुद्ध** उत्तरायण-सङ्क्रान्ति पाडिदिव **बृहवार**दन्दु श्रीगोम्मटदेवर चव्वीसतीर्थंकर अष्ट-विधार्च्चनेगे अक्षयभण्डारवागि कोट्ट गद्याण ॥ १२ ॥

[होय्सल नरेश नारसिंह के राज्य में पदुमसेट्टि के पुत्र व अध्यात्मि बालचन्द्रदेव के शिष्य गोम्मट सेट्टि ने गोम्मटेश्वर की पूजार्चन के लिए १२ 'गद्याण' का दान दिया।]

[नोट—दान 'खर' संवत्सर की उक्त तिथि को दिया गया था। शक सं० ११९३ खर संवत्सर था।]

८२ (२५३)

ब्रह्मदेव मण्डप में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १३४४)

(दक्षिण मुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

श्रीबुक्करायस्य बभूव मन्त्री श्रीवैचदण्डेश्वरनामधेयः ।
नीतिर्यदीया निखिलाभिनन्द्या निश्शेषयामास विपक्ष-
लोकम् ॥ २ ॥

दानं चेत्कथयामि लुब्धपदवीं गाहेत सन्तानको
वैदग्ध्यं यदि सा बृहस्पतिकथा कुत्रापि संलीयते ।
क्षान्ति चेदनपायिनी जडतया स्पृश्यत सर्व्वंसहा
स्तोत्रं वैचपदण्डनेतुरखिलैः शक्यं कवीनां कथं ॥ ३ ॥

तस्मादजायन्त जगद्जयन्तः पुत्रास्त्रयो भूषितचारुशीलाः ।
यैर्भूषितोऽजायत मध्यलोको रत्नैस्त्रिभिर्ज्जैन इवापवर्गः ॥ ४ ॥

इरुगपदण्डनाथमथ बुक्कणमप्यनुजौ
स्वमहिमसम्पदाविरचयन् सुतरां प्रथितौ ।
प्रतिभटकामिनीपृथुपयोधरहारहरो
महितगुणोऽभवद् जगति मङ्गपदण्डपतिः ॥ ५ ॥

दाक्षिण्यप्रथमास्पद सुचरितस्यैकाश्रयस्सत्यवा-
गाधारस्सततं वदान्यपदवीमध्यारजङ्घालकः ।
धर्म्मोपघ्नतरुः क्षमाकुलगृहं सौजन्यसङ्केतभू-
कीर्ति मङ्गपदण्डपोऽयमतनोज्जैनागमानुव्रतः ॥ ६ ॥

जानकीत्यभवदस्य गेहिनी चारुशीलगुणभूषणोज्वला ।
जानकीव तनुवृत्त-मध्यमा राघवस्य रमणीयतेजसः ॥ ७ ॥

आस्तां तयोरस्तमितारिवर्गौ पुत्रौ पवित्रीकृतधर्म्ममार्गौ ।
जायानभूत्तत्र जगद्विजेता भव्याग्रणी वैचपदण्डनाथः ॥८॥

इरुगपदण्डाधिपतिस्तस्यावरजस्समस्तगुणशाली ।
यस्य यशश्चन्द्रिकया मीलन्ति दिवाप्यरातिमुखपद्माः ॥ ९ ॥

वृत्त ॥

ब्रह्मन् भाललिपि प्रमार्ज्जय न चेद् ब्रह्मत्वहानिर्भवे-
दन्यां कल्पय कालराजनगरी तद्वैरिपृथ्वीभृतां ।
वेताल व्रज वर्द्धयोदरतति पानाय नव्यासृजां
युद्धायोद्धतशात्रवैर् इरुगपद्माप: प्रकोपोऽभवत् ॥ १० ॥
यात्रायां ध्वजिनीपतेरिरुगपद्मापस्य धाटीघटद्-
घोटीघोरखुरप्रहारततिभि: प्रोद्धूतधूलिव्रजैः ।
रुद्धे भानुकरेऽगमद्द्विपुकराम्भोजं च संकोचनम्

(पश्चिम मुख)

प्रापत्कीर्त्तिकुमुद्वती विकसनं दीप्तः प्रतापानल: ॥ ११ ॥
यात्रायामिरुगेश्वरेण सहसा शून्यारिसौधाङ्गण-
प्रोल्लासद्विधुकान्तकान्तशकले गच्छद्वनेभाधिप: ।
हत्वा स्वप्रतिमां प्रतिद्विपमिति छिन्नैकदन्तस्तदा
त्राहि त्राहि गजाननेति वहुधा वेतालवृन्दैस्स्तुतः ॥ १२ ॥
को धात्रा लिखितं ललाटफलके वर्ण्णं प्रमाष्टुं क्षमो
वार्त्तां धूर्त्तवचोमयीमिति वयं वार्त्तान्न मन्यामहे ।
यद् धात्र्यामिरुगेन्द्रदण्डनृपतौ सञ्जातमात्रे प्रियो
निश्श्रीरप्यधिकश्रियाघटि रिपुस्सश्रीरपश्रीकृतः ॥ १३ ॥
यद् वाहाविरुगेन्द्रदण्डनृपतेर्व्बिभ्रत्यनन्ताधुरं
शेषाधीशफणागणो नियमितां सस्वाङ्गनायास्सदा ।

गाढ़ालिङ्गनसान्द्रसम्भवसुखप्रोद्भूतरोमावलिः
माहस्रो रसनामधात्तवगुणान् स्तोतुं कृतार्त्थः फणी ॥ १४ ॥

आहारसम्पदभयार्प्पणमौषधं च
शास्त्रं च तस्य समजायतनित्यदानम् ।
हिंसानृतान्यवनिताव्यसनं स चौर्य्यं
मूर्च्छा च देशवशतोऽस्य बभूव दूरे ॥ १५ ॥

दानं चास्य सुपात्र एव करुणा दीनेषु दृष्टिर्ज्जिने
भक्तिर्द्धर्म्मपथे जिनेन्द्रयशसामाकर्ण्णनेषु श्रुती ।
जिह्वा तद्गुणकीर्त्तनेषु वपुषस्सौख्यं च तद्वन्दने
घ्राणं तच्चरणाब्जसौरभभरे सर्व्वं च तत्सेवने ॥ १६ ॥

यिरुगपदण्डनाथयशसा धवले भुवने
मलिनिमसोस्तत्र. परमधीरदृशां चिकुरे ।
वहति च तस्य बाहुपरिघे धरणीवलयं
परमितरीतराक्रम-कथापि च तत्कुचयोः ॥ १७ ॥

कर्न्नैर्व्विस्मृतकुण्डलैरतिलकासङ्गैर्ल्ललाटस्थलै-
राकीर्न्नैरलकैः पयोधरतटैरस्पृष्टमुक्तागुणैः ।
बिम्बोष्ठैरपि वैरिराजसुदृशस्ताम्बूलरागोज्झितै-
र्य्यस्य स्फारतरं प्रतापमसकृद् व्याकुर्व्वते सर्व्वतः ॥ १८ ॥

(पूर्वमुख)

यत्कीर्त्तिभिस्सुरधुनीपरिलङ्घिनीभि-
र्धौते चिराय निजबिम्बगते कलङ्के ।

स्वच्छात्मकस्तुहिनदीधितिरङ्गनाना-

मव्याजमाननरुचिं कवलीकरोति ॥ १९ ॥

यत्पादाब्जरजःकणा प्रसुवते भक्त्या नतानां भुवं

यत्कारुण्यकटाक्षकान्तिलहरी प्रक्षालयत्याशय ।

मोहाहङ्करणं चिणोति विमला यद्वैखरीमौखरी

वन्द्यः कस्य न माननीयमहिमा श्रीपण्डितार्य्यो यतिः

॥ २० ॥

मन्दारद्रुममञ्जरीमधुझरीमञ्जुस्फुरन्माधुरी-

प्रौढाहङ्कृतिरूढिपाटवपरीपाटो कृकाटी भटः ।

नृत्यद्रुद्रकपर्द्दगर्त्तविलुठत्स्वर्ल्लोककल्लोलिनी-

सल्लापी खलु पण्डितार्य्ययमिनो व्याख्यानकोलाहलः

॥ २१ ॥

कारुण्यप्रथमावतारसरणिश्शान्तेर्न्निशान्तं स्थिरं

वैदुष्यस्य तपःफलं सुजनतासौभाग्यभाग्योदयः ।

कन्दर्प्पद्विरदेन्द्रपञ्चवदनः काव्यामृतानां खनि-

र्ज्जैनाध्वाम्वरभास्करश्श्रुतमुनिर्ज्जागर्त्ति नम्रार्त्तिजित् ॥ २२ ॥

युक्त्यागमार्न्नवविलोलनमन्दराद्रि-

श्शब्दागमाम्बुरुहकाननबालसूर्य्यः ।

शुद्धाशयः प्रतिदिनं परमागमेन

संवर्द्धते श्रुतमुनिर्य्यतिसार्व्वभौमः ॥ २३ ॥

तत्सन्निधौ बेल्गुले जगदग्रतीर्थे

श्रीमानसाविरुगपाह्वय दण्डनाथः ।

श्रीगुम्मटेश्वरसनातनभोगहेतो-

र्ग्रामोत्तमं वेलुगुलाख्यमदत्तधीरः ॥ २४ ॥

शुभकृति वत्सरे जयति कार्त्तिकमासि तिथौ।

सुरमथनस्य पुष्टिमुपजग्मुषि शीतरुचौ ॥२५॥

मदुपवनं स्वनिर्म्मितनवीनतटाकयुतम्।

सचिवकुलाग्रणीरदितत्तीर्त्थवरं मुदितः ॥२६ ॥

इरुगपदण्डाधीश्वरविमलयश.कलमवर्द्धनक्षेत्र।

आचन्द्रतारकमिदं वेलुगुलतीर्थ प्रकाशतामतुल ॥२७ ॥

दानपालनयोर्म्मध्ये दानाच्छ्रेयोऽनुपालनं।

दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं पद ॥२८॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत्त वसुन्धरा।

षष्टिर्व्वर्षस हस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि ॥२९॥

मङ्गल महा श्री श्री श्री श्री ॥

८३ (२४९)*

नं० ८२ के पश्चिम की ओर मण्डप में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १६२१)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥१॥

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय शालिवाहनशकवर्ष १६२१ ने सलुव

शोभकृतु संवत्सरद कार्त्तिक ब १३ गुरुवारदल्लु

श्रीमत् महाराजाधिराज राजपरमेश्वर कर्नाटकराज्याभिषवण

* लेख के नीचे का नोट देखो।

परितृप्त परमाह्लाद परममङ्गलीभूत षड्दर्शनसंरक्षणविच-क्षणोपाय विद्वद्गरिष्ठदुष्टदुप्तजनमदविभञ्जन **महिशूर** धरा-धिनाथरप्प देव**कृष्णराज**वडेयरैयनवरु ॥ मत्तं ॥

वृत्त ॥ जनताधाररुदारसत्यसदयं सत्कीर्त्तिकान्ताजयं
विनयं धर्म्मसदाश्रयं सुखचयं तेजः प्रतापोदयं ।
जननाथं वरकृष्णभूवरलसत्प्रख्यातचन्द्रोदयं
घनपुण्यान्वितक्षत्रियाण्म पडेदं सद्धर्म्मसम्पत्तियं ॥२॥

कन्द ॥ श्रामद्बेल्गुलदचलदि
सोमार्क्कर जरिव देवगोमटजिनपन ।
श्रीमुखववलोकिसलोड-
नामोदवु पुट्टि हरुषभाजनतुसुर्दं ॥३॥

वचन ॥ पार्त्थिवकुलपवित्रनुं कृष्णराजपुङ्गवनुं बेलुगुलद जिनधर्म्मक्के विटन्थं ग्रामाधिग्रामभूमिगल् । आर्हनहल्लियुं । होसहल्लियुं । जिननाथपुरं । बस्तियग्रामगुं । राचनह-ल्लियुं । उत्तनहल्लियु । जिननहल्लियुं । कोप्पलुगल् वेरसु कसबे-बेलुगुलसमेतं । सप्तसमुद्रमुल्लन्नेवर सप्तपरमस्था-नाधिपतियप्प गोम्मटस्वामियवर पूजोत्सवङ्गल पुण्यसमृद्धि-सम्प्राप्त्यनिमित्त्यर्त्थवागियुं । अञ्जाञ्जमित्रर–साक्षिपूर्व्वकं सर्व्वमान्यवागि दयपालिसियु मत्तं ।

कन्द ॥ चिगदेवराजकल्या-
णिय भागदोलिप्पे अन्नछत्रादिगलिगे ।

सुगुणियु कवालेग्रामव
जगदेरंयनु कृष्णराजशेखर नित्तं ॥४॥

इन्ती वेल्गुलधर्म्मवु
अन्तरिसदे चन्द्रसूर्य्यरुल्लन्नेवरं ।
सन्तसदिन्देम्मय भू-
कान्तरु रचिसलि धर्म्मवृद्धिय वेल्लेयं ॥५॥

यी धर्म्ममं परिपालिसिदवर् धर्म्मार्त्थकाममोचङ्गलं परम्परेयिं पडेयुवर् ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दी जिनधर्म्ममं नडेयिपर्गायुं महाश्रीयु-
मक्केयिदं कायद नीचपापिगे कुरुचेत्रोर्व्वियोल् वाणरा-
शियोल्लेल्कोटि मुनीन्द्ररं कपिलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदो-
न्दयसं सार्गुमिदेन्दु कृष्णनृपशैलाचारगल् नेमिसल् ॥
इतिमङ्गलं भवतु ॥ श्री श्री श्री ॥

[मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर ने गोम्मटेश्वर भगवान् के दर्शन किये और हर्ष से पुलकित होकर वेल्गोल में जैन धर्म के प्रभावानार्थ सदा के लिए उक्त ग्रामों का दान किया। इन ग्रामों में वेल्गुल भी है]

[नोट—लेख में शक सं० १६२१ शोभकृत् का उल्लेख है। पर शक १६२१ न तो शोभकृत ही था और न उस समय कृष्णराज ओडेयर का ही राज्य था। लेख का ठीक समय शक सं० १६२६ है जो शोभकृत् था और जब कृष्णराज ओडेयर् का राज्य था।]

८४ (२५०)

उसी स्तम्भ की दूसरी बाजू पर

(शक सं० १५५६)

श्री शालिवाहन शकवरुष १५५६ नेय भावसंवत्सरद आषाढ़-शु-१३ स्थिरवार ब्रह्मयोगदलु श्रीमन्महाराजाधिराज राजपरमेश्वर मैसूरपट्टनाधीश्वर षड्दरुशन-धर्म्मस्थापनाचार्य्यराद चामराजवोडेयरु अय्यनवरु बेलुगुलद स्थानदवर चेत्रवु वहुदिन अडवु आगिरलागि आचामराजवोडेयरु-अय्यनवरु यीचेत्रव अडवहिडिदन्तावरु होसवोलल केम्पप्पन मग चन्नण्न बेलुगुलद पायिसेट्टियर मक्कलु चिक्कण्न चिगपायसेट्टि यिवरु मुन्ताद अडवहिडिदन्तावर करसि निम्म अडविन सालवनु तीरिसेनु यन्नलागि चन्नण्न चिक्कण्न चिगपायिसेट्टि सुद्दण्न अज्जण्णन पद्मप्पन मग पण्डेण्न पदुमरसय्य दोड्डण्न पञ्चबाणकविगल मग बम्मप्प बोम्मणकवि विजेयण्न गुम्मण्न चारुकीर्त्ति नागप्प बेडदय्य बोम्मिसेट्टि होसहलिय रायण्न परियण्नगौड बैरसेट्टि बैरण्न वीरय्य इवरु मुन्ताद समस्तरु तम्म तन्देतायिगलिगे पुण्येवागलियेन्दु गोम्मटस्वामिय सन्निधियलि तम्म गुरु चारुकीर्त्तिपण्डितदेवर मुन्दे धारादत्तवागि यी-अडहिन पत्रसालवनु यी-अडव कोट्ट स्थानदवरिगे यी-वर्त्तकरु गौडुगलु यी-सालवनु धारापूर्व्वकवागि कोट्टेवु यी विट्टन्त पत्रसालवनु भावनादरु अलुपिदरे काशिरामेश्वरदलि

साहस्रकपिलेयनु ब्राह्मणरनु कोन्द पापक्के होगुवरु येन्दु बरेद शिलाशासन ॥ श्री श्री ॥

[बेल्गुळ मन्दिर की जमीन आदि बहुत दिनों से रहन थी । उक्त तिथि को महाराज चामराज ओडेयर ने चेन्नन्न आदि रहनदारों को बुलाकर कहा कि तुम मन्दिरों की भूमि को मुक्त कर दो, हम तुम्हारा रुपया देते हैं । इस पर रहनदारों ने अपने पूर्वजों के पुण्य-निमित्त विना कुछ लिये ही श्रीगोम्मटस्वामी और अपने गुरु चारुकीर्ति पण्डित देव की साक्षी में मन्दिरों की भूमि रहन से मुक्त कर दी और यह शिलालेख लिखाया ।

८५ (२३४)

गोम्मटेश्वर-द्वार की वाईं ओर एक पाषाण पर

(लगभग शक सं० ११०२)

श्रीगोम्मटजिननं नर-
नागामर-दितिज खचर-पति-पूजितनं ।
योगाग्निहतस्मरनं
योगिध्येयननमेयनं स्तुतियिसुवें ॥१॥

क्रमदिं मय्वोणदरिद क्रमदे मातं विद्दु तन्निट्ट च-
क्रमदु निःप्रभमागे सिग्गनोलकोण्डात्माग्रजङ्गोल्पु गं-
ग्दुमहीराज्यमनित्तु पोगि तपदि कर्म्मारि विध्वंसियाद
द महात्मं पुरुसूनुबाहुबलिवोल् मत्तारो मानोन्नतर् ॥२॥

धृतजयबाहुबाहुबलिकेवलिरूपसमानपञ्चवि-

शति-समुपेत-पञ्चशतचापसमुन्नतियुक्तमप्प तत्-
प्रतिकृतियं मनोमुददे माडिसिदं भरतं जिताखिल-
क्षितिपतिचक्रि पौदनपुरान्तिकदोल् पुरुदेवनन्दनं ॥३॥
चिरकालं सलें तज्जिनान्तिकधरित्रीदेशदोल्लोकभी-
करयां कुक्कुटसर्प्पसङ्कुलमसङ्ख्यं पुट्टे दल् कुक्कुटे-
श्वर-नामन्तदघारिगादुदुवलिक्कं प्राकृतग्गोचरगो-
चरमन्तामहि मन्त्रतन्त्रनियतर्क्काण्वग्र्गडिन्नुं पलर् ॥४॥
केलल्कप्पुदु देवदुन्दुभिरवं मातेनो दिव्यार्च्चना-
जालं काणलुमप्पुदाजिनन पादोद्यन्नखप्रस्फुर-
ल्लीलादर्प्पणमं निरीक्षिसिदवर्क्काण्वर्न्निजातीत ज-
न्मालम्बाकृतियं महातिशयमादेवङ्गिलाविश्रुतं ॥५॥
जनदिं तज्जिनविश्रुतातिशयमं तां केल्दु नोल्पल्ति चे-
तनेयोल् पुट्टिरे पोगलुद्यमिसे दूरं दुर्ग्गमं तत्पुरा-
वनियेन्दार्य्यजनं प्रबोधिसिदोडन्तादन्दु तद्देवक-
ल्पनेयिं माडिपेनेन्दु माडिसिदनिन्तीदेवनं गोमटं ॥६॥
श्रुतमुं दर्शनशुद्धियुं विभवमुं सद्वृत्तमुं दानमुं
धृतियुं तन्नोले सन्द गङ्गकुलचन्द्रं राचमल्लं जग-
न्नुतनाभूमिपनद्वितीयविभवं चामुण्डराय मनु-
प्रतिमं गोम्मटनल्ते माडिसिदनिन्ती देवनं यत्नदिं ॥७॥
अतितुङ्गाकृतियादोडागददरोल्सौन्दर्य्यमौन्नत्यमुं
नुतसौन्दर्य्यमुमागे मत्तविशयंतानागदौन्नत्यमुं ।
नुतसौन्दर्य्यमुमूर्ज्जितातिशयमुं तन्नल्लि निन्दिर्दुवें

क्षितिसम्पूज्यमो गोम्मटेश्वरजिनश्रीरूपमात्मोपमं ॥८॥
प्रतिबिद्धं बरेयल् मयं नेरेयें नोडल् नाकलोकाधिपं
स्तुतिगेय्यल् फणिनायकं नेरेयनेन्दन्दन्यरारापुरिं ।
प्रतिबिद्धं बरेयल् समन्तु तवे नोडल् वण्णिसल् निस्समा-
कृतियंदक्षिणकुक्कुटेशतनुवं साश्चर्य्यसौन्दर्य्यमं ॥९॥
मरेदुं पारदु मेले पक्षिनिवहं कक्षद्वयोद्देशदोल्
मिरुगुत्तुं पेरपोण्मुगुं सुरभिकाश्मीरारुणच्छायमी-
तेरदाश्चर्य्यमनीत्रिलोकद जनं तानेय्दे कण्डिर्द्दुदा-
र्मेरवर्त्तेट्टने गोम्मटेश्वरजिनश्री मूर्त्तियं कान्तिसल् ॥१०॥
नेलगट्टानागलोकं तलमवनि दिशाभित्ति भित्तिव्रजं स्व-
स्तलभागं मुचण मेगण सुरर विमानोत्करं कूटजालं ।
विलसत् तारौघमन्तर्व्वितितमणिवितानं समन्तागे नित्यं
निलयं श्रीगोम्मटेशङ्गेनिसिदुदु जिनोक्तावलोकं त्रिलोकं
॥ ११ ॥

अनुपमरूपने स्मरनुदग्रने निर्ज्जितचाक्र सत्तु दा-
रने नेरे गेल्दुमित्तनखिलोर्व्वियनत्यभिमानिय तपस्-
स्थनुमेरडङ्ग्रियित्तेजयो लिर्द्दपुदेम्बननूनबोधने
विनिहतकर्म्मबन्धनेने बाहुबलीशनिर्दनुदात्तनो ॥ १२ ॥
अभिमानस्थिरभावमं नमगे माल्कत्युद्धमानोन्नतं
शुभसौभाग्यमनङ्गज भुजबलावष्टम्भमं चक्रव-
र्त्तिभुजादर्प्पविलोपि बाहुबलि तृष्णाच्छेदमं मुक्तरा-
ज्यभरं मुक्तियनाप्तनिर्व्वृत्तिपदं श्रीगोम्मटेशं जिनं ॥१३॥

स्फुरदुद्यत्सितकान्तियिं परिसरत्सौरभ्यदिन्दं दिशो-
त्करमं मुद्रिसुतुं नमेरुसुमनोवर्षं स्फुटं गोम्मटे-
श्वरदेवोत्तमचारुदिव्यशिरदोल् देवर्कलिन्दादुदं
धरेयेल्ल नेरे कन्डुदामहिमेयादेवङ्गदाश्चर्य्यमे ॥ १४ ॥
एनगाय्तोच्चिशलागदाय्तेनगे काणल्केम्ववोलाय्ते पे-
ल्वनितावालकवृद्धगोपततियुं कण्डल्करिन्दार्न्विनं ।
दिनवोन्दावगमुद्‌घदिव्यकुसुमासारं मह्रीलोकलो-
चन सन्तोषदमाय्तु गोम्मटजिनाधीशोत्तमाङ्गाग्रदोल् ॥१५॥
मिरुगुव तारकप्रकरमीपरमेश्वरपादसेवेगे-
न्देरपुदे भक्तियिन्दमेने निर्म्मलिनं घनपुष्पवृष्टि घ-
न्दरगिदुदभ्रदिं धरेगदभ्रतराङ्घ तहर्पकोटि कण्-
देरेदिरे सन्द वेल्गुलद गोम्मटनाथन पादपद्मदोल् ॥१६॥
भरतननादिचक्रधरनं भुजयुद्धदे गेल्द कालदोल्
दुरितमहारियं तविसि केवलवोधमनाल्द कालदोल् ।
सुरतति मुन्ने माडिदुदु पूमलेयीदोरेयक्कुमेम्बिनं
सुरिदुदु पुष्पवृष्टि विभुबाहुबलीशन मेले लीलेयिं ॥१७॥
केम्मगिदेके नाड पलवन्दद नन्दिद विन्दिगर्कलं
नीं मरुलागि देवरिवरेन्दवरं मतिगेट्टु निन्नने-
कम्म तोलल्चिदप्पे भवकाननदोल् परमात्मरूपनं
गोम्मटदेवनं नेनेय नीगुवे जाति जरादिदुःखमं ॥१८॥
सम्मत्वागलाग कोलेयुं पुसियु कलवु पराङ्गना-
सम्मतियुं परिग्रहद काङ्क्षेयुमेम्बिवरिन्दमादोडे-

न्दुं मनुजङ्गिरत्रैय परत्रैय केडेनुतुं महोच्चदोल्
गोम्मटदेवनिर्द्दु सले साकुववोलेसेदिर्द्दनीच्चिसै ॥ १९ ॥
गम्मुमनीवमन्ततुमनिन्दुवुमं ननेविल्लुमम्बुम
केम्मगनाथयूथमने माडि विसुद्दु तपक्के पुण्डु नि-
न्दिम्मिगिलप्पुदे पडेवुदेन्दतिमुग्धयरल्पनादमु
गोम्मटदेवनिन्नकिविगेव्ददवे निन्नवोलारा नि क्रुपर् ॥२०॥
गम्मनिदक्के नी विसुटेयेन्देनेयु लतिकाङ्गियर्कलुं
तम्मललिन्दे बन्दु विगियप्पिदरेम्बिनमङ्गदप्पि पु-
त्तुं मुरिदोत्ति तल्त लतिकालियुमोप्पे तपोनियोगदोल्
गोम्मटदेवनिर्द्दिरवहीन्द्रसुरेन्द्रमुनीन्द्रवन्दितं ॥ २१ ॥
तम्मनेपोदरन्ननुजरेल्लरुमेय्दे तपक्के नीनुमि-
न्तम्म तपक्के वोदोडेनगीसिरियोप्पदु वेडेनुत्तु म-
प्पं मनमिल्दुमन्नुसिगंयुं वगेगोल्लदे दीक्षेगोण्डे नी
गोम्मटदेव निन्न तरिसन्दलवार्य्यजनक्के गोम्मटं ॥ २२ ॥
निम्मडियेन्न धात्रियोलगिर्द्दपुवेयिद्दु वेड धात्रि ता
निम्मदुमेन्नदु वगेवोडल्नदु वेरदु द्दष्टिवोधवी-
र्य्य महितात्मधर्म्ममभवोक्तियोलेम्ब निजाग्रजोक्तियि
गोम्मटदेव नी मनद मानकपायमनेय्दे तूल्दिदै ॥ २३ ॥
तम्मतपस्विगलं कुतपस्थिति वेल्दवलाङ्गसङ्गतं
तम्म शरीरमागे नेगलन्यतराप्तरशस्तवृत्तकं ।
कम्मरियोजनन्दमे वलं स्वपरात्त्यसौख्यहेतुवं
गोम्मटदेव नी तपमनान्तुपदेशकनादुदोप्पदे ॥ २४ ॥

र्नों मनमं निजात्मनोलकम्पितमागिडे मोहनीयमु-
ख्यम्मणिदोडि वीले घनघातिबलं बलद्दकप्रबोधसौ-
ख्यं महिमान्वितं नेगले वर्त्तिसि मत्तमघातिघातदिं
गोम्मटदेवमुक्तिपदमं पडेदै निरपायसौख्यमं ॥ २५ ॥
कम्मिदवप्प काड पोसपूगलिनच्चिर्चेसि पादपद्ममं
सम्मददिन्दे नोडि भवदाकृतियं बलगोण्डु बल्लपा-
ङ्गि मनमोल्दु कीर्त्तिपवरें कृतकृत्यरो शक्रनन्ददिं
गोम्मटदेव निन्ननरिदर्च्चिसुतिप्पवरे कृतार्त्थरो ॥ २६ ॥
कुसुमास्त्रं कामसाम्राज्यद महिमेयनान्तिर्द्दोडं मुन्ने तन्नोल्
वसुधा साम्राज्ययुक्तं **भरत**करविमुक्तं रथाङ्गास्त्रमुग्रां-
शु-समन्तन्नुद्घदोर्द्दण्डमनेलसिदोडं बिट्टवं मुक्तिसाम्रा-
ज्यसुखार्त्थं दीचेयं बाहुबलि तलेदनेम्मन्नरेनेन्दोमाण्बर् ॥२७॥
मनदि तुडियिं तनुवि-
न्देनसुं मुन्नेरपिदघमनलरिपेनेम्बी-
मनदिन्दमोसेदु **गोम्मट-**
जिननं स्तुतियिसिदनिन्तु सुजनोत्तंसं ॥ २८ ॥
सुजनर्भव्यरे तनगव-
रजस्रमुत्तंसमप्प पुरुलिं **बोप्पं** ।
सुजनोत्तसनेनिप्पं
सुजनगुंत्तसमेम्ब पुरुलिन्देनिसं ॥ २९ ॥
ई-जिननुतिशासनमं
श्रीजिनशासनविदं विनिर्म्मिसिदं वि-

धाजितवृजिनं सुकवि स-
माजनुतं विशदकीर्त्ति सुजनोत्तंसं ॥ ३० ॥
वरसैद्धान्तिक-चक्रे-
श्वरनयकीर्त्तिव्रतीन्द्रशिष्यं निजचि-
त्परिणतनध्यात्मकला-
धरनुज्वलकीर्ति बालचन्द्रमुनीन्द्रं ॥ ३१ ॥
तन्मुनिनियोगदिं ॥
पोडयिगे सन्द गोम्मटजिनेन्द्रगुणस्तवशासनक्के क-
न्नडगविप्पर्नेन्देनिप बोप्पणपण्डितनोल्दु पेल्दिवं ।
कडयिसिदं बल कवडमय्यन देवणनल्तियिन्दे बा-
गडेगेय रुद्रनादरदे माडिसिदं विलसत्प्रतिष्ठेयं ॥ ३२ ॥

[इस लेख में बाहुबलि गोम्मटेश्वर की स्तुति है। बाहुबलि पुरु-देव के पुत्र तथा भरत के लघुभ्राता थे। इन्होंने भरत को युद्ध मे परास्त कर दिया। किन्तु संसार से विरक्त हो राज्य भरत के लिये ही छोड़ उन्होंने जिन-दीक्षा धारण कर ली। भरत ने पौदनपुर के समीप ५२५ धनुष। प्रमाण बाहुबलि की मूर्त्ति प्रतिष्ठित कराई। कुछ काल बीतने पर मूर्ति के आसपास की भूमि कुक्कुट सर्पों से व्याप्त और बीहड़ वन से आच्छादित होकर दुर्गम्य हो गई। रामचन्द्रनृप के मन्त्री चामुण्डराय को बाहुबलि के दर्शन की अभिलाषा हुई पर यात्रा के हेतु जब वे तैयार हुए तब उनके गुरु ने उनसे कहा कि वह स्थान बहुत दूर और अगम्य है। इस पर चामुण्डराय ने स्वय वैसी मूर्त्ति की प्रतिष्ठा कराने का विचार किया और उन्होंने वैसा कर डाला।

लेख में चामुण्डराय-द्वारा स्थापित गोम्मटेश्वर का बड़ा ही मनोहर वर्णन है। 'जब मूर्त्ति बहुत बड़ी होती है तब उसमें सौन्दर्य प्राय.

१२

नहीं आता। यदि बड़ी भी हुई और सौन्दर्य भी हुआ तो उसमें दैवी प्रभाव का अभाव हो सकता है। पर यहाँ इन, तीनों के मिश्रण से गोम्मटेश्वर की छटा अपूर्व हो गई है।' कवि ने एक दैवी घटना का उल्लेख किया है कि एक समय सारे दिन भगवान् की मूर्त्ति पर आकाश से 'नमेरु' पुष्पों की वर्षा हुई जिसे सभी ने देखा। कभी कोई पक्षी मूर्त्ति के ऊपर होकर नहीं उड़ता। भगवान् की भुजाओं के अधोभाग से नित्य सुगन्ध और केशर के समान रक्त ज्योति की आभा निकलती रहती है।

बाहुबलि स्वामी ने किस प्रकार राज्य को त्याग कठिन तपस्या स्वीकार की, कैसा घोर तप किया, कर्म शत्रुओं को कैसा दमन किया आदि विषयों का वर्णन बड़ा ही चित्तग्राही है।

लेख की कविता बड़े ऊँचे दर्जे की है। यह कन्नड़ कविराज बोप्पण पण्डित अपर नाम 'सुजनोत्तंस' की रचना है। इसे उन्होंने नयकीर्ति के शिष्य बालचन्द्र मुनि के शिष्य कवडमय्य देवन के आग्रह से रचा।]

८६ (२३५)

उसी पाषाण के पश्चिम मुख पर

(लगभग शक सं० ११०७)

स्वस्ति श्री बेलुगुलतीर्थद गोम्मटदेवर सुत्तालयदोलु वड्डव्यवहारि मोसलेय बसविसेट्टियरु ताबु माडिसिद चतुर्व्विंसतितीर्थंकर अष्टविधार्च्चनेगे मोसलेय नकरङ्गलु वरिसनिबन्धियागि कोडुव पडि नेमिसेट्टि बसविसेट्टि प ४ गङ्गर महदेवचिकमादि प २ दम्मिसेट्टि प ४ बिट्टिसेट्टि बीचिसेट्टि एलगिसेट्टि

प ३ उयमसेट्टि बिदियमसेट्टि प ४ मह्ददेव सेट्टि रट्टे सेट्टि प २ पारिससेट्टि बसविसेट्टि रायिसेट्टि प ४ मारगूलिसेट्टि होय्सल-सेट्टि प २ नम्बिदेवसेट्टि प ५ चोकिसेट्टि प ५ जिन्निसेट्टि प ५ वाहुवलिसेट्टि प ५ पट्टणसामि अड्किसेट्टि मालिसेट्टि प ३ मह्ददेव-सेट्टि गोविसेट्टि प २ बम्मिसेट्टि मूकिसेट्टि प २ माराण्डिसेट्टि मह्ददेवसेट्टि प २ वैरिसेट्टि मारिसेट्टि प २ सोविसेट्टि दुद्दिसेट्टि प २ हारुवसेट्टि हरदिसेट्टि प २ बम्माण्डि प २ सान्तेय प १ कूतैय्य प २ मासणिसेट्टि कूविसेट्टि बसविसेट्टि प ३ चट्टिसेट्टि वसविसेट्टि प १ मल्लिसेट्टि प १ मह्ददेव वयिर प २ बम्मेय मसण प २ कालेय गाडेय प २ गवुड्डमासि मदवनिगसेट्टि प २ मालि-सेट्टि पारिससेट्टि प २ होन्निसेट्टि बोकिसेट्टि प २ गङ्गिसेट्टि आय्तसेट्टि देविसेट्टि (प) २ मालिसेट्टि दम्मिसेट्टि प २ मारि-सेट्टि आय्तमसेट्टि प २ मारज्ज हरियण कालेय प २ मारगौ-ण्डनहल्लिय गुम्मज्ज वैरेय प १ माकिसेट्टि बूविसेट्टि प १ एचि-सेट्टि प १ अक्कनेय मह्ददेवसेट्टि पारिस्ससेट्टि प १ निडिय मल्लिसेट्टि प १...

[मोसले के वड्ड व्यवहारि बसवसेट्टि द्वारा प्रतिष्ठापित चतुर्विंशति तीर्थंकरों की अष्टविधपूजन के लिए मोसले के महाजनों ने वक्त मासिक चन्दा देने का सकल्प किया ।]

८७ (२३६)

उसी पाषाण के पूर्व मुख पर

(लगभग शक सं० ११०७)

श्रीबसविसेट्टियर तीर्त्थकर अष्टविधार्च्चनेगे मोसलेय नकर वरिस निबन्धियागि चवुण्डेय जकण्ण किरिय-चवुण्डेय प २ मह्देवसेट्टि कम्बिसेट्टि प १ उयमसेट्टि पारिससेट्टि प १ बोकि-सेट्टि बूकिसेट्टि प १ माचिसेट्टि हेग्गिसेट्टि सुग्गि सेट्टि प १ सूकिसेट्टि प १ रामिसेट्टि हाविसेट्टि (प) १ मच्चिसेट्टि बसविसेट्टि प १ मल्लिसेट्टि गुड्डिसेट्टि चिक्कमल्लिसेट्टि(प)२ मसणिसेट्टि माचि-सेट्टि अम्माण्डिसेट्टि प २ अलियमारिसेट्टि सुग्गिसेट्टि प २ करि-किसेट्टि चिक्कमादि प २ करिय बम्मिसेट्टि मारिसेट्टि प १ मल्लि-सेट्टि अयिविसेट्टि कालिसेट्टि प २ मणिगार माचिसेट्टि सेट्टियण प १ तेरणिय चौण्डेय हेग्गडे वसवण्ण चन्देय रामेय हुल्लेय जक्कण प २ मालगौण्ड सेट्टियण माचय मारेय चिकण गोल्लेय प १ मादि-गौण्ड गौण्डेय माचेय बम्मेय होन्नेय जक्कगौण्ड प १

[तात्पर्य्य पूर्वोक्तानुसार ही है]

८८ (२३७)

पूर्वोक्त लेख के नीचे

(संभवतः शक सं० १११८)

नल संवत्सरद उत्तरायण-सङ्क्रान्तियल्लु श्रीमन्महापसा-यितं विजयण्णनवरलिय चिक्कमद्दुकण्ण श्रीगोम्मटदेवर

नित्यार्च्चनेगे २० वासिग हूविङ्गे श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु चन्द्र-प्रभदेवर कैयलु मारुगोण्डु गङ्गसमुद्रदलु गद्दे स १ वेद्दलु कं २०० नूरनुं कोण्डु कोट्ट दत्ति मङ्गलमहाश्री।

[उक्त तिथि को महापसायित विजयण्ण के दामाद चिक्क मदुकण्ण ने गङ्गसमुद्र की कुछ भूमि महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव से खरीदकर गोम्मटदेव की प्रतिदिन की पूजन के हेतु बीस पुष्प मालाओं के लिए अर्पण की।]

[नोट—लेख में नल संवत्सर का उल्लेख है। शक सं० १११८ नल था]

८९ (२३८)

पूर्वोक्त लेख के नीचे

(संभवतः शक सं० ११२०)

कालयुक्तिसंवत्सरद कार्त्तिक सु १ आ श्रीगोम्म टदेवर यर्च्चनेगं हुविन पडिगे श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु हिरिय नयकीर्त्तिदेवर शिष्यरु चन्द्रप्रभदेवर कयलु यगलियद कबि सेट्टिय सोमेयनु गद्दे पडवलगंरय गद्दे को १० गङ्गसमुद्रदल्लि कोम्म तगलि को १० आर्व्वदलु गुलेय कयमेगे गधाणा ओन्दुहोन वेदलु अकलुन सीमे।

[उक्त तिथि को कविसेट्टि के (पुत्र) सोमेय ने उक्त भूमि का दान गोम्मटदेव की पुष्प-पूजन के हेतु हिरियनयकीर्ति देव के शिष्य महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव को कर दिया।]

[नोट—लेख में कालयुक्त संवत्सर का उल्लेख है। शक सं० ११२० कालयुक्त था।]

९० (२४०)

गोम्मटेश्वर-द्वार के दाहिनी तरफ़ एक पाषाण पर

(लगभग शक सं० ११००)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥१॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।
अन्यवादि मदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमोऽस्तु ॥
जगत्त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने ।
नयप्रमाणवाग्रश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥३॥
नमो जिनाय ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं । द्वारवती पुरवराधीश्वरं । यादव-कुलाम्बर-द्युमणि । सम्यक्त्वचूडामणि । मलपरोल् गण्डाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृतरप्प श्रीमन्महामण्डलेश्वरं । त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजवलवीर-गङ्ग-विष्णु-वर्द्धन-होय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्कतारं सलुत्तमिरे तत्पाद पद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ जनता धारनुदारनन्यवनितादूरं वचस्सुन्दरी-
घनवृत्तस्तनहारनुग्ररणधीरं मारनेनेन्दपै ।
जनकं तानेने माकणब्बे विबुधप्रख्यातधर्म्मप्रयु-
क्तनिकामात्तचरित्रे तायेनलिदेनेच महाधन्यनो ॥४॥

कन्द ॥ वित्रस्तमलं बुधजन-
मित्रं द्विजकुलपवित्रनेचं जगदोल् ।
पात्रं रिपुकुलकन्द-ख-
नित्रं कौण्डिन्यगोत्रनमलचरित्रं ॥५॥
मनुचरितनेचिगाङ्कन
मनेयोल् मुनिजनसमूहमुं बुधजनमुं ।
जिनपूजने जिनवन्दने
जिनमहिमेगलावकालमुं शोभिसुगुं ॥६॥
उत्तमगुणतिवनिता-
वृत्तियनोल्कोण्डुदेन्दु जगमेल्ल क-
य्येत्तुविनममलगुणस-
म्पत्तिगे जगदोलगे पोचिकव्वेये नोन्तल् ॥७॥
वचन ॥ अन्तेनिसिद् एचिराजन पोचिकव्वेय पुत्रनखिलतीर्थ-
करपरमदेव - परमचरिताकर्ण्णनोदीर्ण्ण - विपुलपुलकपरिक-
लितवारवाणनुमसमसमररसरसिक- रिपुनृपकलापावलेपलो
लुपकृपाणनुवाहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोदनुं सकललोक
शोकापनोदनुं ॥
वृत्त ॥ वज्रं वज्रभृतो हलं हलभृतश्चक्रं तथा चक्रिण-
श्शक्तिश्शक्तिधरस्य गाण्डिवधनुर्गाण्डीवकोदण्डिनः ।
यस्तद्वद्वितनोति विष्णुनृपतेः कार्य्यं कथं मादृशै-
र्गाङ्गो गङ्गतरङ्गरञ्जितयशोराशिस्स वर्ण्यो भवेत् ॥८॥
वचन ॥ अन्तेनिप श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं द्रोहघरट्ट

गङ्गराज चोलन सामन्तनदियमं घट्टदिं मेलाद गङ्गवा-
डिनाड गडिय तलकाड वीडिनोल् पडियिप्पन्तिट्ट चोल
कोट्ट नाडं कोडदे कादि कोल्लिमेने विजिगीपुवृत्तियिन्द
मेत्ति बलमेरडु साच्चिदल्लि ॥

वृत्त ॥ इत्तधा भूमिभागदोलधन्यरदेके भवत्प्रतापस-
म्पत्तिय वर्णनाविधिगे गङ्गचमूप जिगीपुवृत्तिय-
न्देत्तिद निन्न कय्य निशितासिय तीमोने वेन्न बारने-
त्तुत्तिरे पोगि कञ्चि गुरियप्पिनमोडिद दामनेय्दने ॥९॥
कदनदोलन्दु निन्न तरवारिय वारिगे मेय्यनोड्डला-
रदे नलिदिन्तुवन्तदने जानिसि जानिसि गङ्ग तन्न न-
म्बिद सुदतीकदम्बदेर्दे पावने वोगिरे पुल्ले वेच्चु वे-
च्चिदपनहर्निशं तिगुलदामनरण्यशरण्यवृत्तियिं ॥१०॥
एनितानुं ववरङ्गलोलपलवरं वेङ्कोण्ड गण्डन्दमो-
वेनिसुत्तं तलकाडोलिन्नेवरमिर्द्दीगलकरं गङ्गरा-
जन खलगाहतिगलिके युद्धविधियोल्वेन्नित्तु नायुण्णदो-
डिनलुण्डिर्द्दपनत्त शैवशमिवोल्सामन्तदामोदरं ॥११॥

वचन ॥ एम्बिनमोन्दे मेय्योलवयवदिनेय्दि मूदलिसि धृतिगिडिसि
वेङ्कोण्डु मत्तं नरसिङ्गवर्म्म मोदलागे घट्टदिं मेलाद चोलन
सामन्तरेल्लरं वेङ्कोण्डु नाडादुदेल्लमनेकच्छत्रदुण्डिगेसाध्यं
माडि कुडे कृतज्ञं विष्णुनृपति मेच्चि मेच्चिदें वेडिकोल्लिमेने

कन्द ॥ अवनिपनेनगित्तपने-
न्दवरिवरवोलुलिद वस्तुवं बेडदे भू-

भुवनं वण्णिसे गोवि-
न्दवाडियं वेडिदं जिनार्च्चन लुब्धं ॥१२॥
गोम्मटमेने मुनिसमुदा-
यं मनदोलमेच्चि मेच्चि विचलिसुत्तुं ।
गोम्मटदेवर पूजेग-
दं मुदर्दि विट्टनल्ते धीरोदात्तं ॥१३॥

ग्रफर ॥ ग्रादियागिर्प्पुदार्हतसमयक्के मूलसङ्घं कोण्डकु-
दान्वयं
ग्रादु वेळदं वनेयिपुदल्लिय देसिगगणद पुस्तकगच्छद ।
वोधविभवद कुक्कुटासनमलधारि देवर शिष्यरेनिप पेम्पि-
ङ्गादमेसेदिर्प्पं शुभचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्डं गङ्गचमूपति
॥ १४ ॥

गङ्गवाडिय वसदिगलेनितोलवनितुमं तानेय्दे पोसयिसिदं
गङ्गवाडिय गोम्मटदेवगे सुत्तालयमनेय्दे माडिसिदं ।
गङ्गवाडिय तिगुलरं वेङ्कोण्डु वीरगङ्गङ्गे निमिर्चिद कोट्टं
गङ्गराजनामुन्निन गङ्गर रायङ्गं नूर्म्मडि धन्यनल्ते ॥ १५ ॥
धर्म्मस्यैव वलाल्लोको जयत्यखिलविद्विषः ।
ग्रारोपयतु तत्रैव सर्व्वोऽपि गुणमुत्तमं ॥१६॥
श्रीमज्जैनवचोऽब्धिवर्द्धनविधुः साहित्यविद्यानिधि-
स्सर्प्पदर्पकहस्तिमस्तकलुठत्प्रोत्कण्ठकण्ठीरवः ।
स श्रीमान् गुणचन्द्रदेवतनयस्सौजन्यजन्यावनि-
स्स्थेयात् श्रीनयकीर्त्तिदेवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥१७॥

कृतदिग्जैत्रविदं बरुत्ते **नरसिंह**क्षोणिपं कण्डु स-
न्मतियिं **गोम्मटपार्श्वनाथजिनरं** मत्तोचतुर्व्विंशति-
प्रतिमागेहमनिन्तिवर्क्के विनुतं प्रोत्साहदिं विट्टन-
प्रतिमल्लं **सवणेरबेक्क**कगेरेयुमं कल्पान्तरं सल्विनं ॥१८॥

नरसिंहहिमाद्रितदुद्भूतकलशहृदकहुल्लकरजिह्विकेया-
नतधारागङ्गाम्बुनि **नयकीर्त्ति** मुनीशपादसरसीमध्ये ॥१९॥

ललनालीलेगे मुन्नवेन्तु कुसुमास्त्रं पुट्टिदों विष्णुगं
ललितश्रीवधुविङ्गवन्ते **नरसिंह**क्षोणिपालङ्गवे-
चलदेवीवधुगं परार्थचरितं पुण्याधिकं पुट्टिदों
वलवद्वैरिकुलान्तकं जयभुजं **बल्लाल**भूपालकं ॥२०॥

चिरकालं रिपुगलगसाध्यमेनिसिद्दुच्चङ्गियं मुत्ति
दुर्द्धरतेजोनिधि धूलिगोटेयने कोण्डाकामदेवावनी-
श्वरनं सन्दो**डेय**क्षितीश्वरननाभण्डारमं स्त्रीयरं
तुरगव्रातमुमं समन्दु पिडिदं **बल्लाल**भूपालकं ॥२१॥

स्वस्ति श्रीम**न्नयकिर्ति** सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुड्डं श्रीमन्म-
हाप्रधानं सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि हुल्लय्यङ्गलु श्रीमत्प्रताप
चक्रवर्त्ति **वीरबल्लालदेवर** कय्यलु **गोम्मटदेवर पार्श्वदेवर**
चतुर्व्विंशति तीर्त्थकरर अष्टविधार्च्चनेगं रिषियराहारदानकं
बेडिकोण्डु **सवणेरबेक्क**कगेरेय बिट्ट दत्ति ॥

परमागमवारिधिहिम-
किरणं राद्धान्तचक्रि**नयकीर्त्ति**यमी-

श्वरशिष्यनमलनिजचित्-
परिगतनध्यात्मिबालचन्द्रमुनीन्द्रं ॥ २२ ॥
कन्तुकुलान्तकालयमनूर्ज्जितशासनमं निशिधिका-
सन्ततियं तटाक सरसींकुलमं नयकीर्त्ति देवसै-
द्धान्तिकरंगलपरोक्षविनयङ्गलनीतेरदिन्द मालपरा-
रिन्तिरे नोन्तरारेनिसिदं नयकीर्त्तिनिलाविभागदोल् ॥२३॥

[यह लेख आदि से आठवें पद्य तक लेख नं० ५६ (७३) के पूर्वभाग के समान ही है। केवल इसमें तीसरा पद्य अधिक है। इस लेख में भी विष्णु नरेश के महादण्डनायक गङ्गराज के पराक्रम का अच्छा वर्णन है। उन्होंने तलकाडु पर घेरा डालनेवाले चोल सामन्त अदियम नरसिंह वर्मा, दामोदर व तिगुलदाम को भारी पराजय दी। इस पर विष्णुवर्द्धन ने प्रसन्न होकर उनसे पारितोषक माँगने को कहा। उन्होंने गोम्मटेश्वर की पूजन निमित्त 'गोविन्द वाडि' का दान माँगा। इसे नरेश ने सहर्ष स्वीकार किया।

गङ्गराज कुन्दकुन्दान्वय के कुक्कुटासन मलधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे। उनके तिगुलों को हराकर गङ्गवाडि की रक्षा करने, गङ्गवाडि के गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाने व अनेक जैन बस्तियों का जीर्णोद्धार करने का लेख नं० ५६ के सदृश यहाँ भी उल्लेख है और यहाँ भी वे चामुण्डराय से सौगुणे अधिक धन्य कहे गये हैं।

पद्य १७ और १८ में गुणचन्द्र देव के तनय नयकीर्ति देव का उल्लेख करके कहा गया है कि नरसिंह नरेश ने दिग्विजय से लौटते हुए गोम्मटेश्वर के दर्शन किये और सदा के लिए पूजनार्थ तीन ग्रामों का दान दिया। इसके पश्चात् नरसिंह नरेश और एचल देवी से उत्पन्न होनेवाले बल्लाल नृप का कामदेव और ओडेय राजाओं को जीतने, उच्चङ्गि

का क़िला विजय करने तथा अपने प्रधान कोषाध्यच, नयकीर्ति देव के शिष्य 'हुल्लय' द्वारा उक्त तीनों ग्रामों के दान को पूरा करने का उल्लेख है।

अन्त में नयकीर्ति देव के शिष्य अध्यात्मि बालचन्द्र के अपने गुरु के स्मारक अनेक शासन रचने व तालाब आदि निर्माण करवाने का उल्लेख है।]

[नोट—पद्य १७ से ऐसा विदित होता है कि उसके लिखे जाने के समय नयकीर्त्ति जीवित थे। किन्तु अन्तिम पद्य से स्पष्ट होता है कि उनके लिखे जाने के समय नयकीर्ति का स्वर्गवास हो चुका था। सम्भव है कि लेख का पूर्व भाग (पद्य २१ तक) नयकीर्ति के जीवन-काल में ही लिखा गया हो और शेष भाग पीछे से जोड़ा गया हो।]

९१ (२४१)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक सं० ११००)

स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्नरप्प श्रीबेलुगुलतीर्त्थद समस्त माणिक्य नखरङ्गलु श्रीगोम्मटदेवर पारिश्वदेवरिगे वर्षनिबन्नियागि हूविनपडिगे जातिहवलक्के तोलेगे ता १ करिदक्के वीस १ यिद आचन्द्रार्क्कतारं बरं सलिसुवरु ॥ मङ्गल महा श्री श्री ॥

[बेल्गुल के समस्त जौहरियों ने गोम्मट देव और पार्श्वदेव की पुष्प-पूजन के लिए अपने माणिक्यों पर उक्त वार्षिक चन्दा देने का सकल्प किया।]

८२ (२४२)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक सं० ११००)

स्वस्ति श्री वेलुगुलतीर्थद गुमिसेट्टिय दसैय बिकैवेय केतय्य कोयन मरिसेट्टिय मग लखण्न लोकेयसहणिय मगलु सोमौवे मेलमेलद समस्तनखरङ्गलु गोम्मटदेवर हुविन पडगे गङ्गसमुद्रद हिन्दे गदे स १ आगोम्मटपुरद भूमियोलगे ओन्दुहोन्न वेद्दले गुलयकेय्य समुदायङ्गल कय्यलु मारुगोण्डु मा (म) लेगारगे आचन्द्रार्कतारं वरं सलुवन्तागि वरदुकोट्ट शासन ॥

[वेलुगुल के गुमिसेट्टि आदि समस्त व्यापारियों ने गङ्गसमुद्र और गोम्मटपुर की कुछ भूमि खरीद कर उसे गोम्मटदेव की पूजा के निमित्त पुष्प देने के लिए एक माली को सदा के लिए प्रदान कर दी।]

८३ (२४३)

उसी पाषाण की दूसरी बाजू पर

(सम्भवतः शक सं० ११८७)

स्वस्ति श्रीभावसंवत्सरद भाद्रपद शुक्रवारदन्दु श्री गोम्मटदेवरिगेवु तीर्थंकरिगेवु हूविन पडिगे चन्निसेट्टिय मग चन्द्रकीर्त्ति भट्टारकदेवर गुड्ड कल्लय्यनु अक्षयभण्डारवागि कोट्ट ग १ प २ $\frac{1}{8}$ यि-मरियादेयलु कुन्ददे ६ वासिग-हुव्वनि-कुवरु मङ्गलमहा श्री श्री ॥

[चेन्निसेट्टि के पुत्र व चन्द्रकीर्ति भट्टारक देव के शिष्य कल्लय्य ने कम से कम ६ पुष्प मालाएँ नित्य चढाये जाने के हेतु उक्त तिथि को उक्त दान दिया।]

[नोट—लेख में भाव संवत्सर का उल्लेख है शक सं० १११७ भाव संवत्सर था।]

९४ (२४४)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(सम्भवतः शक सं० ११९७)

स्वस्ति श्रीभावसंवत्सरद पुष्य सुद्ध ५ त्रि (बृ) श्रीगोम्मट-देवर नित्याभिषेकक्के श्रीप्रभाचन्द्रभट्टारकदेवर गुड्ड बारकनूर मेधाविसेट्टिगे परोक्षविनेयक्के अक्षयभण्डारक्के कोट्ट गद्याण नाल्कु यहोन्निङ्ग अमृतपडिगे आचन्द्रार्क्क नित्यपाडि ३ य मान हाल नडसुवदु यि-धर्म्मव माणिक-नकरङ्गलुं एलयिगलुं आरैवरु मङ्गलमहा श्री श्री ॥

[प्रभाचन्द्र भट्टारक देव के शिष्य बारकनूर के मेधावि सेट्टि की स्मृति में गोम्मट देव के अभिषेकार्थ ३ 'मान' दुग्ध प्रति दिवस देने के लिए उक्त तिथि को ४ 'गद्याण' का दान दिया गया।]

[नोट—लेख में भाव संवत्सर का उल्लेख होने से समय उपर्युक्त।]

९५ (२४५)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक सं० ११९७)

हलसूर सोयिसेटिय मग केतिसेटियरु गोम्मट-देवरिगे

नित्यपडि मूरुमान हालनु अभिषेकक्के कोट्ट ग ३ क्क होन्न
वडिगे हाल नडयिसुवरु माणिकनखर नडेयिसुवरु आचन्द्रार्क्क-
वुल्लनक्क मङ्गलमहा श्री ॥

[गोम्मट देव के नित्याभिषेक के हेतु सोमि सेटि के पुत्र हलसूर-
निवासी केति सेटि ने ३ 'मान' दूध के लिए ३ ग का दान दिया जिसके
ब्याज से दूध लिया जावे ।]

८६ (२४६)

उसी पाषाण की दायीं बाजू पर

(शक सं० ११६६)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

श्रीमत्प्रतापचक्रवर्त्ति होय्सल श्रीवीरनारसिंहदेवरसरु
श्रीमद्राजधानिदोरसमुद्रदलु सुखसङ्कथा विनोददिं राज्यं गेय्युत्त-
मिरे शकवरुष ११८६ नेय श्रीमुखसंवत्सरद श्रावण सु १५
आदिवारदलु श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु नयकीर्त्तिदेवर
शिष्यरु चन्द्रप्रभदेवर कय्यलु होन्नचगेरेय मादय्यन मग सम्भु-
देवनु सङ्गिसेट्टियर मग बोम्मण्ण अगप्पसेट्टियर मक्कलु दोरय
चवुडय्यनवरु श्रीगोम्मटदेवर अमृतपडिगे मत्तियकेरेय नट्टकल्ल
सीमामर्य्यादेयोलगाद गद्दे सुत्तालयद चतुर्व्विंशतितीर्त्थकर
अमृतपडिगे कोट्ट मोदलेरिय गद्दे सलगे वोन्दु-सहित सर्व्वबा-
धापरिहारवागि धारापूर्व्वकं माडिकोण्डु आचन्द्रार्कतारं बरं
सल्वन्तागि कोट्ट दत्ति । मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[होय्सल नरेश श्री वीर नारसिंह के समय में उक्त तिथि को होन्न-चगोरे के मादय्य के पुत्र सम्भुदेव ने महामण्डलाचार्य नयकीर्ति देव के शिष्य चन्द्रप्रभदेव से मात्तिय केरे की उक्त भूमि खरीदकर उसे गोम्मट देव और चतुर्विंशति तीर्थंकर के दुग्ध-पूजन के लिये प्रदान कर दी।]

८७ (२४७)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(सम्भवतः शक सं० ११९७)

स्वस्ति श्रीभावसंवत्सरद भाद्रपद सुद्ध ५ आदिवार दलु श्रीगोम्मटदेवर नित्याभिषेकक्के अमृतपडिगे श्रीप्रभाचन्द्र-भट्टारकदेवरगुड्ड गेरसपेय गोविन्दसेट्टिय मग आदियण्न अक्षयभण्डारवागि इरिसिद गद्याण नाल्कु तिङ्गलिङ्गे होङ्गे हाग बडि आवडियलि नित्याभिषेकक्के वळ्ळ हाल नडसुवरु ई-होन्निङ्गे माणिक्यनकर एलमं ओडेयरु। आचन्द्रार्कतारं वरं सल्व-न्तागि नडसुवरु। मङ्गलमहा श्री श्री श्री॥

[उक्त तिथि को गेरसपे के गोविन्द सेट्टि के पुत्र व प्रभाचन्द्र भट्टारक देव के शिष्य आदियण्ण ने गोम्मटदेव के नित्याभिषेक के लिए ४ गद्याण का दान किया। इस रकम के एक 'होन' पर एक 'हाग' मासिक व्याज की दर से एक 'वल्ल' दुग्ध प्रति दिन दिया जाना चाहिए।]

---

९८ (२२३)

अष्टदिक्पालक मण्डप में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १७४८)

(पूर्व मुख)

श्री स्वस्ति श्रीविजयाभ्युदय शालिवाहन शख वरुष १७४८ ने सन्द वर्त्तमानक्के सलुव व्ययनामसंवत्सरद फाल्गुण ब५ भानुवारदल्लु काश्यपगोत्रे अहनियसूत्रे वृषभप्रवरे प्रथमानुयोगशाखाया श्रीचावुण्डराज वंशस्थराद बिलिकेरे अनन्तराजै अरसिनवर प्रपौत्र तोटदेवराजै अरसिनवर पौत्र सत्यमङ्गलद चलुवै-अरसिनवर पुत्र श्रीमन्महिसूरपुरवराधीश श्रीकृष्णराज-वडेयरवर सम्मुखदल्लि भारिगाढु कन्दाचार सवारकचेरि—

(उत्तर मुख)

यिनाखं मच्चि देवराजै अरसिनवरु श्रीगोमटेश्वरस्वामियवर मस्तकाभिषेकपूजोत्सवदिवस स्वर्गस्थराद्दके श्रीमठदिन्द वर्षप्रति वर्षदल्लु श्रीगोमटेश्वरस्वामिय वरिगे पादपूजे मुन्ताद सेवार्त्थ नडेयुवहागे यिवर पुत्रराद पुट्टदेवराजै अरसिनवरु १०० वरह हाकिरुव पुटुवट्टिन सेवेगे भद्र, भूयाद्वर्द्धतां जिनशासनं । श्री ।

[काश्यप गोत्र, अहनिय सूत्र, वृषभ प्रवर और प्रथमानुयोग शाखा में चावुण्डराज के वंशज, बिलिकेरे अनन्तराजै अरसु के प्रपौत्र, तोटदेवराजै अरसु के पौत्र व सत्यमङ्गल के चलुवै अरसु के पुत्र, मैसूर नरेश श्री कृष्णराज वडेयर के प्रधान अङ्गरक्षक (मच्चि) देवराजै अरसु की मृत्यु गोम्मटेश्वर के मस्तकाभिषेक के दिवस हुई। अतएव उनके

पुत्र पुट्ट देवराजै अरसु ने गोम्मट स्वामी की वार्षिक पाद पूजा के लिए उक्त तिथि को १०० 'वरह' का दान किया।]

८८ (२२४)

उसी मण्डप में एक द्वितीय स्तम्भ के पश्चिम मुख पर

(शक सं० १४५६)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

सखवर्ष साविरद १४५६ तनेय विलम्बि संवत्सरद माघ शुद्ध ५ यलु गेरसोप्पेय चवुडिसटिरु अगणिबोम्मय्यन मग कम्भय्यनु तन्न चेत्र अडहागिरलागि चवुडिसटिरु अडनु बिडिसि कोट्टु दक्के वोन्दु तण्डक्के आहारदान त्यागद ब्रह्मन मुन्दण हूविन तोट वोन्दु पडि अक्कि अन्नतेपुञ्ज इट्टनु आचन्द्रार्कस्थायियागि नावु नडसि बद्देनु मङ्गलम श्री श्री श्री श्री श्री ॥

[गेरसोप्पे के चवुडि सेट्टि ने मेरी भूमि रहन से मुक्त कर दी है इसलिए मैं अगणि बोम्मय्य का पुत्र कम्भिय्य सदैव निम्नलिखित दान का पालन करूँगा—एक संघ (तण्ड) को आहार, त्यागद ब्रह्म के सामने के बाग (की देख-रेख) व अक्षत पुञ्ज के लिए एक 'पडि' तण्डुल।]

१०० (२२५)

उसी स्तम्भ के दक्षिण मुख पर

(शक सं० १४५९)

तत्संवत्सरदलु गेरसोप्पेय चौडिसेट्टिरिगे दोडदेवप्पगल मग चिक्कणनु कोट्ट धर्म्मसाधन नमगे अनुमत्य बरलागि नीवु नवगे परिहरिसि कोट्टदक्के १ तण्डक्के आहार दानवनु आचन्द्रार्कस्थायि यागि नडसि वहेवु मङ्गलमहा श्री श्री श्री श्री श्री ॥

[दोड देवप्प के पुत्र चिकण ने यह 'धर्म साधन' चौडि सेट्टि को दिया कि 'आपने हमारे कष्ट का परिहार किया है इसके उपलक्ष्य में मैं सदैव एक संघ (तण्ड) को आहार दूँगा ।]

१०१ (२२६)

नं० १०० के नीचे

(शक सं० १४५९)

तत्संवत्सरदलु गेरसोप्पेय चावुडिसेट्टरिगे कविगल मग वोम्मणनु कोट धर्मसाधन नमधि अनुपत्य बरलागि नीवु नवगे परिहरिसि कोट्टु दक्के वर्ष १ क्के आरतिङ्गलु पर्य्यन्त १ तण्डक्के आहारदानवनु आचन्द्रार्कस्थायियागि नडसि वहेवु मङ्गलमहा श्री श्री श्री श्री ॥

['कवि, के पुत्र बोम्मण ने चवुडि सेट्टि को यह 'धर्म-साधन' दिया कि 'आपने हमारी आपद् का परिहार किया है इसके उपलक्ष्य में मैं सदैव वर्ष में छह मास एक संघ (तण्ड) को अहार दूँगा' ।]

१०२ (२२७)

उसी स्तम्भ के पूर्व मुख पर

(शक सं० १४५९)

इ मोद्दल...तत्संवत्सरदलु गेरसोप्पेय चवुडिसट्टिरिगे हूविन चेन्नय्यनु कोट धर्मसाधनद सम्बन्ध नम्म क्षेत्रवु अड हाकिरलागि नीवु आक्षेत्रवनु बिडिसि को.............. ॥

[चेनय्य माली (हूविन) ने चवुडि सेट्टि को यह 'धर्म-साधन' दिया कि 'आपने मेरी जमीन रहन से मुक्त की है इसलिए मैं ' ।]

१०३ (२२८)

उसी मण्डप में तृतीय स्तम्भ के पूर्व मुख पर

(शक सं० १४३२)

सखवरुष१४३२ डनेय शुक्लसंवत्सरद वैशाख् व० १०लू मण्डलेश्वरकुलो ङ्ग चङ्गाल्वमहदेवमहीपालन प्रधानसिरोमणि केशव-नाथ-वर-पुत्र कुल-पवित्रं जिनधर्म्मसहायप्रतिपालकरह बोम्मयणमन्त्रिसहोदररह सम्यक्तचूडामणि चेन्नबोम्मरसन नञ्जरायपट्टणद श्रावकभव्यजनङ्गल गोष्टिसहाय श्री गुम्मटस्वा- मिय बलिवाडव जीर्णोद्धारव माडिसिदरु श्री ॥

[मण्डलेश्वर कुलोत्तुंग चङ्गाल्व महदेव महीपाल के प्रधान मन्त्री, केशवनाथ के पुत्र, बोम्मण मन्त्री के भ्राता चन्न बोम्मरस व नञ्जराय पट्टण के श्रावकों ने गोम्मट स्वामी के 'बलिवाड' (? ऊपर की मञ्जिल) का जीर्णोद्धार कराया ।]

१०४ (१८५)

गोम्मटेश्वर के दक्षिण की ओर कूष्माण्डिनी के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० ११००)

श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्रीबाल-चन्द्रदेवर गुड्ड केतिसेट्टिय मग बम्मिसेट्टि माडिसिद यक्षदेवते॥

[नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्ति के शिष्य बालचन्द्र देव के शिष्य बम्मि सेट्टि, केटि सेट्टि के पुत्र, ने यह यक्ष देवता प्रतिष्ठित कराया ।]

१०५ (२५४)

सिद्धरबस्ती में उत्तर की ओर एक स्तम्भपर

(शक सं० १३२०)

(पश्चिम मुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
श्रीनाभेयोऽजितःशम्भव-नमिविमलास्सुव्रतानन्तधर्म्मा-
श्चन्द्राङ्कश्शान्तिकुन्थू ससुमतिसुविधिश्शीतलो वासुपूज्यः ।
मल्लिश्श्रेयस्सुपार्श्वौ जलजरुचिररोनन्दनः पार्श्वनेमी
श्रीवीरश्चेति देवा भुवि ददतु चतुर्व्विंशतिर्म्मङ्गलानि ॥ २ ॥
वीरो विशिष्टां विनताय रातीमिति त्रैलोकैरभिवर्ण्ण्यते यः
निरस्तकर्म्मा निखिलार्त्थवेदी
पायादसौ पश्चिमतीर्त्थनाथः ॥३॥

तस्याभवन् सदसि वीरजिनस्य सिद्ध-
सम्प्रद्धयो गणधराः किल रुद्रसङ्ख्याः ।
ये धारयन्ति शुभदर्शनबोधवृत्ते
मिथ्यात्रयादपि गणान् विनिवर्त्य विश्वान् ॥४॥

इन्द्राग्नि भूतीअपि **वायुभूतिरकम्पनो मौर्य्य सुध-
र्म्म**पुत्राः ।
मैत्रेयमौण्ड्यौपुनर**न्धवेलः प्रभासक**श्चेति तदीय-
संज्ञाः ॥५॥

पूर्व्वज्ञानिह वादिनोऽवधिजुषो धीपर्य्ययज्ञानिनः
सेवे वैक्रियकांश्च शिक्षकयतीन्कैवल्यभाजोऽप्यमून् ।
इत्यग्न्यम्बुनिधित्रयोत्तरनिशानाथास्तिकायैश्शतै
रुद्रोनैकशताचलैरपि मितान्सप्तैव नित्यं गणान् ॥६॥

सिद्धिं गते वीरजिनेऽनुबद्ध-केवल्यभिख्यास्त्रयएव जाताः ।
श्री**गौतमस्तौ** च **सुधर्म्मजम्बू** यैः केवली वै तदिहानु-
बद्धं ॥७॥

जानन्ति **विष्णुरपराजितनन्दिमित्रौ
गोवर्द्ध**नेन गुरुणा सह **भद्रबाहुः** ।
ये पञ्चकेवलिवदप्यखिलं श्रुतेन
शुद्धा ततोऽस्तु मम धीः श्रुतकेवलिभ्यः ॥८॥

विद्यानुवादपठने स्वयमागताभि-
र्व्विद्याभिरात्मचरितादमलादभिन्नाः ।

पूर्व्वाणि ये दशपुरूण्यपि धारयन्ति

तान्नौम्यभिन्नदशपूर्व्वधरान् समस्तान् ॥९॥

तेष्वत्रियः प्रोष्ठिल गङ्गदेवौ

जयस्सुधर्म्मा विजयो विशाखः।

श्रीबुद्धिलोऽन्यौ धृतिषेणनागौ

सिद्धार्त्थकश्चेत्यभिधानभाजः ॥१०॥

नक्षत्रपाण्डू जयपालकंसा-

चार्य्यावपि श्रीद्रुमषेणकश्च।

एकादशाङ्गधरणेन रूढा ये पञ्च तेऽमी हृदि मे वसन्तु ॥११॥

आचार-संज्ञाङ्ग-भृतोऽभवंन्ते

लोहस्सुभद्रो जयपूर्व्वभद्रः।

तथा यशोबाहुरमी हि मूल-

स्तम्भा जिनेन्द्रागमरत्नहर्म्म्ये ॥ १२ ॥

श्रीमान्कुम्भो विनीतो

हलधरवसुदेवाचला मेरुधीरः

सर्व्वज्ञः सर्व्वगुप्तो

महिधर-धनपालौमहावीरवीरौ।

इत्याद्यानेक सूरिष्वथ सुपदमुपेतेषु दीव्यत्तपस्या-

शास्त्राधारेषु पुण्यादजनि सजगतां

कोण्डकुन्दो यतीन्द्रः ॥ १३ ॥

रजोभिरस्पृष्टतमत्वमन्तर्ब्बाह्ये ऽपि संव्यञ्जयितुं यतीशः।

रजः पदं भूमितलं विहाय चचार मन्ये चतुरङ्गुलं सः ॥१४॥

श्रीमानुमास्वातिरयं यतीश-

स्तत्वार्त्थसूत्रं प्रकटीचकार ।

यन्मुक्तिमार्ग्गाचरणोद्यतानां पाथेयमर्घ्यं भवति प्रजानां॥१५॥

तस्यैव शिष्योऽजनि **गृद्ध्रपिञ्छ**-द्वितीयसंज्ञस्य बलाक-

पिञ्छः ।

यत्सूक्तिरत्नानि भवन्ति लोके

मुक्त्यङ्गनामोहनमण्डनानि ॥ १६ ॥

समन्तभद्रस्स चिराय जीयाद्वादीभवज्राङ्कुशसूक्तिजालः ।

यस्य प्रभावात्सकलावनीयं वन्ध्यास दुर्व्वादुकवा

र्त्तयापि ॥ १७ ॥

स्यात्कार-मुद्रित-समस्त-पदार्त्थ-पूर्ण्णं

त्रैलोक्य-हर्म्म्यमखिलं स खलु व्यनक्ति ।

दुर्व्वादुकोक्तितमसा पिहितान्तरालं

सामन्तभद्र-वचन-स्फुट-रत्नदीपः ॥ १८ ॥

तस्यैव शिष्य**श्शिवकोटि**सूरिस्तपो लतालम्बनदेहयष्टिः ।

संसार-वाराकर-पोतमेतत्तत्वार्त्थसूत्रं तदलञ्चकार ॥ १६ ॥

प्रागभ्यधायि गुरुणा किल **देवनन्दी**

बुद्ध्या पुनर्व्विपुलया स **जिनेन्द्रबुद्धिः** ।

श्री**पूज्यपाद**इति चैष बुधैः प्रचख्ये

यत्पूजितः पदयुगे वनदेवताभिः ॥ २० ॥

भट्टाकलङ्कोऽकृत सौगतादिदुर्व्वाक्यपङ्कैस्सकलङ्कभूतं ।

जगत्स्वनामेव विधातुमुच्चैः सार्थं समन्तादकलङ्कमेव ॥२१॥

जीयाज्जगत्यां **जिनसेनसूरि**र्य्यस्योपदेशोज्ज्वलदर्प्पणेन ।
व्यक्तीकृतं सर्व्वमिदं विनेयाः पुण्यं पुराणं पुरुषा विदन्ति ॥ २२ ॥

विनय-भरण-पात्रं भव्यलोकैकमित्रं
विबुधनुतचरित्रं तद्गणेन्द्राग्रपुत्रं ।
विहितभुवनभद्रं वीतमोहोरुनिद्रं
विनमत **गुणभद्रं** तीर्ण्णविद्यासमुद्रं ॥ २३ ॥

सद्व्यञ्जनस्वरनभस्तनु लक्षणाङ्ग-
च्छिन्नाङ्ग-भौम-शकुनाङ्ग-निमित्तकैर्य्यः ।
कालत्रयेऽपि सुखदुःखजयाजयाद्य
तत्साक्षिवत्पुनरवैति समस्तमेव ॥२४॥

यः **पुष्पदन्ते**न च **भूतबल्या**ख्येनापि शिष्य-द्वितयेन रेजे ।
फलप्रदानाय जगज्जनानां प्राप्तोऽङ्कुराभ्यामिव कल्पभूजः ॥२५॥

अर्हद्बलि स्सङ्घचतुर्व्विधं स श्रीकोण्डकुन्दान्वयमूलसङ्घं ।
कालस्वभावादिह जायमानद्वेषेतराल्पीकरणाय चक्रे ॥२६॥

सिताम्बरादौ विपरीत-रूपे खिले विसङ्घे वितनोतु भेदं ।
तत्सेन-नन्दि-त्रिदिवेश-सिंहसङ्घेषु यस्त मनुते कुदृक्सः ॥२७॥

सङ्घेषु तत्र गणगच्छ-बलि-त्रयेण
लोकस्य चक्षुषि मिदाजुषि नन्दिसङ्घ

देशीगणे धृतगुणेऽन्वितपुस्तकाच्छ-
गच्छेऽङ्गुलेश्वरवलिर्ज्जयति प्रभूता ॥२८॥

तत्रासन्नाग-देवोदय-रवि जिन - मेघ - प्रभा-बाल-
चन्द्रा

देवश्रो-भानुचन्द्रश्रुतनय गुणधर्म्मादयः कीर्त्तिदेवाः।

देश-श्रीचन्द्र-धर्म्मेन्द्र-कुल-गुण-तपो भूषणास्सुर-
योऽन्ये

विद्या दामेन्द्रपद्मामरवसु-गुण-माणिक्कनन्द्या
ह्वयाश्च ॥२९॥

(उत्तर मुख)

विहितदुरितभङ्गा भिन्नवादीभशृङ्गा
वितत-विविध-मङ्गाः विश्वविद्याब्जभृङ्गाः ।

विजितजगदनङ्गावेशदूरोज्झलाङ्गा
विशदचरणतुङ्गा विश्रुतास्तेऽस्तसङ्गाः ॥३०॥

जीयाच्छ्रीनेमिचन्द्रःकुवलयलयकृत् कूटकोटीद्धगोत्रो
नित्योद्यन्दृष्टिबाधाविरचनकुशलस्तत्प्रभाकृत्प्रतापः ।
चन्द्रस्येव प्रदत्तामृत-वचन-रुचा नीयते यस्य शान्ति
धर्म्मव्याजस्य नेतुस्स्वमभिमतपदं यश्च नेमी रथस्य ॥३१॥

श्रीमाघनन्दी विबुधो जगत्यामन्वर्थमेवातनुतात्मनाम ।
समुल्लसत्संवरनिर्ज्जरेण न येन पापान्यभिनन्दितानि ॥३२॥

तुङ्गे तदीये धृत-वादिसिंहे गुरुप्रवाहोन्नतवंशगोत्रे ।

अथोदितोऽभून्निजपादसेवाप्रमोदिलोकोऽभयचन्द्रदेवः
॥ ३३ ॥

जयति जिततमोऽरिस्त्यक्तदोषानुषङ्गः
पदमखिलकलानांपात्र-मम्भोरुहायाः ।
अनुगतजयपत्तश्चात्तमित्रानुकूल्य-
स्सततमभयचन्द्रस्सत्सभारत्नदीपः ॥३४॥

तदीयतनुजश्श्रुतमुनिर्गणाग्रपदेशस्तपोभरनियन्त्रिततनुस्स्तु-
तजिनेशः ।
ततोऽजनि जिनेन्द्रवचनाम्तविषयाशस्तवस्वयशसाभृत-
समस्तवसुधाशः ॥३५॥

भव-विपिनकृशानुर्भव्यपङ्केजभानु-
स्स विततनमसोतु स्सम्पदे कामधेनुः ।
भुविदुरिततमोऽरिप्रोत्थसन्तापवारि-
श्रुतमुनिवरसूरिश्शुद्धशीलोऽस्तनारिः ॥३६॥
चण्डोद्दण्डत्रिदण्डं परम-सुख-पद पापबीजं परागो-
वारागारोरुकार-त्रिविधमधिकृता गौरवं गारवं च ॥
तुल्यंभल्लोन-शल्य-त्रयमतुलवपुश्शर्म्ममर्म्मच्छिदं द्वा-
भापोन्मेपि त्रिदोपं श्रुतमुनिमुनिपो निर्म्मुमोचैक एव ॥३७॥
प्रशिष्यभगणेन्द्रमहसा भुवितदीये प्रवर्द्धयति पूर्ण्णकलइन्दु-
रिवयस्स ।
अनादिनिधनादि-परमागम-पयोधिमभूदभिनवश्रुतमुनि-
र्गणाग्रपदे सः ॥३८॥

मार्गे दुर्गे निसर्गात्प्रतिभटकटुजल्पेन वादेन वापि
श्रव्ये काव्येऽतिनव्ये मृदुमधुरपदैः शर्म्मदैर्न्नर्म्मदैश्च ।
मन्त्रे तन्त्रेऽपि यन्त्रे नुतसकलकलायां च शब्दार्णवे वा
को वान्यः कोविदोऽस्ति **श्रुतमुनि**मुनिवद्विश्व-विद्या-
विनोदः ॥३९॥

शब्दे श्री **पूज्यपादः** सकल-विमत-जित्तर्क्कतन्त्रेषु**देवः**
सिद्धान्ते सत्यरूपे जिन-विनिगदिते **गौतमः कोण्डकुन्दः**।
अध्यात्मे **वर्द्धमानो** मनसिज-मथने वारिमुग्दुःखवन्हा-
वित्येवं कीर्त्तिपात्रं **श्रुतमुनि**वदभूद्भूत्रये कोऽत्र कश्चित्
॥४०॥

श्रद्धां शुद्धां प्रवृद्धां दधतमधिकृतां जैनमार्गे सुसर्गे
सिद्धिं बुद्धेर्म्महद्भिर्ब्बुध-वर-निवहैरद्भुतामर्त्यमानां ।
मित्रं चित्रं चरित्रं भवचय-भयदं भव्यनव्याम्बुजाना-
मप्येनोव्यूनमेनं **श्रुतमुनि**-मुनिपं चन्द्रमाराधयध्वं ॥४१॥
श्रीमानितोऽस्याभय**चन्द्रसू**रेस्तस्यानुजात [श्] **श्रुतकीर्त्ति-
देवः** ।
अभूज्जिनेन्द्रोदितलक्षणानामापूर्णलक्षीकृत-चारु-वृत्तः ॥४२॥
विदित-सकलवेदे वीत-चेतो-विषादे
विजित-निखिल-वादे विश्वविद्याविनोदे ।
विततचरितमोदे विस्फुरच्चित-प्रसादे
विनुत-जिनप-पादे विश्वरक्षां प्रपेदे ॥४३॥
स श्रीमांस्तत्तनूजस्तदनु गणिपदे सन्न्यधाच्च**चारुकीर्त्तिः**

कीर्त्याकीर्णत्रिलोक्या मुहुरयति विधुः कार्श्यमद्याप्यतुल्यः।

(तृतीय मुख)

यस्योपन्यास-वन्य-द्विप-पटु-घटयोत्पाटिताश्चाटुवाचः
पद्मामद्मात्तमित्रोज्वलतररुचयोऽप्युद्दिधताशादिपद्मा : ॥४४॥
चारुश्रीश्चारुकीर्त्तिः पदनतवसुधाधोश्वरोऽधोश्वरोऽयं
गर्व्वं कुर्व्वन्तमुर्व्वीश्वर-सदसि महावादिनं वादवन्ध्यं ।
चक्रे दिक्कोडदभ्रेसरसरसवचाः साधिताशेषसाध्यो
ऽवेद्यावेद्याद्यविद्याव्यपगमविलसद्विश्वविद्याविनोदः ॥४५॥
बल्लाल-चोणिपालं वलित-वलि-बल वाजिभिर्व्वेजिताजि
रोगावेगाढ्तासु स्थितिमपि स हसोल्लाघतामानिनाय ।
आतीर्थ्यैव स्वयं सोऽखिलविदभयसूरेस्तथातारयत्त-
न्निस्सीमाशेष-शास्त्राम्बुनिधिमभयसूरिं परं सिंहणार्य्यं
॥४६॥

शिष्टो दुष्टाघ-पिष्टी-करण-निपुण-सूत्रस्य तस्योपदेष्टु-
श्शिष्यः पीयूष-निष्यन्दन-पटु-वचनः पण्डितः खण्डिताघः ।
सूरिस्सूरो विनेयाम्बुरुहविकसने सर्व्वदिग्व्यापिधामा
श्रीमानस्थात्कृतास्थो बेलुगुलनगरे तत्र धर्म्माभिवृद्ध्यै ॥४७॥
यस्मिंश्चामुण्डराजो भुजवलिनमिनं गुम्मटं कर्म्मठाङ्गं
भक्त्या शक्त्या च मुक्त्यैजित-सुर-नगरे स्थापयद्भद्रमद्रौ ।
तद्वत्काल-त्रयोत्थोज्वल-तनु-जिन-विम्बानि मान्यानि चान्यः
कैलासे शीलशाली त्रिभुवन-विलसत्कीर्त्ति-चक्रीव चक्रे ॥४८॥
स्थाने तत्स्थानमन्त्रोज्वलतरमतुलं पण्डितोऽलङ्करोतु

श्रीमानेषोऽर्क्ककीर्त्तिर्न्नृप इव विलसत्सालसोपानकाद्यैः।
चित्रं शीर्षेऽभिषिच्य त्रिभुवनतिलकं तं पुनस्सप्तवारान्
पट्टोन्मुक्तं विधायाखिलजगदुरुपुण्यैस्तथालञ्चकार ॥४९॥
किंवा क्षीराभिषेकाद्भुतनिजयशसो निर्म्मलाच्छङ्कराद्रीन्
गोत्राद्रीन्स्फाटिकीं च क्षितिममरगजान्दिग्गजानेष धीरः।
क्षीरोदान्सप्तसिन्धूनुदरिजलधरान्शारदान्नागलोकं
शेषाकीर्न्न विदीर्न्नामृतकलशमपि स्वर्व्वितेने न चित्रः ॥५०॥
मेरौ जन्माभिषेकं सुरपतिरिव तत्तथैवात्र शैले
देवस्यादर्शयन्नो परमखिलजनस्यैष सूरिर्व्विधाय।
सन्मार्ग्गं चाधुनैनं पिहितमपि चिरं वामदृग्वाक्तमोभि-
स्त्रिंशो तानि पूर्व्वं पुरुरिव पुनरत्राकलङ्कोऽपनीय ॥५१॥
रे रे **काणाद** कोणं शरणमधिवस क्षुद्रनिद्रानिवासं
मैमांसच्छामतुच्छां त्यज निजपटुवादेषु कृच्छ्राशुगच्छ।
बौद्धाबुद्धे विमुग्धोऽस्यपसर सहसा **साङ्ख्य**मारब्ध सङ्ख्ये
श्रीमान्मथ्नाति वादीन्द्रगजमभय**सूरिः** परं वादिसिंहः ॥५२॥
ऐश्वर्य्यं वहतश्च शाश्वतसुखे धत्तश्च सर्व्वज्ञतां
बिभ्राते च गिरीशतां शिवतया श्री**चारुकीर्त्ती**श्वरौ।
तत्रायं जिनभागसावजिनभाग्धीमानयं मार्ग्गणे
हेमाद्रिं समधत्त मार्ग्गणमुरुस्थेमा स हेमाचले ॥५३॥
स्फूर्ज्जद्धूर्ज्जटि-भाल-लोचन-शिखि-ज्वालावलीढस्य ते
हं हो मन्मथजीवनौषधिरभूदेषा पुरा शैलजा।

सर्व्वज्ञोत्तम**चारुकीर्त्ति**सुमुनेस्सम्यक्तपो-वह्निना
निर्दग्धस्य चरित्रचण्डमरुतोद्धूतस्य का ते गतिः ॥५४॥
पितामहपरिष्वङ्गसङ्गतेनःप्रशान्तये ।
चारुकीर्त्तिवचोगङ्गालिङ्गिताङ्गी सरस्वती ॥५५॥
आस्यं वाणीनिवास्यं हृदयमुरुदयं स्वं चरित्रं पवित्रं
देहं शान्त्यैकगेहं सकलसुजनतागण्यमुद्भूत-पुण्यं ।
अन्या भव्या गुणालिन्निखिलबुधवतेर्य्यस्य सोऽयं जगत्यां
अत्यारूढप्रसादो जयतु चिरमयं **चारुकीर्त्ति**व्रतीन्द्रः ॥५६॥
मूढं प्रौढं दरिद्रं धनपतिमधमं मानवं मानवन्त
दुष्टं शिष्टं च दुःखान्वितमपि सुखिनं दुर्म्मद धर्म्मशीलं ।
कुर्व्वन् **सामन्तभद्रं** चरितमनुसरन्नत्र सामन्तभद्रं ।
(चतुर्थमुख)
तन्वन् श्री**चारुकीर्त्ति**र्जगति विजयते चन्द्रिका-चारु-
कीर्त्तिः ॥५७॥
रे रे **चार्व्वाक** गर्व्वं परिहर विरुदालिं पुरैव प्रमुञ्च
साङ्ख्यासङ्ख्येय-राजत्परिकर-निकरादात्तघट्टोऽसि
भट्ट ।
पूर्ण्णं **काणाद** तूर्ण्णं त्यज निजमनिशं मानमापन्निदानं
हिंसन्पुंसोऽभिशंस्यो व्रजवियदपरान्वादिनः**सिंहणार्य्यः**
॥५८॥
सत्पण्डिताङ्घ्रनुरतौ तदिलादिनाथौ
सम्यक्त्व-बोध-चरणोत्रवदाननिष्ठौ,

जातावुभौ **हरियणो** हरिणाङ्कचारु-
म्माणिक्कदेवइतिचा**र्जुन**देवकल्पः ॥५९॥

धन्या मन्ये न सन्यासपरमविधिना नेतुमेव स्वयं स्वं
धर्म्मं कर्म्मारिमर्म्मच्छिदमुरुसुखदं दुर्ल्लभं वल्लभं च।
शान्ताश्शान्तेर्न्नि शान्तीकृत-सकल-जनाः सूक्तिपीयूषपूरै-
स्तेऽमी सर्व्वेऽस्तदेहास्सुरपदमगमन्ध्यात-जैनेन्द्र-पादाः ॥६०॥

तत्र **त्रयोदशशतैश्च दशद्वयेन**
शाकेऽब्दके परिमितेऽभवदीश्वराख्ये।
माघे चतुर्द्दशतिथौ सितभाजिवारे
स्वातौ शनेस्सुरपदं **पुरु** पण्डितस्य ॥६१॥

आसीदथाभिनव**पण्डितदेव**सूरि-
राशाननाच्छमुकुरीकृत कीर्त्तिरेषः।
शिष्ये निधायनिजधर्म्मधुरीणभावं
यत्रात्मसंस्कृतिपदेऽजनि **पण्डितार्य्यः** ॥६२॥

तथ्यं मिथ्या-कदम्बं सततमपि विधिस्सुर्व्वृथा ताम्यसीदं
तत्वं ताथागतत्वं तरलजनशिरोरत्नतावत्प्रधाव।
जीवं भद्राणि पश्यत्युरुजगदुदितात्त्यक्तवादाभिलाषो
यस्माद्भसीकरोत्यग्निरिव भुवितरून्वादिनः **पण्डितार्य्यः**
॥६३॥

संसारापारवाराकर-धर-लहरी-तुल्य-शल्योत्थ-देह-
व्यूहे मुह्यज्जनानामसुखजलचरैरर्द्दितानाममीषां।

पांतो नीतो विनीतोऽद्भुततिगतवन्नन्यभव्याचि ताङ्घ्रि-
र्भद्रोन्निद्रस्सुमुद्रस्सततम **भिनवो**राजते **पण्डिताग्र्यः** ॥६४॥
श्रयमथ गुरुभक्त्याकारयत्तन्निषद्या-
मपरगणिभिरुच्चैर्गोष्ठिभिस्तैस्सहैव ।
शुभ-दिन-सुमुहूर्त्ते पूरितोद्घाखिलाशं
युगपदखिलवाद्यध्वानरत्नप्रदानैः ॥६५॥
इत्यात्मशक्त्या निजमुक्तयेऽर्हं **द्दासो**दितं शासनमेतदुर्व्यां ।
शास्त्रौघकर्तृ-त्रयशंसनाङ्कमाचन्द्रतारा-रविमेरु जीयात्॥ ६६ ॥

१०६ (२५५)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(शक सं० १०३१)

श्रीमत्कर्णाटदेशे जयति पुरवरं **गङ्गवत्याख्यमेतत्**
सद्दृक्दानापवासव्रतरुचिरभवत्तत्र **माणिक्यदेवः** ।
वाचायी धर्म्मपत्नी गुणगणवसतिस्तस्य सूनुस्तयोश्च
श्रीमान्**मायण्ण**नामाजनि गुणमणिभाक् **चन्द्रकीर्त्तेश्च**
शिष्यः ॥ १ ॥

सम्यक्त्वचूडामणियेनिसिद **आभव्योत्तमनु** स्वस्ति श्री शक
वरुष १३३१ नेय **विरोधिसंवत्सरद चैत्र ब ५ गु** श्री
गुम्मटनाथन मध्याह्नद अष्टविधार्च्चना निमित्तवागि **बेलुगुलद**
गङ्गसमुद्रद केरेय केलगे दानशालेय गद्दे ख २ गवनू **बेलुगुलद**
माणिक्यनखरद **हरियगौडन** मग गुम्मटदेव **माणिक्यदेवन**

मग बोम्मणननोळगाद गौडुगल समचदलि देवरिगे पादपूजेय माडि क्रयवागि कोण्डु कोट्टु असाधारणवहन्त कीर्त्तियनू पुण्य-वनू उपार्ज्जिसि कोण्डनु मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[कर्नाट देश की गङ्गवती नामक नगरी में माणिक्यदेव और उनकी भार्या बाचायि रहते थे। इनके मायण्ण नामक पुत्र हुआ जो चन्द्र-कीर्त्ति का शिष्य था। मायण्ण ने उक्त तिथि को बेल्गुळ के गङ्गसमुद्र नामक सरोवर की दो खण्डुग भूमि खरीद कर उसे गोम्मट स्वामी के अष्टविध पूजन के लिये बेल्गुळ के कई पुरुषों के समक्ष दान की।]

१०७ (२५६)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक सं० ११०३)

शीलदि चन्द्रमौलिविभुवाचलदेवि निजोद्घकान्तेया-
लोलमृगाचि बेल्गुलद गुम्मटनाथन पादद-
र्च्चालिगे वेडे बेक्कन शीमेयनित्तनुदारवीरब-
ल्लाल-नृपालकनुर्व्वियुमब्धियुमुल्लिनमेटद्दे सल्विनं ॥ १ ॥

अन्तु धारापूर्व्वकवं माडिकोटन्त ग्रामसीमे। मूड होन्नेन-हल्लि तेङ्क बस्तिहल्लि देवरहल्लि पडुव चोलेनहल्लि हाडोनहल्लि

(पूर्व मुख के नीचे)

बडग मञ्चेनहल्लिय बिट्टु कोट ग्रामौ आचन्द्रार्कस्थायियागि सल्लुगे मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[चन्द्रमौलि की पत्नी आचल देवी की प्रार्थना पर वीरबल्लाल नृप ने 'बेक्क' नामक ग्राम का दान गोम्मटनाथ के पूजन के हेतु किया। लेख में ग्राम की सीमा दी हुई है।

नोट—आचल देवी के अन्य अनेक दानों का उल्लेख शक सं० ११०३ के लेख न० १२४ (३२७) में है। अतएव प्रस्तुत लेख का समय भी शक स० ११०३ के लगभग होना चाहिये। पर आश्चर्य यह है कि यह लेख इससे बहुत पीछे के दो लेखों (न० १०९ और १०६) के नीचे खुदा हुआ है। लिपि भी इसकी उतनी पुरानी प्रतीत नहीं होती। सम्भव है कि किसी आधार पर लेख पीछे से ही लिखा गया हो।]

१०८ (२५८)

सिद्धरबस्ती में दक्षिण ओर एक स्तम्भ पर

(शक सं० १३५५)

(प्रथममुख)

श्री जयत्यजय्यमाहात्म्यं विशासितकुशासनं।
शासनं जैनमुद्भासि मुक्तिलक्ष्म्यैकशासनं ॥ १ ॥
अपरिमितसुखमनल्पावगममयं प्रबलबलहृतातङ्कं।
निखिलावलोकविभवं प्रसरतु हृदये परं ज्योति. ॥ २ ॥
उद्दीप्ताखिलरत्नमुद्धृतजडं नानानयान्तर्गृहं
सस्यात्कारसुधाभिलिप्तिजनिभृत्कारुण्यकूपोच्छ्रितं।
आरोप्य श्रुतयानपात्रममृतद्वीपं नयन्तः परा-
नेते तीर्थकृतो मदीयहृदये मथ्यंभवाब्ध्यासतां ॥ ३ ॥
तत्राभवत् त्रिभुवनप्रभुरिद्धवृद्धिः
श्रीवर्द्धमानमुनिरन्तिम-तीर्थनाथः।
यद्देहदीप्तिरपि सन्निहिताखिलाना
पूर्व्वोत्तराश्रितभवान् विशदीचकार ॥ ४ ॥

तस्याभवच्चरमचिज्जगदीश्वरस्य
यो यौव्वराज्यपदसंश्रयतः प्रभूतः ।
श्री**गौतमो**गणपतिर्भगवान्वरिष्ठः
श्रेष्ठैरनुष्ठितनुतिर्म्मुनिभिस्स जीयात् ॥ ५ ॥

तदन्वये शुद्धिमति प्रतीते समग्रशीलामलरत्नजाले ।
अभूद्यतीन्द्रो भुवि **भद्रबाहुः** पयःपयोधाविव पूर्ण्ण-
चन्द्रः ॥ ६ ॥

भद्रबाहुरग्रिमः समग्रबुद्धिसम्पदा
शुद्धसिद्धशासनं सुशब्द-बन्ध-सुन्दरं ।
इद्धवृत्तसिद्धिरत्र बद्धकर्म्मभित्तपो-
वृद्धिवर्द्धितप्रकीर्त्तिरुद्दधे महर्द्धिकः ॥ ७ ॥

यो **भद्रबाहुः** श्रुतकेवलीनां मुनीश्वराणामिह पश्चिमोऽपि ।
अपश्चिमोऽभूद्विदुषां विनेता सर्व्वश्रुतार्त्थप्रतिपादनेन ॥ ८ ॥

तदीय-शिष्योऽजनि **चन्द्रगुप्तः** समग्रशीलानतदेववृद्धः ।
विवेश यत्तीव्रतपःप्रभाव-प्रभूत-कीर्त्तिर्भ्भुवनान्तराणि ॥ ९ ॥

तदीयवंशाकरतः प्रसिद्धादभूददोषा यतिरत्नमाला ।
बभौ यदन्तर्म्मणिवन्मुनीन्द्रस्स **कुण्डकुन्दो**दित-चण्ड-
दण्डः ॥ १० ॥

अभूदु**मास्वाति**मुनिः पवित्रे वंशे तदीये सकलार्त्थवेदी ।
सूत्रीकृतं येन जिनप्रणीतं शास्त्रार्त्थजातं मुनिपुङ्गवेन ॥११॥
स प्राणिसंरक्षणसावधानो बभार योगी किल गृद्धपक्षान् ।

तदा प्रभृत्येव बुधा यमाहुराचार्य्यशब्दोत्तरगृद्ध-
पिञ्छं ॥ १२ ॥

तस्मादभूद्योगिकुलप्रदीपो **बलाकपिञ्छः** स तपो-
महर्द्धि. ।

यदङ्गसंस्पर्शनमात्रतोऽपि वायुर्व्विषादीनमृतीचकार ॥ १३ ॥

समन्तभद्रोऽजनि भद्रमूर्त्तिस्तत. प्रणेता जिनशासनस्य ।

यदीयवाग्वज्रकठारपातश्चूर्णीचकार प्रतिवादिशैलान् ॥१४॥

श्री **पूज्यपादो** धृतधर्म्मराज्यस्ततो सुराधीश्वर-पूज्य-
पादः ।

यदीयवैदुष्यगुणानिदानीं वदन्ति शास्त्राणि तदुद्धृतानि ॥१५॥

धृतविश्वबुद्धिरयमत्र योगिभिः
कृतकृत्यभावमनुविभ्रदुच्चकैः ।

जिनवद्बभूव यदनङ्गचापहृत
स जिनेन्द्रबुद्धिरिति साधुवर्ण्णित. ॥ १६ ॥

श्रीपूज्यपादमुनिरप्रतिमौषधर्द्धि-
र्ज्जीयाद्विदेहजिनदर्शनपूतगात्रः ।

यत्पादधौतजलसंस्पर्श'प्रभावा-
त्कालायसं किल तदा कनकीचकार ॥ १७ ॥

ततः परं शास्त्रविदां मुनीना
मग्रेसरोऽभूद**कलङ्कसूरिः** ।

मिथ्यान्धकारस्थगिताखिलार्त्थाः
प्रकाशिता यस्य वचोमयूखैः ॥ १८ ॥

तस्मिन्गते स्वर्ग्गभुवं महर्षौ दिवःपतीन्नर्त्तुमिव प्रकृष्टान् ।
तदन्वयोद्भूतमुनीश्वराणां बभूवुरित्थं भुवि सङ्घभेदाः ॥१९॥

स योगिसङ्घश्चतुरः प्रभेदानासाद्य भूयानविरुद्धवृत्तान् ।
बभावयं श्रीभगवान्जिनेन्द्रश्चतुर्म्मुखानीव मिथस्समानि ॥२०॥

देव-नन्दि-सिंह-सेन-सङ्घभेदवर्त्तिनां
देशभेदतः प्रबोधभाजि देवयोगिनां ।
वृत्ततस्समस्ततोऽविरुद्धधर्म्मसेविनां
मध्यतः प्रसिद्ध एष **नन्दिसङ्घ** इत्यभूत् ॥ २१ ॥

नन्दिसङ्घे स**देशीय**गणे गच्छे च **पुस्तके** ।
इंगुलेशबलिर्ज्जीयान्मङ्गलीकृतभूतलः ॥ २२ ॥

तत्र सर्व्वशरीरिरक्षाकृतमतिर्व्विजितेन्द्रिय-
स्सिद्धशासनवर्द्धनप्रतिलब्ध-कीर्त्तिकलापकः ।
विश्रुत-**श्रुतकीर्त्ति**-भट्टारकयतिस्समजायत
प्रस्फुरद्वचनामृतांशुविनाशिताखिलहृत्तमाः ॥ २३ ॥

कृत्वा विनेयान्कृतकृत्यवृत्तोन्निधाय तेषु श्रुतभारमुच्चैः ।
स्वदेहभारं च भुवि प्रशान्तस्समाधिभेदेन दिवं स भेजे ॥२४॥

(द्वितीयमुख)

गते गगनवाससि त्रिदिवमत्र यस्योच्छ्रिता
न वृत्तगुणसंहतिर्व्वसति केवलं तद्यशः ।
अमन्दमदमन्मथप्रणमदुग्रचापोज्वल-
त्प्रतापहतिकृत्तपश्चरणभेदलब्धं भुवि ॥ २५ ॥

श्रीचारुकीर्त्तिमुनिरप्रतिमप्रभाव-
स्तस्मादभून्निजयशोधवलीकृताशः ।
यस्याभवत्तपसि निष्ठुरतोपशान्ति-
श्चित्ते गुणे च गुरुता कृशता शरीरे ॥ २६ ॥
यत्तपोवल्लिभिर्व्वेल्लिताबद्रुमो
वर्त्तयामास सारत्रयं भूतलं ।
युक्तिशास्त्रादिकं च प्रकृष्टाशय-
श्शब्दविद्याम्बुधेर्वृद्धिकृच्चन्द्रमाः ॥ २७ ॥
यस्य योगीश्विन. पादयोस्सर्व्वदा
सङ्गिनीमिन्दिरा पश्यतश्शार्ङ्गिणः ।
चिन्तयेवाभवत्कृष्णता वर्ष्मणः
नान्यथा नीलता किं भवेत्तत्तनोः ॥ २८ ॥
येषां शरीराश्रयतोऽपि वातो रुजः प्रशान्तिं विततान तेषां ।
वल्लालराजोत्थितरोगशान्तिरासीत्किलैतत्किमु
भेषजेन ॥ २९ ॥
मुनिर्म्मनीषा-बलतो विचारितं समाधिभेदं समवाप्य सत्तमः ।
विहाय देहं विविधापदां पदं विवेश दिव्यं वपुरिद्ध-
वैभवं ॥ ३० ॥
अन्तमायाति तस्मिन्कृतिनि यर्थ्य-
न्धिण नामविष्यत्तदा पण्डितयति-
स्सोमः वस्तुमिथ्यातमस्तोमपिहितं
सर्व्वमुत्तमैरित्ययं वक्तृभिरूपाघोषि ॥ ३१ ॥

विबुधजनपालकं कुबुध-मत-हारकं । ।
विजितसकलेन्द्रियं भजत तमलं बुधाः ॥ ३२ ॥

धवल-सरोवर-नगर-जिनास्पदमसदृशमाकृतवदुरु-
तपोमहः ॥ ३३ ॥

यत्पादद्वयमेव भूपतिततिश्चक्रे शिरोभूषणं
यद्वाक्यामृतमेव कोविदकुलं पीत्वा जिजीवानिशं ।
यत्कीर्त्या विमलं बभूव भुवनं रत्नाकरेणावृतं
यद्विद्या विशदीचकार भुवने शास्त्रार्थजातं महत् ॥ ३४ ॥

कृत्वा तपस्तीव्रमनल्पमेधास्सम्पाद्य पुण्यान्यनुपप्लुतानि ।
तेषां फलस्यानुभवाय दत्तचेता इवाप त्रिदिवं स योगी ॥३५॥

तस्मिन्जातो भूम्नि **सिद्धान्तयोगी**
प्रोद्यद्वाचा वर्द्धयन् सिद्धशास्त्रं ।
शुद्धे व्योम्नि द्वादशात्मा करौघै-
रर्थंद्रुत्पद्मव्यूहमुन्निद्रयन्स्वैः ॥ ३६ ॥

. दुर्व्वाधयुक्तं शास्त्रजातं विवेकी वाचानेकान्वार्थसम्भूतया यः ।
इन्द्रोऽशन्या मेघजालोत्थया भूवृद्धां भूभृत्संहतिं वा
बिभेद ॥ ३७ ॥

यद्वत्पदाम्बुजनतावनिपालमौलि-
रत्नांशवोऽनिशममुं विदधुः सरागं ।
तद्वन्न वस्तु न वधूर्न च वस्त्रजातं
नो यौव्वनं न च बलं न च भाग्यमिद्धं ॥ ३८ ॥

प्रविश्य शास्त्राम्बुधिमेष धीरो जग्राह पूर्व्वं सकलार्थरत्नं ।
परेऽमर्त्यास्तदनुप्रवेशादेकैकमेवात्र न सर्व्वमापुः ॥३९॥

सम्पाद्य शिष्यान्स मुनिः प्रसिद्धा-
नध्यापयामास कुशाग्रबुद्धीन् ।
जगत्पवित्रीकरणाय धर्म्म-
प्रवर्त्तनायाखिल संविदे च ॥ ४० ॥

कृत्वा भक्तिं ते गुरोस्सर्व्वशास्त्र
नीत्वा वत्सं कामधेनुं पयो वा ।
स्वीकृत्योच्चैस्तदपिवन्तोऽतिपुष्टाः
शक्तिं स्वेषां ख्यापयामासुरिद्धां ॥ ४१ ॥

तदीयशिष्येषु विदांवरेषु गुणैरनेकैश्श्रुतमुन्यभिख्यः ।
रराज शैलेषु समुन्नतेषु स रत्नकूटैरिव मन्दराद्रिः ॥ ४२ ॥

कुलेन शीलेन गुणेन मत्या शास्त्रेण रूपेण च योग्य एषः ।
विचार्य्य तं सूरिपदं स नीत्वा कृतक्रियं स्व
गणयाञ्चकार ॥ ४३ ॥

अथैकदा चिन्तयदित्यनेना स्थितिं समालोक्य निजायुषोऽल्पं ।
समर्प्य चास्मिन् स्वगणं समर्थे तपश्चरिष्यामि समाधि-
योग्य ॥ ४४ ॥

विचार्य्य चैवं हृदयं गणाग्रणीर्न्निवेदयामास विनेयबान्धवः ।
मुनिः समाहूय गणाग्रवर्त्तिनं स्वपुत्रमित्थं श्रुतवृत्त-
शालिनं ॥ ४५ ॥

(तृतीयमुख)

मदन्वयादेष समागतोऽयं गणो गुणानां पदमस्य रक्षा।
त्वयाङ्ग मद्वत्क्रियतामितीष्टं समर्प्पयामास गणी गणं
स्वं ॥ ४६ ॥

गुरुविरहसमुद्यद्दुःखदूनं तदीयं
मुखमगुरुवचोभिस्स प्रसन्नोचकार।
सपदि विमलिताब्द-श्लिष्ट-प्रांसु-प्रतानं
किमधिवसति योषिन्मन्दफूत्कारवातैः ॥ ४७ ॥

कृतितितिहितवृत्तस्सत्त्वगुप्तिप्रवृत्तो
जितकुमतविशेषश् शोषिताशेषदोषः।
जितरतिपति-सत्त्वस्तत्त्व-विद्या प्रभुत्व-
स्सुकृतफल-विधेयं सोऽगमद्दिव्यभूयं ॥ ४८ ॥

गतेऽत्र तत्सूरिपदाश्रयोऽयं
मुनीश्वरस्सङ्घमवर्द्धयत्तराम्।
गुणैश्च शास्त्रैश्चरितैरनिन्दितैः
प्रचिन्तयन्तद्गुरुपादपङ्कजम् ॥ ४९ ॥

प्रकृत्य कृत्यं कृतसङ्घरक्षो विहाय चाकृत्यमनल्पबुद्धिः।
प्रवर्द्धयन् धर्म्ममनिन्दितं तद्गुरूपदेशान् सफलीचकार ॥५०॥

अखण्डयदयं मुनिर्व्विमलवाग्भिरत्युद्धतान्
अमन्द-मद-सञ्चरत्कुमत-वादिकोलाहलान्।
भ्रमन्नमरभूमिभृद् भ्रमितवारिधिप्रोच्चलत्
तरङ्ग-ततिविभ्रम-ग्रहण-चातुरीभिर्भुवि ॥ ५१ ॥

का त्वं कामिनि कथ्यतां श्रुतमुनेः कीर्त्तिः किमागम्यते
ब्रह्मन् मत्प्रियसन्निभो भुवि बुधस्सम्मृग्यते सर्व्वतः ।
नेन्द्रः किं स च गोत्रभिद् धनपतिः किं नास्त्यसौ किन्नरः
शेषः कुत्रगतस्स च द्विरसनो रुद्रः पशूनां पतिः ॥ ५२ ॥

वाग्देवताहृदय-रञ्जन-मण्डनानि
मन्दार-पुष्प-मकरन्दरसोपमानि ।
आनन्दिताखिल-जनान्यमृत वमन्ति
कर्णेषु यस्य वचनानि कवीश्वराणां ॥ ५३ ॥

समन्तभद्रोऽप्यसमन्तभद्रः
श्री-पूज्यपादोऽपि न पूज्यपादः ।
मयूरपिञ्छोऽप्यमयूरपिञ्छ-
श्चित्रं विरुद्धोऽप्यविरुद्ध एष ॥ ५४ ॥

एवं जिनेन्द्रोदितधर्म्ममुच्चैः प्रभावयन्तं मुनि-वंश-दीपिनं ।
अदृश्यवृत्त्या कलिना प्रयुक्तो वधाय रोगस्समवाप
दूतवत् ॥ ५५ ॥

यथा खलः प्राप्य महानुभावं तमेव पश्चात्कवलीकरोति ।
तथा शनैस्सोऽयमनुप्रविश्य वपुर्व्वबाधे प्रतिबद्धवीर्य्यः ॥५६॥

अङ्गान्यभूवन् सकृशानि यस्य न च व्रतान्यद्भुत-वृत्त-भाजः ।
प्रकम्पमापद्वपुरिद्धरोगान्न चित्तमावश्यकमत्यपूर्व्वं ॥ ५७ ॥

स मोक्ष-मार्गे रुचिमेष धीरो मुदं च धर्म्मे हृदये प्रशान्ति
समादधे तद्विपरीतकारिण्यस्मिन् प्रसर्प्पत्यधिदेहमुच्चैः ५८

अङ्गेषु तस्मिन् प्रविजृम्भमाणे
निश्चित्य योगी तदसाध्यरूपतां ।
ततस्समागत्य निजाग्रजस्य
प्रणम्य पादाववदत् कृताञ्जलिः ॥ ५९ ॥

देव **पण्डितेन्द्र** योगिराज धर्म्मवत्सल
त्वत्पद-प्रसादतस्समस्तमर्जितं मया ।
सद्यशः श्रुतं व्रतं तपश्च पुण्यमक्षयं
किं ममात्र वर्त्तित-क्रियस्य कल्प-काङ्क्षिणः ॥ ६० ॥

देहतो विनात्र कष्टमस्ति किं जगत्त्रये
तस्य रोग-पीडितस्य वाच्यता न शब्दतः ।
देय एव योगतो वपु-र्व्विसर्ज्जन-क्रम-
स्साधु-वर्ग्ग-सर्व्व-कृत्य-वेदिनां विदांवर ॥ ६१ ॥

विज्ञाप्य कार्य्यं मुनिरित्थमर्थ्यं
मुहुर्म्मुहुर्व्वारयतो गणीशात् ।
स्वीकृत्य सल्लेखनमात्मनीनं
समाहितो भावयति स्म भाव्यं ॥ ६२ ॥

उद्यद्-विपत्-तिमि-तिमिङ्गिल-नक्र-चक्र-
प्रोत्तुङ्ग-मृत्यमृति-भीम-तरङ्ग-भाजि ।
तीव्राजवञ्जव-पयोनिधि-मध्य-भागे
क्लिश्नात्यहर्न्निशमयं पतितस्स जन्तुः ॥ ६३ ॥

इदं खलु यदङ्गकं गगन-वाससां केवलं
न हेयमसुखास्पदं निखिल-देह-भाजामपि ।

अतोऽस्य मुनयः परं विगमनाय बद्धाशया
यतन्त इह सन्ततं कठिन-काय-तापादिभिः ॥ ६४ ॥

अयं विषयसञ्चयो विषमशेषदोषास्पदं
स्पृशञ्जनिजुषामहो बहुभवेषु सम्मोहकृत ।
अतः खलु विवेकिनस्तमपहाय सर्व्वं सदा
विशन्ति पदमच्चय विविध-कर्म्म-हान्युत्थितं ॥ ६५ ।

(चतुर्थ मुख)

उद्दाम-दुःख-शिखि-सङ्गतिमङ्गयष्टिं
तीव्राजवञ्जव-तपातप-ताप-तप्तां ।
स्रक्-चन्दनादि-विषयामिष-तैल-सिक्तां
को वावलम्ब्य भुवि सञ्चरति प्रबुद्धः ॥ ६६ ॥

स्रष्टुः स्त्रीणामेनसां सृष्टितः किं
गात्रस्याधोभूमिसृष्ट्या च किं स्यात् ।
पुत्रादीनां शत्रु-कार्य्यं किमर्थं
सृष्टेरित्थं व्यर्थता धातुरासीत् ॥ ६७ ॥

इदं हि बाल्यं बहु-दुःख-बीज-
मियं वयश्रीर्ग्घन-राग-दाहा ।
स वृद्धभावोऽसमपाखिशाला
दशेयमङ्गस्य विपत्फला हि ॥ ६८ ॥

लब्धं मया प्राक्तन-जन्म-पुण्यात्
सुजन्म सद्गात्रमपूर्व्वबुद्धि ।

मदाश्रयः श्रीजिन-धर्म्मसेवा
ततो विना मा च परः कृती कः ॥ ६९ ॥
इत्थं विभाव्य सकल भुवन-स्वरूपं
योगी विनश्वरमिति प्रशमं दधानः ।
अर्द्धावमीलितदृगस्खलितान्तरङ्गः
पश्यन् स्वरूपमिति सोऽवस्थितः समाधौ ॥ ७० ॥
हृदय-कमल-मध्ये सैद्धमाधाय रूपं
प्रसरदमृतकल्पैर्म्मूलमन्त्रैः प्रसिञ्चन् ।
मुनि-परिषदुदीर्ण्न-स्तोत्र-घोषैस्सहैव
श्रुतमुनिरयमङ्गं स्वं विहाय प्रशान्तः ॥ ७१ ॥
अगमदमृतकल्पं कल्पमल्पीकृतैना
विगलितपरिमोहस्तत्र भोगाङ्कुकेषु ।
विनमदमर-कान्तानन्द-बाष्पाम्बु-धारा-
पतन-हृत-रजोऽन्तर्द्धाम-सोपानरम्यं ॥ ७२ ॥
यतौ याते तस्मिन् जगदजनि शून्यं जनिभृतां
मनो-मोह-ध्वान्तं गत-प्रलमपूर्यप्रतिहतं ।
व्यदीप्युद्यच्छोको नयन-जल-मुष्णं विरचयन्
वियोगः किं कुर्य्यादिह न महतां दुस्सहतरः ॥ ७३ ॥
पादा यस्य महामुनेरपि न कैर्भूभृच्छिरोभिधृता
वृत्तं सत्र विदांवरस्य हृदयं जग्राह कस्यामलं ।
सोऽयं श्रीमुनि-भानुमान् विधि-वशादस्तं प्रयातो महान्
यूयं तद्विधिमेव हन्त तपसा हन्तुं यतध्वं बुधाः ॥७४॥

यत्र प्रयान्ति परलोकमनिन्द्यवृत्ता-

स्थानस्य तस्य परिपूजनमेव तेषा ।

इज्या भवेदिति कृवाकृतपुण्यराशेः

स्थेयादियं श्रुतमुनेस्सुचिरं निषद्या ॥ ७५ ॥

इषु-शर-शिखि-विधु मित-शक-

परिधावि-शरद्द्वितीयगाषाढ़े

सित-नवमि-विधु-दिनोदयजुषि

सविशाखे प्रतिष्ठितेयमिह ॥ ७६ ॥

विलीन-सकल-क्रियं विगत-रोधमत्यूर्ज्जितं

विलङ्घित-तमस्तुला-विरहितं विमुक्ताशयं ।

अवाङ्-मनस-गोचरं विजित-लोक-शक्त्यग्रिमं

मदीय-हृदयेऽनिशं वसतु धाम दिव्यं महत् ॥ ७७ ॥

प्रबन्ध-ध्वनि-सम्बन्धात्सद्रागोत्पादन चमा ।

मङ्गराज-कवेर्व्वाणि **वाणी-वीणा**यतेतरां ॥ ७८ ॥

[**नोट**—मंगराज कवि-कृत यह श्रुतमुनि की प्रशस्ति ऐतिहासिक उपयोगिता के अतिरिक्त अपने काव्य-सौन्दर्य्य में भी अनुपम है ।]

१०६ (२८१)

त्यागदब्रह्मदेवस्तम्भ पर

(लगभग शक सं० ६५०)

(उत्तर मुख)

ब्रह्म-चत्र-कुलोदयाचल-शिरोभूषामणिर्भानुमान्

ब्रह्म-चत्रकुलाब्धि-वर्द्धन-यशो-रोचिस्सुधा-दीधितिः ।

ब्रह्म-क्षत्र-कुलाकराचल-भव-श्री-हार-वल्लीमणिः
ब्रह्म-क्षत्र-कुलाग्निचण्डपवनश्चावुण्डराजोऽजनि ॥ १ ॥
कल्पान्त-क्षुभिताब्धि-भीषण-बलं **पातालमल्ला**नुजम्
जेतुं **वज्जिवलदेव**मुद्यतभुजस्येन्द्र-क्षितीन्द्राज्ञया ।
पत्युश्श्री**जगदेकवीर** नृपतेर्जैत्र-द्विपस्याग्रतो
धावद्दन्तिनि यत्र भग्नमहितानीकं मृगानीकवत् ॥ २ ॥
अस्मिन् दन्तिनि दन्त-वज्र-दलित-द्विट्-कुम्भि-कुम्भोपले
वीरोत्तंस-पुरोनिषादिनि रिपु-व्यालाङ्कुशे च त्वयि ।
स्यात्कोनाम न गोचरप्रतिनृपो मद्बाण-कृष्णोरग-
ग्रासस्येति **नोलम्बराज**समरे यः श्लाघितः स्वामिना ॥३॥
खात'क्षार-पयोधिरस्तु परिधिश्चास्तु **त्रिकूटः पुरी**
लङ्कास्तु प्रति नायकोऽस्तु च सुरारातिस्तथापि क्षमे ।
त जेतुं **जगदेकवीर**-नृपते त्वत्तेजसेतिक्षणात्-
निर्व्यूढं **रणसिङ्ग**-पार्थिव-रणे येनोर्ज्जितं गर्ज्जितम् ॥४॥
वीरस्यास्य रणेषु भूरिषु वयं कण्ठग्रहोत्कण्ठया
तप्तास्सम्प्रति लब्ध-निर्वृतिरसास्त्वत्खड्ग-धाराम्भसा।
कल्पान्तं **रणरङ्गसिङ्ग**-विजयी जीवेति नाकाङ्गना
गीर्व्वाणी-कृत-राज-गन्ध-करिणे यस्मै वितीर्ण्णाशिषः ॥ ५ ॥
आक्रष्टुं भुज-विक्रमादभिलषन् **गङ्गाधिराज्य-श्रियं**
येनादौ **चलदङ्क-गङ्ग**नृपतिर्व्व्यर्थाभिलाषीकृतः ।
कृत्वा वीर-कपाल-रत्न-चषके वीर-द्विषश्शोणितम्
पातुं कौतुकिनश्च **कोणप-गणाः**पूर्ण्णाभिलाषीकृताः ॥६॥

[नोट—केवल यही एक लेख है जिसमें चामुण्डराय मंत्री का स्वतन्त्र और विस्तृत रूप में वर्णन पाया जाता है। दुर्भाग्यवश यह लेख का एक खण्ड मात्र है। ज्ञात होता है कि अपना एक छोटा सा लेख नं० ११० (२८२) लिखाने के लिये हेग्गडे कण्णने इस महत्त्वपूर्ण लेख की तीन बाजू घिसवा डाली है। यदि यह लेख पूरा मिल जाता तो सम्भव है कि उसमें चामुण्डराय और गोम्मटेश्वर मूर्ति के सम्बन्ध की अनेक बातें विदित हो जातीं जिनके विषय में अब केवल अनेक अनुमान ही लगाये जाते हैं।]

११० (२८२)

उसी स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० ११२२)

(दक्षिणमुख)

श्री-गोम्मट-जिन-पाग्रद चागद कम्बक्के यचनं माडिसिदं ।
धीगम्भीरगुणाढ्यं भोग-पुरन्दरनेनिप्प हेग्गडे कण्णं ॥

[गम्भीर बुद्धि और गुणवान् हेग्गडे कण्ण ने गोम्मट जिन के सन्मुख त्यागद स्तम्भ के लिये यक्ष देवता निर्माण कराया।]

१११ (२७४)

अखण्ड बागिलु के पूर्व की ओर चट्टान पर

(शक सं० १२९५)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

श्रीमूल-सङ्घपयःपयोधिवर्द्धनसुधाकराःश्रीवलात्कारगणक-मल-कलिका-कलाप-विकचन-दिवाकराः...वनवा.. तकीर्त्ति-

देवाःतच्छिष्याः राय-भुजसुदाम......आचार्य्य महा-वादि-वादीश्वर राय-वादि-पितामह सकल-विद्वज्जन-चक्रवर्त्ति देवेन्द्र-विशाल-कीर्त्ति-देवाःतच्छिष्याःभट्टारक-श्रीशुभकीर्त्तिदेवास्त च्छिष्याः कलिकाल-सर्व्वज्ञ-भट्टारक-धर्म्मभूषणदेवाः तच्छिष्याः श्री-अमरकीर्त्याचार्य्याः तच्छिष्याः मालिर्वा...ति-नृपाणां प्रथमानल...........रसित...नुत-पा......... ..यमुष्ठासक ......देसक...चार्य्यपट्टविपुलायाचला ... करण-मार्त्तण्ड-मण्डलानां भट्टारक-धर्म्मभूषण-देवानां.. ...तत्वार्थ-वार्द्धि-वर्द्धमान-हिमांशुना...वर्द्धमान-स्वामिना कारितोऽहं आचार्य्याणां...स्वस्तिशक-वर्ष १२८५ परिधावि संवत्सर वैशाख-शुद्ध ३ बुधवारे ॥

११२ (२७३)

उसी चट्टान पर

(लगभग शक सं० १३२२)

श्री शान्तिकीर्त्तिदेवर शिष्यरु हेमचन्द्र-कीर्त्ति-देवर निसिद्धि॥ मङ्गलमहाश्री ॥

११३ (२६८)

उसी चट्टान पर

(सम्भवतः शक सं० १०६६)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलाचार्य्यादि-प्रशस्तय-विराजित-चिह्नालङ्कृतरुं विसम्बोधावबोधितरुं सकल-विमल-केवल-ज्ञान-नेत्र-त्रयरुं अनन्त-ज्ञान-दर्शन-वीर्य्य-सुखात्म-करुं विदितात्म-सद्धर्म्मोद्धारकरुं एकत्व-भावना-भावितात्मरुं उभ-नय-समर्त्थिसखरुं त्रिदण्ड-रहितरुं त्रिशल्य-निराकृतरुं चतु-कषा-विनाशकरुं चतुर्व्विधवुपसर्ग्गगिरिकन्दरादि-दैरेय-समन्वितरुं पञ्च-दस-प्रमाद-विनास-कर्त्तुगलु पञ्चाचार-वीर्य्याचार-प्रवीणरुं सड्डुदरुशतद भेदाभेदिगलुं सट्ट-कर्म्म मारुरुं सप्तनयनिरतरुं अष्टाङ्ग-निमित्त कुशलरुं अष्ट-विध-ज्ञानाचार-सम्पन्नरुं नव-विध-ब्रह्मचरिय-विनिर्म्मुक्तरुं दश-धर्म्म-शर्म्म-शान्तरु मेकादशश्रावकाचारवुपदेशव्रताचार-चारित्ररुं द्वादशातप-निरतरु द्वादशाङ्ग-श्रुतप्रविधान सुधाकररुं त्रयोदशाचार-शील-गुण-धैर्यमं सम्पन्नरुं एम्बत-नाल्कु-लक्ष-जीव-भेद-मार्ग्गणरुं सर्व्व-जीव-दया-पररुं श्रीमत्कोण्डकुन्दान्वय-गगन-मार्त्तण्डरुं विदितोतण्ड-कुष्मसाण्डरुं देशिगण-गजेन्द्र-सिन्धूरमदधारावभा-सुररुं श्री-महादेशि-गण-पुस्तक गच्छ कोण्ड-कुन्दान्वय श्रीमत् त्रिभुवनराज-गुरु-श्रीभानुचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगलुं श्री-सोमचन्द्र-सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगलुं चतुर्म्मुखभट्टारकदेवरुं श्रीसिंहनन्दिभट्टाचार्य्यरुं श्री शान्तिभट्टारकाचार्य्यरुं श्री-शान्तिकीर्त्ति...र...भट्टारकदेवरुं... श्रीकनकचन्द्रमल-धारिदेवरुं श्री नेमिचन्द्र मलधारिदेवरुं चतुसङ्घश्रीसकल-गण-साधारण......ड-देवधामरुं कलियुग-गणधर-पञ्चासद

मुनीन्द्ररुं अवर शिष्यरु **गौरश्री**कन्तियरु **सोमश्री**कन्तियरु ...**नश्री**कन्तियरु **देवश्री**कन्तियरुं **कनक-श्री**कन्तियर शिष्य...यिप्पत्तु-एण्ड्रुतण्ड-शिष्यरु वेरसु **हेवणन्दि संवत्सरद फाल्गुणसु** ८ त्रि श्री **गोम्मटदेवर** तीर्त्थनन्द......पञ्च कल्याण ....

[इस लेख में कुन्दकुन्दान्वय, देशी गण, पुस्तकगच्छ के महाप्रभावी आचार्यों—त्रिभुवनराजगुरु भानुचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्ति, सोमचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्ति, चतुर्मुख भट्टारकदेव, सिंहनन्दि भट्टाचार्य, शान्ति भट्टारकाचार्य, शान्तिकीर्त्ति भट्टारकदेव, कनकचन्द्र मलधारिदेव, और नेमिचन्द्र मलधारिदेव—के उल्लेख के पश्चात् कहा गया है कि इन सब आचार्यों व अनेक गणों और संघों के आचार्य, कलियुग के गणधर पचास मुनीन्द्र, व उनकी शिष्यायें गौरश्री, सोमश्री, देवश्री, कनकश्री व शिष्यों के अट्ठाइस संघों ने उक्त तिथि को एकत्रित होकर पञ्चकल्याणोत्सव मनाया।]

नोट—लेख में संवत्सर का नाम हेवणन्दि दिया हुआ है जिससे सम्भवतः हेमलम्ब का तात्पर्य है। शक सं० १०६६ हेमलम्ब था।]

११४ (२६६)

एक शिला पर जो उस चट्टान के सामने खड़ी है

(सम्भवतः शक सं० १२३८)

स्वस्ति श्रीमूलसङ्घदेशीगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दान्वय श्री**त्रैविद्य-देवर** शिष्यरु **पद्मणन्दिदेवरु नल-संवत्सरद चैत्र-सु-१ सोमवारदन्दु नाक-श्री**मनस्सरोजिनीराजमरालरादरु मङ्गलमहाश्री ॥

[उक्त तिथि को त्रैविद्यदेव के शिष्य पद्मनन्दिदेव ने, समाधिमरण किया।]

[नोट—लेख में नल संवत्सर का उल्लेख है। शक सं० १२३८ नल था]

११५ (२६७)

अखण्डवागिलु की शिला पर

(लगभग शक सं० १०८१)

स्वस्ति श्रीमन्महाप्रधान भव्य-जन-निधानं सेनेयङ्कार रण-रङ्ग-नीर श्रीमन्मरियाने-दण्डनाथानुजं दानभानुजनेनिसिद भरतमय्य-दण्डनायकनी-भरतबाहुबलिकेवलिगल प्रतिमेग-लुमनी - बसदिगलुमातीर्थ-द्वार-पच-शोभात्थमाडिसिदनी-रङ्गद हप्पलिगेयुमनामहासोपानपङ्क्तियुमं रचिसिदं श्रीगोम्मटदेवर सुत्तलु रङ्गम हप्पलिगेयं चिगियिसिदनन्तुमल्लदेयुमी-गङ्गवाडिना-डालछिगल्लिगंछि नोर्प्पडं ।

कन्द ॥ प्रकट-यशो-विभुवेण्ब-
त्तु कन्ने-बसदिगलनोसेदु जीर्ण्णोद्धार-
प्रकरमनिन्नूरनलौ-
किक-धृति माडिसिदनेसेये भरत-चमूपं ॥ १ ॥
भरत-चमूपतिसुते सु-
स्थिरे शान्तल-देवि बूचिराजाङ्गने
तद्भरतनेयं मरि......
...नो मदु वरयिसिदनिदं ॥ २ ॥

[मरियणे दण्डनाथ के लघु भ्राता महामन्त्री भरतमय्य दण्डनायक ने ये भरत और बाहुबलि केवलि की मूर्तियाँ व ये वस्तियाँ इस तीर्थ-

स्थान के द्वार की शोभा के लिये निर्माण कराईं। उन्होंने रङ्गशाला की हप्पलिगे (कटघर ?) व महासोपान व गोम्मटदेव की रङ्गशाला की हप्पलिगे भी निर्माण कराये, तथा गङ्गवाडिभट मे अस्सी नवीन बस्तियाँ बनवाईं और दो सौ बस्तियों का जीर्णोद्धार कराया। भरत चमूपति की सुता शान्तल देवी ... ने यह लेख लिखवाया।]

११६ (३१२)

बोदेगल बस्ति के पश्चिम की ओर चट्टान पर

(शक सं० १६०२)

श्रीमतु शालिवाहन **शकवरुष १६०२ सिद्धार्त्थि-संव-त्सरद माघ-बहुल १०** यल्लु मुनिगुन्दद सीमेय देश-कुलकरणि-यर मकलुबाङ्क **होन्नप्पय्यन** अनुज **वेङ्कण्णैय्यन** पुत्र **सिद्दण्णैन** अनुज **नागण्णैय्यन** पुण्यस्त्रीयराद **बनदाम्बिकेयरु** बन्दु दरु-शनवादरु भद्रं भूयात् श्री ॥ **श्रुतसागर**-वर्न्निगल समेत यिदे तिथियल्लि **माडिगूर गिडगप्प नागप्पन** पुत्र **दानप्पसेट्टर** पुण्य-स्त्री-**नागव्वन** मैदुन **भिष्टप्पनु** दरुशनवादरु ॥

[उक्त तिथि को श्रुतसागर गणी के साथ उक्त व्यक्तियों ने तीर्थ वंदना की।]

११७ (२५९)

काञ्चि गुब्बि बागिलु के दक्षिण की ओर चट्टान पर

(सम्भवत. शक सं० १५३१)

श्री **सौम्यसंवत्सरदोलु** विभवद **आश्वयज** ब ७ मियो-लु तां श्रीसोमनाथपुरवेनिसिद **कोङ्गनाडिङ्गदं** अनादिय ग्रामं ॥

आ-ग्रामदलु श्रीमत्पण्डित देवर शिष्यरु काश्यप-गोत्रद द्विज-कुल-सम्पन्नरु सेनबोव सायण्णनवरु अवर मदवलिगे महदेविगल प्रिय-पुत्र हिरियण्णनू श्री गुम्मटनाथ-स्वामिगल दिव्य-श्री-पदवनू दरुशनवागि परमजिनेश्वर-भक्तरु वर-गुणिगलु मुक्ति-पथवं पडदरू ॥ श्री

[कश्यपगोत्रीय ब्राह्मण और पण्डित देव के शिष्य सेनबोव सायण्ण के पुत्र जिनभक्त हिरियण्ण ने उक्त तिथि को अनादि ग्राम कोङ्गनाडु की गणना की (?) और उसकी पत्नी महादेवी ने गोम्मटनाथ स्वामी के चरणारविंद की वन्दना कर मुक्ति-मार्ग प्राप्त किया।]

[नोट—लेख में सौम्य संवत्सर का उल्लेख है। शक सं० १२३१ सौम्य था]

११८ (३१३)

चौबीस तीर्थकर बस्ति में

(शक सं० १५७०)

(नागरी लिपि)

वों नम सिद्धेभ्यः गोमट-स्वामीः आदीश्वरः मुल्ल-नाईकः चोवीस तीर्थंकरं कि परतीमाः चारुकीरती पण्डितः धरमचन्द्रः बल्लातकार उपदसाः सके १५७० सर्वधारी-नाम-संवत्सरः वैशाख वदी २ सुकुरवार देहराङ्की पती स्यहै...... गेरवाल्लः यवरेगोत्रः जीनासाः धीवा सा का पुत्र. सदावनसाः व भावूसाः व लामासाका पुत्रः ताकासा मनासाः कमुलपूरे सातसा भाससा...... वद...मोपत......रसे राव......

११९ (२७७)

अखण्ड बागिलु को जानेवाले मार्ग के पश्चिम की ओर चट्टान पर

(विक्रम सं० १७१९)

(नागरी लिपि)

संवत् १७१८ वर्षे वैसाष-सुदि ७ सोमे श्री काष्टा-सङ्घे **मण्डितटगच्छे**...श्री-**राजकीर्त्तिः** । तत्पट्टे भ श्री **लक्ष्मीसेन**स्तत्पट्टे भ श्री **इन्द्रभूषण**तत्पट्टे **शोसू** बघेरवाल जाती **बोरखण्ड**-आई-पुत्र पं भा **धनाई** तयो पुत्र पं खाम्फल पूजनाई तयो पुत्र पं वन जन **पडाई** स-परिवारे **गोमट**-स्वामि चा जात्रा......सफल

१२० (३१८)

पहाड़ी पर चढ़ने के मार्ग के पूर्व की ओर चट्टान पर

(लगभग शक सं० ११४०)

अरकेरेय वीर **वीरपल्लव-रायन** मकं केदेसङ्कर-नायकं बेल्गुगोल प्ध...येच बेलबडिगर बेटके ॥

१२१ (३२१)

ब्रह्मदेव मण्डप के पीछे चट्टान पर

(सम्भवतः शक सं० १६०१)

सिदार्त्ति स । **कार्त्तिक सुद्ध** २ रलु । श्री-ब्रह्म-देवर-मटपवन्नु **हिरिसालि** गिरिगैाडना तम्म **रङ्गैयन** से वे ॥

[उक्त तिथि को छिरिसालि के गिरिगौड के लघु भ्राता रङ्गैय्य ने ब्रह्मदेव मण्डप को दान दिया।]

[नोट—लेख में सिद्धार्थि संवत्सर का उल्लेख है। शक सं० १६०१ सिद्धार्थि था।]

१२२ (३२६)

पहाड़ी के दक्षिण मूल में चट्टान पर

(लगभग शक सं० ११२२)

स्वस्ति प्रसिद्ध-सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्तिगल् त्रिविष्टपावेष्टित-कीर्त्तिगल् कोण्डकुन्दान्वयगगन-मार्त्तण्डरुमप्प श्रीमन् **नय-कीर्त्ति**सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल् गुड्ड **बम्मदेव**-हेग्गडेय मग **नागदेव**-हेग्गडे **नागसमुद्र**मेन्दु केरेय कट्टिसि तोटवनि किसिदडवर शिष्यरु **भानुकीर्त्ति**-सिद्धान्त-देवरु **प्रभाचन्द्र** देवरु **भट्टारक**-देवरु **नेमिचन्द्र**-पण्डित-देवरु **बालचन्द्र** देवर सन्निधियलु **नागदेव** हेग्गडेगे आ-तोट गद्दे अवरेहाल सर्व्वबाधा परिहारवागि वर्षके गद्याण ४ तेरुवन्तागि मक्कल मक्कलु पर्य्यन्त कोट्ट शासनार्थवागि श्री-**गोम्मट**-देवर अष्ट-विधार्च्चनेगे विट दत्ति ॥

[बम्मदेव हेग्गडे के पुत्र व नयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्ति के शिष्य नागदेव हेग्गडे ने नागसमुद्र नामक सरोवर और एक उद्यान निर्माण कराये। इन्हें अवरेहालु सहित नयकीर्ति के शिष्य भानुकीर्ति, प्रभा-चन्द्र, भट्टारकदेव और नेमिचन्द्र पण्डितदेव ने नागदेव हेग्गडे को ही इस शर्त पर दे दिया कि वह सदैव प्रतिवर्ष गोम्मटदेव के अष्टविध पूजन के निमित्त चार गद्याण दिया करे।]

१२३ (३७५)

चेन्नण्णन के कुञ्ज में एक चट्टान पर

(लगभग शक सं० १५६५)

पुट्टसामि-सट्टर श्री-**देवीरम्मन** मग **चेन्नण्णन** मण्टप आदि-तीर्त्थद कोलविदु हालु-गोळनोविदु अमृत-गोळनोविदु **गङ्गे** नदियो । **तुङ्गबद्रियो**विदु मङ्गला गौरेयो विदु **वृन्द-वनवो**विदु सृङ्गार-तोटवो । अयि अयिया अयि अयिये वले तीर्त्त वले तीर्त्त जया जया जया जय ॥

[यह पुट्टसामि और देवीरम्म के पुत्र चण्णण का मण्डप और आदितीर्थ है । यह दुग्धकुण्ड है या कि अमृतकुण्ड ? यह गङ्गा नदी है या तुङ्गभद्रा या मङ्गलगौरी ? यह वृन्दावन है कि विहारोपवन ? ओहो ! क्या ही उत्तम तीर्थ है ?]

श्रवण वेल्गोल नगर में के शिलालेख

१२४ (३२७)

अक्कन बस्ति में द्वार के समीप एक पाषाण पर

(शक सं० ११०३)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥ १ ॥
भद्रम्भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघ-नाशिने ।
कुतीर्थ-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभेद-घन-भानवे ॥ २ ॥
स्वस्ति श्री-जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्व्वानलोद्दाम-तेजं
विस्तारान्तःकृतोर्व्वी-वलममलयशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ।
वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्वावलम्बं गभीरं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि निभमेसगु होय्सलोर्व्वीश-
वंशं ॥ ३ ॥

भदरालु कौस्तुभदोन्दनर्घ्य-गुणमं देवेभदुद्दाम-स-
त्वदगुर्व्वं हिमरश्मियुज्वल-कला-सम्पत्तियं पारिजा-
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं तालिद तानल्ते पु-
ट्टिदनुद्रेजित-वीर-वैरि-विनयादित्यावनीपालकं ॥ ४ ॥

कं ॥ विनयं बुधरं रञ्जिसे
घन-तेजं वैरि-बलमनलरिसे नेगल्द ।

विनयादित्य-नृपालक-
ननुगत-नामार्त्थनमल **कीर्त्ति**-समर्त्थं ॥ ५ ॥
आ-**विनयादित्यन** वधु
भावोद्भव-मन्त्र-देवता-सन्निभे सद्-
भाव-गुण-भवनमखिल क-
ला-विलसिते केलेयबरसियेम्बलु पेसरिं ॥ ६ ॥
आदम्पतिगे तनूभव-
नादं शचिगं सुराधिपतिगं मुन्ने-
न्तादं जयन्तनन्ते वि-
षाद-विदूरान्तरङ्गनेरेयङ्ग-नृपं ॥ ७ ॥
आतं **चालुक्य**-भूपालन वलद भुजा-दण्डमुद्दण्ड-भूप-
व्रात-प्रोत्तुङ्ग-भूभृद्-विदलन-कुलिशं वन्दि-सस्यौघ-मेघं ।
श्वेताम्भोजात-देव-द्विरदन-शरदभ्रेन्दु-कुन्दावदात-
ख्यात-प्रोद्यद्यशश्श्री-धवलितभुवनं धीरनेकाङ्गवीरं ॥ ८ ॥
एरेयनेलेगेनिसि नेगल्दद्
एरेयङ्ग नृपाल-तिलकनङ्गने चलुवि-
ङ्गेरेवट्टु शील-गुणदि
नेरदेचलदेवियन्तु नोन्तरुमोलरे ॥ ९ ॥
एने नेगल्दवरिब्बर्गा
तनूभवर्न्नेगल्दरल्ते **बल्लाल** वि-
ष्णु-नृपालकनुद**यादि**-
त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिल-वसुधा-तलदोल् ॥ १० ॥

अवरोळ् मध्यमनागियुं भुवनदोळु पूर्व्वापराम्भोधियं-
न्दुविनं कूडे निमिर्च्चुवोन्दु-निज-बाहा-विक्रम-क्रीडेयु-
त्सवदिन्दुत्तमनादनुत्तम-गुण-श्रातंक-धामं धरा-
धव-चूडामणि यादवाब्ज-दिनपं श्रीविष्णुभूपालक
॥ ११ ॥

एनेनेमेय कोयतूर्त्तन-
तलवनपुरमन्ते रायरायपुरं ब-
न्दल चनेद विष्णु-तेजो-
ज्वलनदे वेन्दवु बलिष्ठ-रिपु-दुर्गङ्गळ् ॥ १२ ॥

इनितं दुर्गम-वैरि-दुर्ग-चयमं काण्टं निजाक्षेपदि-
न्दिनितर्च्चं भूपरनाजियोळ् तविसिदं तन्नन्त्र-सङ्घातदि-
न्दिनितर्गानतर्गित्तनुद्ध-पदमं कारुण्यदिन्देन्दुता-
ननितं लेक्कदे पेळ्वोडब्ज-भवनुं विभ्रान्तनप्पं बलं ॥१३॥

कं ॥ लक्ष्मीदेवि ग्धराधिप-
लक्ष्मम्ने मेदिर्द विष्णुवेन्तन्त बलं ।
लक्ष्मा-देवि-जमन्मृग—
लक्ष्माननं विष्णुगप्रमतियेने नेगल्दळ् ॥ १४ ॥

अवर्गे मनोजनन्ते सुदती-जन-चित्तमनोलकोलल्केसा-
ल्ववयव-शोभेयिन्दतनुवेम्ब भिधानमनानदङ्गना-
नियदमनेच्चु मुख्यनणमानदे वीररनेच्चु युद्धदोळ् ।
तविसुवोनादनात्म-भवनप्रतिमं नरसिंह-भूभुजं ॥१५॥

पडे-मातें बन्दु कण्डङ्गमृत-जलधि तां गर्व्वदिं गण्डवातं
तुडिवातङ्गे ननेम्बै प्रलय-समयदोल् मेरेयं मीरि वर्प्पा-
कडलन्नं कालनन्नं मुलिद कुलिकनन्नं युगान्ताग्नियन्नं
सिडिलन्नं सिंहदन्नं पुरहरनुरिगण्णन्ननी **नारसिंहं**
॥ १६ ॥

वद्धीङ्ग-लद्मि ॥
मृदु-पदेयें **चलदेवी** —
सुदतिये **नरसिंह**-नृपतिगनुपमसैाख्य-
प्रदे पट्ट-महादेवी-
पदविगे सले योग्येयागि धरेयोल् नेगल्दल् ॥ १७ ॥

वृत्त ॥ ललना-लीलेगे मुन्नवेन्तु कुसुमास्त्रं पुट्टिदों विष्णुगं
ललित-श्री-वधु-विङ्गवन्ते **नरसिंह**ज्ञोणिपालङ्गवे-
चल-देवी-वधुगं परार्थ-चरितं पुण्याधिकं पुट्टिदों
वलवद्वैरि-कुलान्तकं जय-भुजं **बल्लाल**-भूपालकं ॥१८॥

रिपु-भूपालेभ-सिंहं रिपु-नृप-नलिनानीक-राका-शशाङ्कं
रिपु-राजन्यौघ-मेघ-प्रकर-निरसनोद्भूत-वात-प्रपात ।
रिपु-धात्रीशाद्रि-वज्रं रिपु-नृपति-तमस्तोम-विध्वंसनार्क्कं
रिपु-पृथ्वीपालकालानलनुदयिसिदं **वीर-बल्लाल-देवं**॥१९॥

गत-लीलं **लाल**नालम्बित-बहल-भयोग्र-ज्वरं-**गूर्ज**रं स-
न्धृत-शूलं **गौल**नुच्चैःकर-धृत-विलसत्पल्लवं **पल्लवं**-प्रो-
ज्भित-चेलं **चोल**नादं कदन-वदन-दोलु भेरियं पोय्सेवीरा-
हित-भूभृज्जाल-कालानलनतुल-बलं **वीर-बल्लाल-देवं** ।२०।

भरदिन्दं तन्न दोर्गर्व्वदिनोडेयरसं काय्दु कादल्कणं पू-
ण्डिरे **बल्लाल**-चितीशं नडदु बलसियुंमुत्तसेना गजेन्द्रो-
त्कर-दन्ताघात-सञ्चूर्ण्णितशिखरदोलुच्चङ्गियोलिसलिकदंभा-
सुर-कान्ता-देश-कोश-व्र ज-जनक-हयौघान्वित **पाण्ड्य**भूपं
॥ २१ ॥

चिरकालं रिपुगलगमाध्यमेनिसिर्द्दुच्चङ्गियंमुत्तिदु-
र्द्धर-तेजो-निधि धूलि-गोटेयने कोण्डाकाम-देवावनी-
श्वरनं सन्दोडेय चितीश्वरननाभण्डारमं खोयरं
तुरग-व्रातमुमं समन्तु पिडिदं **बल्लाल**-भूपालकं ॥२२॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं **द्वार**-
वतीपुरवराधीश्वरं **तुलुवबल**-जलधि-बडवानलं दायाद-दावानलं
पाण्ड्य-कुल-कमलवेदण्ड गण्ड-भेरुण्ड मण्डलिक-बेण्टेकार
चोल-कटक-सूरेकार। सङ्ग्राम-भीम। कलि-काल-काम। सकल-
वन्दि-बृन्द-सन्तर्प्पण-समग्र-वितरणविनोद। **वासन्तिका देवी**-
लब्ध-वर प्रसाद। **यादव**-कुलाम्बर-द्युमणि। मण्डलिक-
मकुट-चूडामणि कदन-प्रचण्ड **मलपरोल्**गण्ड शनिवारसिद्धि
गिरि-दुर्ग्ग-मल्ल नामादि-प्रशस्ति-सहितं श्रीमत्**त्रिभुवन-मल्ल**
तलकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-नोलम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गल-गोण्ड-
भुज-बल-वीर-**गङ्ग**-प्रताप-**होय्सल वीर-बल्लाल** देवर्द्दचिण-
मण्डलमं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालन-पूर्व्वकं सुखसङ्कथा-विनो-
दर्दिं राज्यंगेय्युत्तिरे।

तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥

तनगाराध्यं हरं विक्रम-भुज-परिघं **वीर-बल्लाल**-देवा-
वनिपालं स्वामि विभ्राजितविमल-चरित्रोत्करं शम्भु-देवं ।
जनकं शिष्टेष्ट-चिन्तामणि जननि जगत्ख्यातेयक्कव्वेयेन्द-
न्दिनिसं श्री-**चन्द्रमौलि**-प्रभुगे सममे कालेय-मन्त्रीश वर्गां
॥ २३ ॥

पति-भक्तं वर-मन्त्र-शक्ति-युतनिन्द्रङ्गेन्तु भास्वद्-बृह-
स्पति-मन्त्रीश्वरनादनन्ते विलसद्**बल्लाल-देवा**वनी-
पतिगी-विश्रुत-**चन्द्रमौलि**-विबुधेशं मन्त्रियादं समु-
न्नत-तेजो-निलयं विरोधि-सचिवोन्मत्तेभ-पञ्चाननं ॥ २४ ॥

वर-तर्काम्बुज-भास्करं भरत-शास्त्राम्भोधिचन्द्रं समु-
द्धुर-साहित्य-लतालवालनेसेदं नाना-कला-कोविदं ।
स्थिर-मन्त्रं द्विज-वंश-शोभितनशेषस्तुत्यनुद्यद्यशं
धरेयोळ् विश्रुत-**चन्द्रमौलि**-सचिवं सौजन्य-जन्मालयं
॥ २५ ॥

तदर्धाङ्ग-लक्ष्मि ॥

घन-बाहा-बहलोर्म्मि-भासिते मुख-व्याकोश-पङ्केज-म-
ण्डने दृङ्मीन-विलासे नाभिविततावर्त्ताङ्के लावण्य-पा-
वन-वारिसम्भृते **चन्द्रमौलि**वधुवी श्री **आ**चियक्कं जग-
ज्जन-संस्तुत्ये कलङ्क-दूरे नुते गङ्गा-देवि तानल्लले ॥ २६ ॥

स्वस्त्यनवरत-विनमदमर-मौलि-माला-मिलित-चलन-नलिन-
युगल-भगवदर्हत्परमेश्वर-स्नात-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गेयुं चतु-

न्विधानून-दान-समुत्तुङ्ग युमप्प श्रीमतु हिरिय-हेग्गडितियाचल-देवियन्वयवेन्तेन्दोडे ॥

वरकीर्त्ति-धवलिताशा—

द्विरदौघं मासवाडि-नाड विनूतं ।

परम-श्रावकनमलं

धरणियोली-शिवेयनायक विभुवेसेदं ॥ २७ ॥

आतन सतिगे सीताम्बुज-

शीतांशु-शरत्पयोद-विशदयशश्श्री-

यांत-धरातलेगखिल-वि-

नीतेगे चन्दव्वेगवलेयदोरेयुण्टे ॥ २८ ॥

तत्पुत्र ॥

जिन-पति-पद-सरसीरुह-

विनमद्भृङ्गं समस्त-ललनानङ्गं ।

विनय-निधि-विश्व-धात्रियोल्

अनुपमनी बम्म-देव हेग्गडे नेगल्दं ॥ २९ ॥

तत्सहोदरं ॥ गत-दुरितनमल-चरितं

वितरण-सन्तर्प्पिताखिलार्थि-प्रकरं ।

चितियोल्-वावेय-नायक-

नति-धीरं कल्प-वृक्ष नं गेल्दे वन्दं ॥ ३० ॥

तत्सहोदरि ॥

सरसिरुह-वदने घन-कुचे

हरिणाचि मदोत्क-कोकिल-स्वने मदव-

त्करि-पति-गमने तनूदरि
धरेयोल् **कालव्वे** रूपिनागरमादल् ॥०३१ ॥

तत्सहोदरि ॥

धरेयोल् रूढिय **मासवाडियरसं हेम्माडि**-देवं गुणा-
करना-भूपन चित्त-वल्लभे लसत्सौभाग्ये गङ्गानिशा-
कर-ताराचल-तार-हार-शरदम्भोदस्फुरत्कीर्त्ति-भा-
सुरेयप्पाचल-**देवि** विश्व-भुवन-प्रख्यातियं तालिददल् ॥
॥ ३२ ॥

तत्सहोदरं ॥

वर-विद्वज्जन-कल्प-भूजनमलाम्भोरासि-गम्भीरनु-
द्धुर-दर्प्प-प्रतिनायक-प्रकर-तीव्र-ध्वान्त-सङ्घात-सं-
हरणार्क्क शरदभ्रशुभ्रविलसत्कीर्त्यङ्गनावल्लभं
धरेयोल् **सोवण**-नायकं नेगल्दनुदद्धैर्य-शौर्य्याकरं ॥
॥ ३३ ॥

कं ॥ गिरिसुतेगे जह्नुकन्नेगे
धरणी-सुतेगन्तिमब्बेगनुपम-गुण-दोल् ।
दोरेयेनलिन्तीसकलो-
र्व्वरेयोल् **बाचव्वे** शीलवति सति नेगल्दल् ॥३४॥

तत्पुत्रं ॥

परसैन्याहि-विहङ्गनूर्ज्जितयशस्सङ्गं जिनेन्द्रांघ्रि-प-
द्म-रजो-भृङ्गनुदार-तुङ्गनेसेदं तन्नोप्पुवीसद्गुणो-

त्करदिं देशिय-दण्डनायकनिलाभिष्टार्थसन्धायकं
घरेयोल् बम्मेय-नायकंनिखिलदीनानाथसन्त्रायकं ॥३५॥

तद्वनिते ॥

शतपत्रेक्षणे मल्लिसेट्टि-विभुगं निश्शेष-चारित्र-भा-
सितंगी माचवे-सेट्टिकव्वेगवनूनात्मीय-सौन्दर्य्य-नि-
र्जित-चित्तोद्भवकान्तेयुद्भविसिदल् दोचव्वे सत्कान्ते वा-
र-तुपारांशु-लसद्यशो-धवलिताशा-चक्रेयीधात्रियोल् ॥
॥ ३६ ॥

बम्मेय-नायकननुजं ॥

मारं मदनाकारं
हार-क्षीराब्धि-विशद-कीर्त्त्याधारं ।
धीरं धरेयोल् नेगल्दं
दूरीकृत-सकल-दुरित-विमलाचारं ॥ ३७ ॥

तदनुजे ॥

हरिणी-लोचने पङ्कजाननं घनश्रोणिस्तनाभोग-भा-
सुरं बिम्बाधरे कोकिल-स्वने सुगन्ध-श्वासे चञ्चत्तनू-
दरि-भृङ्गावलि-नीलकेशे-कल-हंसीयानेयीकम्बुक-
न्धरेयप्पाचलदेवि-कन्तु-सतियं सौन्दर्य्य दिन्देलिपल् ॥
॥ ३८ ॥

तदनुजे ॥

इन्दु-मुखि मृग-विलोचने
मन्दर-गिरि-धैर्य्ये तुङ्ग-कुच-युगे भङ्गी-

बृन्द-शिति-केश-विलसिते
चेन्दव्वे विनूतेयादलखिलोर्व्वरेयोल् ॥ ३९ ॥

तदनुजं ॥

हार-हरहास-हिम-रुचि-
तारगिरि-स्फटिक-शङ्ख-शुभ्राम्बुरुह-
चोर-सुर-सिन्धु-शारद-
नीरद-भासुर-यशोऽभिरामं कामं ॥ ४० ॥

सिरिगं विष्णुगवेन्तु मुन्नवसमाद्यं पुट्टिदों शम्भुगं
गिरिसञ्जातेगवेन्तु षड्वदननादों पुत्रनन्तीगली-
धरणी-विश्रुत-चन्द्रमौलि-विभुगं श्रीयाचियक्कङ्गवु-
द्भुर-तेजं गुणि सोमनुद्भविसिदं निस्सीम पुण्योदयं ॥४१॥

वर-लक्ष्मी-प्रिय-वल्लभं विजयकान्ताकर्ण्णपूरं विभा-
सुर-वाणी-हृदयाधिपं तुहिन-तार-क्षीर-वाराशि-पा-
ण्डुरकीर्त्तीशनुदग्र-दुर्द्धर-तुरङ्गारूढ-रेवन्तनु-
द्भुर-कान्ता-कमनीयकामनेसेदं श्री सोमनी धात्रियोल्
॥ ४२ ॥

परमाराध्यननन्त-सौख्य-निलयं श्री-मज्जिनाधीश्वरं
गुरु-सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति नयकीर्त्ति-ख्यात-योगीश्वरं ।
धरणी-विश्रुत-चन्द्रमौलि-सचिवं हृत्कान्तनेन्दन्दडा-
द्दोरेयीयाचलदेविगिन्दु विशदोद्यत्कीर्त्तिगी धात्रियोल् ।४३।

भरदिं बेलुगोल-तीर्त्थ-दोल् जिन-पति-श्री-पार्श्व-देवोद्भम-
न्दिरमं माडिसिदल् विनूत नयकीर्त्तिख्यात-योगीन्द्रभा-

सुर-शिष्योत्तम-बालचन्द्र-मुनि-पादाम्भोजिनीभक्के सु-
स्थिरेयप्पाचलदेवि कीर्त्ति-विशदाशा-चक्रेसद्भक्तियिं।४४।
तद्गुरुकुल श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्ड-
कुन्दान्वयदोल् ॥

कं ॥ विदित-गुणचन्द्र-सिद्धा-
न्त-देव-सुतनात्म-वेदि परमत-भूभृद्-
भिदुर नयकीर्त्ति-सिद्धा-
न्त-देवनेसेदं मुनीन्द्रनपगत-तन्द्रं ॥ ४५ ॥

वर-सैद्धान्त-पयोधि-वर्द्धन-शरत्ताराधिप तार-हा-
र-रुचि-भ्राजित-कीर्त्ति-धौत-निखिलोर्व्वी-मण्डल दुर्द्धर-
स्मर-बाणावलि-मेघ-जाल-पवनं भव्याम्बुज-व्रात-भा-
सुरनी-श्रीनयकीर्त्ति देव-मुनिपं विख्यातियं तालिददों ४६
तच्छिष्यर् ॥

वर-सैद्धान्तिक-भानुकीर्त्ति-मुनिपश्री-मत्प्रभाचन्द्र दे-
वरशोपस्तुत-माघनन्दि-मुनि-राजर्प्पद्मनन्दि-व्रती-
श्वररुर्व्वी-नुत-नेमिचन्द्र-मुनि-नाथर्ख्यातरादर्न्निर-
न्तरवीश्रीनयकीर्त्ति-देव-मुनि-पादाम्भोरुहाराधकर् ॥
॥ ४७ ॥

स्मर-मातङ्ग-मृगेन्द्रनुद्ध-नयकीर्त्ति-ख्यात-योगीन्द्र-भा-
सुर-पादाम्बुरुहानमन्मधुकरं पच्चत्तपो-लक्ष्मिगी-
श्वरनादों नरपाल-मौलि-मणि-रुण्मालार्च्चिताङ्घ्रि-द्वयं
स्थिरनाध्यात्मिक-बालचन्द्र-मुनिपं चारित्र-चक्रेश्वरं।४८।

गौरि तपङ्गलं नेगल्दु तां नेरेदल् गड **चन्द्रमौलि**योल्
नारियगिन्नदे-सोबगु पेल्पलवुं भवदोल् निरन्तरं ।
सार-तपङ्गलं पडेदु तां नेरेदं गड **चन्द्रमौलि**-गं-
भीरेयेनिप्प तन्ननेनिपाचलेवोल् सोवगिङ्गे नोन्तरार् ॥४९॥

• **शकवर्षद** सायिरद नूर नाल्केनेय **प्रव-संवत्सरद**
पौष्य-बहुल-तदिगेसुक्रवारदुत्तरायण संक्रान्तियन्दु ॥

वृ ॥ शीलधि **चन्द्रमौलि**-विभुवाचल-**देवि**-निजोद्ध-कान्तेया-
लोल-मृगाक्षि-माडिसिद **बेल्गोल**-तीर्थद पार्श्वदेवर-
र्च्चोलिगे वेडे **बम्मेयन**हल्लियनित्तनुदारि-**वीर-ब-**
ल्लालनृपालकन्धरेयुमब्धियुमुल्लिनमेय्दे सल्विनं ॥५०॥

तदवनिपनित्त दत्तिय-
नदनाचले **बालचन्द्र**-मुनि-राजश्री-
पद-युगमं पूजिसि चतु-
रुदधि-वर निमिरे कीर्त्ति जिनपतिगित्तल् ॥ ५१ ॥

अन्तु धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्ट तद्ग्राम-सीमे । मूड **केम्बरेय** हल्लं । अल्लि तेङ्क **मेट्टरे** । अल्लिं तेङ्क हिरिय-हेद्दारि । अल्लिं तेङ्क आलद-मर । अल्लितेङ्क **मेलियज्जनोब्बे** । अल्लि तेङ्कलङ्कदहा-लोब्बे । अल्लि तेङ्क **नागर-कट्टक्के** होद हेद्दारि । अल्लि पडुव **के**-न्तट्टिय हल्लं । अल्लि पडुव मर-नेल्लिय-गुण्डु । अल्लि पडुव **मेट्टरे** । अल्लि पडुव पिरियरेय कल्लत्ति । अल्लि पडुवल् **कडवद** कोल । अल्लिं पडुव कल्लत्ति । अल्लि पडुव बण्डि-दारियोब्बे । अल्लि वडगलोणिय दारि । अल्लि बडग **देवणन-केरेय**

ताय्वल्ल । अल्लि वडग हुणिसेय गुण्डु । अल्लि वडगणालद गुण्डु । अल्लि मूडलोव्वे । अल्लि मूड नट्ट-गुण्डु । अल्लि मूडल-त्तेयलियनगुड्डे । अल्लि मूडलालद-मर । अल्लि मूडल् केम्बरय हल्लमं सीमे कूडित्तु ॥ स्थल वृत्ति ॥ श्री-करणद केशियणन तम्म वाचणान कैयिं मारं कोण्डु वेक्कन कील्केरेय चामगट्टम विट्टरदर सीमे । मूड सागर । तेङ्क सागर । पडुव हुल्लगट्ट । वडग नट्ट कल् । हिरिय जक्कियव्वेय केरेय तोट । केतङ्गेरे । गङ्ग-समुद्रद कीलेरिय तोट । वसदिय मुन्दण अङ्गडि इप्पत्तु ॥ नानादेसियुं नाडुं नगरमुं देवरष्ट-विधार्च्चनेगे विट्टाय दवसद हेरिङ्गे वल्ल १ अडकेय हेरिङ्गे हाग १ मेलसिन हेरिङ्गे हाग १ अरिसिनद हेरिङ्गे हाग १ हत्तिय मलवेगे हागे १ सीरेय मलवेगं होङ्ग वीस १ एलेय हेरिङ्गे अरुनूरु ॥

दानं वा पालनं वात्र दानाच्छ्रेयोऽनुपालनं ।
दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं पदं ॥ ५२ ॥
वहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ ५३ ॥
स्व-दत्तां पर-दत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां ।
षष्टिर्व्वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमिः ॥ ५४ ॥

मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[इस लेख में चन्द्रमौलि मंत्री की भार्या आचलदेवी (अपर नाम आचियक्क) द्वारा निर्माण कराये हुए जिन मन्दिर (अक्कन वस्ति) को चन्द्रमौलि की प्रार्थना से होयसल नरेश वीर वल्लाल द्वारा वम्मेयन-हल्लि नामक ग्राम का दान दिये जाने का उल्लेख है। प्रथम के बाइस

पद्यों में होय्सल वंश के नरेशों का वर्णन है। जिनकी वंशावली इस प्रकार दी है—
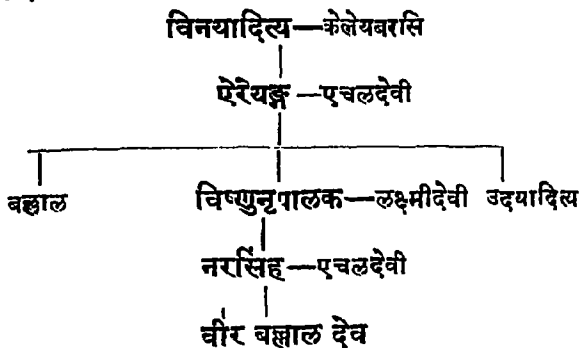
विष्णुनृप की कीर्ति में कहा गया है इन्होंने कई युद्ध जीते और अपने शत्रुओं के प्रबल दुर्ग जैसे कि कोयतूर, तलवनपुर व रायरायपुर जला डाले।

वीर बल्लाल देव की युद्ध-दुन्दुभी बजते ही लाड नरेश की शान्ति भङ्ग हो गई, गुर्जर-नरेश को भीतिज्वर हो गया, गौड़-नरेश को शूल उठ आया, पल्लव-नरेश पल्लवाञ्जलि लेकर खड़े हो गये, और चोल-नरेश के वस्त्र स्खलित हो गये। ओडेयरस-नरेश ने अभिमान में आकर युद्ध करने की ठानी, पर बल्लाल-नरेश ने उच्चङ्गि दुर्ग के शिखरों को चूर्ण कर डाला और पाण्ड्य-नरेश को उसकी अङ्गनाओं-सहित कैद कर लिया।

पद्य बाइस से आगे इन्हीं द्वारवती के यादव वंशी नरेश त्रिभुवन-मल्ल वीर बल्लाल देव का परिचय है। लेख में इनकी अनेक प्रताप-सूचक पदवियों तथा इनके तलकाडु, कोंगु, नङ्गलि, नोलम्बवाडि, बनवसे और हानुंगल की विजय का उल्लेख है। शम्भुदेव और अक्कब्बे के पुत्र चन्द्र-मौलि इन्हीं त्रिभुवन मल्ल वीरबल्लालदेव के मंत्री थे।

पद्य सत्ताइस से चालीस तक आचल देवी के वंश का वर्णन है जो इस प्रकार है—

चन्द्रमौलि की भार्या आचलदेवी की वंशावली
(मासवाडिनाडु के श्रावक) शिवेयनायक—चन्दव्वे
बम्मदेवहेग्गडे
वावेयनायक
फालव्वे
आचलदेवी (मासवाडि नरेश हेम्मादि देव की पत्नी)
सोवणनायक—वाचव्वे
चेन्दव्वे
काम
बम्मेयनायक—वोचव्वे (मल्लिसेट्टि और माचव्वे की पुत्री)
मार
चन्द्रमौलि—आचल देवी
सोम
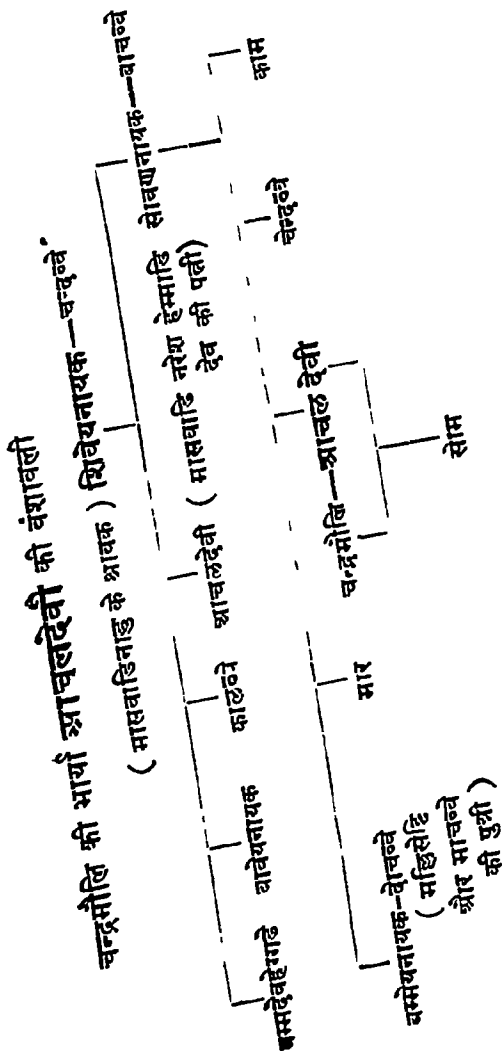
आचल देवी नयकीर्ति के शिष्य बालचन्द्र की शिष्या थी। नयकीर्ति सिद्धान्तदेव मूलसंघ, देशियगण, पुस्तक गच्छ, कुन्दकुन्दान्वय के गुणचन्द्रसिद्धान्तदेव के शिष्य (सुत) थे। नयकीर्ति के शिष्यों में भानुकीर्त्ति, प्रभाचन्द्र, माघनन्दि, पद्मनन्दि और नेमिचन्द्र थे।]

१२५ (३२८)

अक्कन बस्ति के प्रधान प्रवेश-द्वार के सामने की दक्षिणी दीवाल पर

(शक सं० १३६८)

क्षयाह्वय-कु-वत्सरे द्वितय-युक्त-वैशाखके
महो-तनय-वारके युत-बलर्क्ष-पक्षेवरे।
प्रताप-निधि-देवराट् प्रलयमाप हन्तासमो
चतुर्दश-दिने कथं पितृपतेनिवार्या गतिः॥

१२६ (३२९)

उसी दीवाल के पूर्व कोण पर

(शक स० १३२६)

तारण-संवत्सरद भाद्र-पद-बहुल - दशमियू सोमवारदलु हरिहररायनु स्वस्थनादनु॥

१२७ (३३०)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(शक स० १३६८)

क्षयाख्य-शक-वत्सरे-द्वितय-युक्त-वैशाख के
महीतन [य]- वारके यु..... .. ..

१२८ (३३३)

नगर जिनालय के बाहर

(? शक सं० ११२८)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

भय-लोभ-द्वय-दूरनं मदन-घोर-ध्वान्त-तीव्रांशुवं
नय-निक्षेप-युत-प्रमाण-परिनिर्णीतार्त्थ-सन्दोहनं ।
नयनानन्दन-शान्त कान्त तनुवं सिद्धान्तचक्रेशनं
नयकीर्त्ति व्रति-राजनं नेनेदोडं पापोत्कर पिङ्गुगुं ॥ २ ॥

अवर तन्छिष्यरु ॥

श्री-**दामनन्दि** त्रैविद्य-देवरु श्री-**भानुकीर्त्ति**-सिद्धान्त-देवरु **बालचन्द्र**-देवरु **प्रभाचन्द्र**-देवरु **माघणन्दि**-भट्टारक-देवरु मन्त्रवादि-**पद्मणन्दि**-देवरु **नेमिचन्द्र**-पण्डित-देवरु इन्तिवर शिष्यरु **नयकीर्त्ति**-देवरु ॥

धरेयोल् खण्डलि-मूलभद्र-विलसद्-वंशोद्भवर्स्सत्य-शौ-
चरतर् सिंहृ-पराक्रमान्वितरनेकाम्भोधि वेला-पुरा-
न्तर-नाना व्यवहार-जाल-कुशलर् विख्यात-रत्न-त्रया-
भरणर् बेल्गुल-तीर्त्थ-वासि-नगरङ्गल् रूढियं ताल्दिदरु ॥
॥ ३ ॥

श्री**गोम्मटपुरद** समस्त-नगरङ्गलुं श्रीमत्-प्रताप-चक्रवर्त्ति **वीरवल्लाल**-देवर कुमार-**सोमेश्वर**-देवन प्रधानं हिरिय-

माणिक्य-भण्डारि-रामदेव-नायकर सन्निधियलु श्रीमन्नय-कीर्ति-देवरु कोट्ट शासनपल्थलेय-क्रमवेन्तेन्दडे गोम्मट-पुरद मनेदेरे अक्षय-संवत्सर मोदलागि आचन्द्रार्क-तारं वरं सलुवन्तागि हणवोन्दर मोदलिङ्गे एन्टुहणवं तेत्तु सुखविप्परु तेलिगर गाणवोलगागि अरमनेय न्यायवन्यायमलन्नय एनु वन्दडं आस्थलदाचार्य्येरु तावे तेत्तु निर्न्नेयिसुवरु ओक्कल कारण कथेयिल्ल ई-शासन-मर्य्यादेयं मीरिदवरु धर्म्म-स्थलव केडिसिदवरु ई-तीर्त्थद नखरङ्गलोलगे ओब्बरिब्बरु प्रामिणिगलागि आचार्य्यरिगे कौटिल्य-बुद्धियं कलिसि वोन्दकोन्द नेनदु तोलसाटवं माडि हाग वेलेयनलिहि वेडिकोल्लियेन्दु आचार्य्यरिगे मनंगोट्टडे अवरु समय-द्रोहरु राजद्रोहरु बणञ्जिगपगेयरु नेत्त-गयरु कोलेकवर्त्तेगोडेयरु इदनरिदु नखरङ्गलु उपेक्षिसिदरादडे ई-धर्म्मव नखरङ्गले केडिसिदवरल्लदे आचार्य्यरुं दुर्ज्जनरु केडिसिदवरल्ल नखरङ्गल अनुमतविल्लदे ओब्बरिब्बरु प्रामिणिगलु आचार्य्यर मनेयनके अरमनेयनके होक्कडे समय-द्रोहरु मान्य-मन्नणेय पूर्व्व-मर्य्यादे नडसुवरु ई-मर्य्यादेयं किडिसिदवरु गङ्गे-तडिय कविलेयं ब्राह्मणं कोन्द पापद होहरु।

स्व-दत्तां पर-दत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां।
षष्टिर्व्वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ ४ ॥

[नयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्ति के शिष्य दामनन्दि, भानुकीर्त्ति, बालचन्द्र, प्रभाचन्द्र, माघनन्दि, पद्मनन्दि और नेमिचन्द्र हुए। इनके शिष्य नयकीर्त्तिदेव हुए। नयकीर्त्तिदेव ने वीरवल्लालदेव के कुमार

सोमेश्वरदेव के मंत्री रामदेव नायक के समक्ष बल्गोल नगर के व्यापारियों को यह शासन दिया कि वे सदैव के लिये आठ 'हण' का टैक्स दिया करेंगे जिसका एक 'हण' व्याज आ सकता है। इसके अतिरिक्त वे और कोई टैक्स नहीं देवेंगे। यदि राज्य की ओर से कोई न्याय, अन्याय व मलत्रय टैक्स लगाये जावेंगे तो स्वयं बल्गोल के आचार्य ही उसका प्रबन्ध करेंगे। यदि कोई व्यापारी आचार्य को छल-कपट सिखावेंगे तो वे धर्म के और राज्य के द्रोही ठहरेंगे। व्यापारियों को अपने अधिकार पूर्ववत् ही रहेंगे। ये व्यापारी खंडलि और मूलभद्र के वंशज जैनधर्मावलम्बी थे।]

[नोट—श्रवण बेल्गोल पर पूरा अधिकार जैनाचार्य का ही था। वहाँ के टैक्स आदि का भी वे ही प्रबन्ध करते थे।]

१२८ (३३४)

नगर जिनालय में दक्षिण की ओर

(शक सं० १२०५)

उक्त श्री **मूलभद्रे**ऽस्मिन्बलात्कार-ग.........

................शास्त्रसाराख्य शास्त्रकृत् ॥ १ ॥

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ २ ॥

नमः **कुमुदचन्द्राय** विद्या-विशद-मूर्त्तये।

यस्य वाक्-चन्द्रिका भव्य-कुमुदानन्द-नन्दिनी ॥ ३ ॥

नमो नम्रजनानन्द-स्यन्दिने **माघनन्दिने**।

जगत्प्रसिद्ध-सिद्धान्त-वेदिने चित्प्रमोदिने ॥ ४ ॥

स्वस्ति श्री जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्व्वानलोद्दामतेजं
विस्तारान्तःकृतोर्व्वी-तलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ।
वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्त्वावलम्बं गभीरं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगुं होय्सलोर्व्वीश-वंशं
॥ ५ ॥

स्वस्ति श्री-जयाभ्युदयं **सकवर्ष** १२०५ नेय **चित्रभानु संवत्सर श्रावण सु १० बृ दन्दु** स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महा-मण्डलाचार्य्यरुमाचार्य्य-वर्य्यरुं श्री-**मूल**-सङ्घदइङ्गलेश्वर देशिय-गणाग्रगण्यरुम् राज-गुरु-गलुमप्प **नेमिचन्द्र**-पण्डित-देवर शिष्यरु **बालचन्द्र**-देवरु श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरुमाचार्य्य वर्य्यरुं होय्सल-राय-राज-गुरुगलुमप्प श्री-**माघनन्दि**-सैद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल प्रिय-गुड्डुगलुमप्प श्री-**बेलुगुल**-तीर्त्थद **बलात्कार**-गणाग्रगण्यरुमगण्यपुण्यरुमप्प समस्त-माणिक्य-नगरङ्गलु **नखर**-जिनालयद आदि-देवर अमृत-पडिगे **रा**चेयनहल्लिय होलवेरेगो-लगाद एडवल्लगेरेय केलगे पूर्व्वदत्ति मोदलेरिय तोटमुं अमृत-पडिय गद्दे...आरर भूमिय सेरुवेगे आ-**बालचन्द्र**-देवर कय्यलु समस्त-माणिक्य-नगरङ्गलु बिडिसिकोण्ड वलय-शासनद क्रमवेन्ते-न्दडे **रा**चेयन-हल्लिय **मल्लिकार्जुन**-देवर देव-दानद गद्दे होर-गागि आ-गद्देयि मूडलु नट्ट कल्लु । अल्लिं तेन्क हासरे गल्लु । अल्लि तेङ्क **गिडिगनालद** गुण्डुगलि मूडण किरु-कट्टद गद्दे । नीरोत्तोलगाद चतुस्सीमे । आ-किरु-कट्टद पडुवण कोडियलु हुट्टु गुण्डिनलि वरद मुकोडे हसुबे नेट्ट अल्लि तेङ्क हिरिय बेट्टद

तप्पल हाम रे-गल्लु। आह्न मूडय देवलङ्ग रेय तङ्कण कोडिय गुण्डि-नलि वरद मुकोडे हसुवे नेट्टे आ-केरे-नीरोतिले सीमे । आकेरेय वडगण-कोडिय गुण्डि-नलि वरद मुकोडे हसुवे नेट्टे इन्तीकेरेयुं किरु-कटे बोलगाद चतुस्सोमेय गद्दे ॥

[इस लेख में कुमुदचन्द्र और माघनन्दि को नमस्कार के पश्चात् होय्सल वंश की कीर्त्ति का उल्लेख है और फिर कहा गया है कि उक्त तिथि को इंगलेश्वर, देशिय गण, मूलसंघ के नेमिचन्द्र पण्डितदेव के शिष्य बालचन्द्रदेव और बेल्गोल के समस्त जौहरियों (माणिक्य नगरङ्गल) ने नगर जिनालय के आदिदेव की पूजन के हेतु कुछ भूमि का दान दिया। यह भूमि उन्होंने बालचन्द्रदेव से खरीद की थी। ये जौहरी होय्सलवंश के राजगुरु महामण्डलाचार्य माघनन्दि के शिष्य थे। लेख के प्रथम पद्य में शास्त्रसार नामक किसी शास्त्र के कर्त्ता का उल्लेख रहा है। यह पद्य घिस जाने से आचार्य का नाम नहीं पढ़ा गया]

१३० (३३५)

नगर जिनालय में उत्तर की ओर

(शक सं० १११८)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति-श्रीजन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्व्वानलोद्दामत्तेजं
विस्तारान्तःकृतोर्व्वीतलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ।
वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्वावलम्बं गभीरं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भो-निधि-निभमेसगुं होय्सलोर्व्वीश-वंशं
॥ २ ॥

मदरोल् कौस्तुभदोन्दनर्घ्यगुणमं देवेभदुद्दाम-स-
त्वदगुर्व्वं हिम-रश्मियुज्वल-कला-सम्पत्तियं पारिजा-
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं तालिद तानल्ते पु—
ट्टदनुद्वेजित-चोर-वैरि-**विनयादित्या**वनी-पालकं ॥ ३ ॥

क ॥ **विनयादित्य**-नृपालन
तनु-भवनेरेयङ्ग-भूभुजं तत्तनयं ।
विनुतं **विष्णु**-नृपालं
जनपति तदपत्यनेसेदनी**नरसिंहं** ॥४ ॥

तत्पुत्रं ॥
गत-लीलं लालनालम्बित-बहल-भयोग्र-ज्वरं गूर्ज्जरं स-
न्धृत-शूलं गौलनुच्चैः-कर-धृत-विलसत्पल्लवं पल्लवं प्रो-
ज्झित चेलं चोलनादं कदन-वदनदोल् भेरियं पोय्से वीरा-
हित-भूभृज्जाल-कालानलनतुलबलं **वीर-बल्लाल-देवं**
॥ ५ ॥

चिरकालं रिपु-गलगसाध्यमेनिसिद्दुच्चङ्गियं मुत्ति दु-
र्द्धर-तेजो-निधि-धूलिगोटेयने कोण्डाकाम-देवावनी-
श्वरनं सन्दोडेय चितीश्वरननाभण्डारमं सोयरं
तुरग-व्रातमुमं समन्तु पिडिदं **बल्लाल**-भूपालकं ॥६॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महा-मण्डलेश्वर **द्वारवती**-
पुरवराधीश्वर । **तुलुव**-बल-जलधि बडवानल । दायाद-
दावानल । **पाण्ड्य** कुल-कमल-वेदण्ड । गण्ड-भेरुण्ड ।
मण्डलिक - बेटेकार । **चोल**-कटक-सूरेकार । सङ्ग्राम-भीम ।

कलि-काल-काम । सकल-वन्दि-वृन्द-सन्तर्प्पण-समग्र-वितरण विनोद । **वासन्तिका**-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद । **यादव**-कुलाम्बर-द्युमणि । मण्डलिक-मकुट-चूडामणि कदन-प्रचण्ड **मल**-परोल्-गण्ड नामादिप्रशस्ति-सहित श्रीमत्—**त्रिभुवनमल्ल-तलकाडु कोङ्गु-नङ्गलि नोणम्बवादि-बनवसे हानुङ्गल् लोक्किगुण्डि-कुम्मट-एरम्बरगेयोलगाद** समस्त-देशद नानादुर्ग्गङ्गल लीला-मात्रदि साध्यं माडिकोण्ड भुज-बल-**वीर गङ्ग**-प्रताप-चक्रवर्त्ति **होय्सल वीर-बल्लाल**-देवर् समस्त-मही मण्डलमं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालन-पूर्व्वकं सुखसङ्कथाविनोददि राज्यं गेय्युत्तिरे । तदीय-करतल-कलित-कराल-करवाल-धारा-दलन-निस्सपत्नीकृत-चतुर्प्पयोधि-परिखा-परीत-पृथुल-पृथ्वी-तलान्तर्व्वर्त्तियुं श्रीमद्-त्रिण-कुक्कुटेश्वर-जिनाधिनाथ-पद-कुशेशयालङ्कृतमुं श्रीमत्कमठ-पार्श्व देवादि-नाना-जिनवरागार-मण्डितमुमप्प श्रीमद् **बेलोल**-तीर्थद श्रीमन्महा-मण्डलाचार्य्यरेन्तप्परेन्दडे ॥

> भय-लोभ-द्वय-दूरनं मदन-घोर-ध्वान्त-तीव्राशुवं
> नय-निक्षेप-युत-प्रमाण-परि-निर्ण्णीतार्थ-सन्दोहनं ।
> नयनानन्दन-शान्त-कान्त-तनुवं सिद्धान्त-चक्रेशनं
> **नयकीर्त्ति**-व्रति-राजनं नेनेदोड पापोत्कर पिङ्गुगु ॥ ७ ॥

तच्छिष्यर् श्री-**दामनन्दि**-त्रैविद्य-देवरुं । श्री **भानुकीर्त्ति** सिद्धान्त देवरुं । श्री **बालचन्द्र**-देवरुं । श्री-**प्रभाचन्द्र** देवरुं । श्री **माघनन्दि**-भट्टारक-देवरुं । श्री मन्त्रवादि-**पद्म**-

नन्दि-देवरु । श्री नेमिचन्द्र-पण्डित देवरु । श्री-मूल-सङ्घद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद श्री कोण्ड-कुन्दान्वय-भूषणरप्प श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यर् श्रीमन्नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल गुड्डं ॥

क्षितितलदोल् राजिसिदं
धृत-सत्यं नेगल्द नागदेवामात्यं ।
प्रतिपालित-जिन-चैत्यं-
कृत-कृत्यं बोम्मदेव-सचिवापत्यं ॥ ८ ॥

तद्वनिते ॥

मुदर्दि पट्टण-सामियेम्ब पेसरं ताल्दिर्द लक्ष्मी-समा-
स्पदनप्पि-गुणि-मल्लि-सेट्टि-विभुगं लोकोत्तमाचार-स-
म्पदेगी-माचेवे सेट्टिकब्बेगमनूनोत्साहमं ताल्दि पु-
ट्टिद चन्दव्वे रमाग्र-गण्ये भुवन-प्रख्यातियं ताल्दिदल् ॥९॥

तत्पुत्र ॥

परमानन्ददिनेन्तु नाकपतिगं पौलोमिगं पुट्टिदो
वर-सौन्दर्य्य-जयन्तनन्ते तुहिन-क्षीरोद-कल्लोल-भा-
सुर-कीर्त्तिप्रिय-नागदेव-विभुगं चन्दव्वेगं पुट्टिदों
स्थिरनी-पट्टण-सामि-विश्व-विनुतं श्रीमल्लिदेवाह्वयं ॥१०॥

क्षितियोल् विश्रुत-बम्मदेव-विभुगं जोगव्वेगं प्रोद्भवत्-
सुतनी-पट्टणसामिगार्ज्जित-यशङ्गी-मल्लि-देवङ्गमू-
र्ज्जितेगी-कामलदेविगं जनकनम्भोजास्येगुर्व्वीतल-
स्तुतेगी-चन्दले नारिगीशनेसेदं श्रीनागदेवोत्तमं ॥ ११ ॥

कारिते **वीरबल्लाल**-पत्तन-स्वामिनामुना ।

नागेन पार्श्वदेवाग्रे नृत्य-रङ्गाश्म-कुट्टिमे ॥ १२ ॥

श्रीमन्**नयकीर्त्ति**-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगलो परोक्ष-विनयार्त्थ-वागियुडिजमुम निषिधियुमं श्रीमत्कमठ-पार्श्व-देवर बसदिय मुन्दण कलु-कट्टमं नृत्य-रङ्गमुमं माडिसिद तदनन्तर ॥

श्री-नगर-जिनालयमं

श्री-निलयमनमल-गुण-गणम्माडिसिदं ।

श्री**नागदेव**सचिवं

श्री-**नयकीर्त्ति**-व्रतीश-पद-युग-भक्तं ॥ १३ ॥

तज्जिनालय-प्रतिपालकरप्प नगरङ्गल् ॥

धरेयोल् **खण्डलि-मूलभद्र**-विलसद्-वंशोद्भवर्स्सत्य-शौचरतर्स्सिंह-पराक्रमान्वितरनेकाम्भोधि-वेला-पुरान्तर-नाना-व्यवहार-जाल-कुशलर् विख्यात-रत्न-त्रयाभरणर् **बेल्गोल**-तीर्त्थ-वासि-नगरङ्गल् कडियं तालिददर्
॥ १४ ॥

सकवर्ष १११८ नेय राक्षससंवत्सरद जेष्ठ सु १ बृहवार दन्दु नगर-जिनालयक्के बडवलगेरेय मोदलेरिय तोटमुं यारुसलगे-गद्देयुं उड्डुकर-मनेय मुन्दण केरेय केलगण बेद्दले कोलग १० नगर-जिनालयद बडगण **केति-सेट्टिय** केरि आ-तेङ्कण एरडु मने आ-अङ्गडि सेडेयक्कि गाण एरडु मनेगे हण अय्दु ऊरिङ्गे मलविय हण मूरु ॥

[इस लेख में नयकीर्त्ति के शिष्य नागदेव मंत्री-द्वारा नगर जिनालय तथा कमठपार्श्वदेव बस्ति के सन्मुख शिलाकुट्टम और रङ्गशाला बनवाने व नगर जिनालय को कुछ भूमि का दान दिये जाने का उल्लेख है। आदि में लेख नं० १२४ के समान होय्सल वंश का परिचय है। वीरबल्लाल देव के प्रताप का वर्णन कुछ अंश छोड़कर अक्षरशः वही है। इसके पश्चात् नयकीर्त्तिदेव और उनके शिष्यों दामनन्दि, भानुकीर्त्ति, बालचन्द्र, प्रभाचन्द्र, माघनन्दि, पद्मनन्दि और नेमिचन्द्र का उल्लेख है। नागदेव के वंश का परिचय इस प्रकार है—

खण्डलि और मूलभद्र के वंशज व्यापारियों का भी उल्लेख है। ये ही व्यापारी जिनालय के रक्षक थे।]

१३१ (३३६)

नगर जिनालय के भीतरी द्वार के उत्तर में

(शाक सं० १२०१ तथा १२१०)

स्वस्ति श्रीमतु-शक-वर्ष १२०३ नेय प्रमाथि-संवत्सरद मार्गशिर-सु (१०) बु दन्दु श्रीबेलुगुल-तीर्थद समस्त नखरङ्गलिगं नखर-जिनालयद पूजाकारिगलु ओडम्बट्टु बरसिद

सासनद क्रमवेन्तेन्दडे । नखर-जिनालयद आदि-देवर देव दानद गद्दे बेद्दलु एल्लि उल्लदनु बेलदकालदलु देवर अष्टविधा-र्च्चने अमृत-पडि-सहित श्रीकार्य्यवनु नकरङ्गलु नियामिसि कोट्ट पडियनु कुन्ददे नडसुवेवु आ-देव-दानद गद्दे बेद्दलनु आधि-क्रय हालोते गुतगं एम्म वंशवादियागि मक्कलु मक्कलु दप्पदे आरु माडिदड राजद्रोहि समयद्रोहिगलेन्दु बोडम्बट्टु वरसिद-शासन इन्तप्पुदक्के अवर बोप्प श्री-गोम्मटनाथ ॥ श्री बेलुगुल तीर्थद नकर-जिनालयद आदिदेवर नित्याभिषेकक्के श्री-हुलिगे-रेय सोवण्न अच्च-भण्डार-वागि कोट्ट गद्याणं अयिदु-होन्निङ्गे हालु व १ ॥

सर्व्वधारि संवत्सरद द्वितीय-भाद्रपद-सु ५ ब्रि। श्री-बेलुगुल-तीर्थद जिननाथ-पुरद समस्त-माणिक्य-नगरङ्गलु तम्मोलोडम्बट्टु बरसिद शासनद क्रमवेन्तन्दोडे । नगर-जिना-लयद श्री-आदिदेवर जीर्ण्णोद्धारवुपकरण श्री कार्य्यकेवू धारा-पूर्व्वकं माडि आचन्द्रार्कतारं बरं सलुवन्तागि आ-येरडु-पट्ट-णद समस्त-नखरङ्गलु स्वदेशि-परदेशियिन्दं बन्दन्तह दवण गद्याण-नूरक्के गद्याणं बोन्दरोपादिय दवण आदिदेवरिगे सलु-वन्तागि कोट्ट शासन यिदरोले विरहित-गुप्तवनारु माडिदडमवन सन्तान निस्सन्तान अव देव-द्रोहि राज-द्रोहि समय-द्रोहिगलेन्दु बोडम्बट्टु बरसिद समस्तनकरङ्गलोप्प श्री-गोम्मट ॥

[यह लेख तीन भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में उल्लेख है कि उक्त तिथि को नगर जिनालय के पुजारियों ने बेल्गोल के व्यापारियों

को यह लिखा-पढ़ी कर दी कि जब तक मंदिर की देव-दान भूमि मे धान्य पैदा होता है तब तक वे सदैव विधि अनुसार मंदिर की पूजा करेंगे।

दूसरे भाग में उल्लेख है कि नगर जिनालय के आदि देव के नित्याभिषेक के लिये हुलिगेरे के सोवण्ण ने पाँच गद्याण का दान दिया जिसके ब्याज से प्रति दिन एक 'बल्ल' दुग्ध लिया जावे।

तीसरे भाग में उक्त तिथि को बेल्गोल के समस्त जौहरियों के एकत्रित होकर नगर जिनालय के जीर्णोद्धार तथा बर्तनों आदि के लिये रकम जोड़ने का उल्लेख है। उन्होंने सौ गद्याण की आमदनी पर एक गद्याण देने की प्रतिज्ञा की। जो कोई इसमें कपट करे वह निपुत्री तथा देव, धर्म और राज का द्रोही होवे।]

[नोट—लेख के प्रथम भाग मे शक सं० १२०३ प्रमाथिसंवत्सर का उल्लेख है। पर गणनानुसार शक सं० १२०३ वृष तथा शक स० १२०१ प्रमाथी सिद्ध होते है। लेख के तृतीय भाग में सर्व्वधारि संवत्सर का उल्लेख होने से वह शक सं० १२१० का सिद्ध होता है।]

१३२ (३४१)

मंगायि वस्ति के प्रवेश मार्ग के बायीं ओर

(लगभग शक सं० १२४७)

स्वस्ति श्री-मूलसङ्घ देशिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमदभिनव-चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्य्यर शिष्यलु सम्यक्त्वाद्यनेक-गुण-गणाभरण-भूषिते राय-पात्र-चूडामणि बेलुगुलद मङ्गायि माडिसिद त्रिभुवनचूडामणियेम्ब चैत्यालयक्के मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[अभिनव चारुकीर्त्ति पण्डिताचार्य के शिष्य, बेल्गोल के मंगायि के निर्माण कराये हुए 'त्रिभुवन चूडामणि' चैत्यालय का मंगल हो।]

१३३ (३४०)

उसी बस्ति के प्रवेश-मार्ग के दायीं ओर

(लगभग शक सं० १४२२)

श्रीमतु पण्डितदेवरुगल गुड्डुगलाद बेलुगुलद नाड-चिन्न-गोण्डन मग नाग-गोण्ड मुत्तगद होन्नेनहल्लिय कल-गोण्डनोलगाद गौडगलु मङ्गायि माडिसिद बस्तिगं कोट्ट दोड्डनकट्टे गद्दे बेद्दलु यीधर्म्मके अलुपिदवरु वारणासियल्लु सहस्र-कपिलेय कोन्द पापक्के होगुवरु मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[पण्डितदेव के शिष्यों—नाग गौण्ड आदि गौडों ने मंगायि बस्ति के लिये दोड्डन कट्टे की कुछ भूमि दान की।

१३४ (३४२)

मङ्गायि बस्ति की दक्षिण-भित्ति पर

(सम्भवत: शक सं० १३३४)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

तारास्फारालकौघे सुर-कृत-सुमनोवृष्टि-पुष्पाशयालि-

न्तामाः क्रामन्ति दृह जधरपटलीडम्भतो यस्य मूर्ध्नि

सोऽयं श्री-**गोम्मटेश**स्त्रिभुवन-सरसी-रञ्जने राजहंसो
भव्य...ब-भानुर्व्वेलुगुल-नगरी साधु जेजीयतीरं ॥ २ ॥

नन्दन-संवत्सरद पुष्य-शु ३ लू **गेरसोप्पेय हिरिय-आय्यगल** शिष्यरु **गुम्मटण्णगलु गुम्मटनाथन** सन्निधि-यल्लि बन्दु चिक्क-बेट्टदल्लि चिक्क-बस्तिय कल्ल-कटिसि जीर्न्नोद्धारि बडग-बागिल बस्ति मूरु **मङ्गायि**-बस्ति वोन्दु हागे अयिदु-बस्ति जीर्णोद्धार वोन्दु तण्डक्के अहारदान ।

[गुम्मटेश की प्रशस्ति के पश्चात् लेख में उल्लेख है कि उक्त तिथि को गेरसोप्पे के हिरिय- अय्य के शिष्य गुम्मटण्ण ने यहाँ आकर चिक बस्ति के शिला कुट्टम का, उत्तर द्वार की तीन बस्तियो का तथा मंगायि बस्ति का—कुल पाँच बस्तियों का—जीर्णोद्धार कराया ।]

[नोट—लेख में नन्दन संवत्सर का उलेख है । शक सं० १३३४ नदन था ।]

१३५ (३४३)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(सम्भवतः शक सं० १३४१)

विकारि-संवत्सरद श्रावण शु १ गेरसोप्पेय श्रीमति अव्वेगलु समस्तरु-गोष्टिय कोट्टु ग ४ ॥

[उक्त तिथि को गेरसोप्पे की श्रीमती अव्वे और समस्त गोष्ठी ने चार गद्याण का दान दिया ।]

[नोट—लेख में विकारी संवत्सर का उल्लेख है । शक सं० १३४१ विकारी था ।]

१३६ (३४४)

भण्डारि बस्ति में पूर्व की ओर प्रथम स्तम्भ पर

(शक सं० १२९०)

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं ॥

पाषण्ड-सागर-महा-वड़वामुखाग्नि-
श्रीरङ्गराजचरणाम्बुज-मूल-दास ।
श्री-विष्णु-लोक-मणि-मण्टपमार्गदायी
रामानुजो विजयते यति-राज-राज ॥१॥

शक वर्ष १२९० नेय कीलक-संवत्सरद भाद्रपद-सु १० बृ० स्वस्ति श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं आरिराय-विभाड भाषेगे तप्पुव रायर गण्ड श्री वीरबुक्क-रायनु पृथ्वी-राज्यव माडुव कालदल्लि जैनरिगू भक्तरिगू संवाज वादल्लि आनेयगोन्दि होस-पट्टण पेनुगुण्डे कल्लेहद-पट्टण वोल-गाद समस्त-नाड भव्य-जनङ्गलु आ-बुक्क-रायङ्गे भक्तरुमाडुव अन्यायङ्गलनू विन्नहं माडलागि कोविल्-तिरुमले-पे माल-कोविल्-तिरुनारायणपुरमुख्यवाद सकलाचार्य्यरू सकल-समयिगलू सकलमात्विकरू मोष्टिकरु तिरुपणि-तिरुविडितण्नीरवरु नाल्वत्तेन्टु-जनङ्गलु सावन्त-बोवक्कलु तिरिकुल जाम्बुवकुल वोलगाद हदिनेण्टु-नाड श्रीवैष्णवरकैय्यलु महारायनु वैष्णव दर्शनक्के-ऊ जैन-दर्शनक्के-ऊ भेदविल्लवेन्दु रायनु वैष्ण-वर कैय्यलु जैनर कै-विडिदु कोट्टु यी-जैन-दर्शनक्के पूर्व्वमरियादे

यलु पञ्चमहावाद्यङ्गलू कलशवु सलुवुदु जैनदर्शनक्कं भक्तर देसे यिन्द हानि-वृद्धियादरू वैष्णव-हानि-वृद्धियागि पालिसुवरु यी-मर्य्यादेयलु यल्ला-राज्य-दोलगुल्लन्तह बस्तिगलिगे श्री-वैष्णवरु शासनव नट्टु पालिसुवरु चन्द्रार्क्क-स्थायियागि वैष्णव-समयौ जैन-दर्शनव रक्षिसिकोण्डु बहेउ वैष्णवरू जैनरू वोन्दुभेदवागि काणलागदु श्री तिरुमलेय तात य्यङ्गलु समस्त-राज्यद भव्य-जनङ्गल अनुमतदिन्द वेलुगुलद तिर्त्थदल्लि वैष्णवं-अङ्गरक्षेगोसुक समस्त-राज्यदोलगुल्लन्तह जैनर वागिलुगट्टलेयागि मने-मनेगे वर्षक्के १ हण कोट्टु आ-ये-त्तिद होन्निङ्गे देवर अङ्ग-रक्षेगेयिप्पत्तालनूमन्तविट्टु मिक्क होन्निङ्गे जीर्न्न-जिनालयङ्गलिगे सोधेयनिक्कुदु यी-मरियादेयलु चन्द्रार्क्करुल्लन्नं तप्पलीयदे वर्ष-वर्षक्के कोट्ट कीर्त्तियनू पुण्य-वनू उपार्जिसिकोम्बुट्टु यी-माडिद कट्टलेयनु आवनोब्बनु मीरि-दवनु राज-द्रोहिसङ्घ-सम्दायक्केद्रोहि तपस्वियागलि ग्रामि-णियागलि यी-धर्म्मव केड् सिदरादडे गङ्गेय तडियल्लि कपि-लेयनू ब्राह्मणननू कोन्द पापदल्लि होहरु ॥

श्लोक ॥ स्वदत्तं परदत्तं वा यो हरेति वसुन्धरां ।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते क्रमि ॥२॥

(पीछे से जोड़ा हुआ)

कल्लेहद हव्विं-सेट्टिय सुपुत्र बुसुवि-सेट्टि बुक्क-रायरिगे बिन्नहंमाडि तिरुमलेय-तातय्यङ्गल बिजयं-गैसि तरन्दु जीर्ण्णोद्धार

व माडिसिदरु उभयसमयवू कूडि बुसुवि-सेट्टियरिगे सङ्घ-नायक पट्टव कट्टिदरु ॥

[वीर बुक्कराय के राज्य-काल में जैनियों और वैष्णवों मे झगड़ा हो गया। तब जैनियों मे से आनेयगोण्डि आदि नाडुओं ने बुक्कराय से प्रार्थना की। राजा ने जैनियों और वैष्णवों के हाथ से हाथ मिला दिये और कहा कि जैन और वैष्णव दर्शनो मे कोई भेद नहीं है। जैन दर्शन को पूर्ववत् ही पञ्च महा वाद्य और कलश का अधिकार है। यदि जैन दर्शन को हानि या वृद्धि हुई तो वैष्णवो को इसे अपनी ही हानि या वृद्धि समझना चाहिये। श्रीवैष्णवों को इस विषय के शासन समस्त राज्य की बस्तियों में लगा देना चाहिये। जैन और वैष्णव एक है, वे कभी दो न समझे जावें।

श्रवण बेलगोल में वैष्णव अङ्ग-रक्षकों की नियुक्ति के लिये राज्य भर में जैनियों से प्रत्येक घर के द्वार पीछे प्रतिवर्ष जो एक 'हण' लिया जाता है उसमे से तिरुमल के तातय्य, देव की रक्षा के लिये, बीस रक्षक नियुक्त करेंगे और शेष द्रव्य जैन मन्दिरों के जीर्णोद्धार व पुताई आदि में खर्च किया जायगा। यह नियम प्रति वर्ष जब तक सूर्य चन्द्र है तब तक रहेगा। जो कोई इसका उल्लंघन करे वह राज्य का, सघ का और समुदाय का द्रोही ठहरेगा। यदि कोई तपस्वी व ग्रामाधिकारी इस धर्म में प्रतिघात करेगा तो वह गगातट पर एक कपिल गौ और ब्राह्मण की हत्या का भागी होगा।

(पीछे से जोड़ा हुआ)

कल्लेह के हवि सेट्टि के पुत्र बुसुवि सेट्टि ने बुक्कराय को प्रार्थनापत्र देकर तिरुमले के तातय्य को बुलवाया और उक्त शासन का जीर्णोद्धार कराया। दोनों सङ्घों ने मिलकर बुसुवि सेट्टि को संघनायक का पद प्रदान किया।]

१३७ (३४५)

उसी स्थान में द्वितीय स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० १०८०)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

भद्रमस्तु जिन-शासनाय ॥

स्वस्ति-श्री-जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्व्वानलोद्दाम-तेजं
विस्तारान्तःकृतोर्व्वीतलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ।
वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्वावलम्वं गभीरं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगुं **होय्सलोर्व्वीश**-वंशं ॥ २ ॥

अदरोलु कौस्तुभदोन्दनर्घ्य-गुणमं देवेभदुद्दाम-प-
त्वदगुर्व्वं हिम-रश्मियुज्वल-कला-सम्पत्तियं पारिजा-
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं ताल्दि तानल्ते पु-
ट्टिदनुद्वेजित वीर-वैरि-**विनयादित्या**वनीपालकं ॥ ३ ॥

क ॥ विनय बुधरं रञ्जिसे
घन-तेजं वैरि-बलमनललिसे नेगल्दं ।
विनयादित्य-नृपालक-
ननुगत-नामार्त्थनमल-कीर्त्ति-समर्त्थं ॥ ४ ॥
आ-**विनयादित्य**न वधु
भावोद्भव-मन्त्र-देवता-सन्निभे स-

द्भाव-गुण-भवनमखिलक-
ला-विलसिते-केलयवरसियेम्बले पेसरि ॥ ५ ॥
आ-दम्पतिगं तनूभव-
नाटं शचिगं सुराधिपतिग मुन्नें-
न्तादं जयन्तनन्तं वि-
पाद-विदूरान्तरङ्ग नेरेयङ्ग-नृपं ॥ ६ ॥
आत चालुक्य-भूपालन वलदभुजादण्डमुद्दण्ड-भूप-
व्रात-प्रोत्तुङ्ग-भूभृद्-विदलन-कुलिशं वन्दि-सस्यौघ-मेघं ।
श्वेताम्भोजात-देव-द्विरदन-शरदभ्रेन्दु-कुन्दावदात-
ख्यात-प्रोच्चयशश्श्री-धवलित-भुवनं धीरनेकाङ्ग-वारं ॥ ७ ॥
एरेयनरसंगेनिसि नेगल्द-
र्द्द् रेयङ्ग-नृपालतिलकनङ्गनेचेल्वि-
ङ्ग रेवट्ट शील-गुणदि
नेरेदेचलदेवियन्तु नोन्तरुमोलर ॥ ८ ॥
एने नेगल्दवरिर्व्वर्गं
तनू-भवर्न्नेगल्दरल्ते बल्लालं वि-
ष्णु-नृपालकनुदयादि-
त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिल-वसुधा-तलदोल् ॥ ९ ॥
वृत्त ॥ अवरोल् मध्यमनागियुं भुवनदोल् पूर्व्वापराम्भोधियं-
ब्दुविनं कूडे निमिर्च्चुवोन्दु निज-बाहा-विक्रमक्रीडेयु-
द्भवदिन्दुत्तमनादनुत्तम-गुण-व्रातैक-धामं धरा-
धव-चूडामणि-यादवाब्ज-दिनपं श्री-विष्णु-भूपालकं ॥ १० ॥

कन्द ॥ एलेगेसेव कोयतूर्त्त-
त्तलवन-पुरमन्ते रायरायपुरंव-
ल्वल बलेद **विष्णु**तेजो-
ज्वलनदे बेन्दुवु बलिष्ठ-रिपु-दुर्गङ्गल् ॥ ११ ॥

वृत्त ॥ इनितं दुर्ग्गम-वैरि-दुर्ग्गचयमं कोण्ड निजाक्षेपदि-
न्दिनिवं भूपरनाजियोल्तविसिदं तन्नन्न-सङ्ख्यातदि-
न्दिनिवर्ग्गानतर्गित्तनुदय-पदमं कारुण्यदिन्देन्दु ता-
ननितं लेक्कदे पेल्वोडब्ज-भवनुं विभ्रान्तनप्पंबलं ॥ १२ ॥

कन्द ॥ **लक्ष्मी-देवि**-खगाधिप-
लक्ष्मङ्गे-सेदिर्द विष्णुगेन्तन्ते वलं
लक्ष्मा-देवि-लसन्मृग-
लक्ष्मानने विष्णुगग्र-सतियेने नेगल्दल् ॥ १३ ॥

अवर्ग्गे मनोजनन्ते सुदती-जन-चित्तमनीलकोलल्के सा-
ल्ववयव-शोभेयिन्दतनुवेम्बभिधानमनानदङ्गना-
निवहमनेच्चु मुय्वनणमानदे वीररनेच्चु युद्धदोल्
तविसुवोनादनात्म-भवनप्रतिमं **नरसिंह**-भूभुजं ॥ १४ ॥

पडे मातेंबन्दु कण्डङ्गमृत-जलधि तां गर्व्वदिं गण्ड-वातं
नुडिवातङ्गेन्ननेम्बै प्रलय-समय-दोल् मेरेयं मीरिवप्पा-
कडलन्नं कालनन्नं मुलिद-कुलिकनन्नं युगान्ताग्नियन्नं
सिडिलन्नं सिंहदन्नं पुर-हर-नुरिगण्णन्ननी नारसिंहं ॥ १५ ॥

रिपु-सर्प्पदर्प्प-दावानल-बहल-सिखा-जाल-कालाम्बुवाहं
- रिपु-भूपौघप्रदीप-प्रकर-पटुतर-स्फार-झञ्झा-समीरं ।

रिपु-नागानीक-तार्क्ष्यं रिपु-नृप-नलिनी-षण्ड-वेदण्डरूपं
रिपु-भूभृद-भूरि-वज्रं रिपु-नृप-मदमातङ्ग-सिंहं नृसिंहं ।१६।

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द महा-मण्डलेश्वर । द्वारवती-पुरवराधीश्वर । तुलुव-बल-जलधि-बडवानल । दायाद-दावानल । पाण्ड्य--कुल-कमल-वेदण्ड । गण्ड-भेरुण्ड । मण्डलिक-बेण्टेकार । चोल-कटक-सूरेकार । संग्राम-भीम । कलि-काल-काम । सकल-वन्दि-वृन्द-सन्तर्प्पण-समग्र-वितरण-विनोद । वासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद । यादव-कुलाम्बर-द्यु मणि । मण्डलिक-मकुट-चूडामणि-कदन-प्रचण्ड मलपरोल् गण्ड । नामादि प्रशस्ति-सहित श्रीमत्-त्रिभुवन-मल्ल तलकाडु कोङ्गु नङ्गलि नोलम्बवाडि वनवसे हानुङ्गल-गोण्ड भुज-बल वीरगङ्ग-प्रताप-होय्सल-नारसि ह-देवर् दक्षिण-मही-मण्डलम दुष्ट-निग्रह-शिष्टप्रतिपालन-पूर्व्वकं सुख-सङ्कथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिर तदीय-पितृ-विष्णु भूपाल-पाद-पद्मोपजीवि ॥

आनंगलद नारसि ह-ध-
रानाथङ्ग मर-पतिगे वाचस्पतिवोल्-
तानेसेदनुचित-कार्य्य-वि-
धान-धरं मान्य-मन्त्रि हुल्ल चमूपं ॥ १७ ॥

वृत ॥ अकलङ्कं पितृवाजि-वंश-तिलक श्रीयक्षराजं निजा-
म्बिके लोकाम्बिके लोक-वन्दिते सुशीलाचारं देवन्दिवी-
श-कदम्ब-स्तुत-पाद-पद्मनरुहं नाथं यदुक्षोणिपा-
लक-चूडामणि-नारसिंह नेनले पेम्पुल्लनो हुल्लपं ॥१८॥

धरेयं गल्दिद तिण्पुल्लननुदधियनेनेम्व गुणपुल्लनं म-
न्दरमं माक्कोल्व पेम्पुल्लननमर-महीजातमं मिक्क लोका-
न्तरमप्पाप्पुंल्लनंपुल्लननेसेव जिनेन्द्राङ्घ्रि-पङ्कज-पूजो-
त्करदोल् तल्पोय्दलम्पुल्लननुकरिसल् मर्त्यनार्वोसमर्थ ॥ १९
सुमनस्सन्तति-सेवितं गुरु-वचो-निर्दिष्ट-नीति-क्रमं
समदारातिवल-प्रभेदन-करं श्री-जैन-पूजा-समा-
ज-महोत्साह-परं पुरन्दरन पेम्पं तालिद भण्डारि-हू-
ल्लमदण्डाधिपनिर्द पं महियोल्लुद्वैभव-भ्राजित ॥ २० ॥
सततं प्राणि-वधं विनोदमनृतालापं वचः-प्रौढि स-
न्ततमन्यार्त्थमनील्दु कोल्वुदे वलं तेजं पर-स्त्रीयरोल् ।
रति-सौभाग्यमनून-काङ्क्षे मतियाय्तेल्लर्गमाप्पोंल्लप-
र्व्वतरन्न-प्रकरक्के-शील-भट-रोल्गाहुल्लनं हुल्लनं ॥ २१ ॥
स्थिर-जिन-शासनोद्धरणरादियोलारेनं राचमल्ल-भू-
वर-वर-मन्त्रि रायने वलिक्कं बुध-स्तुतनप्प विष्णु-भू-
वर-वर-मन्त्रिगङ्गणने मत्ते वलिक्कं नृसिंह-देव-भू-
वर-वर-मन्त्रि-हुल्लने पेरङ्गिनितुल्लडे पेल्लागदे ॥ २२ ॥
जिन-गदितागमार्त्थ-विदरस्त-समस्त-वहिर् प्रपञ्चर-
त्यनुपम-शुद्ध-भाव-निरतर्ग्गत-मोहरेनिप्प कुक्कुटा-
सन-मलधारि-देवरे जगद्गुरुगल् गुरुगल् निज-व्रत-
क्केनेगुण-गौरवक्के तोणेयारो चमूपति-हुल्ल-राजना ॥ २३
जिन-गेहोद्धरणङ्गलि जिन-महा-पूजा-समाजङ्गलि-
जिन-योगि-व्रज-दानदि जिन-पद-स्तोत्र-क्रिया-निष्ठेयि

जिन-सत्पुण्य-पुराण-सश्रवणदिं सन्तोषमं ताल्दि भ-
व्यनुतं निच्चलुमिन्ते पोल्तुगलेवं श्री हुल्ल-दण्डाधिपं ॥२४॥

कन्द ॥ निप्पटमे जीर्ण्णमादुद-
तुप्पट्टायतन महा-जिनेन्द्रालयमं ।
निप्पांसतु माडिद कर-
मेप्पिरं हुल्लं मनस्वि वङ्कापुरदोल् ॥ २५ ॥
मत्तमल्लियें ॥

वृत्त ॥ कलितनमुं विटत्वमुमनुल्लवनादियोलोर्व्वनुर्व्वियोल्
कलिविटनेम्बनातन जिनालयम नेरे जीर्ण्णमादुदं ।
कलि सलं दानदोल् परम-सौख्य-रमारतियोल् विटं विनि-
श्चलवे निसिद् हुल्लनदनेत्तिसिदं रजताद्रि-तुङ्गमं ॥ २६ ॥
प्रियदिन्दं हुल्ल-सेनापति कोपण-महा-तीर्थदोल् धात्रियुं वा-
र्द्धियुमुल्लन्नं चतुर्व्विंशति-जिन-मुनि-सङ्घक्के निश्चिन्तमाग-
च्चय-दानं सल्व पाङ्गिं वहु-कनक-मना-चेत्र-जग्गित्तु सद्वृ-
त्तियनिन्तीलोकमेल्लम्पोगलें विडिसिदं पुण्य-पुञ्जैकधामं ॥
॥ २७ ॥

आकेल्लङ्गेरेयादि-तीर्थमदुमुन्नं गङ्गरिं निर्म्मित
लोक-प्रस्तुतमाय्तु काल-वशदिं नामावशेषं वलि-
का-कल्प-स्थिरमागं माडिसिदनी-मास्वज्जिनागारम
श्री-कान्तं वलदिन्दमेय्दे कलसं श्री-हुल्ल-दण्डाधिपं ॥ २८ ॥

कन्द ॥ पञ्च-महा-वसतिगलं
पञ्च-सुकल्याण-वाञ्छेयिं हुल्ल-चमू-

पं चतुरं माडिसिदं
काञ्चन-नग-धैर्य्यनेसेव केल्लङ्गेरेयोल् ॥ २६ ॥

कन्द ॥ हुल्ल-चमूपन गुण-गण-
मुल्लनितुमनागे नेरेये पोगलल् नेरेवर्
वल्लदोलल्लेदुदधिय जल-
मुल्लनितुमनारो पत्रयिसल् नेरेवन्नर् ॥ ३० ॥

संश्रित-सद्गुणं सकल-भव्य-नुतं जिन-भासितार्त्थ-नि-
स्संशय बुद्धि-हुल्ल-पृतना-पति कैरव-कुन्द-हंस-शु-
भ्रांशु-यशं जगन्नुतदोलो-वर-बेल्गुल तीर्त्थदोल् चतु-
र्व्विंशति तीर्त्थकृन्निलयमं नेरे माडिसिदं दलिन्तिदं ॥ ३१ ॥

कन्द ॥ गोम्मटपुर-भूषणमिदु
गोम्मटमाय्तेने समस्त-परिकर-सहितं ।
सम्मददि हुल्ल-चमू-
पं माडिसिदं जिनोत्तमालयमनिदं ॥ ३२ ॥

वृत्त ॥ परिसूत्रं नृत्य-गेहं प्रविपुल-विलसत्पञ्च-देशस्थ-शैल-
स्थिर-जैनावास-युग्मं विविध-सुविध-पत्रोल्लसद्-भाव-रूपा-
स्कर-राजद्वार-हर्म्यं बेरसतुल-चतुर्व्विंश-तीर्त्थेशगेहं
परिपूर्ण्णं पुण्य-पुञ्ज-प्रतिममेसेदुदीयन्ददिं हुल्लनिन्दं ॥३३॥

स्वस्ति श्री-मूल-सङ्घद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद कोण्ड-कुन्दान्वय-भूषणरप्प श्री-गुणचन्द्रसिद्धान्त-देवर शिष्यरप्प श्री-नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवरेन्तप्परेन्दोडे ॥

वृत्त ॥ भय-मोह-द्वय-दूररं मदन-घोर-ध्वान्त-तीव्रांशुवं
नय-निक्षेप-युत-प्रमाण-परिनिर्णीतार्थ-सन्दोहनं ।
नयनानन्दन-शान्त-कान्त-तनुवं सिद्धान्त-चक्रेशनं
नयकीर्त्ति-व्रतिराजनं नेनेदोडं पापोत्करं पिङ्गुगुं ॥३४॥
कृत-दिग्जैत्रविधं वरुत्ते **नरसिंह**-क्षोणिप कण्डु स-
न्मतियिं **गोम्मट-पार्श्वनाथजिनरं** मत्तोंचतुर्व्विंशति-
प्रतिमागेहमनिन्त्तिवर्क्के विनतं प्रोत्साहदिं वित्रन-
प्रतिमल्लं **सवणेर**नूरनभय कल्पान्तरं सल्विनं ॥ ३५ ॥
अदर्क्के **नयकीर्त्ति**-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगलं महा-मण्डलाचार्य्य
रनाचार्य्यम्माडि ॥

वृत्त ॥ तवदीचित्पदे **नारसिंह**-नृपनि वा पेत्तुद सद्गुणा-
र्णववनी जैन-गृहक्कं माडिदनचण्डं **हुल्ल**-दण्डाधिपं ।
भुवन-प्रस्तुतनोप्युतिर्प्पे **सवणेर**ग्नूरनम्भोधियुं
रवियुं चन्द्रनुमुर्व्वरावलयमुं निल्वन्नेगं सल्विनं ॥ ३६ ॥

ग्राम-सीमेयन्तेन्दडे मूडण-देसेयाल् सवणेर-वेक्कनेडेय
सीमे करडियरं अछि तेङ्क हिरियोव्वेयिं पोगलु बिम्बि-सेट्टिय
केरेय कोडिय कोल्-वयलु अछि तेङ्क बरहाल-केरेयच्चुगट्टु मेरे-
यागि हिरियोव्वेय बसुरिय तेङ्कण केम्बरेय हुणिसे तेङ्कण देसे-
योलु बिलत्तिय सवणेर एडेय एरेय दिणेय हुणिसेय कोल-हिरि-
याल अल्लि हडुवल्लु हिरियोव्वेय सेल्ल-मोरडिय हडुवण बल्लेय
केरेय तेङ्कण-कोडिय बननरिय वन अल्लिन्दत्त तरिहडिय कल्लिय
मनकट्टद ताय्वल्ल जन्नवुरद हिरियकेरेय ताय्वल्ल सीमे ॥ हडुवण

देसेयोल् जन्नवुरक्कं सवणेरिङ्गं सागरसय्र्यादे जन्नवूर सवणेर केरेयेरिय नडुवण हिरिय हुणिसे सीमे बडगणदेसेयोल् ककिन कोट्टु अदर मूडण बीरजन केरे आ-करेयोलगे सवणेर बेडुगन हल्लिय नडुवे बसुरिय दोणे अल्लि मूडलालज्जन कुम्मरि अल्लि-मूड चिल्लदरं सीमे ॥

ई-स्थलदिन्दाद द्रव्यमनिल्लियाचार्य्यरी-स्थानद बसदिगल खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कं देवता-पूजेगं रङ्गभोगक्कं बसदिगे बेस केय्व प्रजेगं ऋषि-समुदायदाहार-दानक्कं सलिसुवुदु ॥

इदनावं निज-कालदोल् सु-विधियिं पालिप्प लोकोत्तमं
विदितं निर्म्मल-पुण्य-कीर्त्तियुगमं तां ताल्दुगुं मत्तमि-
न्तिदनावं किडिपोन्दु केट्ट-बगेयं तन्दातनाल्दुं गभीर
दुरन्तो .... ॥ ३७ ॥

[इस लेख में होयसल वंशी नारसिंह नरेश के मन्त्री हुल्लराज द्वारा गुणचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य नयकीर्ति सिद्धान्तदेव को सवणेरु ग्राम दान करने का उल्लेख है। प्रारम्भ में होयसल वंश का वही वर्णन है जो लेख न० १२४ मे पाया जाता है। हुल्ल वाजिवंशी यत्तराज और लोकाम्बिके के पुत्र थे। वे बड़े ही जिनभक्त थे। 'यदि पूछा जाय कि जैन धर्म के सच्चे पोषक कौन हुए तो इसका उत्तर यही है कि प्रारम्भ मे राचमल्ल नरेश के मन्त्री राय (चामुण्डराय) हुए, उनके पश्चात् विष्णु नरेश के मन्त्री गङ्गण (गङ्गराज) हुए और अब नरसिंहदेव के मन्त्री हुल्ल हैं।' हुल्ल मन्त्री के गुरु कुक्कुटासन मलधारिदेव थे। मन्त्री जी को जैनमन्दिरों का निर्माण व जीर्णोद्धार कराने, जैन पुराण सुनने तथा जैन साधुओं को आहारादि दान देने की बड़ी रुचि थी। उन्होंने बंकापुर के भारी और प्राचीन दो मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया,

कोपण में नित्यदान के लिये 'वृत्तियाँ' का प्रबन्ध किया, गङ्गनरेशों द्वारा स्थापित प्राचीन 'केल्लङ्गेरे' में एक विशाल जिन मन्दिर व अन्य पाँच जिन मन्दिर निर्माण कराये व बेल्गुल में परकोटा, रङ्गशाला व दो आश्रमों सहित चतुर्विंशति तीर्थंकर मन्दिर निर्माण कराया। सवणेरु ग्राम का दान नारसिंह देव के विजययात्रा से लौटने पर इस मन्दिर की रक्षा के हेतु दिया गया था।]

१३७ (३४६)

उसी पाषाण की दायीं बाजू पर

(लगभग शक सं० १०८७)

श्रीमत्सुपार्श्व देवं
भू—महित मन्त्रि-हुल्ल-राजङ्ग त-
द्भामिनि-पद्मावतिगं
चेमायुर्विभव-वृद्धियं माल्कभवं ॥ १ ॥

कमनीयानन-हेम-तामरसदिं नेत्रासिताम्भोजदि-
न्दमलाङ्ग-द्युति-कान्तियिं कुच-रथाङ्ग-द्वन्द्वदिं श्री-निवा-
समेनल्तु पद्मल-देवि राजिसुतमिर्प्पलु हुल्ल-राजान्तर-
ङ्ग-मरालं रमियिप्प पद्मिनियवोलु नित्यप्रसादास्पदं ॥ २ ॥

चल-भावं नयनक्के कार्श्यमुदरक्कत्यन्तरागं पदो-
त्थ-लसत्पाणि-तलक्के कर्कशते वक्षोजक्के कार्ष्ण्यं कच-
कलसक्कं गतिगल्लदिल्ल हृदयक्केन्दुं पद्मावती-
ललना-रत्नद रूप-शील-गुणमं पोल्वन्नरार्कान्तेयर् ॥ ३ ॥

उरगेन्द्र-चीर-नीराकर-रजत-गिरिश्री-सित-च्छत्र-गङ्गा-
हर-हासैरावतेभ-स्फटिक-वृषभ-शुभ्राभ्र-नीहार-हारा-
मर-राज-श्वेत-पङ्केरुह-हलधर-नाकूछव्रहंसेन्दु-कुन्दो-
त्कर-सच्चत्कीर्त्ति-कान्तं बुध-जन-विनुतं **भानुकीर्त्ति-**
व्रतीन्द्रं ॥ ४ ॥

श्री **नयकीर्त्ति**-मुनीश्वर-
सूनु श्री **भानुकीर्त्ति**-यति-पतिगित्तं ।
भूनुतनप्पा **हुल्लप**-
सेनापति धारेयेरेदु **सवणेरुरं** ॥ ५ ॥

[इस लेख में हुल्लराज मन्त्री की धर्मपत्नी पद्मावती (पद्मलदेवी) की प्रशंसा के पश्चात् उल्लेख है कि हुल्लराज ने नयकीर्त्ति मुनि के शिष्य (सूनु) भानुकीर्त्ति को धारापूर्वक सवणेरु ग्राम का दान दिया ।]

१३७ (३४७)

उसी पाषाण की बायीं बाजू पर

(शक सं० १२००)

स्वस्ति श्री-जयाभ्युदयश्च-शक-वरुषं १२०० नेय **बहु-
धान्य-संवत्सरद चैत्र-सु १ सु** भण्डारियय्यन बसदिय
श्री-**देवरवल्लभ**-देवरिगे नित्याभिषेकक्के अक्षय-भण्डारवागि
श्रीमतु महा-मण्डलाचारियरु **उदचन्द्र**-देवर शिष्यरु **मुनि-
चन्द्र**-देवरु ग२ प ५ क्कं हालु मान २ श्रीमतु **चन्द्रप्रभ**-देवर

शिष्यरु **पदुमणन्दि**-देवरु कोट्ट प ६ ह ¾ श्रीमन्महामण्ड-लाचारियरु **नेमिचन्द्र**-देवर तम्म **सातएणनवर** मग **पदु-मण्ननवरु** कोट्ट ग १ प २ **मुनिचन्द्र**-देवर अलिय **आदि-यण्न** ग १ प २½ **बम्मि** सेट्टियर तम्म **पारिस-देव** ग १ प २½ **जन्नवुरद** सेनवोव **माद्य्य** ग १ प २½ आतन तम्म **पारिस**-देवय्य **सिंगण्न** प ६¾ सेनवोव **पदुमणनन** मग **चिक्कणन** ग प १ **भारतिय**क्कन **नेम्म**वेयक्क प १ अगगप्पगे...-

श्रीमन्महा-मण्डलाचारियरुं राजगुरुगलुमप्प श्री-**मूल-सङ्घ**-द समुदायङ्गलु **दुर्म्मुखि-संवत्सरद** आषाढ़ सु ५ **आ** ॥ श्रीगोम्मट-देवर श्री-कमठ-पार्श्व-देवरु भण्डार्य्ययन वसदिय श्री**देवरवल्लभ**-देवरु मुख्यवाद वसदिगल देव-दानद गद्दे वेद्दलु सहित खाण अभ्यागति कटक-शेसे वसदि मनचवयिवु मुन्तागि येनुवनुं कोल्लिवेन्दु बिट्टु श्री-**बेलुगुल**-तीर्थद समस्त-माणिक्य-नगरङ्गलु **कव्वाहु**-नाथ-अरुवणद गौडु-प्रजेगलु मुन्तागि श्री**देवरवल्लभ**-देवर हाडुवरहल्लिगे **सम्भुदेव** अन्यायवागि मलत्रयवागि कोम्व गद्याण अय्दनु आ**देवरवल्लभ**-देवर रङ्ग भोगक्के सलुवुदु आहल्लिय अष्ट-भोग-तेज-माम्य किरुकुल येना दोडं आ**देवरवल्लभ**-देवर रङ्ग-भोगक्के सलु ॥

[उक्त तिथि को भण्डारियय्य बस्ती के देवर वल्लभदेव के नित्या-भिषेक के लिए उदयचन्द्रदेव के शिष्य मुनिचन्द्रदेव आदि ने उक्त चन्दे की रकम एकत्रित की ।]

---

१३८ (३४९)

भण्डारिबस्ति में पश्चिम की ओर

(शक सं० १०८१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थ-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभेद-घन-भानवे ॥ २ ॥
स्वस्तिहोय्सलवंशाय यदुमूलाय यद्भवः ।
चत्र-मौक्तिकसन्तानर् पृथ्वीनायक-मण्डनं ॥ ३ ॥
श्रीधर्म्माभ्युदयाब्जषण्डतरणिस्सम्यक्तचूड़ामणि-
र्व्वीतिश्रीसरणिर्प्रतापधरणिर्द्दीनार्त्थि-चिन्तामणिः ।
वंशे यादवनाम्नि मौक्तिक-मणिर्ज्जातो जगन्मण्डनः
क्षीराब्धाविव कौस्तुभोऽत्र **विनयादित्या**वनीपालकः ॥४॥

अपि च ॥ श्री-कान्ता-कमनीयकेलिकमलोल्लासात्सुनित्योदया-
द्दर्प्पान्ध-क्षितिपान्धकार-हरणाद् भूयर् प्रतापान्वयात् ।
दिक्चक्राक्रमणाद्विशत्कुवलय-प्रध्वंसनाद्भूतले
ख्यातोऽन्वर्थनिजाख्ययैव **विनयादित्या**वनीपालकः ॥५॥
धात्रा त्रिलोकोदर-सारभूतैरंशैर्म्मुदा स्वस्य विनिर्म्मितेव ।
तस्य प्रिया **केलिय**नामदेवी मनोज-राज्य-प्रकृतिर्ब्बभूव ॥६॥
तयोरभूद्भूनुतभूरिकीर्त्तिर्पराक्रमाक्रान्तदिगन्तभूमिः ।
तनूभवः क्षत्रकुलप्रदीपः प्रतापतुङ्गोन्वेरेयङ्गभूपः ॥ ७ ॥

वितरण-लता-वसन्तप्रेमदारतिवार्द्धि-तारकाकान्तः ।
साक्षात्ममरकृतान्तो जयति चिरं भूप-मकुट-मणिररेयङ्गः ॥
॥ ८ ॥

अपि च ॥ शरदमृत-द्यु ति-कीर्त्तिर्म्मनसिजमूर्त्ति-
र्व्विरोधिकुरुकपिकेतुः ।
कलि-काल-जलधि-सेतु-
र्ज्जयति चिर चत्र-मौलि-मणिररेयङ्गः ॥ ९ ॥

अपि च ॥ जयलक्ष्मीकृतसङ्गः कृत-रिपु-भङ्गः प्रणूत-गुण-तुङ्गः ।
भूरि-प्रताप-रङ्गो जयति चिर नृप-किरीट-मणिररेयङ्गः ॥१०॥

अपि च ॥ लक्ष्मीप्रेमनिधिर्व्विदग्ध-जनता-चातुर्य्यचर्चा-विधि-
र्व्वीरश्री-नलिनी-विकास-मिहिरो गाम्भीर्य्य-रत्नाकरः ।
कीर्त्ति-श्री-लतिका-वसन्त-समयस्सौन्दर्य्यलक्ष्मीमय-
स्सश्रीमानेरेयङ्ग-तुङ्गनृपतिः कै. कैर्न्न संवर्ण्यते ॥ ११ ॥

अपि च ॥ कश्शक्तोत्यरेयङ्गमण्डलपतेर्दोर्व्विक्रमक्रोडनं
स्तोतुं मालव-मण्डलेश्वरपुरीं धारामधाक्षीत् क्षणात् ।
दोःकण्डूल-कराल-चोलकटकं द्राक् कान्दिशीकं व्यधान्
निर्द्धामाकृतचक्रगोट्टमकरोद् भङ्गं कलिङ्गस्य च ॥ १२ ॥

कान्ता तस्य लतान्तवाणललना लावण्यपुण्योदयैः
सौभाग्यस्य च विश्वविस्मयकृतपात्रीधरित्री-भृतः ।
पुत्रीवद्विलसत्कलासु सकलाखम्भोजयोनेर्व्वधू-
रासीदेचल-नामपुण्यवनिता राज्ञी यशश्श्रीसखी ॥ १३ ॥

अपि च ॥ कुन्तल-कदली-कान्ता पृथु-कुच-कुम्भा मदालसा भाति
सदा ।
स्मर-समरसज्जविजयमतङ्गोद्भवचारु-मूर्त्तिरेचलदेवी ॥
॥ १४ ॥

अपि च ॥ शचीव शक्रं जनकात्मजेव रामं गिरीन्द्रस्य सुतेव शम्भुं ।
पद्मेव विष्णुं मदयत्यजस्त्रं सानङ्गलक्ष्मीरेरेयङ्ग भूपं ॥१५॥

कौसल्यया दशरथो भुवि रामचन्द्रं
श्रीदेवकीवनितया वसुदेवभूपः ।
कृष्णं शचीप्रमदयेव जयन्तमिन्द्रो
विष्णुं तया स नृपतिर्ज्जनयांबभूव ॥१६॥

उदयति विष्णौ तस्मिन्ननेशदरिचक्र-कुलमिलाधिपचन्द्रे ।
अधिकतर-श्रियमभजत्कुवलय - कुलमश्वदमलधर्म्माम्भोधिः॥
॥ १७ ॥

अपि च ॥ निर्द्दलितकोयतूरो भस्मीकृतकोङ्ग-रायरायपुरः ।
घट्टित-घट्ट-कवाटः कम्पितकाञ्चीपुरस्सविष्णुनृपालः॥१८॥

अपि च ॥ अतुल-निज-बल-पदाहति-धूलीकृततद्विराटनरपतिदुर्गः ।
वनवासितवनवासो विष्णुनृपस्सरलितोरु-वल्लूरः ॥१९॥

अपि च ॥ निज-सेना-पद-धूलीकर्द्दमित-मलप्रहारिणीवारिः ।
कलपाल-शोणिताम्बु-निशातीकृत-निजकरासिरवनिप-
विष्णुः॥२०॥

अपि च ॥ नरसिंह-वर्म्म-भूभुज-सहस्रभुज-भूजपरशुरामोऽपि ।
चित्रं विष्णुनृपालश्शतकृत्वोऽप्याजिनिहित-शत्रु-क्षत्रः॥२१॥

अदियम-पृथुशौर्य्यांर्य्यमराहुश्चेङ्गिरि-गिरीन्द्र-हति-पवि-
दण्डः
तलवनपुरलक्ष्मीं पुनरहरज्जयमित्र रिपोस्स विष्णु-नृपः
॥२२॥

अपि च ॥ चक्रिप्रेषित-मालवेश्वरजगद्देवादिसैन्यार्णवं
घूर्णन्तं सहसापिवत्करतलेनाहत्य मृत्यु-प्रभुः ।
प्राक् पश्चादसिनाग्रहीदिह महीं तत्कृष्णवेण्यावधि-
श्रीविष्णुर्भुजदण्डचुर्ण्डितनितान्वोतुङ्गतुङ्गाचल. ॥ २३ ॥

अपि च ॥ इरुङ्गोल-चोणी-पति-मृगमृगारातिरतुलः
कदम्ब-चोणीश-चितिरुह-कुलच्छेद-परशुः ।
निज-व्यापारैक-प्रकटितलसच्छौर्य्यमहिमा
स विष्णुः पृथ्वीशो न भवति वचोगोचरगुणः ॥२४॥
साचाल्लक्ष्मी-र्व्विपदपगमे विश्वलोकस्य नाम्ना
लक्ष्मीदेवी विशदयशसा दिग्धदिक्चक्रभित्तिः ।
दृप्यद्वैरि-चितिप-दितिजव्रात-विध्वंस-विष्णोः
विष्णोस्तस्य प्रणय-वसुधासीत्सुधानिर्म्मिताङ्गी ॥ २५ ॥
ब्रह्माण्ड-भाण्ड-भरितामलकीर्त्ति-लक्ष्मी-
कान्तस्तयोरजनि सूनुरजातशत्रुः ।
पृथ्वीश-पाण्डु-पृथयोरिव पुष्पचापो
दैत्य-द्विषत् कमलयोरिवनारसिंहः ॥ २६ ॥

अपि च ॥ गर्व्वं बर्व्वर मुञ्च काञ्चन-चय चोलाशु राशीकुरु
चर्मं भिक्षय चेर चीवरमुखो दूरेण विज्ञापय ।

स्व **गौडेति नृसिंह**-भूरि-नृपतेर्म्मध्ये सदस्सर्व्वदा
दुर्व्वारस्सरति ध्वनिः परिजनानिर्ग्घात-निर्ग्घोष-जित् ॥२७॥

अपि च ॥ शौर्यं नैष हरेः परत्र तरणेरन्यत्र तेजस्विता
दानित्वं करिणः परत्र रथिनामन्यत्र कीर्तिं रदात् ।
राज्यं चन्द्रमसःपरत्र विषमाक्षत्वं च पुष्पायुधा—
दन्यत्रान्य-जने मनाक् च सहते **श्रीनारसिंहो** नृपः ॥२८॥

अपि च ॥ स भुज-बल-वीर-गङ्ग-प्रताप-**हो**य्सलापर-नामा ।
पालयति चतुस्समयं मर्य्यादामम्बुनिधिरिवाति प्रीत्या
॥२९॥

चागल-देवी-रमणो यादव-कुल-कमल-विमल-मार्त्तण्ड-श्रीः॥
छित्वा दृप्त-विरोधि-वंश-गहनं दिग्जैत्र-यात्रा-विधा-
वारुह्योदय-भूधरं रविरिवाद्रि दीप-वर्त्ति-श्रिया ।
नत्वा दक्षिण-कुक्कुटेश्वर-जिन-श्री-पाद-युग्मं निधि
राज्यस्याभ्युदयाय कल्पितमिदं स्वम्यात्मभण्डारिणा ॥ ३० ।
सर्व्वाधिकारिणा कार्य्य-विधौ योगन्धरायणा-
दपि दक्षेण नीतिज्ञगुरुणा च गुरोरपि ॥ ३१ ॥
लोकाम्बिकातनूजेन जकि-राजस्य सूनुना ।
व्याथसा लोक-रक्षैक-लक्ष्मणामरयोरपि ॥ ३२ ॥
मलधारि-स्वामि-पद-प्रथित-मुदा **वा**जि-वंश-गगनांशुमता ।
हिम-रुचिना गङ्ग-मही-निखिल-जिनागार-दान-तोयधि-विभवै
॥ ३३ ॥

दूरी-कृत-कलि-स्थूल-नृ-कलङ्केन भूयसा ।
चरित्र-पयसा कीर्त्ति-धवलीकृत-दिशालिना ॥ ३४ ॥

त्रिशक्ति-शक्ति-निर्भिन्न-मदवद्वैरि-वैरिणा ।
हुल्लपेन जगन्नूत-मन्त्रि-माणिक्य-मौलिना ॥ ३५ ॥

चतुर्व्विंशति-जिनेन्द्र-श्री-निलयं मलयाचलं ।
सद्धर्म्म-चन्दनाद्भूतौ दृष्ट्वा निर्म्मापितं ततः ॥ ३६ ॥

द्वितीयं यस्य सम्यक्त्व-चूडामणि-गुणाख्यया ।
भव्य-चूडामणिन्नाम तस्मै प्रीत्या ददात्ततः ॥ ३७ ॥

दानार्थं भव्य-चूडामणि-जिन-वसतौ वासिनां सन्मुनीनां
भोगार्थं चानुजीर्ण्णोद्धरणमिह जिनेन्द्राष्टविध्यर्च्चनार्थं ।
श्री-पार्श्व-स्वामिना च त्रिजगदधिपते. कुक्कुटेशस्य पत्युः
पुण्यश्री-कन्यकाया बिदहुन-विषयं मुद्रिकामर्प्पयन्वा ॥३८॥

एकाशीत्युत्तर-सहस्र-शक-वर्षेषु गतेषु प्रमादि-संवत्सरस्य पुष्य-मास शुद्ध शुक्रवारचतुर्द्दश्यामुत्तरायणसंक्रान्तौ श्री-मूल-सघदेशियगण पुस्तकगच्छसस्वन्धिनं विधाय ॥

नरसिंह-हिमाद्रितदुभित-कलश-हृद-क-हुल्ल-कर-जिह्विकेया
नत-धारा गङ्गाम्बुनि सचतुर्व्विंशतिजिनेश-पादसरसीमध्ये।
नवगोकमदाद्भूपतिरगणित-बलि-कर्ण्ण-नृपति-शिवि-खचर-
पतिः
प्रगुणित-कुबेरविभवस्त्रिगुणीकृत-सिंहविक्रमो नरसिंहः ।३९।

अतःपरं ग्राम-सीमाभिधास्यते ।। तत्र पूर्व्वस्यां दिशि सवणेर-बेक्कन यडेय सीमे करडियरे अल्लि तेङ्क हिरियोव्वेयि पोगलु बिम्बिसेट्टियकेरेय कोडिय किव्वयलु ।। अल्लि तेङ्क बरहालकेरेय अच्चुगट्टु मेरेयागि हिरियोव्वेय बसुरिय तेङ्कण कोम्बरेय हुणिसे ।। दक्षिणस्यां दिशि बिलच्चिय सवणेर यडेय एरेय दिणेय हुणिसेय कोल हिरियाल । अल्लि हडुवलु हिरियोव्वेय सेल्ल मोगडिय हडुवण बल्लेयकेरेय तेङ्कणकोडिय बलरिय बन ।। अल्लिन्दत्त तरिहलिय कलियमनकट्टद ताय्वल्ल जन्नवुरद हिरिय केरेय ताय्वल्ल सीमे ।। पश्चिमायां दिशि जन्नवुरक्कं सवणेरिङ्ग सागरमरियादे जन्नवूर सवणेर केरेयरिय नडुवण हिरियहुणिसे सीमे ।। उत्तरस्यां दिशि कक्किन कोडु अदर मूडण बीरव्वन केरेयाकेरेयोलगे सवणेर बेडुगनहल्लिय नडुवे बसुरिय दोणे । अल्लि मूडलालव्वन कुम्मरि अल्लि मूड चिल्लदरे सीमे ।।

सामान्योऽयं धर्म्म-सेतुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः
सर्व्वानेतान् भाविनपार्त्थिवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते
रामचन्द्रः ।। ४० ।।

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टि वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते क्रमिः ।। ४१ ।।
न विषं विषमित्याहुर्द्देवस्वं विषमुच्यते ।
विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्र-पौत्रकं ।। ४२ ।।
शरज्ज्योत्स्ना-लक्ष्मी-वपुषि बहलश्चन्दनरसो
दिशाधीशस्त्रीणां स्फुरदुरुदुकूलैकवसनं ।

त्रिलोकप्रासाद-प्रकटित-सुधा-धाम-विशदं
यशो यस्य श्रीमान् स जयति चिरं हुल्लप-विभुः॥ ४३ ॥
अस्तु स्वस्ति चिराय हुल्ल भवतं श्रीजैन-चूडामणे
भव्य-व्यूह-सरोज-षण्ड-तरणे गाम्भीर्य्य-वाराम्निधे ।
भास्वद्विश्व-कलानिधे जिन-नुत-नीराब्धि-वृद्धीन्दवे
स्वोद्यत्कीर्त्ति-सिताम्बुजोदरलसद्वारासि-वार्द्धीन्दवे ॥४४॥

श्री गोम्मट-पुरद तिप्पेसुङ्कदल्लि अडकेय हेरिङ्गे २०० हसुम्बेगे अरवत्तु नप्पु द्दे ......गे विसिगं १ हसुम्बे गोफल ५ मेलसु हेरिङ्गेवल्ल १ हसुम्बेगं मान १ मरिपन्नायदल्लि एलेय...... ......रेग हाग १ मेलेलें २०० गाणदेरे इनितुमं तम्म सुङ्कदधिकारदन्दु चतुर्व्विंशति-तीर्त्थंकरपू .. . .प्रधान सर्व्वाधिकारि हिरिय-भण्डारि हुल्लय्यङ्गलु ठेगडे लक्कय्यङ्गलुं हेग्गडे-अ...............होयसल नारसिंह-देवनकय्य वेडिकोण्डु बिट्टरु ॥ इप्पत्त-नाल्वर मनंदेरं प .. .. तां नुडिदुदे सद्वाणि तन्न पेल्दन्ददोलार्ण्णडदोडदे मार्ग्गमेन्दन्ने नडेदु... ... ...

शशियिन्दम्बरमब्जदिं तिलि-गोलं नेत्रङ्गलिन्दाननं
पामसार्वि वनमिन्द्रनि त्रिदिवमासे... ... ...
... ...कीर्त्ति-देव-मुनियिं सिद्धान्त-चक्रेश-नि-
न्देसेगु श्रीजिन-धर्म्ममेन्दडे वलिक्कंवण्णिपं वण्णिपं ॥४५॥

...................तौ लब्ध्वा चमू-नायकः ॥ श्री हुल्ल स्सवर्णोरुमेवमददादाच...............त श्रीनय.........

......क्त्या मुदा धारापूर्व्वकमुर्व्वरा-स्तुति-भृ............म्म

............श्री श्री

भव्याम्भोरुह-भास्करस्सुरसरिन्नीहारवु ....

......कृ...... .....निः पुरात्थ्य-रत्नाकरः।

सिद्धान्ताम्बुधि-वर्द्धनामृतकरः कन्दर्प्पशैलाशनि-

स्सोऽयं विश्रुत-**भानुकीर्त्ति**-मुनि.........त भूतले ॥४६॥

[इस लेख मे भी होय्सलवंशी नारसिंह देव के वंश-परिचय के पश्चात् उनका चतुर्विंशति मन्दिर की वन्दना करने तथा हुल्ल द्वारा सवणेरु ग्राम का दान करने का उल्लेख है। इस लेख में हुल्ल के लघु भ्राता लक्ष्मण का व अमर का भी नाम आया है। नारसिंह देव ने उक्त वस्ती का नाम भव्यचूड़ामणि रक्खा। हुल्लराज की उपाधि सम्यक्त्व चूड़ामणि थी। लेख का अन्तिम भाग बहुत घिस गया है। इसमें हुल्लय्य हेग्गडे, लोकय्य आदि द्वारा नारसिंह देव को प्रार्थनापत्र देकर गोम्मटपुर के कुछ टेक्सों का दान चतुर्विंशति तीर्थंकर बस्ति के लिये कराने का उल्लेख है। अन्त मे भानुकीर्त्ति मुनि का भी उल्लेख है।]

१३८ (३५१)

मठ के उत्तर की गोशाला में

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति श्री-वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने।

श्री-**कोण्डकुन्दनामाभूच्चतुरङ्गुलचारणः** ॥ २ ॥

तस्यान्वयेऽजनि ख्याते विख्याते देशिके गणे ।
गुणी देवेन्द्र-सिद्धान्त-देवो देवेन्द्र-वन्दितः ॥ ३ ॥

अवर सन्तानदोल् ॥

वृत्त ॥ पर-वादि-क्षितिभृन्निशात-कुलिशं श्री-मूल-सङ्घाब्जषट्—
चरणं पुस्तक-गच्छ देशिग-गण प्रख्यात-योगीश्वरा—
भरणं मन्मथ-भञ्जनं जगदोलादं ख्यातनादं दिवा-
करणन्दि-व्रतिपं जिनागम-सुधाम्भोराशि-ताराधिपं ॥ ४ ॥

अन्तेनलिन्तेनल्करियेनेब्दे जगत्त्रय-वन्द्यरप्पपे-
म्पं तनेदिर्देरम्बुदने बल्लेनदल्लदे संयमं चरि-
त्रं तपमेम्बिवत्तलगमिन्तु दिवाकरनन्दि-देव-सि-
द्धान्तिगरोन्दडोन्दु रसनाकियालानदनेन्तु वण्णिपें ॥ ५ ॥

तच्छिष्यरप्प ॥

नेरेये तनुत्रमिल्लिदवोलिर्द मलन्तिने मेय्यनोर्म्मेयुं
तुरिसुवुदिल्ल निद्दे वरे मग्गुलनिक्कुवुदिल्ल वागिलं ।
किरु तेरेयम्बुदिल्लुगुल्वुदिल्ल मलङ्बुदिल्लहीन्द्रनुं
नेरेयने वण्णिसल्गुण-गणावलियं मलधारि देवरं ॥ ६ ॥

अवरशिष्यर् ॥

वृत्त ॥ कन्तुमदापहर्स्सकल-जीव-दयापर-जैन-मार्ग्ग-रा-
द्धान्त-पयोधिगलु विषय वैरिगलुद्धत-कर्म्म-भञ्जन-
स्सन्तत भव्य-पद्म-दिनकृत्प्रभरं शुभचन्द्र देव-सि-
द्धान्त-मुनीन्द्ररं पोगल्वुदम्बुधि-वेष्टित-भूरि-भूतलं ॥ ७ ॥

इन्तिवर गुरुगलप्प श्रीमद्दिवाकरणन्दि-सिद्धान्त-देवरु ॥

वृत ॥ आ-मुनि-दीक्षेय कुडे समग्र-तपो-निधियागि दान-चि-
न्तामणियागि सद्गुण-गणाग्रणियागि दया-दम-क्षमा—
श्री-मुख-लक्ष्मियागि विनयार्णव-चन्द्रिकेयागि सन्तवं
श्रीमति गन्तियर्न्नेगलदरुर्व्वियोलुर्व्वरे कूर्त्तु कीर्त्तिसलु ॥ ८ ॥

श्रीमति गन्तियर्ज्जित-कषायिगलुग्रतपङ्गलिन्दमि-
न्तीमहियोल् पोगर्त्तेगे नेगर्त्तेगे नोन्तु समाधियि जगत-
स्वामियनिप्प पेम्पिन जिनेन्द्रन पाद-पयोज-युग्ममं-
प्रेमदे चित्तदोल् निलिसि देवनिवास-विभूतिगेय्दिदलु ॥९॥

सक-वर्ष १०४१ नेय विलम्बि-सम्वत्सरद फाल्गुण-
शुद्ध-पञ्चमी-बुधवार-दन्दु सन्न्यसन-विधियिं श्रीमति
गन्तियर्म्मुडिपि देवलोकक्के सन्दर् ॥

अगणितमेने चारु-तपं
प्रगुणिते गुण-गण-विभूषणालङ्कृतेयि-
न्तगणित-निजगुरुगे-निसि-
धिगेयं माड्कवे गन्तियर्म्माडिसिदर् ॥ १० ॥

करुणं प्राणि-गणङ्गलोल् चतुरतासम्पत्ति सिद्धान्तदोल्
परितोषं गुण-सेव्य-भव्य-जनदोल् निर्म्मत्सरत्वं मुनी-
श्वररोल् धीरते घोर-वीर-तपदोल् कय्गण्मि पेण्मल् दिवा-
करणन्दि-व्रति पेर्प्पने तलेदनो योगीन्द्र-वृन्दङ्गलोल् ॥११॥

[यह लेख देशिय गण कुन्दकुन्दान्वय के दिवाकर नन्दि और उनकी शिष्या श्रीमती गन्ती का स्मारक है। दिवाकर नन्दि बड़े भारी योगी थे।

ये देवेन्द्र सिद्धान्त देव की शाखा में हुए थे। इनके दो शिष्य मलधारि देव और शुभचन्द्र देव सिद्धान्त मुनीन्द्र थे। श्रीमती गन्ती ने इनसे दीक्षा लेकर उक्त तिथि को समाधिमरण किया। यह स्मारक मांकब्बे गन्ती ने स्थापित कराया।

१४० (३५२)

मठ के अधिकार में एक ताम्र-पत्र पर का लेख

(शक सं० १५५६)

श्री स्वस्ति श्री-शालिवाहन-शक-वरुष १५५६ नेय भाव-संवत्सरद आषाढ़-शुद्ध १३ स्थिरवार ब्रह्मयोगदल्लु श्रीमन्महाराजाधिराजराजपरमेश्वर अरि-राय-मस्तक-शूल शरणागतवज्रपञ्जर पर-नारी-सहोदर सत्य-त्याग-पराक्रम-मुद्रा-मुद्रित भुवन-वल्लभ सुवर्ण-कलस-स्थापनाचार्य्य-षड्धर्म-चक्र-श्वरराद मैयिसूर-पट्टण-पुरवराधीश्वरराद चामराजु वोडेय्यनवरु देवर बेलुगुलद गुम्मट-नाथ-स्वामियवर अर्चन-वृत्तिय स्थालि-गलु लानदवरु तम्म तम्म अनुपत्यदिन्दावर्त्तक-गुरुगलिगे अडहुवोग्यवियागि कोट्टु अडहुगारहु बाहुकाला अनुभविसि बरुत्ता यिरलागि चामराजवोडेयरय्यनवरु विचारिसि अडहु वोग्याविय अनुभविसि बरुत्ता यिद्दन्त वर्त्तकगुरुगलनु करे यिसि। स्तानदवरिगे नीवु कोटन्थ साल्लवनु तीरिसि कोडिसिवु येन्दु हेल्ललागि वर्त्तक-गुरुगलु आहिद मातु नावु स्तानदवरिगे कोटन्थ सालवु नम्म तन्देतायिगलिगे पुण्यवागलियेन्दु धारदत्त-

वागि धारेयनु येरदु कोट्टेवु येन्दुसमस्तरु श्राडलागि। स्तानदवरिगे वर्त्तक-गुरुस्तर कैयल्लु । गुम्मट-नाथ-स्वामिय सन्निधियल्लि देवरु-गुरु-साच्चियागि धारेयनु यरिसि। श्राचन्द्रार्क-स्ताय-वागि देवतासेवेयनु माडिकोण्डु सुकदल्लि यीहरु एन्दु बिडिसि कोट्ट धर्म्म-शासन ॥ मुन्दे बेलुगुलद स्तानदवरु स्वास्तियनु श्रवानानोब्बनु श्रडहु-हिडिदन्तवरु श्रडव कोटन्तवरु धरुशन धर्मक्के द्रोरगु स्थान-मान्यके कारणविल्ल। यिष्टक्कु मीरि श्रडव-कोटन्तवरु श्रडव हिडिदन्तवरनु ई-राज्यक्के श्रधिपतियागिद्दन्थ धोरेगलु ई-देवर धर्मवनु पूर्व मंरेगे नडसलुल्लवरु ॥ ई-मेरेगे नडसलरियदे उपेत्तेय दोरेगलिगे वारणासियल्लि सहस्र कपि-लेयनु ब्राह्मणनु कोन्द पापक्के द्दोहरु येन्दु बरेसि कोट्ट धर्म्म शासन मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[कुछ विपत्ति के कारण देवर वेल्गुल के स्थानकों ने गुम्मटनाथ स्वामी की दान-सम्पत्ति महाजनों को रहन कर दी थी। महाजनों ने बहुत समय तक वह सम्पत्ति अपने कब्जे में रखकर उसका उपभोग किया। मैसूर के धर्मिष्ठ नरेश चामराज वोडेरय्य ने इसकी जाँच-पड़ताल कर रहनदारों को बुलाया और उनसे कहा कि हम तुम्हारा कर्ज़ अदा करेंगे, तुम मन्दिर की सम्पत्ति को मुक्त कर दो। इस पर रहनदारों ने कहा कि अपने पितरों के कल्याण के हेतु हम स्वयं इस सम्पत्ति का दान करते है। तब नरेश ने वह दान करा दिया और आगे के लिये यह शासन निकाल दिया कि जो कोई स्थानक दानसम्पत्ति को रहन करेगा व जो महाजन ऐसी सम्पत्ति पर कर्ज़ देगा वे दोनों समाज से बहिष्कृत समझे जावेंगे। जिस राजा के समय में ऐसा कार्य हो उसे उसका न्याय करना चाहिये। जो कोई इस शासन का उल्लंघन करेगा

यह बनारस में एक सहस्र कपिल गौओं और ब्राह्मणों की हत्या का भागी होगा।]

१४१

मठ में

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥१॥
नाना-देश-नृपाल-मौलि-विलसन्माणिक्य-रत्नप्रभा-
भास्वत्पद्म-सरोज युग्म-रुचिरः श्रीकृष्णराज-प्रभुः ।
श्रीकर्णाटक-देश-भासुरमहीशूरस्थसिंहासनः
श्रीचाम-क्षितिपाल-सूनुरवनौ जीयात्सहस्र समाः ॥२॥
स्वस्ति श्री-वर्द्धमानाख्ये जिने मुक्ति गते सति ।
वह्नि-रन्ध्राब्धिनेत्रैश्च वत्सरेषु मितेषु वै ॥३॥
विक्रमाङ्क-समास्विन्दु-गज-सामज-हस्तिभिः ।
सतीषु गणनीयासु गणितज्ञैर्बुधैस्तदा ॥४॥
शालिवाहन-वर्षेषु नेत्र-बाण-नगेन्दुभिः ।
प्रमितेषु विकृत्यब्दे श्रावणे मासि मङ्गले ॥ ५ ॥
कृष्णपक्षे च पञ्चम्यां तिथौ चन्द्रस्य वासरे ।
दोर्द्दण्ड-खण्डितारातिः स्व-कीर्ति-व्याप्त-दिक्तटः ॥ ६ ॥
सश्रीमान् कृष्ण राजेन्द्रस्यायुःश्री-सुख-लब्धये ।
एतस्मिन्दक्षिणकाशौ नगरे बेल्गुलाह्वये ॥ ७ ॥
विन्ध्याद्रौ भासमानस्य श्रीमतो गोम्मटेशिनः ।
श्रीपाद-पद्म-पूजार्थै शोपाणा जिन-वेश्मनां ॥ ८ ॥

साधं हेमाद्रि-पार्श्वंश-चारु-श्री-चैत्य-वेश्मना ।
द्वात्रिंशत्प्रमितानां श्री-सपर्य्योत्सव-हेतवे ॥ ९ ॥
जिनेन्द्रपञ्चकल्याण-श्री-रथोत्सव-सम्पदे ।
श्रीचारुकीर्त्ति-योगीन्द्र-मठ-रचण-कारणात् ॥१० ॥
आहाराभय-भैषज्यशास्त्र दानादि-सम्पदे ।
बेल्गुलाख्यमहाग्राम विन्ध्य-चन्द्राद्रिभासुरं ॥ ११ ॥
भूदेवी-मङ्गलादर्श कल्याण्याख्य-सरोऽन्वितं ।
जिनालयैस्तु ललितैर्म्मण्डितं गोपुरान्वितैः ॥ १२ ॥
स-तटाकं स-चाम्पेयं होस-हल्लिसमाह्वयं ।
ईशानदिक्स्थितं ग्रामं शाल्याद्युत्पत्तिभासुरं ॥ १३ ॥
उत्तनहल्लीति विख्यातं प्रतीच्यां ककुभि स्थितं ।
ग्रामं कब्बालुनामानं ग्रामं-गोपाल-संकुलं ॥ १४ ॥
पूर्व्वं पूणर्य्य-सन्दत्तं कुमारे नृपतौ सति ।
इति ग्रामान् चतुस्संख्यान् ददौ भक्त्या स्वयं मुदा ॥१५ ॥
स्वस्ति श्री-दिल्लि-हेमाद्रि-सुधा-संगीत-नामसु ।
तथा श्वेतपुरक्षेमवेणु बेल्गुल रूढिषु ॥ १६ ॥
संस्थानेषु लसत्सिद्ध-सिंह-पीठ-विभासिनां ।
श्रीमतां चारुकीर्तीनां पण्डितानां सतां वशे ॥ १७ ॥
शासनीकृत्य तान् ग्रामानर्पयामास सादरं ।
एषः श्रीकृष्ण-भूपालः पालिताखिल-मण्डलः ॥ १८ ॥

[यह मूल सनद का मठ के गुरु-द्वारा किया हुआ केवल संस्कृत भावानुवाद है । मूल शासन आगे नं० (३५४) के लेख में दिया जाता है ।]

१४२ (३६२)

तावरेकेरे के उत्तर की ओर चट्टान पर

श्रीशकवरुष १५६५ नेय
श्रीमच्चारुसुकीर्त्ति-पण्डित-यति सोभानुसंवत्सरे
मासे पुष्यचतुर्द्दशी-तिथिवरे कृष्णे सुपक्षे महान् ।
मध्याह्ने वर मूलभे च करणे भार्गव्यवारे धृवे
योगे स्वर्ग्ग-पुरं जगाम मतिमान् त्रैविद्य-चक्रेश्वर. ॥ श्रीः ॥

१४३ (३७७)

नगर से पूर्व्व की ओर बाणावर बसवय्य के खेत में एक शिला पर

(लगभग शक सं १०४२)

स्वस्ति श्रीमत्तलकाडु-गोण्ड-भुज-बल-वीरगङ्ग - पोय्सल-देवरुं हिरिय-दण्डनायकरुं राज्ये उत्तरोत्तरवागे श्री-गोम्मटेश्वर-देवरबलद-दसेय हल्लव कण्डु चल्लदि चलदङ्क-राव हेडे-जीय गवरे-सेट्टिय मगं बेट्टि-सेट्टिय राववेय मगं मचि-सेट्टि .....जक्कि-सेट्टि-मक्कलु मडिसेट्टि मचिसेट्टि मदलाद यिवरु तले-होरे बड कित.................वत्सरद चैत्र ....दं......

[इस लेख में भुजबल वीरगङ्गपोय्सलदेव के राज्य में चलदङ्कराव हेडेजीव आदि के कुछ व्रत पालने का उल्लेख है। लेख का अन्तिम भाग घिस गया है इसमे पूरा भाव स्पष्ट नहीं हो सका।]

१४४ (३८४)

जिननाथपुर में अरेगल बस्ति के पूर्व्व की ओर

(लगभग शक सं० १०५७)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिन-शासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्य-वादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने-पटीयसे ॥२॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज परमेश्वर-परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमान माचन्द्रार्क्कतारम्बरं सल्लुत्तमिरे ॥

विनयादित्य-नृपालं
जन-विनुतं पोय्सलाम्बरान्वयदिनपं ।
मनु-मार्ग्गनेनिसि नेगल्दं
वन-निधि-परिवृत-समस्त-धात्री-तलदोल् ॥ ३ ॥

तत्पुत्र ॥

एरेयङ्ग-पोय्सलं त-
त्तरेयट्टि विरोधि-भूपरं धुरदेडेयोल् ।

नरिसन्दु गेल्दु वीर-
पेर्म्वट्टागिर्दु सुगदं राज्यं गेय्दं ॥ ४ ॥

आनेगल्द् एरग नृपालन
मूनु वृदद्वैरि-मर्द्दनं सकल-धरि-
त्री-नाथनर्थि-जनता-
कानीन धरेगे नेगल्द वल्लालनृपं ॥ ५ ॥

आतन तम्म ॥

कोङ्गलुं मलेयंलुम-
नङ्गय् गजवडिसि लोकिगुण्डिवर दं-
गङ्गलनिक्कुलि-गोण्ड नृ-
लिङ्गं श्री-विष्णुवर्द्धनोर्व्वीपालं ॥ ६ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं द्वारावती पुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बर-द्युमणि सम्यक्त्व-चूड़ामणि मलपरोल्गण्ड राज-मार्त्तण्ड तलकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-कोय-तूर्-तेरयूर्-उच्चङ्गि-तलेयूर्पेर्म्मुच्चमेन्दिवुमोदलागे पलवु-दुर्गंगलं कोण्डु गङ्गवाडि तोम्भत्तरुसासिरमं प्रतिपालिसि सुखदिं राज्यं गेय्युत्तिरे तत्पाद-पद्मोपजीविगल् ॥

वृत्त ॥ जिनधर्म्माग्रणि-नागवर्म्मन सुतं श्रीमारमय्यं जग-
द्विनुतं तत्सुतनग्रचि-राजनमलं कौण्डिन्य-सद्गोत्रना-
वनचित्तोत्सवे पोचिकब्बे अवर्गमोर्तुसमादर्दि पुट्टिदर्
···वद्म्म-चमूपनम्बनधटं श्रीगङ्गण्डाधिपं ॥ ७ ॥

अन्तु ॥

अष्टार्प्पुंन्नति सत्यमाण्मु चलमायुं सौचमौदार्य्यम-
ण्मु दिटं तन्नले निन्दुवेम्ब गुणसंघातङ्गलं तालिदलो-
कद वन्दि-प्रकरङ्गलं तणिपि कः केनार्त्थियेन्दित्तु चा-
गद पेम्पिन्दमे गङ्ग-राजनेसेदं विश्वम्भराभागदोल् ॥ ८ ॥

तलकाडं सेलदन्ते कोङ्गनोलको।ण्डावं...यं तूलिददो-
र्व्वलदि चेङ्गिरिय कललिच नरसिङ्गङ्गन्तकावासमं ।
निलयं माडि निमिर्च्चि विष्णु-नृपनान्यामार्ग्गदिं गङ्गम-
ण्डलमं कोण्डनराति-यूथ-मृगसिङ्गं गङ्ग-दण्डाधिपं ॥ ९ ॥

आतन-पिरियण्न ॥

व्यापित-दिग्वलय-यश-
श्री-पतिवितरण-विनोद-पति धनपति वि-
द्यापतियेनिप्प बम्म-च-
मूपति जिनपतिपदाब्जभृङ्गननिन्द्यं ॥ १० ॥

आतन सति ॥

परम-श्री-जिननाम
गुरुगलु श्री-भानुकीर्त्ति देवर् लक्ष्मी-
करनेनिप्प बम्म-देवन
पुरुषनेनलु बागणब्बे पडेदले जसमं ॥

कन्द ॥ आसतिगे पुण्यवतिगे वि-
लासद कणि सकल-भव्य-सेव्य गर्भा-

वासदिनुदयिसिदं सलि-
भासुरतर-कीर्त्ति येच्चदण्डाधीशं ॥१२॥

वृत्त ॥ माडिसिदं जिनेन्द्रभवनङ्गलना कोपणादि-तीर्त्थदल्लु
ल्लडियिनेलो-वेत्तेसेव बेल्गोलदल्लु बहु-चित्र-भित्तियिं ।
नोडिदरं मनङ्गोलिपुवेम्बिनमेच-चमूपनर्त्थि कै-
गूडं धरित्रि कोण्डु कोनेदाडं जमन्नलिदाडे लीलेयिं ॥१३॥

अन्तु दान-विनोदनुं जिनधर्म्माभ्युदय-प्रमोदनुमागि पलकाल सुखदलिदु बलिक सन्यासन-विधियिं शरीरमं बिट्टु सुर-लोक निवासियादनिन्त ॥

वृत्त ॥ मलुवत्युद्धत-देश-कण्टकरनाटन्दोत्तिबेङ्कोण्डुदो-
र्व्वलदिं कांङ्गरनोत्ति वैरि-नृपरं बेन्नट्टि तूल्दाविसुत्तन्य-मं-
डलमं तत्पतिगेये माडि जगदोलु वीरक्के तानिन्तुगु-
न्दलेयाद कलि गङ्गनप्रतनयं श्री बोप्प-दण्डाधिपं ॥१४॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महाप्रचण्डदण्डनायक वैरिभय-दायक द्रोह-घरट्ट संग्रामजत्तलट्ट । ह्यवत्सराज । कान्ता-मनोज । गोत्र-पवित्र । बुधजन-मित्रं । श्रीमतु बोप्पदेव-दण्डनायकं । तम्मण्णनप्प एचि-राज दण्ड-नायकङ्गे परोक्ष-विनयं निसिधिगेयं निलिसि आतन माडिसिद बसदिगं । खण्ड-स्फुटितक्कवाहार-दानक्कं । गङ्गसमुद्र-दल्लु १० खण्डुग गद्देयुं हूविन-तोटमुं बसदिय मुडण किरु-गेरेयुं । बेक्कन-केरेय बेद्दलेयुं तम्म गुरुगलप्प श्रीमूलसङ्घद देसिग-गणद पुस्तक

गच्छद श्रीमतु शुभचन्द्रसिद्धान्त-देवर-शिष्यरप्प माघ (व) चन्द्र देवर्गे धारा-पूर्वकं माडिकोट्ट दत्ति ॥

श्लोक—स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टिर्व्वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमिः ॥१५॥

सीता—कान्तिगे रुक्मिणि—
गातत-येशनेविराजनङ्गिनेये-
मातेदोरे सरि समं तोणे
भूतलदोलग् एचिकब्बे क... रूपिं ॥ १६ ॥

दानदोलभिमानदोली-
मानिनिगेणेयिल्ल सतिय......
केनार्त्थियेन्दु कुडुवले
दानमन् एचब्बेयत्तिमब्बरसियवोल् ॥ १७ ॥

इन्तु परम...राज-दण्डनायनदण्डनायकिति श्रीमतु शुभ-चन्द्र सिद्धान्त-देवर गुड्डि एचिकब्बेयु तम्मत्ते बागणब्बेयुं शासनमं निलिसि महापूजेय माडि महादानं गेय्दु तेङ्गिन-तोण्टवं बिट्टर् मङ्गल श्री ॥

[इस लेख में होयसलवंशी नरेश विष्णुवर्द्धन और उनके दण्ड-नायक प्रसिद्ध गङ्गराज के वंशों का परिचय है । गङ्गराज के ज्येष्ठ भ्राता बम्मदेव के पुत्र एच दण्डनायक ने कोपण, बेल्गुल आदि स्थानों में अनेक जिनमन्दिर निर्माण कराये और अन्त में संन्यासविधि से प्राणोत्सर्ग किया । गङ्गराज के पुत्र बोप्पदेव दण्डनायक ने अपने भ्राता एचिराज की निषद्या निर्माण कराई तथा उनकी निर्माण कराई हुई बस्तियों के

लिये गङ्ग समुद्र की कुछ भूमि का दान शुभचन्द्र सिद्धान्त देव के शिष्य माधवचन्द्र देव को किया। एचिराज की भार्या एचिकब्बे व उसकी श्वश्रू नागणब्बे ने यह लेख लिखाया। एचिकब्बे शुभचन्द्र देव की शिष्या थी। लेख में गङ्गराज की वंशावली इस प्रकार पाई जाती है—
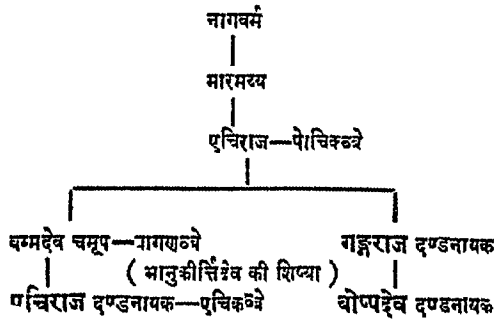
श्रवण बेल्गोल और आसपास के ग्रामों के अवशिष्ट लेख

अवशिष्ट शिलालेखों का निम्न प्रकार समय अनुमान किया जाता है

शक संवत् की छठवीं शताब्दि	१५२, १८६.
शक सवत् की सातवी शताब्दि	१५३, १५७, १५८, १५६, १६०, १६१, १६२, १६५, १६०, १६२. १६३, १६४ १६५, १६६, १६७, १६८, २००, २०२, २०३, २०५, २०६, २०७, २०८, २१०, २११, २१२ २१३, २१४, २१५, २१७, २१८, २१६. २२०. २८४।
शक संवत् की आठवीं शताब्दि	१४७. १४६ १५४, १५५ १७५ १६१, २५३. २५६.
शक संवत् की नवमी शताब्दि	१४५, १३६ १५६, १७१, १८०, १८५, १८६, २०१, २०६. २२१, २२७, २३५, २३६, २३७, २५५, २७०, २८२. २८७, २६४, २६७, २६८ ३०७, ३१५, ४०६, ४१० ।

शक संवत् की दसवीं शताब्दि

१४८, १५०, १५१, १६२, १६५, १६६, १६७, १७२, १७३, १७४, १७७, १७८, १८२, २१६, २२३, २२८, २३९, २५४, २५७, २५८, २५९ २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६९, २७२, २७३, २७४, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८५, २८६, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९५, २९६, २९९, ३०० ३०१, ३०२, ३०३, ३०४. ३०५, ३०६, ३०८, ३०९. ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ४६९.

शक संवत् की ग्यारहवीं शताब्दि

१६८, १६९, १७०, १७९, १८१, १८२, १८४, १८८. १९९. २०४, २२२. २२४, २२५, २३०, २३१, २४०, २४१, २४२ २४६, २६५, २६६, २६७, २७१, २७५, २७६, ३१६, ३५१ ३६०, ३६८, ३६९, ४४५, ४४६, ४४७, ४५४, ४५९, ४६०, ४७३, ४७८, ४८८,-४८९,

शक संवत् की बारहवीं शताब्दि

१७६, १८७, २२६, २३२, २३३, २३४, २३८. २४३, २४४, २४५, २४९, २५१, २८३, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२३. ३२४, ३२५ ३२६, ३२७, ३२८, ३६१, ४०१, ४०८, ४११, ४२६, ४३१, ४६१, ४६६, ४७१, ४७५, ४७६, ४८७. ४९० ।

शक संवत् की तेरहवीं शताब्दि	२४८, २५०, २५२ २६८, ३३० ४०६, ४१३, ४१४. ४१८, ४२१, ४३०. ४३२ ४४२ ४४३, ४६२, ४६७. ४७७ ४८१, ४८५।
शक सवत् की चौदहवीं शताब्दि	२४७, ३५६. ३५७, ३७१, ३७२. ३७३, ३७४, ४२०. ४२२ ४२३, ४२४. ४२५ ४२८. ४२९।
शक संवत् की पन्द्रहवीं शताब्दि	३२१. ३२२. ३५२, ३५३. ३५४, ३५५, ४७२. ४८३, ४८४।
शक संवत् की सोलहवीं शताब्दि	३३४, ३३५, ३६०, ३७५ ३७६. ३७७, ३८१, ३९८, ३९९, ४०२, ४०३, ४०४ ४१२. ४१६, ४१९, ४३८, ४३९. ४५०, ४५१, ४५२ ४५३. ४६३. ४६४, ४६५. ४८२,
शक संवत् की सत्तरहवीं शताब्दि	३४५, ३४८, ३६७, ३७८ ३७९. ३८०, ३९१. ३९४, ३९५ ४२७, ४४४।
शक संवत् की अठारहवीं शताब्दि	४१७, ४३८, ४३९, ४४०।

चन्द्रगिरि पर्वत के अवशिष्ट लेख

पार्श्वनाथवस्ति के दक्षिण की ओर चट्टान पर

१४५ (३) श्रीदेवर पद। वमनि... ..

१४६ (४) मल्लिसेन भटारर गुड्डं चरेङ्गय्यं तीर्त्थमं बन्दिसिदं।

१४७ (१०) श्रीधरन्

१४८ (४०८) नमोऽस्तु १४९ (४०९) श्रीरत्त

१५० (४१०) सिन्दय्य १५१ (४११)......गिङ्ग...

कुन्द गङ्गर वण्ट...गद नण्ट

१५२ (११)

....च्छिशान्पतिः ।

आचार्य्य......श्रीमान्शिष्यानेक-परिग्रहः ॥ १ ॥

......विलासस्य निर्व्वाणा......जनि

चलाचलविशेषस्य गुणैर्देवो च **कम्पिता** ॥ २ ॥

दीपैर्द्धूपैश्च गन्धैश्च साकरोदधिम् . सान् ।

तत्र **दिण्डिक** राजोऽपि साचो सन्निहितोऽभवत् ॥ ३ ॥

परित्यज्य गणं सर्व्वं चातुर्व्वर्ण्ण-विशेषितं ।

आहारादिशरीरं च कटवप्र-गिराविह ॥ ४ ॥

आचार्य्योऽरिष्टनेमीशः शुक्लध्यानोरु वारणं

समारुह्य गतस्सिद्धिं सिद्ध-विद्याधरार्च्चितः ॥ ५ ॥

१५३ (१३)

राग-द्वेष-तमो-माल-व्यपगतश्शुद्धात्म-संयोद्धकर्
वेगूरा परम-प्रभाव-रिषियर् स्सर्व्वज्ञ-भट्टारकर्
...गादेव... ..न...डिव.. न्तव्वु . . लमदोल्
श्री कीर्णामल-पुष्प.........र् स्वर्गाग्रमानेरिदार्

[रागद्वेष रूपी अन्धकार से विमुक्त, शुद्धात्म योद्धा वेगूरा वासी परम-प्रभावी ऋषि, सर्वज्ञ भट्टारक... .. . शिखर पर...... ....अमल पुष्पों से पान्छादित .. स्वर्ग के अग्रभाग का आरोहण किया।]

१५४ (१४) अरिष्टनेमिदेवर् कालप्पु-तीर्थदोलु मुत्त-कालम पडेदु मु...

१५५ (१५) स्वस्ति श्री महावीर...आल्दुर तम्मडिगल मन्यमन दिन् ड-तम्मजया निसिधिगे।

१५६ (१६)......पादपमनूल......म-प्रव......

१५७ (१८) स्वस्ति श्री भण्टारक यिट्टगपानदा तम्म-डिगल शिष्यर् कित्तेरे-यरा निसिधिगे।

१५८ (२१)

दक्षिण-भागदामदुरे उय्म् इनिताव...शापदे पावु मुदिदोन्
लक्षणवन्तर् एन्त् एनलू वरग......ग ई मह्वा पल्लवदुल्
अक्षय-कीर्त्ति तुन्तकद नार्द्धिय मेल् अट्टु नोन्तु भक्तियिम्

अत्ति-मणक्कं रम्य-सुरलोक-सुकक्के भागि आ......
पल्लवाचारि-लिकि (खि) तम्।

[दक्षिण भाग की मदुरा (नगरी) से आकर और शाप के कारण सर्प द्वारा सताये जाकर, परीक्षकों के विचार करते ही करते, अक्षयकीर्त्ति भक्तिपूर्वक इस शिखर पर व्रतों का पालन करते हुए दुःख-सागर को पार कर, रमणीक सुरलोक-सुख के भागी हुए।

पल्लवाचारि लिखित]

१५९ (२२)

श्री। बाला मेल् सिखि-मेले सर्प्पद महा-दन्ताग्रदुल् सल्ववोल्
सालाम्बाल-तपोग्रदिन्तु नडदों नूरेण्टु-संवत्सरं
कैलौय् पिन् कटवप्र-शैलमडर्द् एनम्मा कलन्तूरनं
वाले पेर्गोरवं समाधि-नेरेदोन्नो-तेय्दिदौर् स्सिद्धियान्॥

[इस लेख में कालन्तूर के किसी मुनि के कटवप्र पर एक सौ आठ वर्ष तक तप के पश्चात् समाधिमरण की सूचना है।]

१६० (२३)

नम स्वस्ति।

...दे शास्त्रविदां यन गुणदेवाख्य-सूरिणे
कल्वाप् पर्व्वत-विख्याते...नम...तमाग...
.. द्वादश-तपो नुष्ठा......
सम्यगाराधनं कृत्वा स्वर्गालय............

[शास्त्रवेदी गुणदेव सूरि को नमस्कार, जिन्होंने कलवाप् पर्वत के शिखर पर द्वादश व्रत धारण कर और सम्यगाराधन का पालन कर स्वर्गलाभ किया]

१६१ (२७)

श्री । मासेनप्परम-प्रभाव-रिपियर् क्कुल्वप्पिना वेट्टदुल्
श्री-सङ्गङ्गल पेल्द सिद्ध-समयन्तप्पादे नोन्तिम्विनिन्
प्रासादान्तरमान्विचित्र-कनक-प्रज्वल्यदिन्सिरकुदान्
सासिर्व्वर्व्वर-पूजे-दन्दुये अवर् स्वर्गाग्रमानेरिदार् ॥

[इस लेख मे परम ऋषि 'मासेन' के समाधि मरण की सूचना है ।]

१६२ (३६) श्री चिकुरापरविय गुरवर सिष्यर् सर्वणन्दि अवन् श्री वसुदेवन् ।

१६३ (३७) श्रीमद् गङ्गान्व ।

१६४ (३८) वीतरासि । १६५ (३९) श्रीचावुण्डय्य ।

१६६ (४०) श्रीकविरत्न । १६७ (४१) श्रीमद् अङ्कचोय ।

१६८ (४२) श्रीविदेपय्य । १६९ (४३) श्रीमद् अकलङ्क पण्डितर् ।

१७० (४४) श्री सुव ।

१७१ (४५)...लम्बकुलान्तक वीरर वण्ड परिकरन किङ्क ।

१७२ (४६) स्वस्ति श्री अण्णन कालेय पण्डग कल्वप्प तीर्त्थव वन्दि...

१७३ (४७) का...य भिज्जंग रायन कादगलै वन्दिलि देवर वन्तिसिद ।

१७४ (४६) श्री दवणन्दि बलरर गुड्ड आसु...बन्दु तीर्त्थव बन्दिसिद ।

१७५ (५८) अलस कुमारो महामुनि ।

१७६ (५१) श्री कण्ठय्य ।

१७७ (५२) श्रीवर्म्म चन्द्रगीतय्य देवर वन्दिसिद

१७८ (५३) श्री हुसकय्य । १७६ (५४) श्री बिधियय्म्म ।

१८० (५५) श्री नागणन्दि कित्तय्य देवर वन्दिसिदर् ।

१८१ (५६) स्वस्ति समधिगतपञ्चमहासब्द महासामन्त अग्रगण्य

१८२ (५७) मारसन्द्र केय कोट...गलवेय बीर कोट ।

१८३ (५८) मालव अमावर् ।

शान्तीश्वर वस्ति से नैऋत की ओर

१८४ (६०) श्री परेकरमारुग-बलर-चट्ट सुल बण्टरसुल ।

१८५ (६२) स्वस्ति श्री तेयङ्गुडि......न्दि-भटारर सिष्य .. गर-भटारर सिष्य क ..र ..मि-भटार अवर सिष्यर् पट्टदेवा .....सि-भटार कुमा ...ल सिष्य न ..सले मुनिर्व्वने मन्दि पमुमम्म निसिदिगे ।

पार्श्वनाथ वस्ति में एक टूटे पाषाण पर

१८६ (६८) श्रीमत वेट्टदवो ..न मगल् वैजव्वे स्वप्पु-
तीर्थदोलुचू नोन्तु मन्यमनं।

१८७ (७१)

चन्द्रगुप्त वस्ति में पार्श्वनाथ स्वामी के सन्मुख एक छोटी मूर्ति के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० ११००)

(अग्रभाग)

श्रीमद्राजतिरीटकोटिघटित पादपद्मद्वयो
देवो जैन...रविन्द-दिनकृद्धागदेवतावल्लभ।
...या...त-समन्वितो यतिपति..... त्र-रत्नाकर'
सोऽयं निर्जित ..तो विजयतां श्रीभानुकीर्त्तिर्भुवि॥१॥
श्री-बालचन्द्र मुनिपादपयोज... ....
जैनागमाम्बुनिधिवर्द्धन-पू...... .... ट:।
दुग्धाम्बुराशि-हर-हा

(पृष्ठभाग)

.. मलश्रित (वहु) कैवल्यमंम्वम......लयमिनितं नर्गिरिय
विश्वम...रित्र महिमेयि वर्द्धमा,..जिन-पतिगे वर्द्धमान-मुनी
'''सुर नदिय तार हा ''र सुर-दन्तिय रजतगिरिय चन्द्रन

बेलिप पिरिदु वर...र्द्धमानर परमतपोध...रकीर्ति ...मूरुं जगदोलु ॥

···च्छिष्यरु ॥

तीर्त्थाधीश्वर-व

[इस लेख में भानुकीर्त्ति, बालचन्द्रमुनि और वर्द्धमान मुनि का उल्लेख है। अधूरा होने के कारण लेख का प्रयोजन ज्ञात नहीं हो सका।]

[पृष्ठभाग का प्रथम पद्य पम्प रामायण आश्वास १ पद १४ से मिलता है।]

१८८ (७२)

चन्द्रगुप्त बस्ति में पार्श्वनाथ जिनालय के क्षेत्रपाल के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० १०६७)

....

...जनिष्ट.........रित्र...रखिला......माला-शिलीमुख-वि-
राजित-पा...... ॥ १ ॥

तच्छिष्यो गुण ·· त यतिश्चारित्र-चक्रेश्वरः
तर्क-व्या···दि-शास्त्र-निपु···साहित्य-विद्या-नि···
मिथ्या-वादि-मदान्ध-सिन्धुर-घटा-सङ्.........रवो
भव्याम्भोज (यहाँ पाषाण टूट गया है)......॥२॥

(उसी पीठ के बायें पृष्ठ पर)

'''ज्जिने **शुभकीर्त्ति-देव**-विदुषा विद्वेषि-भाषा-विष-
ज्वाला-जाङ्गुलिकेन जिह्मित-मतिर्व्वादी वराकस्स्वयं ॥३॥
घन-दर्प्पोन्नद्ध **बौद्ध**-चितिधर-पवियी वन्दनी वन्दनी व-
न्दने सन्-**नैय्यायिको**ग्रत्तिमिर-तरणियी वन्दनी-वन्दनी व-
न्दने सन्-**मीमांसको**ग्रत्करि-करिरिपु यीव न्दनी वन्दनी व-
न्दनं पें पें वादि-पोंगन्दुलिवुदु **शुभकीर्त्तीद्ध**-कीर्त्ति-
प्रघोषं ॥ ४ ॥
वितथोक्तियल्तजं पशुपति शार्ङ्गियेनिप्प सूवरं शुभकीर्त्ति-
व्रति-सन्निधियोलु नामोचित-चरितरे तोडर्इडितर-वादिग-
ललवे ॥ ५ ॥
सिङ्गद सरमं केल्द मतङ्गजदन्तलुकलल्लदे समेयोलु
पोङ्गि **शुभकीर्त्ति**-मुनिपनोलेङ्गल नुडियल्के वादिगलो-
ण्टेल्देये ।
पें'''ल्वुदु वादि वृथायासं विबुधोपहासमनुमानोप-
न्यासं निश्री'''वासं सन्दपुदे वादि-वज्राङ्कुशनोल् ॥६॥
सत्सधर्म्मिगल् ॥

[यह लेख टूटा हुआ है पर इसके सब पद्य अन्य शिलालेखों से पूरे किये जा सकते हैं। इसके छहों पद्य शिलालेख नं० ४० (१४०) के पद्य ६,७,३८ ३६,४० और ४२ के समान हैं।]

१८६ (७५)

कत्तले बस्ति के सन्मुख चट्टान पर।

(लगभग शक सं० ५७२)

ममास्तूपान्व......स कले......गद्गुरुः ।
ख्यातो **वृषभनन्दीति** तपो-ज्ञानाब्धि-पारग ॥ १ ॥
अन्तेवासी च तस्यासीदुपवास-परो गुरुः ।
विद्या-सलिल-निर्धूत-शेमुषीको जितेन्द्रियः ॥ २ ॥
...स...त तपो.........तपसैर्य्योग-प्रभावोऽस्य तु
वन्द्योऽनाहित-कामनो निरुपमः ख्याता स...ना...।
दृष्टा ज्ञान-विलोचनेन महता स्वायुष्यमेवं पुनः
पृ.........गृहं गुरुरसौ यो...स्थित...वशः ॥ ३ ॥
......**कटवप्र**-शैल शिखरे सन्यस्य शास्त्र क्रमात् ।
ध्यान......दा...मणि-मुखे प्रक्षिप्य कर्म्मेन्धनं ।
......दिव्य-सुखं प्रशस्तक-धिया सम्प्राप्य सर्व्वेश्वर-
ज्ञानं...न्तमिदं किमत्र तपसा सर्व्वं सुखं प्राप्यते ॥ ४ ॥

१६० (७७)

(लगभग शक सं० ६२२)

सिद्धम् । श्री ।
गति-चेष्टा-विरहं शुभाङ्गदे घनम्मारिद्दमान्विट्टुवल्
यतियं पेल्द विधानदिन्दु तोरदे **कल्वप्पिना** शैलदुल्

प्रथितात्वॆप्पदे नोन्त निस्थित-यशा स्वायु:-प्रभा...यक्
स्थिति-देहा कमलोपमङ्ग सुभमुम् स्वर्ल्लोकदि निश्चितम् ॥

[इस लेख में किसी के समाधिमरण की सूचना है ।]

१९१ (७८) सुहदेव माणि ।

१९२ (७९)

(लगभग शक सं० ६७२)

सुन्दरपंम्पदुग्रतपदोगिद.........वार्द्धदनिन्द्यमेन्दु पिन्
वन्दनुरागविन्दु यलगा...ण्डु महोत्सवदेरि शैलमान् ।
सुन्दरि सौचदार्य्यदरदे...डु विमानमोडिप्पि चित्तदिम्
इन्द्र समानमप्प सुख.. ण्डदे···चणदेय्दि स्वर्ग्गवा ॥

[सौचदार्य (? शुद्धमुनि) ने आकर हर्ष से पर्वत की वन्दना की और अन्त में यहां ही शरीर त्याग किया ।]

१९३ (८०)

(लगभग शक स० ६२२)

महादेवन्मुनिपुङ्गवन्नदर्प्पि कलु पंर्पप
महातवन्मरणमप्पे तनगा... कमु कण्डे...
महागिरि म...गलेसलिसि सत्या...नचिन्तो-
महातवदोन्तु मलेमेल्वलवदु दिवं पोक्क

[महादेव मुनिपुङ्गव ने मृत्युकाल निकट आया जान पर्वत पर तपश्चरण किया और स्वर्ग-गति प्राप्त की ।]

१९४ (८१)

(लगभग शक सं० ६२२)

बोध्यातिरेच्य-कैवल्य-बोध-प्राप्ति महौजसे ।
ईशानाय नमो योगि-निष्ठायार् परमेष्ठिने ॥१॥
...रे कित्तूर-सङ्घस्य गगनस्य महस्पतिः ।
परिपू...चारि......ध.......... ..वाण......
ल्यया...

१९५ (८२) बलदेवाचार्य्यर पाडग्गमण ।

१९६ (८३) स्वस्ति श्री पद्मनन्दिमुनिप......अतुल......
...दनिमा कृतदेवा...... . अभव ..देप.. ......मा ..
. ...लव ..

१९७ (८५) श्रीपुष्पणन्दिनिसिधिगे ।

१९८ (८६) ...क न तम्म .....गे ।

१९७ (८७) श्री वाट।

२०० (८८) कनादे... .. ..ण-वंशा ..कलवप्पिन्दुर्ग......

२०१ (९०) श्री बम्म । २०२ (९१) दल्लग पेल्दय्वन्पाल...

२०३ (९२) स्वस्ति कोलात्तूर सङ्घदि विशोकभटारर
निसिधिगे ।

२०४ (९४) श्रीमद् गौड देवर पाद ।

२०५ (९५)......ब साधु-प्र...र धीरव्रत-संयता...मन्
इन्द्रनन्दि आचार्य्य... ..मे...र्म्म आमेद...न्तूरिदेर्प्प प्रव-

लान्तरि......भाव्यमन्वर्प्पिन् . ण्डे.... दि मोहमगल्द्
इन्वलू-विषयङ्गलनात्म-वश-कूमविदु कट...........स्थिता-
राधिता.. विमु .....श्वररि...... नन,.....रेन्द्र-राज्य-
विभूति-सास्वतमेय्दिदान् ।

[संयमी इन्द्रनन्दि आचार्य ने मोह विषयादि को जीतकर कट (वप्र) पर्वत पर समाधि मरण किया ।]

२०६ (६६) स्वस्ति श्री कोलत्तूर सङ्घदा देव...खन्ति-
यब्बिसि...

२०७ (६७) नमिलूरा सिरिसङ्घद् आजिगणदा राज्ञी-
मती-गन्तियार्

अमलम् नल्तद शीलदि गुणदिना-मिक्कोत्तमम्मीलेदोर् ।
नमगिन्दोल्विदु एन्दु एरि गिरियान्सन्यासनं योगदोल्
नमो चिन्तय्दुसे मन्त्रमण्मरि ए स्वर्गालयं एरिदार् ॥

[नमिलूर संघ, आजिगण की साध्वी राज्ञीमती गन्ति ने पर्वत पर संन्यास धारण कर स्वर्ग-गति प्राप्त की ।]

२०८ (६८) श्री स्वस्ति
तनगे मृत्यु-बरवानरिदे पेत्र्वाण-वंशदोन्
कालनिगेकसुदे...प्पिन राज्य वीव्वतिन् ।
घा...क...मोदसु...तो......मता कच्चि नि-
धानम......सुर...ग-गतियुल् नेले-कोण्डन् ।

[इस लेख में पेत्र्वाण व श के किसी व्यक्ति के समाधि-मरण का उल्लेख है]

२०९ (१००) परवतिमल ।

२१० (१०१)...मले-मेल् अच......महा......बोल...

२११ (१०२) .. ..जन्नल् नविलूर् अनेकगुणदा आ-
सङ्घ......दु...

..................मेनल्तिलकं......श्री...राचार्य्यर ।

......भिमानमेय्दे तोरदेन्दो राग-सौख्यागति

... ..ददोन्दु पञ्चपददे दोषं निरासं.........

[नविलूर संघ के किसी आचार्य ने सन्यास धारण कर प्राणोत्सर्ग किया ।]

२१२ (१०३) स्वस्ति श्रीमत् नविलूर् सङ्घद पुष्पसेना-
चारि...य निसिधिगे ।

२१३ (१०४) श्री देवाचार्य्य......निसिधिगे ।

२१४ (१०७) श्री

वन्दनुरागदिन्नेरदु अन्थेगल क्रमदरिशैल...
वन्दनु मार्गदिने तिमिरा विधिये नविलूर सं··· ··
चेन्ददे बुद्धिय हारमनि.. तियुं...य मावि-अब्बेगल्
···· ·लिप्पि नल् सुरर सौख्यमनिम्मोडगोण्डराद्दमुम् ।

[नविलूर सघ के मावि अब्बे ने समाधि मरण किया ।]

२१५ (१०९) श्री

मेघनन्दि मुनि तान् नमिलूर्व्वर सङ्घदा

.......................तीर्थदि सिद्धियान्...

द्. . ...

....

२१६ (११०) श्रीकण्ठय्य ।

२१७ (१११) श्री

स.........ना......नेगर्तेयगुं सेदेणे-वडेसि दल्

मुगिव......नोन्तुम्मेवोल...तपमं

......नि......पौत्र नन्दिमुनिप............

...माय्य न......यु......लमालो तल इदरुल् नोन्तु

सिद्धिस्थनाइम् ।

[नन्दिमुनि ने यहाँ व्रतपाल सिद्धि प्राप्त की]

२१८ (११२) श्री नविलूर् सङ्घदा गुणमति-अव्वेगला निसिधिगे ।

२१९ (१२५) अनेक शील गुणदोप्पिदोरिन्तु लेकिक सुदुम्

नेनेगेन्दोरु मुनियिन्दल् तपञ्चले नोन्तु ताम्

तमगं मृत्युवरवानरिदं श्री पुत्तिय ....

[अनेक शील-गुण सम्पन्न पूत्तिय ने मृत्यु का आगमन जान..]

२२० (११६) ई-पूज्या...लमान्सरेति

वरदोरेल्-नूर्व्वरं लक्ष्यमी-

श्रीपूरान्वय गन्धवर्म्मनमित-श्रीसङ्घदा पुण्यद्दी-

सन्पौरा...निदे.. रिवलघं...री-शिला-तल......

.........माम्नेरदुप......इ ....

[इस लेख में श्रीसघ, पूरान्वय के पूज्य गन्धवर्मा द्वारा इस शिला पर कुछ किये जाने का उल्लेख रहा है ।]

कत्तले बस्ति के पीछे चट्टान पर

२२१ (४१२) चन्द्य्य ।

चामुण्डराय बस्ति के द्वारे के दक्षिण की शिला पर

२२२ (११६) श्रीमत् लक्खण देवर पाद ।

चामुण्डराय बस्ति के द्वारे के दोनों बाजू

२२३ (१२२) श्री चामुण्डराजं माडिसिदं

चामुण्डराय बस्ति के द्वारे से बायीं ओर शिला पर

२२४ (१२३) (नागरी अक्षरो मे) सान्तणन्दि देवर पाद

२२५ (१२४) " श्रीमतुचन्द्रकीर्त्ति देवर पाद ।

तेरिन बस्ति के बायीं ओर एक स्तम्भ पर

२२६ (१३५) स्वस्ति

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ।।

तेरिन बस्ति के नवरङ्ग में एक टूटे पाषाण पर

२२७ (१३६) त ··· ··ति कल्वप्पिनल्लि। मलद कुमारणन्दिभटारर सिषित्तियर् सायिव्वे-कन्तियर...... वप्पिदिगल् ।

(एक बाजू में) विल······स···सर्व्व · ···

तेरिन बस्ति के सम्मुख

२२८ (४२६)···स्वरेद बद्र···नरगेद कोल

२२९ (१३७)

तेरिन बस्ति के सम्मुख 'तेरु' के उत्तर मुख के ऊपरी भाग पर

(शक सं० १०३९)

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणा शासनायाघ-नाशिने ।
कु-तीर्थ-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभिन्न-घन-भानवे ॥ १ ॥

सक-वर्षं सायिरदि
प्रकटमेनल्मूवतोम्भतु नडेयुतिरलु
सुकरमेने हेमलम्बियोल्
अकलङ्कद जेष्ट-सुद्ध-गुरु-तेरसियोलु ॥ २ ॥

वृत्त ॥

धरणी-पालकनप्प पोय्सलन राज-श्रेष्ठिगल्लम्मुति-
र्व्वरेनल् पोय्सल-सेट्टियुं गुण-गणाम्भोरासियेम्बोन्दु सु-

न्दर-गम्भीरद **नेमि**-से [ट्टि] युमिव श्रीजैन-धर्म्मक्के तायू-
गरेगल् तामेने सन्द पेम्पसदलम्पव्विंत्तु भू-भागदोल् ॥३॥

कन्द ॥

अमल-यशरमल-गुण-गण-
रमलिन-जिन-शासन-प्रदीप करेने पे-
म्पमर्द्दिरे **पोय्सल**-सेट्टियु-
ममेय-गुणि **नेमि**-सेट्टियुं सुखदिनिरलु ॥ ४ ॥

अवर जननियरेनल्की-
भुवनतलं पोगले माचिकब्बेयुमुद्यद्-
विविध-गुणि **शान्तिकब्बेयु**-
मवर्ग्गलु जिन-जननियन्नरुर्वीतलदोल् ॥ ५ ॥

(उसी 'तेरु' के पश्चिम मुख के ऊपरी भाग पर)

जिन-गृहमं मनो-मुददे माडिसि मन्दरमं विनिर्म्मिसि-
र्दनुपम-**भानुकीर्त्ति**-मुनि-से दिव्य-पदाब्ज-मूलदोल् ।
मनमोसेदिर्व्वरुं परम-दीक्षेयनोप्पिरे ताल्दिदर्ज्जग-
ज्जन-तति कीर्त्तिसल्के **मरु-देवि**यु [मिम्] बिने
सान्तिकब्बेयुं ॥ ६ ॥

श्री **मूलसङ्घ**दोल् म-
त्ता-महिमोन्नतमेनिप्प **देसिग**-गणदोलु
तामिर्व्वरुमखिल-गुणो-
द्दामेयरेने नेगर्दरिन्तु नोन्तरुमोलरे ॥ ७ ॥

जिन-पतिगे पूजेयं म-
न्मुनि-पतिगलुगन्न-दानम भक्तियोलि-
म्विने पोय्सल-सेट्टियुमोल्-
पिन कणियेने नेमि-सेट्टियुं माडिसिदर् ॥

[पोय्सल नरेश के प्रसिद्ध सेठी पोय्सलसेट्टि और नेमिसेट्टि की माताओं—माचिकब्बे और शान्तिकब्बे—ने जिनमन्दिर और नन्दीश्वर निर्माण कराकर भानुकीर्त्ति मुनि से दीक्षा ली। उक्त सेठियों ने भक्ति-पूर्वक जिन-पूजन किया और दान दिये।]

गन्धवारण वस्ति के समीप एक टूटे पाषाण पर

२३० (१४४) नमस्सिद्धेभ्यः। शासनं जिनशासन

......भ-चन्द्र

गन्धवारण वस्ति की सीढ़ियों के पास

२३१ (४२८) श्रीमतु रविचन्द्र देवर पाद

इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर के मार्ग पर

२३२ (१४६) नेमगन पाद।

२३३ (१४७) श्री सिवगरय।

२३४ (१४८) श्री कलय्यन्।

२३५ (१५०)

इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर के द्वार की दक्षिण बाजू पर।

नं सेवरकुन्द गुरु...ट्टिसि पट्टम गुलिय.. सिगेयिन्ने सले गज्ज-

राज्य......नेमदं मन्त्रि **नरसिङ्ग**...तङ्गलियं विशेषदि ॥

एरेगङ्ग-महामात्यं

...रेदं नत-गङ्ग-महिगे सफल-मतेयिं

गुलिपालनातनलियं

नेरे नेगल्दं **नागवर्म्म**नवनीतलदोल् ॥ १ ॥

आतन पुत्रनब्धि-वृत-धात्रियोलितने **रामदेव**...न्

ईतने **वत्सराज**निलेगीतने तां **भगदत्त**नागिविख्यातयसं

तगुल्द कु...मं तोरेदुन्नेरे नोन्तुमेतु

(शेष भाग टूट गया है)

[गङ्गराज्य के मन्त्री नरसिंह के जामाता। ऐरेगङ्ग के प्रधान मन्त्री।—. ....जामाता नागवर्म के पुत्र ने—जो रामदेव, वत्सराज व भगदत्त के समान जगत्प्रसिद्ध थे—वैराग्य धारण कर......]

उसी द्वार की बायीं बाजू पर

२३६ (१५१)..........प्पिडिदुलु......मारदो......

...र्द्धदि...ट्टगचोल आके जेगदि.........विमा...माडिसिद...

उसी मन्दिर के सन्मुख चट्टान पर

२३७ (१५२) चगभचणचक्रवर्त्ति गोग्गिय साव-नत्य......र

२३८ (१५३) (नागरी अक्षरों मे) चन्द्रकीर्त्ति।

२३९ (१५४) श्रीमतु राचमल्ल देवर जङ्गिन सेनबोव सुबकरय्य बन्दिसिद

काञ्चिन दोणे के आस-पास

२४० (१५६)...... .. ..मुडिपिदरवर गुड्डि सायिव्वे
निमिदल पोलव्वेकान्तियर्गे......गे ।

२४१ (१५७) श्रीमतु गण्डविसिद्धान्तदेवर गुड्डं
श्रीधर वोज ।

२४२ (१६०)

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

जगत्-त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने ।
नयप्रमाणवाग्रश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥ २ ॥

परमश्रीजिनधर्म्मनिर्म्मलयशं भव्याब्जिनीभास्करं
गुरुपादाम्बुजवृत्तशुद्धचरितं विप्रो......म मेरुभू-
धरधैर्य्यं गुणरत्नवार्द्धि विनमत्सम्यक्त्वरत्नाकरं
परमोत्साहदे रा........ ...म्बिलाभागदोलु ॥ ३ ॥

आ-पु........... माण-गुणगल

२४३ (१६१) श्रीधनकीर्त्तिदेवर मानस्तम्भद कम्भ ।

२४४ (१६२) मानभ आनन्द-संवच्छदलि कट्टि-
सिद देवंयु ।

२४५ (१६३) तम्मय्यङ्गे परोक्षविनयनिशिधि ओध-
रङ्गे परोक्ष-विनय तम्मवेगे परोक्ष-
विनयनिशिदि ।

२४६ (१६४)........दलि क.........गो......
गलं गङ्ग...निसिदिगेय **निरिसिदन्** ॥
......द......गमदे......गलिय...
सगि...............

भद्रबाहु गुफा के आग्नेय कोन पर

२४७ (१६८) श्रीमतु लक्ष्मीसेन भट्टारकदेवर शिष्यरु
मल्लिसेन-देवर निसिधि ।

चन्द्रगिरि की चोटी पर चरण-चिह्न के नीचे

२४८ (१६९) श्री भद्रबाहुभलिस्वामिय पाद ।

चन्द्रगिरि के मार्ग पर चरण-चिह्न के नीचे

२४९ (१७१) [तामिल अक्षरों मे]
कोदइ-शङ्करनु मलयशारगलिङ्गु निन्रु
कलनिक्कु मेकुं निन् पुलिक्कु निरै ।

तोरनगम्ब के वायव्य में जिन-मूर्त्ति के पास

२५० (१७२) साम...... .देवरु.....

चामुण्डराय शिला पर मूर्त्तियों के नीचे

२५१ (१७३) श्रीकनकनन्दि देवरु पसि देवरु मलि-
देवरु ।

चन्द्रगिरि की सीढ़ियों के बाईं ओर

२५२ (१७४) श्री नरवग जिनालय केरे।

२५३ (४९१) श्री रणधीर

चन्द्रनाथ वस्ति के आस-पास

२५४ (४१३) .....चामुण्डय्य

२५५ (४१३) सेट्टय्य

२५६ (४१५) सिवमारन वसदि।

२५७ (४१६) वसह

सुपार्श्वनाथ वस्ति के सन्मुख

२५८ (४१७) श्री वैजय्य २५९ (४१८) श्रीजक्कय्य

२६० (४१९) श्री कट्टुग

२६१ (४२०)...... ..चनमा।

चामुण्डराय वस्ति के दक्षिण की ओर

२६२ (४२१) महामण्ड......ब... ..

२६३ (४२२) श्री वाम

२६४ (४२३) वसवय्य

२६५ (४२४) श्रीमर......

२६६ (४२५) नरणय्य

२६७ (४२६)... ..रसप वम......य निषिधिगे

इरुवेब्रह्मदेव मन्दिर के सन्मुख

२६८ (४३१) वब्रोजनु २६९ (४३२) मेलपय्य

२७० (४३३) श्री पृथुव

२७१ (४३४) चन्द्रादित्तं (चरणचिह्न)

२७२ (४३५) नागवर्म्मं बरेदं

२७३ (४३६)...निगरजेयण तंशवत्रगण्ड

२७४ (४३७) पुलियण्न २७५ (४३८) सौलय्य

२७६ (४३९) केसवय्य २७७ (४४०) नमोऽस्तु

२७८ (४४१) श्री रेचय्यं विरोधिनिष्ठुरं

२७९ (४४२) बास

एरडुकट्टे बस्ति के पूर्व में

२८० (४२७) कगूत्तर

शान्तीश्वर बस्ति के पीछे

२८१ (४३०) श्रीमत् कम्मरचन्द आचिरग

काञ्चिनदोणे के पास

२८२ (४४३) मुरु कल्ल कदम्ब तरिसि.........

परकोटे के पूर्वी द्वारे के पास

२८३ (४४४) जिनन दोणे

लक्किदोणे की पश्चिमी शिलापर

२८४ (४४५) श्री जिन मार्ग्गनीतिसम्पन्नन्सर्प्पचूड़ामणि।

२८५ (४४६) श्री विहरय्य

२८६ (४४७) श्रीमद् अकचेय

२८७ (४४८) श्री परवेण्डिरणनन् ईश्वरय्य

२८८ (४४६) श्री कविरत्न

२८६ (४५०) श्री मचय्य २६० (४५१) श्री चनपैास

२६१ (४५२) श्री नागति आल्दन दण्डे

२६२ (४५३) श्री वासनण्न न दण्डे

२६३ (४५४) श्री राजन चट्ट

२६४ (४५५) श्री वडवर वण्ट

२६५ (४५६) श्री नागवर्म्म

२६६ (४५७) श्री वत्सराजं वालादित्यं

२६७ (४५८) श्रीमत् मनं गाल्लद अरिट्टनेमि पण्डितर्
पर-समय-ध्वंसक ।

२६८ (४५६) श्री वटवर वण्ट

२६६ (४६०) श्री नागवर्य

३०० (४६१) श्री देचय्य ३०१ (४६२) श्री सिन्दय्य

३०२ (४६३) श्री गोवणय्या च्चियल-चतुर्म्मुकं

३०३ (४६४) श्री...गिवर्म्म वावसि मला...ति मार्त्तण्डं

३०४ (४६५)

श्री मलधारिदेवरय्यनण्ण श्री नयनन्दिविमुक्तर गुड्डं मधुवय्य देवरं वन्दिसिदं ॥

विधु-विधुधर-हास-पयो-
म्बुधि-फेन-त्रियच्चराचलोपम-यशन-
भ्यधिकतर-भक्तियिन्दं
मधुवं वन्दिल्लि देवरं बन्दिसिदं ॥

[मलधारिदेव के पिता नयनन्दि के शिष्य मधुवय्य ने देववन्दना की ।]

३०५ (४६६) कण्नव्वरसिय तम्म चावय्यनुं दम्मडय्यनुं
नागवर्म्मनुं वन्दिल्लि देवरं वन्दिसिदर् ॥

३०६ (४६७) श्री सन्द बेल्गोलदल्ले निन्दु...डने विट्टु
अन्दमारय्य मनदल् अगल देवरेम्बरं
काण्व बगेयिन्दं । श्री पेर्ग्गडे रेतय्यन वेदे
सङ्कय्य ।

३०७ (४६८) श्रीमत् एरेयप गामुण्डनु मदय्यनु वन्दिल्लि
व्रतकोण्डर

३०८ (४६९) श्री पुलिकलय्य

३०९ (४७०) श्री काम्बय्य

३१० (४७१) श्रीमन् एलगं क्रियद देव वसद

३११ (४७२) श्री मारसिङ्गय्य ३१२ (४७३) कत्तय्य

३१३ (४७४) पुलिचोरय्यं महध्वजदोज...मणि-वितान-
दोज तेजं

३१४ (४७५) श्री कोपण तीर्थद

३१५ (४८२) सासिर गद्याण

विन्ध्यगिरि पर्वत के अवशिष्ट लेख

३१६ (१८१)

गोम्मटेश्वर के बायें चरण के समीप

श्री-**विटि-देवन** पुत्र प्रताप-**नारसिंह-देवन** कय्यलु महा-प्रधान हिरिय-भण्डारि **हुल्लमय्य** गोमट-देवर पा...... ......वरवरु.........दानक्कं सवणेर' बिडिसि कोट्टर् ।

[महामन्त्री हुल्लमय्य ने विटिदेव के पुत्र नारसिहदेव से (गांव) प्राप्त कर गोम्मटदेव और दान के हेतु अर्पण किये ।]

३१७ (१८७) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय **नयकीर्त्ति** सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल गुड्ड बसविसेट्टि माडिसिदं ॥

३१८ (१८८) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय **नयकीर्त्ति** सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल गुड्ड बसविसेट्टि माडिसिदं ॥

३१९ (१८९) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्री**नयकीर्त्ति** सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुड्ड बल्लेय[द] ण्डना [य] कं माडिसिदं ॥

३२० (१९०) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्री-**नयकीर्त्ति**

सिद्धान्तचक्रवर्त्ति गल गुड्ड बल्लेय
दण्डनायकं माडिसिदं ॥

३२१ (१९१) दुर्म्मुखि संवत्सरद पुष्यमासद
शुद्ध बिदिगे मङ्गलवार
कोपणपुरद... ..य-सेट्टि गुम्मटसेट्टि
दनद.........वादरु......

३२२ (१९२) श्रीसंवत् १५४६ वर्ष जेष्ट सुदि ३ रवि
[नागरी लिपि में] वासरि गोम्मट स्वामी की जात्रा कियो
गोमट बहुपालै प्रजौसवालै कदिकवंस
ब्रमचारी पुरस्थाने पुरी भ्रात्रुपुत्रसम...

३२३ (१९३) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिं गल-
शिष्यरु श्रीबालचन्द्र देवर गुड्ड
अङ्किसेट्टि अभिनन्दन देवर माडिसिदं ॥

३२४ (१९४) श्रीमूलसङ्घ देसियगण पुस्तकगच्छ
कोण्डकुन्दान्वयद श्री-नयकीर्त्ति
सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगलगुड्ड कम्मटद रामि-
सेट्टि माडिसिद ॥

३२५ (१९५) श्री नयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल
शिष्यरु श्रीबालचन्द्र देवर गुड्ड सुङ्कद
भानुदेव हेग्गडे माडिसिद अजित-
भट्टारकरु ॥

३२६ (१६६) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुड्ड बदियमसेट्टि माडिसिद सुमति भट्टारकरु ॥

३२७ (१६७) श्री मूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय नयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल गुड्ड बसविसेट्टि चतुर्व्विं-शतितीर्त्थकर माडिसिदं ॥

३२८ (१६८) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्रीबालचन्द्र देवर गुड्डकल्लेय महदेव सेट्टि मल्लिभट्टारकरं माडिसिद ॥

३२९ (१९९) शक वर्ष १२०२ नेय प्रमाथि सवत्सरद कार्त्तिक शुद्ध १० सोमवारदन्दु श्रीमनु-महा-पसायत्त तिरुमप्प..... धिकारि सम्भुदेवण्न-नवर...लु मल्लण्ननवरु-श्रीगोम्मट ....मङ्गल महा श्री श्री ॥

३३० (२००) सर्वधारि-संवचरद चैत्र-सुद्ध-पाड्य बृहवार दन्दु श्रीगोमट-देवर नित्या-भिपेकक्के बिटेयन हलिय मेणसिन सोयि सेटिय मग मादिसेटि कोट्ट...याण १ पथ २ हालु मान ॥

३३१ (२०१) संवत् १६३५ ..पिमतीच-स । फ
[नागरी लिपि में] सुदीय सेनवीरमतजी श्री-जगतकरतजी
पदाभट्टोदराजी प्ररसटीवदव...ड...
मघोपदे श्री-रायसोरघजी ।

३३२ (२०२) संवत् १५४८ पराभव स. जे. सुद ३
[नागरी लिपि में] मूलसङ्घ अगुषजे श्री-जगद् त...ज्ञाकपड
......लं तडमत् मेदाराजद् सतराव्

३३३ (२०३) संवत् १५४८ वरुषे चैत्र वदि १४ द
[नागरी लिपि में] ने भटारक श्री अभयचन्द्रकस्य शिष्य
ब्रह्मधर्म्मरुचि ब्रह्मगुणसागर-पं ॥
की का यात्रा सफल ।

३३४ (२०४) गेरसोपेयं अप-नायकर मग लिङ्गण्णनु
साष्टाङ्गवेरगिदनु

३३५ (२०५) आमाची रकम ठऊ [ठेऊ]
[नागरी लिपि में] [र] तुमची कम घऊ [घेऊ]

[३३६ से ३५० तक के लेख नागरी अक्षरों में हैं]

३३६ (२०६) श्री गणशाअ नम शाओ हरखचन्ददसजी
शवत १८00 मीगशर वीदी १३ गराऊ ।

[श्री गणेशाय नम । साव हरखचन्द्रदासजी संवत् १८०० मगसर वदि १३ गुरौ]

३३७ (२०७) श्री गणेसा अ नमः साओ कपूरचन्द मेतीचन्द शतीदी रा सावत १८00 मगशरा वदी १३ गराऊ।

[श्रीगणेशाय नमः। साव कपूरचन्द मोतीचन्द शतीदी रा सवत् १८०० मगसर वदि १३ गुरो]

३३८ (२०८) सवत १८४२ मह सद ५ अतदस अगरवल दलवल पनपथय व सट भगवनदस जतरक अय।

[सवत् १८४२ माह सुदी ५ अतदास अगरवाला दिल्लीवाला पनपथिया वो सेठ भगवानदास जात्रा का आये]

३३९ (२०९) सवत १८00 पोस वद १४ मङ्गराय वालकीसनजी तंसुवको षण्डेलवाल बुधलाल गङ्गरामज करयो मेग......

३४० (२१०) सवत १८00 मत असड सद १० सनचरवर सतप रयज बलकसनज अजदतज चनरय व दनदयल अवट अजदतज इक जतर इसथन पठक अगरवल सरवग पनपथक गयलगत अयथ

[सवत् १८०० मिती आषाढ सुदि १० शनीचरवार सन्तोपरायजी वालकिसनजी अजीतजी चैनराय व दीनदयाल व बेटा अजीतजी एक जातरा स्थान पेठका अगरवाला सरावगी पानीपत का गोयल गोत्री आये थे]

३४१ (२११) सवत १८०० पस वद ६ मगलवर
बनवरलल दनदयल क बट ।

३४२ (२१२) सवत १८१२ वसह सद ११ वर मगल
बलरम रमकसन क बट अ [गरव]
ल सर [वग क] स रय ग [कल]
गढय वसह......इ......र.........

[सवत् १८१२ वैसाख सुदि ११ वार मङ्गल बलीराम रामकिसन का बेटा अगरवाला केसोराय गोकलगढिया वैसाख ...]

३४३ (२१३) सवत १८४३ मत मह वद ३ लष [म]
ण-रयक बट तडर मल नरठनवल नत-
मल गनरम धन......पै...........
दज परप......नरक सहनवल

[सवत् १८४३ मिती माह वदि ३ लक्ष्मणराय का बेटा तोडरमल नरठनवाला (?) [नत]थ[मल गनीराम धन........]

३४४ (२१४) सवत १८१२ मत वसह वद ८ वर सन
सठ रजरम रमकरसन मगत रयक बट
गयल गत...र..... सरपल सभनथ बट
नय......क बट ।

३४५ (२१५)...........सद मगल वर नय......
नरयनज वहड...... .....रथय......इ
जहतय रमदनमल कसद.........बमदय

कमद जैनदरयज......वन... .....ग
......रलम . ...

३४६ (२१६) कमवराय का वेटा सवत १८१२ वसष सद ११ वर मगल-वर समर-मलक वट मज-रम गगनय सडनगड पनपथय अगरवल ।

३४७ (२१७) समत १८00 जट सद ३ करवधक सट इमणपन थनय यमढ.........र... .. र ..लसराय...रयज इसरमज लसनय हलसरय वलकदस सरवग अगरवल पनपथ गरगगत वनय सननय ।

३४८ (२१८) उदसग वगवल रतत... रजप... .. प वल ।

३४९ (२१९) सवत १८१२ वमह मद ८ नवलरय सकरटमक वट अयथ ।

३५० (२२०) सवत १८१२ मत वसष सद ८ सनच-रक दन सतपरय: मगनरमक वट जइकर-नक पत सरवग

३५१ (२२१)

अष्ट-दिक्पाल मण्डप की छत के मध्य भाग में गोलाकार

(उत्तर) अरसू-आदित्यङ्गवाचाम्बिके गवोलविनि

पुट्टिदर् पम्पराजं हरिदेवं मन्त्रि-यूथाग्रणि
गुणि बल-

(पूर्व) देवण्णनेन्दिन्तिवर्म्मूवरुमुर्व्वी-ख्यात-कर्ण्णाटिक
कुल-तिलकम्माचि-राजङ्गे मावन्दिररात्यु
ग्रचण्ड-शक्तर्-

(दक्षिण) -जिनपति-पद-भक्तर्म्महाधारयुक्तर ॥
सकल-सचिव-नाथः साधिताराति-यूथः ।
परिहृत-पर-दारो

(पश्चिम) ....भारती-कण्ठ-हारः ।
विदित-विशद-कीर्त्तिर्व्विश्रुतोदार-मूर्त्ति-
स्स जयतु बलदेवः श्री जिनेन्द्राङ्घ्रि सेवः ॥

[अरसादित्य (व नृप आदित्य) और आचाम्बिके को सुख देनेवाले तीन पुत्र उत्पन्न हुए—पम्पराज, हरिदेव और मन्त्रि-समूह में अग्रगण्य, गुणी बलदेव । ये लोक-प्रसिद्ध कर्ण्णाटक कुल के तिलक, माचिराज के पितृव्य, शत्रुओं के लिए प्रचण्ड-शक्ति, जिन-पद-भक्त महा साहसी थे । समस्त मन्त्रियों के नाथ, शत्रुओं को वश करनेवाले, परस्त्री-त्यागी, सरस्वती देवी के कण्ठहार, विशुद्ध कीर्त्ति, प्रसिद्ध और उदार-मूर्त्ति जिनेन्द्र-पद-सेवी बलदेव जयवान् हो ।]

३५२ (२२२) कालायुक्त संवत्सरद माघ ब १२ लु
गुम्मि सेट्टि मग....................सेट्टि
दर्शनव आदनु ॥
कालायुक्त संवत्सरद माघ ब १२...पुट्टण्न
मग चिकण्नतु दर्शनव आदरु ॥

३५३ (२२९) .. . ...क-संवत्सर श्रावण सु ५...

... ...

... .

सि......पाल... . आ-ग्रामदल्लि ना..

कियना.. य...ग्रामक्के मल्लु . दल्लु... ..

कट्टु...डारम्भ-नीरारम्भ-सकल-सुवर्णा-

दाय-सकल-द्रवसादाय आ......गरु

आ-ग्राम......ग११... ..वरहगलनु ।

[इस लेख में मय नगद और अनाज की आमदनी के किसी ग्राम के दान का उल्लेख रहा है ।]

३५४ (२३०) कु............फाल.........अनुभ...

को . ...य सीमेगे बेक्कद .....कण्डुय

......वूलि . ...आ-ग्रामक्के...वनु नीवे

तेत्तुकोण्डु... .... आ-ग्रामदलिन नमगे

मल्लुत्र पत्तिगंयनु पौत्रपारम्परे आ-चन्द्रार्क्क

स्थायियागि अनुभविसिकोण्डु बरुवदु यी

.........क्रय-साधन......यी-मर्य्यादि

..... क्रयसाधन . ... र्य्या ......

नाग-गवुडन.........द स्थानीक......

......साच्चिगलुन......हलिय...बाल

मल्ले देवरु नव्जेगवुड हिन्दल .....द

कोत्तनगवुड बसट्टर गवुड......हलिय
तिर्त्तवन मुयि मर्य्या.........

[यह किसी ग्राम का बैनामा सा ज्ञात होता है ।]

३५५ (२३१) पण्डित देवरु माडित्तु माहाभिषेकदोलगे
हालु-मोसरेगे २ पूजारिगे १ भागि केल-
सिगलिगे कलुकुटिगरिगे भागि २ भण्डि-
कारङ्गे १तप्पिदवर कै सास्ति चरु हरियाणी

[लेख का भावार्थ कुछ संदिग्ध है । शायद इसमें महाभिषेक के लिए व पुजारियों, कारीगरों और मजदूरों को पण्डित देव के दान का उल्लेख है ।]

३५६ (२३२) श्रीमतु व्यय संवत्सरद माग सुद्ध १३ नेय
त्रयोदसियलु करिय-कान्तणसेट्टियर मकलु
करिय-बिरुमण सेट्टियर तम्म करियगुम्मट
सट्टियरु बिडितियिन्द सङ्गव कुडिकोण्डु
बेलुगुलदलु गुम्मटनाथन पादद मुन्दे रत्नत्र-
यद नोम्पिय उद्यापनेय माडि सङ्घपूजेय
माडि कीर्त्तिपुण्यवनु उपार्जिसिकोण्डरु श्री।

[उक्त तिथि को करिय कान्तण सेट्टि के पुत्र व करिय बिरुमण सेट्टि के भ्राता गुम्मटसेटि ने एक संघ सहित बेलुगल की वन्दना की और गोम्मटनाथ के दर्शन कर कीर्त्ति और पुण्य का उपार्जन किया ।]

३५७ (२३३) श्रीमतु करिय बोम्मणगे गुम्मटनाथ ने
गति कं ।

३५८ (२३६) संवत १८०० कत सद ६ सवत १८००
(नागरी लिपि में) पह-स २ पत दव पनपथ दनचद परवल
क वप।

३५६ (२४८) सव १८०० मत पह सद ८ मगलवर
(नागरी लिपि मे) कट रइ व गरघर लल वजमल क बट व
मगतरय कट रयक बट बणमल गमट
सम क जत कर।

३६० (२५१) (यह लेख, शिलालेख नं० ६० (२४०)
के प्रथम १५ पद्यों की हूबहू कापी मात्र है)

३६१ (२५२) स्वस्ति श्रीमतु वड्डव्यवहारि मोसलेय...
वि-सेट्टियरु तावु माडिसिद चवीसतीर्त्थ-
कर अष्टविधार्च्चनेगे वरिषनिबन्धियागि
माणिक्यनकर......शस-नकरङ्गलु कोट्ट
पडिप...गे हाग।...व-सेट्टि बाचिसेट्टि
चिक्क बाचिसेट्टि प २ अम्मेलेय केटि
सेट्टि चन्दिसेट्टि गुम्मिसेट्टि चिक्कतम्म,
प २ आदिसेट्टि चौडिसेट्टि १ बाचिसेट्टि
अथिविसेट्टि जक्कवेमैदुन बोडिसेट्टि
बाचि सेट्टि मारिसेट्टि वम्मिसट्टि प २
माचि सेट्टि नम्बिसेट्टि मसणिसेट्टि केति-
सेट्टि प २ केतिसेट्टि रेविसेट्टि हरियम-
सेट्टि कोम्मिसेट्टि आदिसेट्ट चिक्क-केति

सेट्टि प २ पट्टण स्वामि चन्देसेट्टि सोम-
सेट्टि केतिसेट्टि प २ सोडलिसे सेट्टि
बाकवेचट्टि.........केमि सेट्टि प १...
..द......चिक ..हेगाडिति पट्टण-
स्वामि मलिसेट्टि कामवे प २ बम्मेय
नायक दोचवे नायिकित्ति चिक्क पट्टण
स्वामि प २ बाहुबलिसेट्टि पारिषसेट्टि
बसविसेट्टि बरत बाहुबलि प २ सङ्क-
सेट्टि एचिसेट्टि चोडिसेट्टि बाचिसेट्टि
सक्किसेट्टि प २ नागिसेट्टि करियशान्ति-
सेट्टि बवणसेट्टि बोप्पसेट्टि प २ मैलि-
सेट्टि महदेव सेट्टि हारुवसेट्टि प १
काविसेट्टिय पारिषसेट्टि ग्रादिसेट्टि
प १ ग्रोडेयचसेट्टि जक्किसेट्टि प १
तिप्पसेट्टिय बसविसेट्टि चिक्क तिप्पि-
सेट्टि प १... .....य पदुमनसामि-
सेट्टि बमक्चि पदुम प १ देसिसेट्टि
कलिसेट्टि केतिसेट्टि बम्मिसेट्टि प १...
यटद राचमल्लसेट्टि यरु पट्टण स्वामि
जकरसरु होय्सलसेट्टि बीचसेट्टि पट्टण
स्वामि मलिसेट्टि चाकिसेट्टि दासिसेट्टि
प ३ नेमिसेट्टियरु प २ नाविसेट्टि देवि-

सेट्टि चट्टिसेट्टि कातवेसेट्टिति प २
पट्टणस्वामि बोप्पिसेट्टि बोकिसेट्टि तम्म
चोप्पिसेट्टि बसविसेट्टि बाहुबलिसेट्टि
जक्कवे अत्तियक्क प २ अङ्करिक कालि-
सेट्टि सोमिसेट्टि चन्दिसेट्टि देविसेट्टि
चिक्क कालिसेट्टि प २ सोविसेट्टि चङ्गिसेट्टि
बम्मिसेट्टि प १ होन्निसेट्टि पारिष सेट्टि
कुप्पवे प २ माचिसेट्टि चट्टिसेट्टि गङ्गि-
सेट्टि कालिसेट्टि मारिसेट्टि प २ मङ्गि-
सेट्टि वर्द्धमानसेट्टि पारिषसेट्टि प २
काविसेट्टि देविसेट्टि बम्मसेट्टि प १
गुम्मिसेट्टि माकिसेट्टि गोम्मटसेट्टि
माचिसेट्टि प १ मसणिसेट्टि लक्कुमि-
सेट्टि प १ बहणिगेय बम्मवेय केटि-
सेट्टि प १ दनसेट्टिय म.. वसेट्टि देमि-
सेट्टि चामवे प २ बाचिकवेय बम्मि-
सेट्टि पारिपसेट्टि चिक्क पारिपसेट्टि बेलि-
सेट्टि सोमसेट्टि गोम्मट सेट्टि केतिसेट्टि प२
महदेवसेट्टिय चेट्टिसेट्टि रामिसेट्टि चट्टि-
सेट्टि प २ पद्मसेट्टि होल्लसेट्टि गोम्मट-
सेट्टि लक्कुमिसेट्टि पोचम्म नाकिसेट्टि
महदेवसेट्टि प २ नागर-नविलेय केति-

सेट्टियमग बम्मिसेट्टि गुज्जवे प २ सेलदि
सेट्टि मसणिसेट्टि महादेवसेट्टि प १
वासुदेव नायक रामचन्द्र पण्डित चिक्क-
वासुदेव प २ सेनबोव-तिब्बसेट्टि प १
जयपिसेट्टि बम्मि सेट्टि पदुमिसेट्टि
चिक्कजयपिसेट्टि प २ अड्डडिय महदेव-
सेट्टि गोम्मटसेट्टि महदेवि सोमक्क प २
केतिसेट्टिय आदिसेट्टि प १.........
...ट्य .....मग अक्कडिप्प पडि...होड्ड
गद्याण नाल्क कोडुवरु ४ वर्द्धमान हेग्गडे
नागवे हेग्गडिति बाहुबलि कलवे प २
केदार वेग्गडे कन्नवे हेग्गडिन्ति जक्कण्न
हुरिय कडलेय केति सेट्टि जक्किसेट्टि प २
कालिसेट्टि मरुदेवि चागवे हेग्गडित्ति
बोक्कवे-हग्गडित्ति प २

[मोसले के बड्डव्यवहारि बसवि सेट्टि के प्रतिष्ठित कराये हुए चतुर्विं-
शति तीर्थङ्करों की अष्टविध पूजार्चन के हेतु उपर्युक्त सज्जनों ने उपर्युक्त
वार्षिक चन्दा देने की प्रतिज्ञा की।]

३६२ (२५७) श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं॥१॥
स्वस्ति श्री शकवर्ष १३७१ नेय युव
संवत्सरद वैशाख शुद्ध १० गु. स्वस्ति

श्रीमतु चारुकीर्त्ति पण्डित देवरु-गलु
अवर शिष्यरु अभिनव-पण्डित-देवरुगलु
बेलुगुलद नाड गवुडुगलु माणिक्य नख-
रद हलरु पण्डितु स्थानिकरु वैद्यरु... ..
......यरु

[यह लेख अधूरा है। इसमें बेलुगुल के चारुकीर्त्ति पण्डितदेव और अभिनव पण्डित देवका उल्लेख है]

३६३ (२६०) सके १६५५ आश्वीज वदि ७...खेरा-
(नागरी लिपि में)मामा पुत्र .....मखीमा........ श्री
सक... .....वानापेसा.. ....
......गया सफल श्री ।

३६४ (२६१) सके १६५३ आश्वीज-वद ७ खेरामासा
(नागरी लिपि में)पुत्र हीरामाळा पणेतुणखा जात्रा सफल।

३६५ (२६२) सके १६६३ आश्वीज वद ७ खेरामासा
(नागरी लिपि में) पुत्र धरमामाळा पैात्र जागा.........
जात्रा सफल ॥

३६६ (२६३) सके १६४३ पैास वदि १२ शुक्रवारे
(नागरी लिपि) भण्डवेड कीर्त्ति सहित उघरवल जाती
हीरासाह सुत हासला सुत चागेवा
सोनाबाई राजाई गोमाई राधाई मन्नाई
सहित जात्रा सफल करी कारज कर ।

३६७ (२६४) वेय नाम संवत्सरद कार्त्तिक सुद्ध अष्टमी
(अखण्डवागिलु के थि गुरुवार ॥
बरामदे में)

३६८ (२६५) स्वस्ति श्री मूल सङ्घ देशियगण
(द्वारे के पास भुज- पुस्तकगच्छ श्रीगण्डविमुक्त सैद्धान्तदेवर
बलिस्वामी के पाद- गुड्ड भरतेश्वर दण्डनायक माडिसिद ॥
पीठ पर)

३६९ (२६६)

[लेख नं० ३६८ के ही समान]

(द्वारे के पास भरते-
श्वर के पादपीठ पर)

३७० (२७०) श्रीमतु आस्वैज सुद्ध ९ ल्ल बेगूर गामेय
नरसप्पसट्टियर मग बैयणनु स्वामि-दरु-
सनव माडि ई-कट्टे कट्टिय अरवटिगे
निलिसिदरु ॥

[उक्त तिथि को बेगूर के गामेय नरसप्पसेट्टि के पुत्र बैयण ने स्वामी के दर्शन किये, यह कुण्ड बनवाया और उस पर छप्पर डलवाया।]

३७१ (२७१) सोमसेन देवर गुड्ड गोपय बैचक्क

३७२ (२७२).. भुवनकीर्त्तिदेवर शिष्य......कीर्ति-
देवर निशिधि ।

३७३ (२७५) बनवासिवस्था.........रद...रा......

३७४ (२७६) सिंहनन्दि आचार्य्यरु ॥

३७५ (२७८) पूताबाई........जगदाई पणास जात्रा
(नागरी लिपि में) सफल ॥

३७६ (२७६) पूतनाई पुत्र पण्डि...पु..

(नागरी लिपि में)

३७७ (२८०) श्रीमतु आस्वे बहुल १ यलु भारगवेय नागण्ण-सठर मग जिननणु बेलुगुलद चारुकीर्ति भटार श्री पादव के थिसिदरु श्री ॥

[नं० ३७८ से ४०४ तक के लेख नागरी लिपि में हैं।]

३७८ (२८३) चीतामनस तवरा माणकर ई-कर

३७६ (२८४) सके १६४२ वैसाप वदी १३ बु गडासा धर्मासा कोट्टसा सो मानीकसाच नमस्कार (कनाडी लिपि में) माणिकसा

३८० (२८५) . ..मा ....प्र......के १६४२... क वदी १३ मरिवहीरा जात्रा सफल ॥

३८१ (२८६) श्री काष्टसङ्घे ॥

३८२ (२८७) शक १५६७ पार्थिव-नाम सवत्सरे वैशाष मासं शुक्ल पत्ते चतुर्दशी दिवसे श्री काष्टसङ्घे वघेरवाल जातीय गोनासा गोत्रे सवदी वावुसार्या जायताई तयो पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र सन्नोजसार्या यमाई तयो पुत्रा यरु...मध्य सीमा सङ्घवीन्या सङ्घवीन्यार्जुनसीत ग्रामे सम्प्रणमति द्वितीय पुत्र सङ्घवी पदर्जायार्या तानाई तयो पुत्रौ

द्रौ चिट्टभार्य्या कमलाजा पुत्र एशोजा पदाजी सङ्घवो द्वितीय पुत्र गेसाजीति सम्प्रणमति हीरासा धरमासा माडगडी।

३८३ (२८८) शाके १५७४ चैत्र सुधी ५ आलधा। जगस वाल्वान्त-पुसा त्याचे भाऊ गोनसा समसनी धर्म वष्ल आ ॥

३८४ (२८९) सक १५७४ चैत्र वद १० प। जीनासा सुत जीनदास

३८५ (२९०) चैत्र वदी ६ पं। सक १५७४ सा। अ-लीसा जात्रा सफल ॥

३८६ (२९१) श्री काष्टसङ्घ माडवगडी १५७७ सनमथ नाम संवदसरे कार्तीक वदी १५ हीरासा घुसाईछ पुत्र धरमासा ईराई पुत्र सानसा व हीरासा वषूतगडेसा तप दमा कावे जात्रा सफल भाताई चे जात्रा ॥

३८७ (२९२) सके १५७७ मनमथ नाम संवत्सरे कार-तिक वदी पाडिव १ तलीची मारमा कालावा मारमा जीवामा जीवाजी पाही घ्यानयजी वानदीका जामखेडकर साता कातीमा करका जत्रा।

३८८ (२९३) सके १६७४ चै. वदी ६ धवाउसा मानीकसा जत्रा सफली ॥

३८९ (२९४) १७६४ सुरजन साफल

३९० (२९५) सके १७५४ चैत्र वदो ५ जत्र करी सफल

३९१ (२९६) सुपुजीश नेमाजी सामजी सरत योगोई

३९२ (२९७) सके १६४० फालगुन सुदी १ गु. देमासा मानीकसा गविल (कनाड़ी मे) देमामा रजा

३९३ (२९८) सके १५८४ वैशाप सुदा ७ श्री काष्टासङ्घे पीतलागोत्रे लपसा पु हीरासा रामाग्मा जात्रा सफल ।

३९४ (२९९) ब्रह्मरङ्ग सागर पं। जसवन्त ।

३९५ (३००) प गोविन्दा माथ गङ्गाई

३९६ (३०१) संवत् १७१८ वर्षे वैशाष सुदि ७ चन्द्रे श्री काष्टासङ्घे पण्डित

३९७ (३०२) सके १५६८ सावछरे फालगुन वदि ६ तदा......स......पुत्र चौछक...... याग्रमा......अगार.. ...अ रघु...... छा चौछक......

३९८ (३०३) आम्भ्राजी का जन्माजी का तप

३९९ (३०४) माघ सुदि ६ पेडेक...त्रा घडे...जात्रा सफल ॥

४०० (३०५) सवत् १५६६ पार्थिव नाम संवत्सरे माघ शुदी पाडिव माचा......पुत्र धावर...जात्रा सफल ॥

४०१ (३०६) सके १५६६ पार्थी नाम संवत्सरे सेगने- मासा तसे मायो जीवाई भीवभा जेट सुध ३

४०२ (३०७) १३५ जीवा सङ्गवी १३५ अड्ड सङ्गवीचा गोगासा

४०३ (३०८) व्र । आपसाजी व्र ॥ रत्नसागर

४०४ (३०९) गुडघटिपुर...गोविन्द जीवापेटी सवडी सफली ।

४०५ (३१०) १५६२ श्रीमतु पार्तिव संवत्सरद वैशाख सुद पञ्चमी कमल परद कमवोळ्येनिम सुरप नगपत वलभ नम गोत्र मग जिनप सुरप इगवरुं चिखणद सेटि...

४०६ (३११) हालेजन ममणेय कट्टि विड्डवर गण्ड वोडेयर हेण्डतिय गण्ड बोयसेट्टिय मह कोड

४०७ (३१४) जिन वर्म्मन कह्लरिय ध्वनि किविवुगं दुर्ज्जनङ्गे भयमुं सुजनङ्ग अनुरागमुमुदै- सुगुं घननाददिनेन्तु हंसेगं नविलिङ्गे

४०८ (३१५) कोलिपाक माणिक्यदेवन गुड्ड जिन-
वर्म्म जोगि कडूरि-जगदाल मोरसूर
आदिनाथ नमोऽस्तु ।

४०९ (३१६) श्रीमत् रूवारि बिदिगइ कम्मटद सुलेरिद
मुट्टिदर मेयिजायिले पेरगगिन् ।

४१० (३१७) परनारी पुत्रक मण्टर तोल्तु कंलेगे कुप्पति
पिसुणगडसर्प्पतोदल्दर वीव बावन वण्ट
गुण्डचक्र जेड्डुग

४११ (३१८) स्वस्ति श्री पराभव-संवत्सरद मार्ग्गशिर
अष्टमी शुक्रवारदन्दु कोमरच णा अकन
तम्म मले आल-अप्पाडि नायक इछिदु
चिक्कवेट्टक्केच्च ॥

४१२ (३२०) गडिव गद्दंगे क ४८

४१३ (३२२) विजयधवल । ४१४ (३२३) जयधवल

४१५ (३२४) सके १५७५ मास्त्रा पाण्डव गोकेस्वा-
(नागरीलिपि में) सस्नोजीन्वो सफल जत्रा ।

४१६ (३२५) माणि-वीरभद्रन पण्डरद नपा...कन
...वैरव वीरेव...हिय...न...तन...

४१७ (४७६) ओं नमो सिद्धेभ्य ॥ श्री गोमटेश प्रसन्न
धरणप्पासूज ॥ हुव्वल्लि स्मरणार्थ चि ।
मातप्पा अरपण हुव्वल्लि ।

[यह लेख एक घण्टे पर है। धरणप्पासूज की स्मृति में मातप्पा ने अर्पण किया]

४१८ (४७७) श्रीमल्लिसेट्टिय मगलाद र...यिगल निसिधि

४१९ (४७८) काल...कर...ह...ल नेरुवाद...लु
अमर...वगे...चले...कस...य गडे
गौडगं...नण्टर पं...न बान......रिद
युगल न... चन्द...प्पं केञ्चगौड गरु
यह्न......धार या...द

४२० (४७९) पण्डितय्य

४२१ (४९५) विरोधिकृतुसंवत्सरद जेष्ट शुद्ध १० श्री मूल-
सङ्घ देसिगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद
श्रीमद् अभिनव पण्डिताचार्य्यर शिष्य सम्य-
क्तचूड़ामणि एनिसिद आभव्योत्तमनु तलेहद
नागि सेट्टिय सुपुत्र पाइसेटि श्री गुम्मटनाथ
स्वामिय पूजेगे सम्पगेय मरन' बलि समर्प्पसिद
पलदिन्द जिनेश्वरन चरणस्मरणान्त-करणनु सुख
समाधियिन्द सुगति प्राप्तनादुदक्के मङ्गल महा
श्री श्री श्री।

४२२ (४९६) स्वस्ति श्रीमतु जिनसेनि भट्टारक पट्टा-
चार्य्यरु कोल्लापुरद वरु सङ्घ सहवागि
रौद्रि संवत्सरद वैशाख सुद्द १० सक-

वार दिन दरुशनव माडिदरु ॥ सि...द
......कोट्ट......

४२३ (४९७) श्री व्यय संवत्सरद माघ सुद्द १३ नेय
त्रयोदशियलु श्रीजकुल...लसेट्टि पद्मा-
वती वज्र कचा...क.. मप्प नाड अरु
मन्दि के...थ.. .....दके......द...

४२४ (४९८)......श्री व्यय संवत्सरद माघ सुद्द१३
नेय त्रयोदसियलु किरिय कालन सिटि-
यर अलियिन्दिरु सेट्टि नेमणसेट्टियर मग-
सेट्टि ब्रंमयसेट्टि गोम्मटनाथन पादद
मुन्दे तसा...यनागि कम्बय .....दिदलु॥

४२५ (४९९) सुभमस्तु। विक्रम नाम सव .. ....
राज्य.........सक.........न नमि...
...र ..डिचलु ..लु...

श्रवण वेल्गुल नगर के अवशिष्ट लेख

४२६ (३३१)

अक्कन वस्ति में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति पर

श्री-मूलसङ्घ-देशिगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दान्वयके
सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती **नयकीर्त्ति**-मुनीश्वरो भाति ॥१॥
तच्छिष्योत्तम-**बालचन्द्र**-मुनिप-श्री-पाद-पद्म-प्रिया
सर्व्वोर्व्वी-नुत-चन्द्रमौलि-सचिवस्यार्द्धाङ्ग-लक्ष्मीरियं ।
आचाम्बा रजताद्रि-हार-हर-हासोद्ययशो-मञ्जरी-
पुञ्जीभूत-जगत्रया जिन-गृहं भक्त्या मुदाकारयत् ॥२॥

४२७ (३३२)...तातीराव सुदीपरा...पमघदेव

४२८ (३३७) श्रीमत्**पण्डिताचार्य्य** गुड्डि देवराय
महारायर राणि **भीमादेवि** माडिसिद
शान्तिनाथ स्वामि श्री ॥

४२९ (३३८) श्री**पण्डितदेवर** गुड्डि बसतायि माडि-
सिद वर्द्धमान स्वामि श्री ॥

४३० (३३९)

मङ्गायि वस्ति के द्वितीय दरवाजे की चोखट पर

स्वस्ति श्री मूलसङ्घ देशियगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दा-
न्वय श्रीमद्-अभिनव-**चारुकीर्त्ति**-पण्डिताचार्य्यर शिष्ये

सम्यक्त्वचूडामणि रायपात्र-चूडामणि वेलुगुलद मङ्गायि माडिसिद त्रिभुवनचूडामणि येम्ब चैत्यालयक्के मङ्गल-महा श्री श्री श्री ॥

[श्री मूलसङ्घ देशिय गण, पुस्तक गच्छ, कोण्डकुन्दान्वय के अभिनव चारुकीर्त्ति पण्डिताचार्य के शिष्य वेलुगुलवासी सम्यक्त्व चूडामणि मङ्गायि द्वारा निर्मापित त्रिभुवन चूडामणि नामक चैत्यालय का मङ्गल हो।]

४३१ (३४८)............छनं ...शासनं...परोत्त

·····रय . द्मु......तुडि... ....

लान्तरक...लायदेवर तत्सिष्य......ज्य

...दावा... ....तत्सिष्य ....

अभेयनन्दि ....सिद्धान्ति देवर

देव............द्धान्तिदेवर.........

वचन्द्र...... ..सुरकीर्त्ति त्रैवि......

चन्द्र भट्टा......गुणचन्द्र

.........भट्टारक.........भट्टा-

रकर......कटका......व

.........त कमल.........प्रह

....ध्याह्लकल्पवृत्त वासु

पू...य... ..सित्तति...क श्री...

......दु......योगि तिल

.........दं श्रीमा.........तया
त्मक तत्प्र......वे ॥ श्रीकू.........यव
......ताय............रमल... ..मृ
अन्वयाभिधान अभिनव स्वार च चतु...
...चक्रवर्त्ति

......मा र........... त्प्रमे...
...............गु...............
....
...कपडि.........

४३२ (३५०) पिङ्गल-स......द्व ५ लु स.........
गण पुस्त.........न्दान्वयद.........
र्त्ति पण्डिताचा......तरकलगु......र
मदवलिगे कि......ड्डिपूर दन.........
मि सेण्टियर.........बेलुगुलके ब

४३३ (३५३)

पूर्णैया की सनद जो कागज पर लिखी हुई बेल्गुल के मठ में है

शुक्ल-संवत्सरद फाल्गुन ब ८ बुधवारदलु श्रीमत्तु पूर्णैयनवरु किक्केरि ग्रामील गवुडैयगो बरसि कलुहिस्त कार्य

अदागि स...द कलगण **धर्मस्तलदिन्दा कौमारहेग्गडियवरु** अवण बलगुलक्के देवर दरुशनक्के बन्दु यिद्दु हजूरिगे बन्दु यिद्दु अरिके-माडिकोण्डद्दु पूर्वक्के **कृष्णराज**-वडयरवरु अवणबलगुलदल्लि यिरुव चिक्क-देवराय-कल्याणि-समीपद दान-श्यालि-धर्मक्के किक्केरि-तालूक कराल्लु यम्ब ग्राम-वन्नु नडसि-कोण्डु बरुवन्तॆ सन्नदु बरशि कोट्टुदु हाजरु यिधे यन्दु बन्दु तारिशि दगिन्दा कदले-माडूसि यिधित्तु यी-कवालु-ग्रामद हुट्टु-वलि वीग गु ८०-यम्बत्तु वरहायिरु-वदरिन्दा अवण बलगुल-दल्लि यिरुव चिक्क-देवराय-कल्याणि-समीपदल्लि नडव दान-श्यालि-धर्म्मक्के गोमटेश्वर पूजिगे अवण बलगुलदल्लि यिरुव मटद मन्न्याशि **चारकीर्ति**-पण्डिताचार्यर मटक्के द वेच्चक्के सहा ग्रामवन्नु प्रमोदूत-संवत्सरद आरभ्याग्राम यिवर तावे माडूसि नेम्मदि-गूडि नडशि कोण्डु बरुवदू यी ग्रामदल्लि पालु-वूमि मागुवलि माडूसिकोण्डु केरे कट्टे कट्टिसि कोण्डु ग्रामक्के राजपत्तु तन्दु येनु जास्ति हुट्टुवलि यिवरु माडि कोण्डाग्यू मदरि वरद मटद वेच्चक्के देवर पूजिगे दान-स्यालिगे सहा उपयोगा-माडिको-लुवद हॊरतु सरकारद तण्टे माड कॊलस-विल्ला मराग-गूडि नडसिकोण्डु वरुवदु तारीकु २८ ने माहे **मार्चि साल** १८१० ने यिस वीयल्लु सद्रि वरद मेरिगे नदै-शिकोण्डु बरुदु श्री ताजाकलं यी-सन्नदु दसरक्के वरशि कोण्डु असल सन्नदुन्ने हिदक्के कोडुवदु रुजु श्री पैवस्तकि पाल्गुण व १० शुक्रवार स्तल दाकलु ।

[धर्मस्थल के कोमार हेग्गडि ने आकर कृष्णराज वडयर के समय की एक सनद पेश की जिसमें किक्केरि तालुका के कशालु नामक ग्राम का वेल्गुल के चिक्कदेवराय के समीप की दानशाला के हेतु दान दिये जाने का उल्लेख था। इसी सनद के अनुसार उक्त तिथि को पूर्णय्य ने यह सनद दे दी कि उक्त ग्राम की आय, जो उस समय ८० वराह थी, उक्त दानशाला और वेल्गुल के मठ के हेतु काम में लायी जाय। भविष्य में आय में जो वृद्धि हो वह भी इसी हेतु खर्च की जाय यह सनद उक्त तिथि को सरकारी दफ्तर में नकल कर ली गई।]

४३४ (३५४)

सुम्मडि कृष्णराज ओडेयर की सनद उसी मठ में कागज पर

श्रीकण्ठाच्युत-पद्मजादि-द्विषद्-चक्रोद्ध-तेजःछटा-
सम्भूतामतिभीषण-प्रहरण-प्रोद्भासि बाह्वष्टकां।
गर्जत्-सैरिभ-दैत्य-पातित-महा-शूलां त्रिलोकी-भय-
प्रोन्माथ-व्रत-दीक्षितां भगवतीं चामुण्डिकां भावये ॥१॥

निदानं सिद्धानां निखिल-जगतां मूलमनघं
प्रमाणं लोकाना प्रणय-पदमप्राकृतगिरां।
परं वस्तु श्रीमत् परम-करुणासार-भरितं
प्रमोदानस्माकं दिशतु भवतामप्यविकलं ॥ २ ॥

हरेर्लीला-वराहस्य दंष्ट्रा-दण्डस्स पातु नः।
हेमाद्रि-कलशा यत्र धात्री छत्र-श्रियं दधौ ॥ ३ ॥

नमस्तेऽस्तु वराहाय लीलयोद्धरते महीं ।
खुर-मध्य-गतो यस्य मेरुः कणकणायते ॥ ४ ॥
पातु त्रीणि जगन्ति सन्ततमकूपाराद्धरामुद्धरन्
क्रीडा-क्रोड-कलेवरस्स भगवान्यस्यैक-दष्ट्राङ्कुरे ।
कूर्मः कन्दति नालति द्विरसनः पत्रन्ति दिग्दन्तिनो
मेरुः क्रोशति मेदिनी जलजति व्योमापि रोलम्बति ॥५॥

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय-शालिवाह-**शक** वर्षगलु **१७५२** सन्द वर्तमान-**विकृति-नाम-संवत्सरद श्रावण ब० ५ सोमवार**दल्लु आत्रेय-सगोत्र आश्वलायन-सूत्र रुकशाखा-नुवर्तिगलाद यिम्मडि-कृष्णराज-वडयर वर पौत्रराद चामराज-वडयरवर पुत्रराद श्रीमत् सुमस्त-भूमण्डल-मण्डनायमान-निखिल-देशावतंस-कर्नाटक-जनपद-सम्पदधिष्टानभूत श्रीमन्महीसूर-महा-संस्थान-मध्य-देदीप्यमानाविकल-कलानिधि-कुल - क्रमागत-राज-क्षितिपाल-प्रमुख- निखिल-राजाधिराज-महाराज-चक्रवर्त्ति-मण्ड-लानुभूत-दिव्य-रत्न-सिंहासनारूढ श्रीमद्-राजाधिराज-राज-परमेश्वर प्रौढ-प्रतापाप्रतिम-वीर-नरपति विरुदेन्तेम्बर-गण्डलोकैक-वीर यदु-कुल-पयःपारावार-कलानिधि शङ्ख-चक्राकुश-कुठार-मकर-मत्स्य-शरभ-साल्व-गण्ड-भेरुण्ड-धरणीवराह-हनुमद्- गरुड-कण्ठीरवाद्यनेक-विरुदाङ्कितराद महीशूर श्री **कृष्णराज**-वडयर-वरु श्रवण वेलगुलद **चारुकीर्त्ति**-पण्डिताचार्य मठक्के श्रवण वेलगुलद देवस्थानगल पडितर-दीपाराधने वग्गे दागदोजि-केलसद वग्गं सह्रा वरसि कोट्ट ग्राम-दान-शासन-क्रमवेन्तेन्दरे ।

किक्केरि-तालुकु श्रवणबेलगुल दल्लिरुव दोड्ड-देवरु १ अल्लिरुव चिल्लरे-देवस्थान ७ चिक्कबेट्टद मेले यिरुव देवस्थान १६ ग्राम-दल्लिरुव देवस्थान ८ सहा देवस्थान ३२ के सह पडितर-दीपा-राधने-वग्गे नडेयुव नगदु तस्तीकु १२०-शिवायि **चारुकीर्त्ति** पण्डिताचार्य मठक्के नडयुव कब्बालु-ग्राम १ यिदरल्लि पडितर-दीपाराधनेगे सालुवदिल्लवाद्दरिन्द मठक्के नडेयुव कब्बालु-ग्राम १ यिद्दरल्लि पडितर-दीपाराधनेगे सालुव-दिल्लवाद्दरिन्द मठक्के नडेयुव कब्बालु ग्राम मात्र कार्यं माडिसि पडितर दीपाराधने नडेयुव बग्ये श्रवण बेलगुल ग्राम १ उत्तैनहल्लि ग्राम १ होसह-ल्लि ग्राम १ यी-मूरु-ग्रामवन्नु सर्व्व मान्यवागि अप्पणे-कोडि-सुवेकेन्दु अरमने समुरवद लक्ष्मी-पण्डितरु हजूरल्लरिके-माडि-कोण्डद्दरिन्द सह नगदु तस्तीकु मोत्तोप माडिसि बिट्टु यी-मूरु-ग्राम-गलन्नु सह सदरि देवस्थानगल पडितर-दीपारादने मुन्ताद बग्ये **चारुकीर्त्ति**-पण्डिताचार्य मठद हवालु-माडिकोट्टु ई-ग्रामगल बेरीजु पञ्चसालु हुट्टुवलि पटि कलुहिसुवन्ते तालुकु मजकूर आमीलगे निरूपअप्पणे-कोट्टिद्द मेरे आमीलन रुजु मोहर दप्तर दाखले नीसि अर्जियल्लि मलफूपागि बन्द पट्टि पराम्बरिसि कटले-माडिसिरुव विवर बेरीजु (   ) कसबा श्रवण बेलगोल ग्राम असलि १ दाखले कोप्पलु २ केरे १ कट्टे २ के सहा बेरीजु (   ) पैकि वजा जारि यिना-मति-

(यहाँ तीनों ग्रामो की आय का पाँच साल का पुरा ब्योरा दिया है)

यी-मेरे यिरुव ग्रामगलु यिद्दर दाखले-ग्राम केरे कट्टे मुन्तागि सदरि बेलगुलदल्लिरुव दोड्ड-देवरु मुन्तागि ३२ देवस्थान मलयूर्-बेट्ट मेले यिरुव देवस्थान १ सह्वा मूवत्त-मूरु-देवस्थानद पडितर दीपाराधने रथोत्सव मुन्ताद वगैरे यी-देवस्थान गलिगे वर्षन्प्रति दागदोजि आगतक्कद्दु माडिसतक्क वगैरे सह्वा आत्रेय-सगोत्र आश्वलायन-सूत्र ऋक-शाखानुवर्ति गलाद यिम्मडि-कृष्णराज-वडयरवर् पौत्ररादं चामराज-वडयरवर पुत्ररादं श्रीमत्समस्त-भूमण्डल-मण्डलायमान-निखिल-देशावतंस-कर्नाटक जनपद-सम्पदधिष्ठानभूत-श्रीमन्-महीसूर-महासंस्थान-मध्य-देदीप्यमानाविकल-कलानिधि-कुल-क्रमागत-राज-क्षिति-पाल-प्रमुख-निखिल-राजाधिराज-महाराज-चक्रवर्ति-मण्डलानु-भूत-दिव्य-रत्न-सिंहासनारूढ श्रीमद् राजाधिराज राज परमेश्वर प्रौढ-प्रतापाप्रतिम-वीर-नरपति विरुदेन्तेम्बर गण्ड लोकैक-वीर यदु-कुल-पयः-पारावार-कलानिधि शङ्ख-चक्राङ्कुश-कुठार-मकर-मत्स्य-शरभ-शाल्व-गण्डभेरुण्ड-धरणीवराह हनूमद्-गरुड-कण्ठीर-वाद्यनेक-विरुदाङ्कितरादं महीसूर श्री-कृष्णराज-वडयरवरु सर्वमान्यवागि अप्पणे-कोडिसि-धेत्रेयाद-कारण यी-ग्रामगलन्नू यी-विकृति-संवत्सरदारभ्य मठद हवालु-माडिकोट्टु निरुपा-धिक-सर्वमान्य-वागि नडसिकोण्डु बरुवन्ते तालुकु मजकूर ग्रामीलगे मन्नद्टु अप्पणे-कोडिसिधीवागि सदरि सन्नदिन मेरे यी-मूरु-ग्रामगल यल्ले चतुस्सीमा-वलगण गद्दे बेद्दलु मने-हुण कंम्पु-तूलु उप्पिन मोलं योचलु-पैरु पुर वर्ग येरु-काणिके नाम-

काणिके गुरु-काणिके काणिके बेडिके कन्निगाद पोम्मु ग्राले-पोम्मु हट्टि-पोम्मु मार्ग-करगपडि सुङ्क पोम्मु जाति-कूट समया-चार हुल्लु हण चरादाय होरादाय सीगे मड्डि पतङ्ग पोप्पलि गिड-गावलु ब्राह्मण-निवेशन शूद्र-निवेशन सोप्पिन तोट तिप्पे-हल्ल श्रीगन्ध होरतादद मर वलि फल-वृक्ष मद्दिक मुन्ताद ग्रा-सकल स्वाम्यवन्नु रूढिसि कोल्लुत्ता श्रवण बेलगुल-ग्रामदल्लि नेरेयुत्र सन्ने-सुङ्कद हुट्टु वलियन्नु तेग दुकोल्लुत्ता यी-ऐवजिनल्लि देवर सेवेगे उपयोग-माडिकोल्लुत्ता बरुवदु यी-ग्रामगलल्लि होसदागि केरे कट्टे काल्वे अगे मुन्तागि कट्टिसि बाजे-ग्रानु मुन्तागि याव बाविनल्लि येनु हेच्चु-हुट्टु वलि माडि-कोण्डाग्यू सदरि देवर सेवे मुन्तादक्के उपयोग-माडिकोल्लुवदु यम्बदागि श्रवण बेलगुलद चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्य मठक्के आत्रेय-सगोत्र आश्वलायन-सूत्र ऋक-शाखानुवर्त्ति-गलाद चिम्मडि-कृष्णराज वडयरवर पौत्ररराद चामराज-वडेयरवर पुत्ररराद श्रीमत्समस्त-भूमण्डल-मण्डनायमान - निखिल - देशावतंस- कर्नाटक - जनपद-सम्पदधिष्ठानभूत-श्रीमन्महीशूर-महासंस्थान-मध्य-देदीप्यमानावि-कल- कलानिधि - कुल- क्रमागत-राज- क्षितिपाल-प्रमुख- निखिल-राजाधिराज-महाराज-चक्रवर्ति-मण्डलानुभूत-दिव्य रत्न - सिंहा-सनारूढ़ श्रीमद्-राजाधिराज राज-परमेश्वर प्रौढ़-प्रतापाप्रतिम-वीर-नरपति बिरुदेन्तेम्बरगण्ड लोकैक-वीर यदु-कुल-पयः-पारा-वार-कलानिधि शङ्ख-चक्राङ्कुश-कुठार-मकर-मत्स्य-शरभ-साल्व-गण्डभेरुण्ड-धरणी-वराह-हनूमद्गरुड-कण्ठीरवाद्यनेक-विरुदाङ्कि-

तराद् महीशूर श्रीकृष्णराज-वडयर वरु वलगुलद देवस्थान गल पडितर दीपाराधने रथोत्सव वर्षम्प्रति आगतक्क दाग-दोजि-केलसद वर्ग्य सह्वा वरेसि कोट्ट सर्वमान्य-ग्राम-साधन सहि ॥

आदित्यचन्द्रावनिलोऽनलश्च
द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च ।
अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये
धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्त ॥ ६ ॥
स्वदत्ताद्विगुणं पुण्यं परदत्तानुपालनं ।
परदत्तापहारेण स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ ७ ॥
स्वदत्ता पुत्रिका धात्री पितृ दत्ता सहोदरी ।
अन्यदत्ता तु माता स्याद् दत्तां भूमि परित्यजेत् ॥८॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टिं वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ ९ ॥
मद्वंशजाः परमहीपतिवंशजा वा
यं भूमिपास्सततमुज्ज्वलधर्मचित्ताः ।
मद्धर्ममेव सततं परिपालयन्ति
तत्पादपद्मयुगलं शिरसा नमामि ॥ १० ॥

व तारीख ८ नं माहे आगिष्ट सन् १८५० ने यिसवि खत्त अरमने सुब्राय मुनशि हजूरु पुरनूरु सदरि अपणे-कोडि-सिरुव मेरिगे असलि-ग्राम मूरु दाखलि-ग्राम यरडु केरे वन्दु कटे मूरक्के सह जारि यिनामति सिवायि सालियाना कण्ठि-रायि वम्भैनूरु-अरुवत्तारु वरहालु क्याले बेरीजु उल्ल यी-ग्राम-

गलन्नु निम्म हवालु-माडिकोण्डु देवस्थानगल दीपाराधने पडितर
उत्सव मुन्तागि निरुपाधिक-सर्वमान्यवागि नडसि-कोण्डु बरुवदु
रुजु श्रीकृष्ण ।

(यहाँ मुहर लगी है)

[इस सनद का भावार्थ लेख नं० १४१ में गर्भित है ।]

४३५ (३५५)

मठ में अनन्तनाथ स्वामी की प्रभावलि की पीठ पर

(शक सं० १७७८)

(ग्रंथ और तामिल)

श्रीमदनन्तनाथाय नमः

अष्टासप्तत्यधिकात्सप्तशतोत्तर-सहस्रकाद्गुणिते ।
शालिवाहन-शक-नृप-संवत्सरके समायाते ॥ १ ॥
एकान्नविंशतियुतात्पञ्च-शत-सहस्र युग्मकाद्गुणिते ।
श्री वर्द्धमान-जिनपति-मोक्षगताब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥
एक-न्यून-शतार्द्धात्प्रभवादि-गताब्दके सङ्गुणिते ।
एवं प्रवर्तमाने नल-नामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥
मीने मासि सिते पक्षे पूर्णिमायान्तिथौ पुनः ।
अवाङ्क्राशीति विख्यात-बेलगुले नगरे वरे ॥ ४ ॥
भण्डार-श्री-जैन-गेहे श्री-विहारोत्सवाय च ।
आजवञ्जव-नाशाय स्व-स्वरूपोपलब्धये ॥ ५ ॥

श्री चारुकीर्त्ति-गुरुराडन्तेवासित्वमीयुषाम् ।
मनोरथ-समृद्ध्यर्थं **सन्मतिसागर**-वर्णिनां ॥ ६ ॥
वरणेन्द्र शालिया शुम्भत्कुम्भकोणि नपेयुषा ।
अनन्तनाथ-बिम्बोऽयं स्थापितस्सन्प्रतिष्ठितः ॥ ७ ॥
श्री-पञ्चगुरुभ्यो नमः ।

४३६ (३५६)

उसी मठ में गोम्मटेश्वर की प्रभावलि की पीठ पर

(शक सं० १७८०)

(ग्रन्थ और तामिल)

श्री श्री-गोमटेशाय नमः

अशीत्यधिक-सप्त-शतोत्तर-सहस्र-सङ्गुणित-शालिवाहन-शक-वर्षे एकविंशत्यधिक-पञ्चशतोत्तर-द्विसहस्र-प्रमित-श्रीमहति महावीर-वर्द्धमान-तीर्थङ्कर-मोक्षगताब्दे एकपञ्चाशद्गुणित-प्रभवादि-संवत्सरे-सति प्रवर्तमान-कालयुक्ति नाम-संवत्सरे दक्षिणायने ग्रीष्मकाले आषाढ-शुक्ल-पूर्णिमायां शुभतिथौ श्री-दक्षिण-काशी-निर्विशेष-श्रीमद्-बेलगुल-भण्डार-श्रीजिनचैत्यालये नित्य-पूजा-श्रीविहारमहोत्सवार्थं श्रीमच्चारुकीर्त्ति पण्डिताचार्य-वर्य्यान्तेवासि-श्री-**सन्मतिसागर**-वर्णिनां अभीष्ट-संसिद्ध्यर्थं श्रीमद्-गोमटेश्वर-स्वामि-प्रतिकृतिरियं श्रीतञ्जपरीमधिवसद्भिः

गोपाल-आदिनाथ-श्रावकाभ्या प्रतिष्ठापूर्वकं स्थापित ।। भद्रं भूयात् ।।

४३७ (३५७)

नवदेवता मूर्त्ति के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ और तामिल)

श्री शालीवाहन शकाब्दाः १७८० प्रभवादि गताब्दाः ५१ लु शेल्लानिन्र कालयुक्ति नाम सवत्सर आषाढ़ शुद्ध पूर्णिमा-तिथियिल् श्रीमद् बेल्गुलमठत्तिल् श्रीमन् नित्य पूजा निमित्तं श्रीमत्पञ्चपरमेष्ठि प्रतिबिम्बमानदु तञ्जनगरं पेरुमाल् श्रावकराल् सेय्विन्त उभयं ।। वर्द्धतां नित्य मङ्गलं ।।

[बेल्गुल के मठ में नित्य पूजन के लिए तञ्ज. नगर के पेरुमाल श्रावक ने यह पञ्चपरमेष्ठी की मूर्त्ति उक्त तिथि को अर्पित की ।]

४३८ (३५८)

गणधर मूर्त्ति के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ और तामिल)

वृषभसेन गणधरन् भरतेश्वर चक्रवर्त्ति गौतमगणधरन् श्रेणिक महामण्डलेश्वरन् (कन्नड में) कलसदल्लिरुव पदुमैय्यन धर्म्म ।

४३९ (३५९)

पञ्चपरमेष्ठि मूर्त्ति पर

(ग्रन्थ और तामिल)

वेलिगुल मटत्तुक्कु मन्नार्कोविल् सिन्नु मुदलियार् पेण्शादि पद्मावतियम्माल् उभयं शुभं ।

[मन्नार्कोविल के सिन्नुमदलियार् की भार्या पद्मावतियम्माल् ने वेल्गुल मठ को अर्पित की]

४४० (३६०)

चतुर्विंशति तीर्थङ्करमूर्त्ति के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ और तामिल)

स्वस्ति श्री वेल्गुलमठस्य तच्चूरू-अज्जिकाधर्मः

४४१ (३६१)

अनन्ततीर्थंकर प्रभावली के पृष्ठभाग पर

(ग्रन्थ और तामिल)

श्री शालिवाहन शकाब्दाः १७८० श्रीमत पश्चिमतीर्थं-कर मोक्षगताब्दः २५२१ प्रभवादिगताब्दः ५१ लु शेल्लानिन्र कालयुक्तिनामसंवत्सर आषाढशुद्धपूर्णिमातिथियिल् श्रीमत्बे-ल्गुलनगरभण्डारजिनालयत्तिल् अनन्तवृतोद्यापनानिमित्तं श्री

वृषभाद्यनन्ततीर्त्थकरपर्य्यन्तचतुर्द्दशजिनप्रतिविम्बमानदु तञ्ज-नगरं शत्तिरं अप्पावु श्रावकराल् शेट्टित्त उभयं वर्द्धतां नित्यमङ्गलं ॥

[वेल्गुळ नगर की भण्डार वस्ति में अनन्तव्रत के पूर्ण होने पर उक्त तिथि को तञ्जनगर के शत्तिरम् अप्पाउ श्रावक ने प्रथम चतुर्दश तीर्थंकरों की मूर्त्तियाँ अर्पित कीं ।]

४४२ (३६३) श्री चामुण्डरायन बस्तिय सीमे ।

४४३ (३६४) श्री नगर जिनालयद केरे ।

४४४ (३६५) श्री चिक्कदेवराजेन्द्रमहास्वामियवरकल्याणि

४४५ (३६६) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णु-वर्द्धन होय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरो-त्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क...

४४६ (३६७)

जक्किकट्टे के दक्षिण में एक चट्टान पर जिन-मूर्त्ति के नीचे

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डि दण्डनायक-गङ्गराजनत्तिगे दण्डनायक-बोप्पदेवन

वायि जक्कमव्वे मोक्ष-तिलकम नोन्तु नोम्बरे **नयणद्**-देवर माडिसि प्रतिष्ठेय माडिसिदरु मङ्गलमहा श्री श्री ।

४४७ (३६८) स्वस्ति श्रीमत्सुभचन्द्रसिद्धान्तिदेवर गुड्डं श्रीमनु महाप्रचण्डदण्डनायक गङ्ग-पय्यगलत्तिगे शुभचन्द्र देवर गुड्डि जक्कि-मव्वे करेय कट्टिसि **नयणन्द्** देवर माडि-सिदरु मङ्गलमहा श्री श्री ॥

४४८ (३६९) पुट्टसामि चेन्नणन कोलद मार्ग ।

४४९ (३७०) चेन्नणन कोलद मार्ग ।

४५० (३७१) पुटसामि सट्टर मग चेन्नणन हालुगोल ।

४५१ (३७२) चेन्नणन अमृतकोल ।

४५२ (३७३) चेन्नणन गङ्ग वावनी कोल ।

४५३ (३७४) श्री पुट्टसामि सट्टर मकलु चिकणन तम्म चेन्नणन अदि-वर्तद कोल जय जया ।

४५४ (३७६) श्री गोम्मट देवर अष्ट विधार्च्चनेगे... हिरिय ...यिकूल.. ...द...लजन कयिकन्तिय ...ज विट्ट दत्तिय श्रीमन्महा ..चार्य्यरु हिरिय **नयकीर्त्ति**-देवरु **चिक्कनय-कीर्त्ति** देवरु आचन्द्रार्कतारवरं सलिसु-त्तिहरु मङ्गलमहा श्री श्री श्री क्षयसंवत्सरद चैत सुद्ध ७ आ । श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरुं हिरियनयकीर्त्तिदेवर सिप्यरु **चन्द्रदेवर**

सुतालयद चतुर्व्विंशतीर्थंकरिगे......रिय
कय्यलु सासनद सारिगे......

[यह लेख अधूरा है। इसके ऊपर और नीचे का भाग बिलकुल ही घिस गया है। लेख में चतुर्विंशति तीर्थंकरों की अष्टविध पूजन के लिए उक्त तिथि को कुछ भूमि के दान का उल्लेख है। इस दान को ज्येष्ठ नयकीर्त्ति और लघु नयकीर्त्ति आचन्द्रार्कतार नियत रक्खें।]

४५५ (४८०)

मठ में वर्द्धमान स्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(ग्रंथ और तामिल)

श्रीवर्द्धमानायनमः। शालीवाहन **शकाब्दः १७८०** श्रीमत्पश्चिमतीर्थङ्करमोक्षगताब्दः २५२१ प्रभवादिगताब्दः ५१ ल् शेल्लानिन्र **कालयुक्ति** नाम संवत्सर **आषाढ़** शुद्ध पूर्णिमा तिथियिल् श्रीमद् **बेल्गुमठत्तिल्** नित्यपूजा-निमित्तभाग श्री **सन्मतिसागरवर्णिगलुदैय** अभीष्टसिद्धयर्थं श्रीवीर-वर्द्धमान स्वामिप्रतिविम्बं कश्चिदेशं **शेण्णियप्पाक्कं** अप्पासामियाल् सैय्वित्त उभयं एघता नित्यमङ्गलं ॥

४५६ (४८१)

चन्द्रनाथस्वामी की प्रभावली पर

(ग्रंथलिपि में)

(शक सं० १७७८)

श्री चन्द्रनाथाय नमः !!

अष्टा-सप्तत्यधिकात्सप्त-शतोत्तर-सहस्रकाद्गुणिते।

शालीवाहन-शकनृप-संवत्सरके समायाते ॥ १ ॥
एकान्न-विंशति-युतात्पञ्चशतसहस्रयुग्मकाद्गुणिते ।
श्री-वर्द्धमान-जिनपति-मोक्ष-गताब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥
एकन्यूनशतार्धात्प्रभवादिगताब्दके च संगुणिते ।
एवं प्रवर्त्तमाने नलनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥
मीने मासि सिते पक्षे पूर्णिमायान्तिथौ पुनः ।
अवाक्-काशीतिविख्यात-बेल्गुले नगरे मठे ॥ ४ ॥
श्रीचारुकीर्त्ति-गुरुराडन्तेवासित्वं ईयुषां ।
मनोरथ-समृद्ध्यै सन्मतिसागर-वर्णिनां ॥ ५ ॥
कुम्भकोण-पुरस्था श्री-नेक्का श्रावकी शुभा ।
स्थापयामास सद्बिम्बं चन्द्रनाथ-जिनेशिनः ॥ ६ ॥
प्रतिष्ठा-पूर्वकन्नित्य-पूजायै स्वोपलब्धये ।
पञ्च-संसार-कान्तार-दहनाय शिवाय च ॥ ७ ॥

भद्रं भूयात् ।

४५७ (४८२)

नेमिनाथस्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ अक्षरों में)

(शक सं० १७७८)

श्री नेमिनाथाय नमः ।

अष्टासप्तत्यधिकात्सप्तशतोत्तरसहस्रकाद्गुणिते ।
शालीवाहनशकनृपसंवत्सरके समायाते ॥ १ ॥

एकान्नविंशतियुतात्पञ्चशतसहस्रयुग्मकाद्गु णिते ।
श्रीवर्द्धमानजिनपतिमोक्षगताब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥
एकन्यूनशताद्धात्प्रभवादिगताब्दके च सङ्गु णिते ।
एवं प्रवर्त्तमाने नलनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥
मीने मासि सिते पक्षे पौर्णमास्यान्तिथौ पुनः ।
अवाक् काशीतिविख्यातबेल्गुले नगरे वरे ॥ ४ ॥
भण्डारश्रीजैनगेहे श्रीविहारोत्सवाय च ।
अनन्तभवदावाग्नीशमनाय शिवाय च ॥ ५ ॥
श्रीचारुकीर्त्तिगुरुराडन्तेवासित्वमीयुषां ।
मनोरथसमृद्धर्यै सन्मतिसागरवर्णिनां ॥ ६ ॥
शात्तण्णश्रेष्ठिना शुम्भत्कुम्भकोणमुपेयुषा ।
श्रीनेमिनाथबिम्बोऽयं स्थापितस्स प्रतिष्ठितः ॥ ७ ॥

४५८ (४८३)

पण्डित दौर्बलिशास्त्रि के घर शान्तिनाथ मूर्त्ति के पृष्ठभाग पर

(नागरी अक्षरों मे)

सं १५७६ व० शा० १४४१ प्र० कर प्र० कु० सहित पौ० मासे श्रीउस० ज्ञा० सोनीसीहा भार्या धम्माई नाम्ना पुत्र सो सिद्धारीया श्रेयोह । वि...मासे० शु० प० ६ सोमे श्री शीतलनाथ बिम्बं कारितं । प्र० श्री० वृ० त० पाप । श्रीविलसामुस्करिभिः ।

४५९ (४८४)

गरगट्टे विजयराज्यय्य के घर जिनमूर्त्ति के पाद पीठ पर

श्रीमद् देवणन्दि भट्टारकर गुड्डि मालव्वे कडसतवादिय तीर्थद बसदिगे कोट्टल्

४६० (४८५)

गरगट्टे चन्द्रय्य के घर जिनमूर्त्ति के पादपीठ पर

श्रीसत्कण्णवे कन्तियरु कलसतवादिय तीर्थद बस-दिगे कोट्टरू

४६१ (४८६) मल्लिषेण। ४६२ (४८७) वीरण्न।

४६३ (४८८) चिक्कणन तम्म चेन्नणन कोल। ..

४६४ (४८९) पुटसामि चेन्नणन मण्टप कोल तोट।

४६५ (४९०) चिकणन त .....चेन्नणन कोल!

४६६ (४९३) हालोरति।

४६७ (४९४) श्रीजिननाथ पुरद सीमे।

४६८ (५००)

मठ के दायीं ओर तेरिन मण्डप में रथ पर

शालिवाहन शक १८०२ ने विक्रमनामसंवत्सरद माघ शुद्ध ५ ल्लु वीराजेन्द्रप्याटेयल्लू इरुव रायण्नशेट्र अत्तिगे जिन्न-मन शेवर्त्त।

[वीर राजेन्द्रप्याटे के रायण्नसेट्टि की भावज ने प्रदान किया]

श्रवणबेल्गुल के आसपास के ग्रामों के शिलालेख।

जिननाथपुर के लेख

४६९ (३७८)

शान्तीश्वर बस्ती के द्वार पर

स्वस्ति श्रीजगनज...वलिय पुनकालर मगं जूनिकवन तम्मं चोल पेर्म्मडियर मरुलारद गण्ड...सावितरदेव...स...मुग ......रि......ल .....लरनडि...रं कादि कोन्दुजाल...न्द्र गङ्गर बीडिन उरं कचेयरे भु ..सेमर सुरिगेल कलगमेनितु रि... थिसि जसक्के कवन्दद नि...तन्न मोम्मक्कलु...गसु'''सिडिल् त...मल् तुलिद...गेकान्त......गोल् मरि सत्तलेङ्कर अन्द पेकिनेम्ब सि......गिङ्ग्......... र.. ......सा......रपरि ......गुल् तव्र...क......ललदे

गङ्गर प......जिनतीर्त्थद वा...ल्तल्-अग्रगण्यनु...ङ्ग चोल-स...पडवरिगे ॥ ...सन्दनाग......निलेगजन...ल्दव ...लु यवनलप चन्दम ... . गु......दागि......यदि जिन-पूजेयनेय्दे माडिदं ॥...लगच्चित्र .....तनग... ..बिद...... ल स......न . दि महसन्न्यसनं गय्यनिप्प...तन्न...दिन वर-नेरय...त सनु...

......अमरिद बेम काम सले... . रद सन्न्यासनदि ......दिरन......म...प नेट्टन्दवदि...सङ्ग नि...जर्विल्ले... वलेद ..गाविगलात्म येन्तल् चित्त...कुडेदेयनिरि......मोद... ......तिदे......

[इस अत्यन्त टूटे हुए लेख के प्रथम भाग में चोल और गङ्ग के नरेशों के बीच घोर युद्ध का और अन्तिम भाग में किसी के समाधि-मरण का उल्लेख है]

४७० (३७९)

उसी बस्ती के रङ्गमण्डप में एक स्तम्भ पर

श्री शुभमस्तु ।

स्वस्ति सङ्कुदय शालिवाहन सक वरुस १५५३ प्रजोत्पत्य संवत्सरद पाल्गुण सुध ३ लु कम्ममेन्य लोहित गोत्रद नर्लमलि सेट्टि मग पालेद पदुमण्णनु यि-बस्ति प्रतिष्टे जीर्नोद्दार माडिद्दरु मङ्गल महा श्री श्री श्री

[उक्त तिथि को कम्ममेन्य लोहितगोत्र के नर्लमलिसेट्टि के पुत्र पालेद पदुमण्ण ने इस बस्ति का जीर्णोद्धार कराया ।]

४७१ (३८०)

शान्तीश्वर बस्ति में शान्तीश्वर की पीठिका पर

स्वस्ति श्री मूलसङ्घ-देशियगण-पोस्तकगच्छद कोण्डकुन्दान्वय कोल्लापुरद सावन्तन बसदिय प्रतिबद्धद श्री-माघनन्दि-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु शुभचन्द्र-त्रैविद्य-देवर शिष्यरप्प सागरणन्दि-सिद्धान्तदेवरिगे वसुधैक-बान्धव श्रीकरणद रेचिमय्य-दण्डनायकरु शान्तिनाथ-देवर प्रतिष्ठेयं माडिधारा-पूर्व्वकं कोट्टरु

४७२ (३८१) चङ्गम देवन कोडगिय मने

४७३ (३८२) श्रीमतु त्रिकालयोगिगलु मठ मोदलो-

लिर्दरु श्री मूलसङ्घद अभयदेवरु नाम...
दे तम्मुक्तिपदव...र इद ॥

४७४ (३८३) स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय शालिवाहन
शक वरुष १८१२ नेय विरोधि नाम
सवत्सरद वैशाख बहुल पञ्चमियल्लु
श्रीमद् बेल्गुल निवासियागिद् मेरुगिरि
गोत्रजराद श्री बुजबलैय्यनवरिगे निश्रेय
सुखाभ्युदय प्राप्त्यर्थ-वागि प्रतिष्ठेयं
माडिसिदं ॥

[यह लेख अरेगल्लु बस्ति की प्रतिमा पर है]

४७५ (३८५)

जिननाथपुर में तालाब के निकट एक चट्टान पर

साधारण-संवत्सरद श्रावण सु १ । आ । श्रीमन्महाम-
ण्डलाचार्य्यरुं राज-गुरुगलुमप्प हिरिय-नयकीर्त्ति-देवर
शिष्यरु नयकीर्त्ति-देवरु तम्म गुरुगलु बेक्कनलु माडिसिद बस-
दिय चेन्न-पारिश्वदेवर अष्ट-विधार्चनेगे हिरिय-जक्कियब्वेय-करेय
हिन्दण नन्दन-वनदोलगे गदे सलगे ख २...व्वेकं माडिकोट्टरु
मङ्गल-महा श्री श्री श्री ॥

[उक्त तिथि को महामण्डलाचार्य्य राजगुरु हिरिय नयकीर्त्तिदेव के शिष्य नयकीर्त्तिदेव ने अपने गुरु बेक्क की बनवाई हुई बस्ति के चेन्न-पार्श्वदेव की अष्टविध पूजन के लिए उक्त भूमि का दान दिया ।

४७७ (३८६)

उसी ग्राम में एक चट्टान पर

......सि......श्री......भन...... ..गिरे माडि...
......द्वतिय...... मुनिराजरिन्द......विलु......भरदिन्द
ममाधि...मुं नाडुं प्रभु मातमुं ।

नेरदिन्तिल्लकसिद्दुं कोट्टरमलाम्भोराशियुं मेरु भू-
धरमुं चन्द्रनुमर्क्कनुं वसुधेयुं निल्वन्नेगं सल्विनं ॥ १ ॥

इन्त् ई-धर्ममं किडिसिदवरु गङ्गेय तडियलेक्कोटिमुनीन्द्ररं
कविलेयुं ब्राह्मणरुमं कोन्द ब्रह्मत्तियलु होहरु ।

[इस टूटे हुए लेख में किसी दान का उल्लेख है जिसके विच्छेद से गङ्गा के तीर पर सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं और ब्राह्मणों की हत्या का पाप होगा]

४७७ (३८७) श्रीमतु सिङ्ग्यप नायकर कॊमरन निरू-
[काले गौड़ की भूमि में] पदिन्द वेक्कन गुरुवप सोवपनोलगाद
प्रभुगलुचामुण्डरायन वस्तिगे समर्पिसिद
सीमे श्री ।

[सिङ्ग्यप नायक की आज्ञा से वेक्कन के गुरुवप सोवप आदि 'प्रभुओं' ने यह भूमि चामुण्डराय बस्ति को अर्पण की ।]

४७८ (३८८) श्रीविष्णुवर्धन। देवर हिरियदण्डनायक
गङ्गपय्य स्वामिद्रोह घरट्ट श्रीबेलुगुलद

तीर्त्थंदलु जिननाथ-पुरवमाडि य...स्तयस
... ..रदलु .....ह-घरट्टनेम्ब कोलग...
जगलवाडिद......विष्णुवर्द्धन देवर...
को परिहार ॥ द्रोहघरट्ट-नेच्च कोलु ।

[इस टूटे हुए लेख में विष्णुवर्द्धन नरेश के प्रधान दण्डनायक गङ्गप्पय द्वारा वेल्गुल में जिननाथपुर निर्माण कराये जाने का उल्लेख है]

४७९ (३८९)

जिननाथपुर में शान्तिनाथ बस्ति से पश्चिमोत्तर की ओर एक खेत में समाधिमण्डप पर

(शक सं० ११३६)

ओं नमः सिद्धेभ्यः ।

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु राज-गुरुगळेनिप बेलिकुम्बद श्री-नेमिचन्द्र-पंडितदेवरेन्तप्परेने ॥

वृत्त ।

परमजिनेश्वरागम-विचार-विशारदनात्मसद्गुणो-
त्कर-परिपूर्ण्णनुन्नत-सुखात्थि विनेय-जनोत्पल-प्रियं ।
निरुपम-नित्यकीर्त्ति-धवलीकृत......नेन्दु लोकमा-
दरिपुदुसूरि ..निधिचन्द्रमनं मुनि-नेमिचन्द्रनु ॥

अवर प्रिय-शिष्यरप्प श्रीमद्बालचन्द्र-देवर तनयन स्वरूप-
निरूप............नन्तण्गन वाग्विलासवार्प्प......

तण्णन सच्चरित्र... ..गदोलु ॥ जन-जिन-मणि.. निहा ...कं..... नियते . न रूप-यौवन-गुणसम्पत्तियिन्दातं वत्तिगु..... भुवन-भूषण-बालचन्द्र.. रुहक ल. य .. . त्रहल-चदु . . गजराज . तीव्र-ज्वरो.. कर्कशः प्रतिका.. रिय...सक-वर्षद ११३६ नेय श्रीमुखसंवत्स-रद कार्त्तिक शुद्ध ५सो। प्रभात-समयदोल् सन्यसन-समन्वितं ॥

कन्द।

पञ्च-नमस्कार मन
मञ्चलिसदन्तोप्पुटु सकल...
...वटु.....गरुह
......र दिविज-वधुगं वल्लभनादं ॥

...यम्म...सादरक . ...
...य यल्लरु ॥ अन्तु ..देवर थि.. यर दहन-स्तानदोल् परोच...निमित्तवागि वैराजनिं माडिसिद बालचन्द्र देवर मग...न शिलाकूट ॥ मात.........शील-व्रत... गुण......द विभव......भूतलदोल् कालव्वेये सीतेगं रुग्मिणिगं रतिगे सरि दोरे सम......वेनिसिदा-महासति चयि......स्तानमनरिदे.........भाव-संवत्सरद जेष्ट-त्र। द्वि। निशान्तदोल् सल्लेखन-विधियिं समाधिय पडेदु स्वर्गा-प्राप्तेयादलु ॥ श्रीशान्तिनाथाय... ॥

[इस टूटे हुए लेख में बेलिकुम्ब के महामण्डलाचार्य नेमिचन्द्र पण्डित देव के प्रिय शिष्य व बालचन्द्रदेव के तनय के उक्त तिथि को समाधिमरण का उल्लेख है। उनकी श्मशानभूमि पर यह शिलाकूट बनवाया गया। लेख के अन्तिम भाग में साध्वी कालब्बे के समाधि-मरण का उल्लेख है।]

जिन्नेनहल्लिग्राम के लेख

४८० (३९०) श्री शकवर्ष १५८६ प्रमादी च संवत्सरद वैशाख बहुल ११ यल्लि समुद्रादीश्वर स्वामियवर नित्यसमाराधने नित्योत्सह कोलतोट मण्टपद सेवेगे पुटसामि सेट्टियर मग चेन्नणनु चिट्ट जिन्नेयन हल्लिय ग्राम मङ्गल महा श्री श्री श्री।

[उक्त तिथि को पुटसामि के पुत्र चेन्नण ने समुद्रादीश्वर (चन्द्र-नाथ) स्वामी के नित्य पूजनोत्सव रे व कुण्ड, उपवन और मण्डप की रक्षा के हेतु जिन्नेयन हल्लि ग्राम का दान किया]

४८१ (३९१) श्री चामुण्डरायन वस्तिय सीमे ।। श्री

हालुमत्तिगट्ट ग्राम के लेख

४८२ (३९२) रुस...... विक......वरु...सङ्कणनं कोडगि तोट......दा सिला ससन...... करण वि...कन... ....सङ्कणनगवू

चिक्कसङ्कण...प्र...न वरकोट कोडग...
.........ला ससन मङ्गल महा श्री श्री।

[इस टूटे हुए लेख में एक उद्यान के दान का उल्लेख है]

४८३ (३९३) दे......य-नायकन मग मादेय नायक
माडिसिद नन्दि

[मादेय नायक ने नन्दि निर्माण कराई]

कण्ठीरायपुर ग्राम के लेख

४८४ (३९५) श्रीमतु पण्डितदेवरुगल गुड्डुगलु बेलु-
गुलद नाड चेन्नण-गौण्डन मग नागगोण्ड
मुत्तगदहोन्न ..लिय कल्लगोण्ड वैर गोण्ड-
नोलगाद गौडुगलु मङ्गायि माडिसिद बस्तिगे
कोट्ट बोड्डर कट्टेय गद्दे बेद्दलु यि-धर्म्मके
तपिदवरु वारणासियलु .. ह्सकपिलेय
कोन्द पापके होह......ल-महा श्री श्री श्री।

[पण्डितदेव के उक्त शिष्यों ने मङ्गायि की बनवाई हुई बस्ति को वड्डरकोट्टे की भूमि प्रदान की। जो कोई इस दान का विच्छेद करे उसे बनारस में एक हजार कपिला गौओं की हत्या का पाप हो।]

४८५ (३९६) श्री चामुण्डरायन बस्ति सीमे।

सागोन हल्लिग्राम के लेख

४८६ (३६७)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तुजिनशासनाय सम्पद्यताम्प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अरुहन्ताणं ॥
स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दाख्ये विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्म्मितं ॥ ३ ॥

[आगे लेख की ५ से ४० पंक्ति तक गङ्गराज का वही वर्णन है जो लेख नं ६० (२४०) के तीसरे पद्य से आगे १४ वें पद्य तक पाया जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द......नूर्म्मडि धन्यनल्ते ॥ १५ ॥

इससे आगे—

अन्तु बेडिकोण्डु श्री पार्श्वदेवर पूजेगं कुक्कुटेश्वर-देवर्गं विहर सक-वर्षं १०४१ नेय विलम्बि-संवत्सरद फाल्गुण-शुद्ध दसमि ब्रहवारदन्दु शुभचन्द्र-सिद्धान्ति-देवर काल कर्च्चि विट्ट-दत्तिय गोविन्दवाडिगे मूडण-सीमे ईशान्य-दिशेय एरेय को...तोण्डिगेरेय निरुह कुल्लहनहल्लिग होद बट्टेय

दिव्वेय सारख हुलुमाडिय गडि तेङ्कलु अर्हनहल्लियिन्दा... मदिपुरक्कं हिरिय-देवर बेट्टक्कं होद हेब्बट्टेये गडि हडुवलु हिरिय...हल्ल नञ्जुगेरे बेक्कननिप...बडकलु गङ्गसमुद्रक्के चल्यद हडुवण दिण्नेयि पडुवलु गडि यिन्ती-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि ...नक्कन . नु प्रत्यधिवासद...पडु......गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियरु...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियु मुख्यवाद नकर-समूहमुमिदं माडिद मर्य्यादे यिन्तीधर्म्ममं प्रतिपालिसु-वर्गो महा-पुण्य अक्कुं ॥

वृत्त ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेय्दे काव पुरुषग्गायु महा-श्रीयुम-
क्केयिदं कायदे काव्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-
शियोलेक्कोटि-मुनीन्द्ररं कविलेय वेदाढ्यरं कोन्दुदो-
न्दयसंसारगुमेनुत्त सारिदपुदी-शैलाक्षरं मन्ततं ॥ १६ ॥

विरुद-रूवारि-मुख-तिलक गङ्गाचारि खंडरिसिद ॥

[इस लेख में लेख नं० ६० (२४०) के समान गङ्गराज के कीर्त्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि इन्होंने विष्णुवर्द्धन नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के हेतु उक्त तिथि को शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व बनारस में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३६८) ...रिसिदेवगे विट्ट दत्तिय गद्देय......

ऴडेत्ति कवि सेट्टियु मडना बिट गद्दे
सलगे ओन्दु कोलग ।

[इसमें कवि सेट्टि के कुछ भूमि के दान का उल्लेख है]

४८८ (३९९) श्री वृषभस्वामि
(खण्डित मूर्त्ति के पादपीठ पर)

४८९ (४००) श्री मूलसङ्घद देशिगणद पोस्तक गच्छद
श्री शुभचन्द्र सिद्धान्त देवर गुड्डि ज-
क्कियव्वे दण्डनायकिति साहलि...
ट देवर्गे प्रतिष्टेयं माडि जक्कियवे...
...डर मग पयमगद स... ..चुनरेय
.. ..दवाडिय... ..यलु सलगे बेद्दले
कोलगं ५ गोविन्द-वडिय कोलग १
बेद्दले कण्डुग ।

[शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या जक्कियव्वे ने मूर्त्ति की स्थापना कराई और गोविन्द वाडि की उक्त भूमि अर्पण की ।]

सुण्डहल्लिग्राम का लेख

४९० (४०७)

... ..संवत्सरद मार्ग्गशिर शु, १० ब्रहवार
......न्महामण्डलाचार्य्यरु नेमिचन्द्र
पण्डितदेवरु ......पट्टणस्वामि नागदेव
हेग्गडेवुं केश्वगौडनुं न मग मार

गौड केरेयं कट्टिदनलेयेन्दु आत
हारिसुवुदिल्ल ता तेरव अरदु हणविन
दे . वेदले हडुवण मुत्तेरि सीमे
आतन म. पर्य्यन्त सलुवन्तागि
कोट पतले प्रलिहिदव कविलेय कोन्द ॥

[यह लेख कुछ भूमि का पट्टा है। इसमें महामण्डलाचार्य्य नेमिचन्द्र पण्डित देव का उल्लेख करके कहा गया है कि मारगौड ने एक तालाब बनाया, इसके लिए नागदेव हेग्गडे और केञ्चगौड ने उसे सदा के लिए उक्त भूमि का पट्टा दे दिया।]

वेक्कग्राम में वस्ती के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक स० १०६५)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

श्रीकान्तापीनवक्षोरुहगिरिशिखरोज्जृम्भमानं विशालं
लोकोद्यत्तापलोपप्रवणविलसित वीरविद्विड् महीपा-
नकव्यामुक्तसञ्जीवनवहुलितोद्यद्गुणस्तोममुक्ता-
नीकं निष्कण्टकं निश्चलमेनलेसगुं होय्सलचक्र-
वंश ॥ २ ॥

अद्दरोलमौक्तिकदन्ते पुट्टिदनिलापालोघचूडामणि-
त्वदिनुद्यद्गुणशोभेयि स्वरुचियि सद्वृत्तराराजित-

त्वदिनत्युन्नतजातियिं सममेनल्सङ्ग्रामरङ्गाग्रदोल्
मदवद्वैरिकुलप्रतापि **विनयादित्यं** धराधीश्वरं ॥३॥

क ॥ **विनयादित्यन** तनयं
जननुतन् **एरेयङ्ग** भूभुजं तत्तनुजं ।
विनुतं **विष्णुनृपालं**
मनस्वि तदपत्यं नेग.. **नरसिंह** ॥ ४ ॥

वृ ॥ नतनरपालजालक विशालविजृम्भितबालभासुरो-
द्धततिल........ गलनाहवरङ्गरामनू-
र्जितनिजपुण्यपुञ्जबलसाधितसर्व्व.........
.........महोन्नतिकेयिन्देसेदं **नरसिंह** भूभुजं ॥ ५ ॥

क ॥ आ-**नरसिंह** नृपाङ्ग
भूनुते पट्टमहदेवि तत्सतियादल् ।
मानिनियू **एचल** देविगे
दानगुणख्यातकल्पलतेवोल् आ...... ॥ ६ ॥

वृ ॥ ललनालीलेगे मुन्नवेन्तु मदनं पुट्टिर्दना-विष्णुगं
विलसच्छ्रीवधुविङ्गवन्ते नरसिंहच्चोणिपालङ्गव् ए-
चलदेविप्रियेगं परार्त्थचरितं पुण्याधिकं पुट्टिदं
बलवद्वैरिकुलान्तकं जयभुजं **बल्लाल** भूपालकं ॥ ७ ॥
गतलीलं **लाल**नालम्बितबहलभयोग्रज्वरं **गूर्ज्जरं**
सन्धूतशूलं **गौल**नङ्गीकृतकृशतरसम्पद्भवं **पल्लवं** ।
प्रोज्झितचोलं **चोल**नाद कदनवदनदोल् भेरियं पोय्से वी-
राहितभूभृज्जालकालानलवतुलभुजं **वीरबल्लालदेवं** ॥८॥

रिपुराजद्राजिसम्पत्सरसिरुह शरत्कालसम्पूर्णचन्द्रं

रिपुभूपापारदोपप्रकरपटुतरोद्भूतभूरिप्रवातं ।

रिपुराजन्यौघ...खलसौ......लोग्रप्रतापं

रिपुपृथ्वीपालजाल क्षुभितयमनिवं **वीरबल्लालदेव** ॥९॥

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं । **द्वारावती**-पुरवराधीश्वरं । **तुलुव**बलजलदविलयानिलं । दायादडुर्ग-दावानलं । **पाण्ड्य**कुलकुधरकुलिशदण्ड । गण्डभेरुण्डं । मण्डलिकवेपटेकार । **चोल**कटकसुरेकार । सङ्ग्रामभीम । कलि-कालकाम । सकलवन्दिजनमनस्मन्तर्प्पण प्रवणतरवितरणविनोदं । **वासन्तिकादेवी**लब्धवरप्रसादं । **यादवकुलाम्बरद्युमणि** । मण्डलिकचूडामणि । कदनप्रचण्ड । **मलपरोल्** गण्ड नामादि प्रशस्तिसहितं । श्रीमत् **त्रिभुवनमल्ल तलकाडु-कोंगु-नङ्गलि-नोलम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गलु**गण्ड भुजबलवीरगङ्गप्रताप**हो-य्सल**बल्लालदेवरु दक्षिणमहीमण्डलम दुष्टनिग्रह-शिष्टप्रतिपालन-पूर्व्वकं सुखसङ्कथाविनोददि **दोरसमुद्रदोल्** राज्यं गेय्युत्तिरे ॥ तत्पितामह**विष्णुभूपाल**पादपद्मोपजीवि ॥

वृ ॥ नुते **लोकाम्बिके** माते रूढजनकं श्रीयचराजं यशो-

न्विते यी-**पद्मलदेवि** वल्लभे जगद्विख्यातपुण्याधिपं ।

सुतनी-श्री **नरसिंह**देवसचिवाग्रोशं जिनाधीशनी-

प्सितदैवं तनगेन्दोडें विदितनो श्री**हुल्ल**दण्डाधिपं ॥ १० ॥

क ॥ जनकतनुजातेयिन्दं

वनजोद्भवनितेयिन्दवग्गलवेनिपल् ।

जननुत **पद्मलदेविय—**

नून-पतिव्रतदिनमलचतुरते‌यिन्दं ॥ ११ ॥

तत्पुत्र ॥

विनुत-**नयकीर्त्ति**-मुनिपद-

वनरुहभृङ्ग विदग्धवनिताङ्ग ।

कनकाचलगुणतुङ्ग

घनवैरिमदेभसिंहनी-**नरसिंह** ॥ १२ ॥

स्वस्ति श्री **मूलसङ्घ**निलयमूलस्तम्भरुं निरवद्यविद्यावष्टम्भरुं **दे**शियगण गजेन्द्रसान्द्रमदधारावभासरुं । परसमयसमुत्पादित-सन्त्रासरुं । **पुस्तकगच्छ**स्वच्छसरसीसरोजविराजमानरुं । **कोण्डकुन्दान्वय**गगनदिवाकररुं । गाम्भीर्य्यरत्नाकररुं । तपश्रीरुन्द्ररुमप्प **गुणभद्र**सिद्धान्तदेवर शिष्यर् म्महामण्डलाचार्य्य **नयकीर्त्ति** सिद्धान्तदेवरेन्तप्परेन्दडे ॥

वृ ॥ स्मरशस्त्राम्बुजदण्डचण्डमदवेतण्डं दयासिन्धु

बन्धुरभूभृद्ररतुद्धमोहवहलाम्भोरासिकुम्भोद्भव ।

धरेयोल्तां नेगल्दं भयत्त्रयकरं लोभारिशोभाहरं

स्थिरनी-श्री-**नयकीर्त्ति**देवमुनिपं सिद्धान्तचक्रेश्वरं ॥१३॥

तच्छिष्यर् ॥

उरगेन्द्रक्षीरनीराकररजतगिरिश्रीसितच्छत्रगङ्गा-

हरहासैरावतेभस्फटिकवृषभशुभ्राभ्रनीहारहारा-

मरराजश्वेतपङ्केरुहहलधरवाक्शङ्खहंसेन्दुकुन्दो-

रकरचक्रचरकीर्त्तिकान्तं बुधजनविनुतं **भानुकीर्त्ति**-
व्रतीन्द्रं ॥ १४ ॥

सिद्धान्तोद्धतवार्द्धिवर्द्धनविधौ शुक्लैकपक्षोद्गत-
स्ताराणामधिपो जितस्मरशरः पारात्थ्र्यपारङ्गतः ।
विख्यातो **नयकीर्त्ति** देवमुनिपश्रीपादपद्मप्रिय-
स्स श्रीमान्भुवि **भानुकीर्त्ति** मुनिपो जीयादपारावधि॥१५॥

शक वर्षद १०६५ नेय विजयसवत्सरद **पौष्यबहुल चौतिमङ्गलवारदन्दु** उत्तरायण सङ्क्रान्तियल्लि **भानुकीर्त्ति** सिद्धान्त देवरनधिपतिगलागि माडि तद्गुरुगलप्प **नयकीर्त्ति**-सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगलगेधारापूर्व्वकं माडि ॥

वृ ॥ अचलश्रीयुतगोम्मटेशविभुगं श्रीपार्श्वदेवङ्गवु-
द्ध-चतुर्व्विंशतितीर्त्थकृर्ग्गवेसवी-सत्पूजेगं भोगकं ।
रुचिराम्रोत्करदानकं मुददे विट्टं बेक्कनेम्बूरनु-
द्ध-चरित्र सले मेरुवुल्लिनेगवी-**बल्लालभूपोत्तमं** ॥ १६ ॥

क्रमर्दि गोम्मटतीर्त्थपूजेगवशेषाहारदानक्कवु-
त्तमर' मुख्यरनागि माडि विदित श्री भानुकीर्तीश्वर' ।
विमदङ्गी-**नयकीर्त्ति**-देवयतिगाकल्पं सलल्बेक्कनं
सुमनस्कं विभुहुल्लपं विडिसिदं श्री **वीरबल्लालनि**॥१७॥

ग्राम सीमे ॥ (यहाँ सीमा का वर्णन है) इदु बेक्कन चतुस्सीमे ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा (इत्यादि)

[चन्नरायपट्टन १४६]

[लेख न० १२४ के समान होय्सल वश के परिचय व वीरबल्लाल-देव के प्रतापवर्णन के पश्चात् बल्लाल नरेश के दण्डाधिपति हुल्ल का परिचय है। हुल्ल यक्षराज और लोकाम्बिके के पुत्र थे। उनकी पत्नी का नाम पद्मलदेवी और पुत्र का नरसिंह सचिवाधीश था। हुल्ल जिन-पदभक्त थे। इसके पश्चात् कहा गया है कि उक्त तिथि को गुणभद्र के शिष्य नयकीर्त्ति के शिष्य भानुकीर्त्ति व्रतीन्द्र को बल्लाल नरेश ने पार्श्व और चतुर्विंशति तीर्थंकर के पूजन के हेतु मारुहल्लि ग्राम का दान दिया। इसके कुछ पश्चात् हुल्लप ने बल्लालदेव से बेक्क ग्राम का भी दान दिलवाया।]

४६२

हले बेल्गोल में ध्वंस बस्ती के समीप एक पाषाण पर

(शक सं० १०१५)

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसे ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय-श्री-पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज पर-मेश्वरपरमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत् त्रिभुवन-मल्लदेवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि। समधिगतपञ्चमहाशब्द महा-मण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि

सम्यक्त्वचूडामणि मलपरोलगण्डाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृत श्रीमत्
त्रिभुवनमल्ल-विनयादित्य-पोय्सल ॥

श्रीमद्यादववंशमण्डनमणि. क्षोणीशरक्षामणि-
र्ल्लीलासीहागमणिर्नरेश्वरशिरःप्रोत्तुङ्गशुम्भन्मणिः ।
जीयान्नीतिपथेक्षदर्प्पणमणिर्ल्लोकैकचिन्तामणि
श्रीविष्णुर्व्विनयान्वितो गुणमणिस्सम्यक्त्वचूडामणिः
॥ २ ॥

एरेद मनुजङ्गे सुरभू-
मिरुह शरणेन्दवङ्गे कुलिशागार ।
परवनितेगनिलतनेय
धुरदोल्पोणर्दङ्गे मित्तु **विनयादित्यं** ॥ ३ ॥

रक्कस-**पोय्सल**नेम्बा-
रक्करसं वरेदु पटमनंत्तिदडिदिरोल् ।
लक्कद समनेक्कद मरु-
वक्क निन्दपुवे ममरसङ्घट्टणदोल् ॥ ४ ॥

चलिदडे मलेदडे **मलपर**
तलेयोल्वालिङ्गुवनुदितभयरसवसदि ।
वलियद मलेयद **मलपर**
तलेयोल्कैयिङ्गुवनोडने **विनयादित्य** ॥ ५ ॥

आ-**पोय्सल**भूपङ्गे म-
हीपालकुमारनिकरचूडारत्न ।

श्रीपति निजभुजविजय-म-
हीपति जनियिसिदनदटन् **एरेयङ्ग** नृपं ॥ ६ ॥
वृत्त ॥ अनुपमकीर्त्ति मूरेनेय मारुति नाल्कनेयुग्रवह्नियय्-
देनेयसमुद्रमारेनेय पूगणेयेलनेयुर्व्वरेशनेण्
टनेय कुलाद्रियोम्भतनेयुद्धसमेतहस्ति पत्तेने-
य निधानमूर्त्तियेने पोल्ववरार् **एरेयङ्ग**देवनं ॥ ७ ॥
अरिपुरदोलधगद्धगिलु धन्धगिलेम्बुदराति-भू...
र शिरदोलु...ठगिल्ठ......एम्बुदु वरिभूतले-
श्वरकरुलोलु चिमिलिचमिचिमिलिचमिलेम्बुदु...पलिहि दु-
र्द्धरतरमेन्दोडल्कुरदे पोलुवराम्**मलेराज**राजनं ॥ ८ ॥
कन्द ॥ मुररिपुव पिडिव चक्रद
हतिगं केसरिगमा-फणिध्वंसिय त्रि-
ष्फुरितनखहतिग**मेरेगन**
करवालगमिदिर्च्चि बर्दुङ्कलाप्पेरुमोलरे ॥ ९ ॥
इर्म्मेडि दधोचिमुनिगे प-
दिर्म्मेडि गुत्तगे चारुदत्तगत्तल् ।
नूर्म्मेडि रविसूनुगे सा-
सिर्म्मेडि मेलु दानगुणदिन् **एरेयङ्ग**नृपं ॥ १० ॥
आ-महामण्डलेश्वरन गुरुगलेन्तप्परेन्दडे ॥
श्लोक ॥ श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्री**कोण्डकुन्द**नामाभून्मूलसङ्घाग्रणी [गणी] ॥ ११ ॥
तस्यान्वयेऽजनि ख्याते विख्याते देशिके गणे ।

गुणी देवेन्द्र सैद्धान्तदेवो देवेन्द्रवन्दितः ॥ १२ ॥

जयति चतुर्म्मुखदेवो योगीश्वरहृदयवनजवनदिननाथः ।

मदनमदकुम्भिकुम्भस्थलदलनोत्त्वणपटिष्ठनिष्ठुरसिंहः ॥१३॥

तच्छिष्यो गोपनन्द्याख्यो बभूव भुवनस्तुत. ।

वाणीमुखाम्बुजालोकभ्राजिष्णुमणिदर्प्पणः ॥ १४ ॥

जयति भुवि गोपनन्दी जिनमतलसज्जलधितुहिनकरः ।

देशियगणाग्रगण्यो भव्याम्बुजषण्डचण्डकरः ॥ १५ ॥

वृत्त ॥ तुङ्गयशोभिराममनभिमानसुवर्णधराधरं तपो-

मङ्गलल्दिमवल्लभनिलातलवन्दित गोपनन्दिया-

वङ्गम-साध्यमप्प पलकालदे निन्द जिनेन्द्रधर्म्मम

गङ्गनृपालरन्दिन विभूतिय रूढियनेय्दे माडिदं ॥१६॥

जिनपादाम्भोजभृङ्गं मदनमदहरं कर्म्मनिर्म्मूलनं वा-

ग्वनिताचित्तप्रियं वादिकुलकुधरवज्रायुधं चारु विद्व-

ज्जनपात्रं भव्यचिन्तामणि सकलकलाकोविदं काव्यकञ्ञा-

मननन्तानन्ददिन्दं पोगले नेगल्दनी-गोपनन्दि-

व्रतीन्द्रं ॥ १७ ॥

मलेयदं साङ्ख्य मट्टमिरु भौतिक पोङ्गि कडङ्गि वागदि-

र्त्तोल तोल बुद्ध बौद्ध तलेदोरदे वैष्णव डङ्गडङ्गु वा-

ग्भरद पोडप्पु वेड गड चार्व्वक चार्व्वक निम्म दर्प्पमं

सलिपने गोपनन्दिमुनि पुङ्गवनेम्ब मदान्धसिन्धुरं ॥१८॥

तगेयल् जैमिनि तिप्पिकोण्डु परियल्वैशेषिकं पोगदु-

ण्डिडगे योत्तल्सुगतं कडङ्गि वलेगोयल्क् अक्षपादं विडल् ।

पुगे लोकायतनेय्दे साङ्ख्य नडसल्कम्मम्म षट्तर्कवी-
धिगलोल्तूल्दितु **गोपनन्दि** दिगिभप्रोद्धासिग-
न्धद्विपं ॥ १९ ॥

दिट नुडिवन्यवादिमुखमुद्रितनुद्धतवादिवाग्बलो-
द्भटजयकालदण्डतपशब्दमदान्धकुवादिदैत्यधू-
र्ज्जटि कुटिलप्रमेयमदवादिभयङ्करनेन्दु दण्डुलं
स्फुटपटुघोष दिक्तटमनेय्दितु वाक्पटु **गोपनन्दिय** ॥२०॥
परमतपोनिधान वसुधैवकुटुम्बक जैनशासना-
म्बरपरिपूर्ण्णचन्द्र सकलागमतत्वपदार्त्थशास्त्र-वि-
स्तरवचनाभिराम गुणरत्नविभूषण **गोपनन्दि** नि-
न्नोरेगिनिसप्पडं देरेगलिल्लेणे गाणेनिलातलाग्रदोल् ॥२१॥

क ॥ एननेननेले पेल्वेनण्ण स-
न्मानदानिय गुणव्रतङ्गल ।
दानशक्तियभिमानशक्ति वि-
ज्ञानशक्ति सले **गोपनन्दिय** ॥ २२ ॥

वच ॥ इन्तु नेगल्द **कोण्डकुन्दान्वयद** श्रीमूलसङ्घद देशि
गणद **गोपनन्दि** पण्डितदेवर्गे **१०१५ नेय श्रीमुखसंवत्स-
रदपौष्यशुद्ध १३ आदिवार** सङ्क्रान्तियन्दु श्रीमत्-**त्रिभु-
वनमल्लन् एरेगङ्ग**-वोय्सलं गङ्गमण्डलमं सुखसङ्कथाविनो-
ददि राज्यं गेय्युत्तमिर्दु बेल्गोलद कब्बप्पुतीर्त्थद बसदिगल
जीर्ण्णोधारणक्कं देवपूजेगं आहारदानक्कं पात्रपावुलक्कं राचनहल्ल
सुमंबेल्गोलपन्नेरडुमं धारापूर्व्वकं माडि बिट्ट दत्ति ॥

(स्वदत्ता परदत्तां वा—इत्यादि श्लोकों के पश्चात्
श्रीमन्महाप्रधान हिरिय दण्डाधिप... . ...मध्यङ्के.........

... ...

[चन्नरायपट्टन १४८]

[इस लेख में होय्सल नरेश विनयादित्य और उनके पुत्र एरेयङ्ग की कीर्त्ति के पश्चात् कहा गया है कि त्रिभुवनमल्ल एरेयङ्ग ने उक्त तिथि को कल्बप्पु पर्वत की वस्तियों के जीर्णोद्धार तथा आहारदान व बर्तन वस्त्र आदि के लिए अपने गुरु मूलसंघ देशीगण कुन्दकुन्दान्वय के देवेन्द्रसैद्धान्तिक व चतुर्मुखदेव के शिष्य, गोपनन्दि पण्डितदेव को राचनहल्लि व बेल्गोल १२ का दान दिया। लेख में गोपनन्दि आचार्य की खूब कीर्ति वर्णित है। उन्होंने जो जैनधर्म स्थगित हो गया था उसकी गङ्गनरेशों की सहायता से विभूति बढ़ाई। उन्होंने साङ्ख्य, भौतिक, वैशेषिक, बौद्ध, वैष्णव, चार्वाक जैमिनि आदि सिद्धान्तवादियों को परास्त किया इत्यादि।]

४९३

चल्लग्राम के बयिरेदेव मन्दिर में एक पाषाण पर

(शक सं० १०४७)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावती-पुरवरेश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलप-

रोलु गण्डनुद्दण्डमण्डलिकशिरोगिरिवज्रदण्ड तलकाडुगोण्ड वीर-विष्णुवर्द्धनदेवनातनन्वयक्रमं यदुमोदलादनेकराजा सन्तानकदि वलिक्के ॥

यदुकुलकुलाद्रिशिखरदोल्
उदियिसिद दुर्न्निरीक्षतेजोहृत स-
म्पदरातिराजमण्डल-
नुदात्तगुणरत्नवार्द्धि विनयादित्य ॥ २ ॥

आतन तनयं सकल-म-
हीतल साम्राज्य लक्ष्मियुं तनगेक-
श्वेतातपत्रमागे पु-
रातननृपरेणेगं वन्दन् एरेयङ्ग नृपं ॥ ३ ॥

आ-विभुगं नेगर्द् एचल-
देविगमादत्तनूभवर्ब्बल्लाल-
श्रीविष्णुवर्द्धन-
राविक्रमनिधिगलनुजन् उदयादित्य ॥ ४ ॥

नेनेयल्पापक्षयं नोडिदोडभिमत संसिद्धि सद्भक्तियिन्दं मनमोल्दाराधिसल्क्रासुकृतदोदवनेवेल्वुदेम्बन्नेगम्मु-
न्निन पुण्य वीररप्पा-नलनहुषरोलन्यूननाद जगत्पाव-
नसत्यत्यागशौचाचरणपरिणत वीरविष्णुक्षितीश ॥५॥

* निर वय्यक्षत्रधर्म्मान्वितरेनिप महाक्षत्रियर्ल्लोकदोल्ना-
ल्त्ररेमुन्नं श्रीदिलीपं दशरथतनयं कृष्णराजं बलिक्का-

---

* यहाँ एक पंक्ति की कमी है ।

धरसाहश्यकं वन्द' यदुकुलतिलकं वीरविष्णुक्षितीश ॥६॥

अदियमनोडिदोटमने रोडिसि कल्तु नृसिंहवर्म्मनो-
डिदनवनोटमं गुगिसि चेङ्गिरि चेङ्गिरियल्लि कल्तु को-
ण्डददिन कोङ्गरा-नेगर्द कोङ्गरनीचिसि पाण्ड्यनोडिदं
यदुतिलकङ्ग विष्णुधरणीपतिगोडदरार्द्धरित्रियोल् ॥ ७ ॥

व ॥ अन्तदियमनदटलेदु नृसिंहवर्म्मसिहमं कदनदोलेच्चट्टि
वैरिगल शिरोगिरिगलं दोर्द्दण्डवज्रदण्डदिन्दलरं पोय्दु कल
पाल कुलमं कलकुलं माडि तगुल्दङ्गरन सप्ताङ्गमुमनेलकुलि-
गोण्डु दक्षिणसमुद्रतीरं वरं समस्तभूमियुमनेकच्छत्रछायेयिं
प्रतिपालिसुत्तु तलवनपुरदोलसुखसङ्कथाविनोदर्दि राज्यं
गेय्युत्तमिरं ॥

श्रीवीरविष्णुवर्द्धन-
देवं षटतर्कषण्मुख श्रीपाल-
त्रैविद्यव्रतिगी-जै-
नावसतमनधिकभक्तियिं माडिसिद ॥ ८ ॥
पोसतेने ता माडिसिदी-
वसदियुमं बाडसिदरसम्बन्धियेन-
ल्केसेवा ....
वमदियुमं तीर्थदल्लि कोट्टं मुददि ॥ ९ ॥

श्राकुलतिलकङ्ग गुरुकुलमाद श्रीमद्द्रमिलगणद नन्दिस-
ङ्घद-रुङ्गुलान्वयदाचार्य्यावलियेन्तेन्दोडे ॥

क्रम ह...महावीर-

स्वामिय तीर्त्थकके गौतमगणधररन्त् ।
आ-मुनियिं बलिकाद म-
हा-महि मरेनि............ ॥ १० ॥
श्रुतकेवलिगलु पलवरु-
मतीतरादिम्बलिक्के तत्सन्तानो-
न्नतियं **समन्तभद्र-**
व्रतिपर्त्तलेदरु समस्तविद्यानिधिगल् ॥ ११ ॥

अवरिं बलिक्कम् **एकसन्धि-सुमति**-भट्टारकरवरिं बलिक्के वादीभसिंह श्रीमद**कलङ्क**देवरवरिं **वक्रग्रीवा**चार्य्यरवरिं **श्रीणन्द्याचार्य्य**...यके राज्यवामुददिं **सिंहनन्द्या**चार्य्यरवरि **श्रीपाल**भट्टारकरवरि श्रीकनकसेन **वादिराज**-देवरवरि बलिक्के ॥

इतर व्या...लेके म...मनितुमिसु...प्रभा-सं-
हतियिन्दे वय्सुतिर्प्पेर्द्धनद्...अधिकमे-
य्दिदं किञ्चित्करकिञ्चिन्न्यूनमेन्दु......
......नोप्पद......जगत्पूतमाश्चर्य्यभूतं ॥ १२ ॥

अवरिं श्रीविजयभुवनविनूतरु **शान्तिदेवर** वरिं......
वनद......न व्रतिपरु ॥

आ-**पुष्पसेन** सिद्धान्तदेवरि बलिक ॥

गतसर्वज्ञाभिमानं सुगतनपगताप्रप्रणादं कणादं
कृत..................... पादा-
नतनाद मर्त्यमात्रङ्गल नुडिगलाल .नेनसल्पर्व्वि लोको-

अतनाय्तर्हन्मताम्भोनिधिविधुविभवं **वादिराज** ..॥१३॥

.... **शान्तिषेण**देवरवरिं वलिक्क ॥

पेरर्तें सप्तर्द्धि यिं मम्भविकुमोदवुगुं प्रातिहार्य्यंङ्गलेल्लं

नेरेदिर्क्कुं रीतियिन्दे-समवसितियुमी-कष्टकालप्रभावं ।

पेरपिङ्गल्की-महायांगियोलेने तपमुं योग्यतालब्धियुं कण्-

देरेदन्तागिर्प्पुदिन्दन्दनुपममपरातीतदिव्यप्रभावं ॥ १४ ॥

कन्तुवनान्तुमेर्व्दे. यदोडिसि दुर्म्मदकर्म्मवैरि-वि-

क्रान्तमनेर्व्दे लङ्गिसि महापुरमाग दि. ।

...ना-तीर्त्थनाथरेनं रूढियनान्त **कुमारसेन** सै-

द्धान्तिकरादमुञ्नलिसिदज्जिनधर्म्मयशोविकासमं ॥ १५ ॥

सले सन्द योग्यतेय.... ...

.. लेसेद दुर्द्धरतपोविभूतिय पेर्म्पि ।

कलियुगगणधररेम्बुदु

नेलनेल्ल **मल्लिषेण** मलधारिगलं ॥ १६ ॥

ह्वयस्याद्वादभूभृद्भुवननुपमषट्-तर्क्कभास्वन्नखम्पा-

ट्युद्यद्दर्प्पान्धवादिद्विरदनघटेयं विक्रमप्रौढियिन्दं ।

विद्यासिंहीरतिव्याप्तियोले सुखियिसुत्तिर्प्पुदु वत्साहर्दि त्रै-

विद्य-**श्रीपाल**-योगीश्वरनेनिप महावादिमत्तेभसिंहं

॥१७॥

आवन विषयमो पट् त-

र्क्काविलवहुभङ्गिसङ्गतं **श्रीपाल**-

त्रैविद्यगद्यपद्य-व-

चोविन्यासं निसर्ग्गविजयविलासं ॥ १८ ॥

तमगाज्ञावशमादुदुन्नतमहीभृत्कोटि वि-

ण्पमर्द्दत्ती-धरेगेय्दे तम्म मुखदोल्षट्-तर्क्कवारासि-वि-

भ्रममापोशनमात्रमादुदेनलीमातेनगस्त्य प्रभा-

वमुमं कील्पडिसित्तु पेम्पि. .श्रीपाल-योगीन्द्रन॥१९॥

वर्ग्गत्यागद सूचित-

मार्ग्गोपन्यासदलवु मार्क्कोललन्ता-

भर्गङ्गमरिदेनल्के नि-

रर्ग्गलमादत्त...वीर्य्यं व्रतियोल् ॥ २० ॥

इन्तु निरवद्यस्याद्वादभूषणरुं गद्यपोषणसमेतरुमागि वादी-भसिंह वादिकोलाहल ताकिकचक्रवर्त्तियेम्ब निजान्वयनामङ्गल-नोलकोण्डु अन्वयनिस्तारकरुं श्रीमदकलङ्क-मतावलम्बनरु षट् तर्कषण्मुखरुमसारसंसारव्यापारपराङ्मुखरुमाद श्रीपाल त्रैविद्यदेवर्ग्गे ॥

शल्यत्रयरहितर्ग्गे-

शल्यग्राममनुपमं कोट्टरिन्तृपह्ल-

श्शल्यं सकलकलान्वय-

कल्य श्रीविष्णुभक्तियं तां मेरेदं ॥ २१ ॥

अन्तो-बसदिय खण्डस्फुटितजीर्ण्णोद्धारकमी-सम्बन्धिय रिषिसमुदायदाहारदानक्कं कच्चिगोण्ड वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेवं सकवर्ष १०४७ कोधिसंवत्सरद उत्तरायणसंक्रमणदलु

कावेरी तीरद तुङ्ग यहोलेयलु शल्यदुरुवं तीर्थदल्लि तम्म बस-दियुम श्रीपालत्रैविद्यदेवर्गे कैधारे येरेदु श्रीवीर-विष्णु-वर्द्धनं कोट्टियूर सीमा सम्बन्धमेन्तेन्दोडे (यहाँ सीमा का वर्णन है) इन्तीचतुस्सीमेयिन्दोलगुल्लदं सर्व्वबाधापरिहारमागि बिट्टु कोट्ट श्री वीरविष्णुवर्द्धनदेव कोट्ट श्रीपाल त्रैविद्य-देवरु तम्म माडिसिद होय्सल जिनालयके बिट्ट तलवृत्ति बेल्दले चूर मुन्दण हादरिवालोलगागि मत्तरु नाल्कु ग्रत्तिकेरेयुम हिरियकेरेय केलगे गद्दे सलगे एलु तोण्ट ओन्दु दोड्डगट्ट केरे वोलगागि चतुस्सीमेयुम बसदिगे माडि बिट्टु कोट्ट भूमि यिदर सीमे मूडलु केसरकेरेगिलिद मणल हल्ल तेङ्कु होन्नमरके होद बट्टे हडुव हिरियकेरेयोलगेरे बडग होन्नेमरक्के होद होलेय बट्टे ।

[चन्नरायपट्टन १४६]

[इस लेख में होय्सल वंश के विनयादित्य, एरेयङ्ग और विष्णुवर्द्धन के प्रताप-वर्णन के पश्चात् कहा गया है कि विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेव ने उक्त तिथि को बस्तिओं के जीर्णोद्धार तथा ऋषियों को आहारदान के लिए श्रीपालत्रैविद्यदेव को शल्य नामक ग्राम का दान दिया। श्रीपाल त्रैविद्यदेव द्रमिण संघ व अरुङ्गलान्वय के आचार्य्य थे। इस अन्वय की परम्परा इस प्रकार दी हुई है। महावीर स्वामी के पश्चात् गौतम गणधर हुए। फिर कई श्रुतकेवलियों के पश्चात् समन्तभद्र व्रतीप हुए। उनके पश्चात् क्रम से एकसन्धिसुमति भट्टारक, वादीभसिंह अकलङ्कदेव, वक्रग्रीवाचार्य, श्रीनन्द्याचार्य, सिंहनन्द्याचार्य, श्रीपाल भट्टारक, कनकसेन, वादिराजदेव, श्रीविजय, शान्तिदेव, पुष्पसेनसिद्धान्त-देव, वादिराज, शान्तिसेनदेव, कुमारसेन सैद्धान्तिक मल्लिषेण मलधारि

और त्रैविद्य श्रीपालयेगीश्वर हुए। कई जगह आचार्यों के नाम पढ़े नहीं गये इसलिए परम्परा का पूरा क्रम ज्ञात नहीं हो सका।]

४९४

बोम्मेनहल्लि ग्राम में जैन बस्ती के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक सं० ११०४)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

श्रीपति जन्मदिन्देसेव यादववंशदोलाद दक्षिणो-
र्व्वीपतियप्पनोर्व्व सलनेम्ब नृपं सलेयिन्द कोपन-
द्विपियनोन्दनोर्व्व मुनि पोय् सलयेन्दडे पोय्दु गेल्दु दि-
ग्व्यापि-यशं नेगल्त्ते वडेदं गड पोय्सलनेम्ब नामदिं
॥ २ ॥

स्वस्ति श्रीजन्मगेहं निभृतनिरुपमोदात्ततेजोमहोर्व्वं
विस्तारान्तःकृतोर्व्वीतलमवनतभूभृत्कुलत्राणदच्च ।
वस्तुव्रातोद्भवस्थानकममलयशश्चन्द्रसम्भूतिधामं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधिनिभमेसेगुं होय्सलोर्व्वी-
शवंशं ॥ ३ ॥

अदरोल्कौस्तुभदोन्दनर्घ्यगुणमं देवेभदुद्दाम-स-
त्वदगुर्व्वं हिमरश्म्युज्वलकलासम्पत्तियं पारिजा-

तलुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्त' तालिद तानल्ते पु-
ट्टिदुतुद्भ् ततमोविभेदि **विनयादित्या**वनीपालकं ॥४॥

बुधनिधि **विनयादित्यन**
वधु केलेयब्बरसियेम्बलात्मास्थविभा-
विधुरितविधु परिजन-का-
मधेनु नेगल्दल्सुसीलगुणगणधाम' ॥ ५ ॥

अवर्गेरेयङ्गं जनियिसि-
दवनेचलदेविगादनादम्पतिगु-
द्भविसिदरजेयबल्ला-
ल-वीर-विष्णुप्रतापियुदयादित्यर् ॥ ६ ॥

अवरोल्मध्यमनागियु-
मवर्गेल्लं **विष्णु** पदकनायकदन्तो-
प्पुवनुदित्तवीरलक्ष्मिय
सवति महापट्टदरसि लक्ष्मियधीश' ॥ ७ ॥

भूदेवसभोच्चारित-
वेदध्वनिनिरत**विष्णु**भूपङ्'ल-
क्ष्मादेविगमुदयिसिदं
श्रीदयितं **नारसिं**हदेवनृपालं ॥ ८ ॥

भूवल्लभविपुलयशो-
श्रीवल्लभनारसिंहनृपपट्टमहा-
देवियेनल्नेगल्देचल-
देविगे **बल्लाल**देवनुदयं गेय्दं ॥ ९ ॥

हेसरुच्चङ्गियकोटेय-

नसदृशभुजवलदे मुन्ने कोण्डरसुगल्ला-

रसहायशूरशनिवा-

रसिद्धिगिरिदुर्ग्गमल्लबल्लालनवोल् ॥ १० ॥

एकाङ्गवीर शूद्रक-

नाकारमनोजनर्त्थिसुरतरु तुरगा-

नीक-वर-वत्स-राजन-

नेकपभगदत्तनल्ते बल्लालनृपं ॥ ११ ॥

गद्य ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं । द्वारा-
वती पुरवराधीश्वरं । तुलुव वलजलधि बडवानलं । पाण्ड्य-
कुलदावानलं । मण्डलिकवेण्टकारं चोलकटकसूरेकारं ।
वासन्तिकादेवीलब्धवरप्रसाद । वितरणविनोदं । यादव-
कुलाम्बरद्युमणि । मण्डलिकमुकुटचूडामणि । असहाय
शूर नृपगुणाधारं । शनिवारसिद्धि । सद्धर्म्मबुद्धि । गिरि-
दुर्ग्गमल्ल । रिपुहृदयसेल्ल । चलदङ्कराम । रणरङ्गभीम ।
कदनप्रचण्ड । मलपरोलगण्ड नामादिप्रशस्तिसहितं
कोङ्गनङ्गलितलकाडु नोलम्बवाडि बनवासेहानुङ्गलोण्ड
भुजबलवीरगङ्गप्रतापहोय्सलबल्लालदेवर्दक्षिणमहीमण्डलमं
सद्धर्म्म परिपालिसुत्तुं दोरसमुद्रद नेलेवीडिनोल्सुखसङ्कथा-
विनोदं राज्यं गेय्युत्तुमिरे तत्पाद पद्मोपजीवि ॥

भरतागमतर्क्कव्या-

करणोपनिषत्पुराणनाटककाव्यो-

टक्करविद्वज्जननुतनेनिप-

स्थिरपुण्यं चन्द्रमौलिमन्त्रिललामं ॥ १२ ॥

नुतवल्लालनृपालदक्षिणभुजादण्डं पयःपूरहा-

र-तुषारस्फटिकेन्दुकुन्दकमनीयोद्यद्यशोवार्द्धिवे-

ष्टितदिक्चक्रनपारपुण्यनिलयं निश्शेषविद्वज्जन-

स्तुतनप्पी-विभुचन्द्रमौलिसचिवं धन्यं पेरर्द्धन्यरे

॥ १३ ॥

आ-चन्द्रमौलिगखिलक-

लाचतुरङ्गमलकोर्त्तिगमदृशविभव-

ङ्गाचाम्बिके गुणवार्द्धि स-

दाचारसमेते चित्तवल्लभेयादल् ॥ १४ ॥

हरिणीलोचने पङ्कजानने घनस्तोथिस्तनाभोगभा-

सुरे बिम्बाधरे कोकिलस्वने सुगन्धश्वासे चश्वत्तनू-

दरि भृङ्गावलिनीलकेशे कलहंसीयाने सत्कञ्चुक-

न्धरेयप्पाचलदेवि कन्तु सतियं सौन्दर्य्यदिन्दंलिपल्

॥१५॥

त्रिकुलकं ॥ सुकविसुरतरुग्निलेयना-

यक चन्द्राम्बिकेय मगनेनिप सोवण ना-

यकनय्य तायि बाचा-

म्बिके देगिदण्डनायकं हिरियण्णं ॥ १६ ॥

भयलोभदुर्ल्लभ बम्मेय-

नायकनिद्धकोर्त्ति किरियण्णं मा-

रेयनायकं भगिनि च-

लियब्बरसि कामदेवनणुगिन तम्मं ॥ १७ ॥

भूविनुतनात्मजातं

सोवण्णं चन्द्रमौलि पति तनगे कला-

कोविदनेन्दन्हाचल-

देवियवोल्नोन्त सतियराव्वसुमतियोल् ॥ १८ ॥

गौरितपङ्गलं नेगल्दुतुं नेरेदल्गड चन्द्रमौलियो-

ल्नारियगिंन्नवे सोवगु पेल्पलवु भवदोलिनिरन्तरम्

सारतपङ्गलं पडेदु ताम्नेरेदं गड चन्द्रमौलिग-

म्भीरेयेनिप्प तन्ननेनिपाचलेवोलसोवगिङ्गे नोन्तरार्

॥१९॥

तद्गुरुकुल श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्ड-
कुन्दान्वयदोल् ॥

क ॥ विदित गुणचन्द्रसिद्धा-

न्तदेव सुतनात्मवेदि परमतभूभृ-

द्भिदुर नयकीर्त्तिसिद्धा-

न्तदेवनेसेदं मुनीन्द्रनपगततन्द्रं ॥ २० ॥

परमागमवारिधिहिम-

किरणं राद्धान्तचक्रिनयकीर्त्तियमी-

श्वरशिष्यनमलनिजचि-

त्परिणतनध्यात्मिबालचन्द्र मुनीन्द्रं ॥ २१ ॥

भरदिं वेल्गुल तीर्थदोल् जिनपतिश्रीपार्श्वदेवोद्धम-
न्दिरमं माडिसिदलिन्नूत नयकीर्त्तिख्यातयोगीन्द्र-
भासुरशिष्योत्तम बालचन्द्रमुनिपादाम्भोजिनीभक्ते सु-
स्थिरेयप्पाचलदेवि कीर्त्तिविशदाशाचक्रे सद्भक्तियिं

॥ २२ ॥

व ॥ शकवर्षद सासिरदनूरनाल्कनेय प्लवसंवत्सरद पौष-
बहुलतदिगे शुक्रवारदुत्तरायणसंक्रान्तियन्दु ॥

वृ ॥ शीलदि चन्द्रमौलिसचिवं निजवल्लभेयाचिकब्बना-
लोलमृगाचि माडिसिद पार्श्वजिनेश्वरगेहदुद्धपू-
जालिगे वेडे बम्मेयनहल्लियनित्तनुदारि वीर-ब-
ल्लालनृपालकं धरेयुमब्धियुमुल्लिनमेटदे मल्लिनं

॥ २३ ॥

तदवनिपनित्त दत्तिय-
नदनाचले बालचन्द्रमुनिराजश्री-
पदयुगमं पूजिसि चतु-
रुदधिवरं निमिरे कीर्त्ति जिनपतिगित्तल् ॥ २४ ॥

अन्तु धारापूर्व्वकमागि कोट्ट तद्ग्रामसीमे (यहाँ नौ पंक्तियों में सीमा आदि का वर्णन है)

श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यनयकीर्त्तिदेवरु बम्मेयनहल्लियलु कन्नेवन्दियं माडिसि श्रीपार्श्वनाथप्रतिष्ठेयं माडि देवरष्ट-विधार्च्चनेगे सोमसमुद्रद केरेय केलगे मोदल्गेरियल्लि गद्दे सलगे येरडु बढगण हालिनलु बेदलु नानूरुवं नयकीर्त्तिदेवरुं मारेय

नायकन मग सोवण्णनु गौड गौडनोलगाद प्रजेगलुं आचन्द्रतारं
बर सल्वन्तागि बिट्ट दत्ति मङ्गल महा श्री ॥

[चन्नरायपट्टन १५०]

[इस लेख मे लेख न० ५६ के समान होय्सल वंश की उत्पत्ति व लेख न० १२४ के समान होय्सलनरेशों का बल्लालदेव तक व बल्लालदेव के मंत्री चद्रमौलि और उनकी धर्मपत्नी आचलदेवी के वंश आदि का वर्णन है। तत्पश्चात् कहा गया है कि आचलदेवी ने बड़ी भक्ति से बेल्गुल तीर्थ पर पार्श्वनाथ मन्दिर निर्माण कराया और इसके लिए बल्लालदेव से बम्मेयनहल्लि ग्राम प्राप्त कर उसे अपने गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तदेव के शिष्य बालचन्द्रमुनि की पादपूजा कर उस मन्दिर को दान कर दिया।

लेख के अन्तभाग में उल्लेख है कि महामण्डलाचार्य नयकीर्तिदेव ने बम्मेयनहल्लि मे एक नई बस्ती निर्माण कराई और उसमें पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा की और कुछ भूमि का दान दिया।]

४९५

कुम्बेन हल्लि ग्राम में अञ्जनेय मन्दिर के समीप एक पाषाण पर

(लगभग शक सं० ११२२)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

नमोऽस्तु ॥

श्रीपतिजन्मदिन्देसेव यादववंशदोलाद दक्षिणो-
र्व्वीपतियप्पनोर्व्व सलनेम्ब नृपं सेलेयिन्दे कोपन-

द्वीपियनेन्दनोर्व्व मुनि पोय्सलयेन्दडे पेय्दु गंल्दु दि-

व्यापियशं नेगल्तेवडेदोण्गढ पोय्सलनेम्ब नामदिं ॥२॥

विनयादित्यनृपालन

तनूजनेरेयङ्गभूपनातन पुत्रं ।

कनकाचलोन्नतं वि-

ष्णुनृपाल...वनात्मजं ॥ ३ ॥

.... य सकल-म-

हीवलसाम्राज्य लक्ष्मिय...... ।

श्वेतातपत्रनागं पु-

रातन नृपवर्गेमिसिद...बल्लालनृपं ॥ ४ ॥

एकत्र गुणिनस्सर्व्वे वादिराज त्वमेकतः ।

तवैव गौरवं तत्र तुलायामुन्नतिः कथं ॥ ५ ॥

सले मन्द योग्यतेयिन-

ग्गलिसिद दुर्द्धरतपोविभूतिय पेम्पिं ।

कलियुगगणधररेम्बुदु

जगवेल्लं मल्लिषेणमलधारिगलं ॥ ६ ॥

तमगाज्ञावशमादुदुन्नतमहीभृत्कोटि तम्मिन्दे वि-

ष्पमर्दत्ती-धरेगेय्दे तम्म मुखदोल्पट्टतर्क्कवारासिवि-

भ्रममापोशनमात्रमादुदेनलिं मातेनगस्त्यप्रभा-

वमुमं कील्पडिसित्तु पेम्पिनेसकं श्रीपालयोगीन्द्रन॥७॥

अवरप्रशिष्यरु श्री वादिराजदेवरु तम्म सल्यद कुम्बेयन

हल्लियलु तम्म गुरुगलिगे परोक्षविनयमागि परवादिमल्लजिनाल

यमेन्दु कन्तेवसदियं माडिसि देवरष्टविधार्च्चनेगं आहारदानक हिरियकेरेय गौडियहल्लिगदे सलगे एरडु कोलग दत्तु अल्लि तेङ्क विट्टि सेट्टियकेरेयुं अदर केलद बेद्दले सलग एरडुवं सर्व्वबाधा परिहारमागि बिट्ट दत्ति ॥

(स्वदत्तां परदत्तां आदि श्लोक)

श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारि तन्त्राधिष्ठायकं कम्मटद माचय्यनुं माव बल्लय्यनुं देवर नन्दादीविगेगे गाणद सुङ्कवं बिट्टरु ॥ कण्डचत्तायकन मदवलिगे राचवेनायकितिय मग कुन्दाळहेगगडे नयचक्रदेवर बेसदिं माडिसिद बसदि ॥ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रधान सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि हुल्लयङ्गल मेय्दुन अश्वाध्यत्तद हेग्गडे हरियण्णं कुम्बेयनहल्लिय देवर माडिसि कोट्ट ॥

श्रीपाल त्रैविद्यदेवर शिष्यरु पदद शान्तिसिङ्ग पण्डित-र्गेयु अवर पुत्र परवादिमल्लपण्डितर्गेयुं अवर तम्म उमेयाण्डगं आतन तम्म वादिराजदेवङ्गं वादिराजदेवरु धारापूर्व्वकं माडि कोट्टरु ॥

[चन्नरायपट्टन १५१]

[इस लेख में पूर्ववत् बल्लालदेव तक होय्सल वंश के वर्णन के पश्चात् वादिराज मल्लिषेण मलधारि की कीर्त्ति का वर्णन है और फिर षड्दर्शन के अध्येता श्रीपाल योगीन्द्र का उल्लेख है। इनके शिष्य वादिराजदेव ने अपने गुरु के स्वर्गवास होने पर 'परवादिमल्ल जिनालय' निर्माण कराया और उसकी अष्टविध पूजन तथा आहार-दान के लिये कुछ भूमि का दान दिया।

महाप्रधान सर्वाधिकारी तन्त्राधिष्ठायक कम्मट माचय्य तथा उनके श्वशुर वल्लय्य ने जिनालय में दीपक के लिए तेल के टैक्स का दान दिया।

कुण्डच्चनायक की भार्या राचवे तथा नायकिति के पुत्र कुन्दाढ हेगडे ने नयचक्रदेव की आज्ञा से वस्ती निर्माण कराई।

इसी प्रकार महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरिय भण्डारी हुल्लय के साले अश्वाध्यक्ष ठरियण्ण ने कुम्बेयनहल्लि के देव की प्रतिष्ठा कराई।

वादिराजदेव ने ये दान श्रीपाल त्रैविद्यदेव के शिष्य शान्तिसिंग-पण्डित व परवादिमल्लपण्डित व रमेयाड व वादिराजदेव को दिये।]

४९६

चन्नरायपट्टन में गट्टे रामेश्वर मन्दिर के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक सं० ११०८)

[ऊपर का भाग टूट गया है]

... ..श्रेष्ठगुणं पेगले सत्ययुधिष्ठिर......नवसेकाररधि-ष्ठायक......यण्णनं बुधनिधियं ॥

सोगयिसुव गङ्गवाडिगे
मोगमेने न...पुददरोल्।
सिगं दिण्डिगूर शाखा-
नगरं वोट्टेनिपुदल्ते मोनेगनकट्टं ॥ १ ॥

कनकाचलकूटदवोलु
घनपथमं मुट्टि नेट्टनमर्दोप्पुविनं।

मोनेगनकट्टदल्लूर्जेत-

जिन गृहमं **रामदेव**विभु माडिसिदं ॥ २ ॥

तद्गुरुकुलमेन्तेन्दडे। श्री**नयकीर्त्ति**सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल-शिष्यरु।

विदिताध्यात्मिक**बालचन्द्र**मुनिराजेन्द्राग्रशिष्यप्रशं-

स्तिदवन्धर्म्मुनि**मेघचन्द्र**रनघर्भास्वद्दयासागरा-

भ्युदय**पो**स्तकगच्छ**देशिकगण श्रीकोण्डकुन्दा**न्वया-

स्पददीपक्कर्रमोप्पुवर्व्वसुधेयोलशस्त्वत्तपोलद्धिमयिं ॥३॥

शकवर्ष ११०८ नेय विश्वावसु संवत्सरदुत्तरायण संक्रान्ति-यादिवारदन्दु **बनवसे**कारर **मोत्तदनायकरु दिण्डियूरवृत्तिय** गावुण्डुप्रभुगलुं **मे**लिसासिर्व्वरु शान्तिनाथदेवरष्टविधार्च्चनेगं खण्डस्फुटजीर्णोद्धारक्कं ऋषियराहारदानक्कं सर्व्वबाधपरिहार-मागि **मेघचन्द्र**देवर्गे धारापूर्वकं माडि बिट्ट गद्देवेद्लेस्थलङ्ग लेन्तेन्दडे। (यहाँ दान का विवरण है)

[चन्नरायपट्टन १६६]

[... गङ्गवाडि के मोनेगनकट्टे का दिण्डिगूर एक शाखा नगर था। मोनेगनकट्टे में रामदेवविभु ने एक विशाल जिनालय निर्माण कराया। रामदेव के गुरु, नयकीर्त्तिसिद्धान्तचक्रवर्ती के शिष्य अध्यात्मिक बालचन्द्र मुनि के प्रधान शिष्य मेघचन्द्र थे। उक्त तिथि को बनवसे के कर्मचारी मोत्तद नायक तथा दिण्डियूरवृत्ति के गौण्ड और प्रभुओं ने शान्तिनाथ भगवान के अष्टविधार्चन के तथा जीर्णोद्धार व आहारदान के हेतु उक्त भूमि का दान मेघचन्द्रदेव को कर दिया।]

४९७

तगडूरु ग्राम में पुरानी नगरी के स्थल पर एक पाषाण पर

(लगभग शक सं० १०५०)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति श्री..... ...मेश्वर परमभट्टारक सत्याश्रयकुल-तिलकं चालुक्याभरण श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्कतार सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावती-पुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मले-परोलु गण्ड राजमार्त्तण्ड कोङ्गुनङ्गलि......तलकाडुवनवासे हानुङ्गलुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेवर... कुलगगनदिवामणिय ए......गदेवनवन मग..... विष्णु नृपं तद्भूमीश......तनूभवनें......वाव...॥

पेसर्गोण्डावावदेशङ्गलनेणिसुवुदावावदुर्ग्गङ्गल व-
ण्णिसि पेलुत्तिप्पुदावावनिपतिगलं लेक्किसुत्तिप्पुदेम्बो-
न्देसकं......कडेवरं...............सा-
धिसिदं भूलोक......तिलकं वीरविष्णुक्षितीशं॥२॥

...मङ्कथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

भीमार्ज्जुन-लवकुशरिव-
रीमाल्केयेनल्के तम्मुतिर्व्वर् ......।
श्रीमन्मरियानेयमु-
द्दामगुणं भरतराजदण्डाधिपरु॥ ३ ॥

श्री विष्णु पोय्सलङ्खि-
लावनिय .. ..दल.........साधिसि...।
...विहित भरत चक्रियन्
...विभुवेनेयिसुगुमखिलधरेयोल्भरतं ॥ ४ ॥

मरुवकरुमनोडिसलुं
नेरे राज्यश्रीविलासमं मेरेयलुवी-
मरियाने नेरगु................
......मेच्चे पट्टदानेयुमादं ॥ ५ ॥

आतन सति मुन्न् नेगल्दा-
सीतेगरुन्धतिगे वा..... ......
.........दोरेयेनलल्लदे
भूतलदोले जक्कणब्बेगुलिदर्दोरेये ॥ ६ ॥

......याने दण्णायकनेरेयन...न जक्कियब्बेगे सुतरल...
......एरगु... . ...भरतबाहुबलिगलेनिप्पर् ॥ ७ ॥

अन्तवरेन्तेने ॥

श्रीमत्पेर्गडे माचिराजगिरियोल्पुट्टुत्ते सन्मार्गदि-
न्दामाश्रीमरुदेवियेम्ब नलिनीवासक्के सन्दाजन-

प्रेमे श्रीजिनमार्ग्गदोन्देसकदानैर्मल्यदिं पोर्हिदल्
चाम......पेर्ग्गडेदेवसजलधियं पुण्यापगारूपदिं
॥ ८ ॥

......रेय चामियक्कन
सोदररापिरियचैाण्डनेम्व......गन-
न्तादरद चेन्दिय............
......दलदो-न्नूचियणनुमेन्दिवरप्पर् ॥ ९ ॥

परमजिनेश्वरं मनदोलोप्पिरे तन्नयकीर्त्ति नाकदो-
ल्परेदिरे दानधर्म्मविनयव्रतसीलचरित्रमेम्वल-
ङ्करणद पेर्म्मे मानसकें पोण्मे दयारसमुण्मे चित्तदो-
ल्गुरुवभिवन्दनं मनदोलागदद्दिक्कुंदु चामियक्कन
॥ १० ॥

भारद्वाज सुगोत्रदो-
लारुं मुन्नान्तरिल्ल नेरपल्जसमं ।
ताराद्रिसन्निभं तग-
डूर जिनालयमदेसेये चामलेयेसेदल् ॥ ११ ॥

जिनपूजाष्टविधार्चनक्के मुनियर्ग्गाहारदानक्के त-
ज्जिनचैत्यालयजीर्ण्णदुद्धरणकं सल्वन्तिदं सोव-गौ-
ण्डन पुत्रक्कुलदीपकव्र्जनतुतश्रीरायगावुण्डनो-
ल्मनदं मल्लयनायकं गुणगणख्यातम्र्महोत्साहदिं
॥ १२ ॥

धारापूर्व्वकदिं तग-
दूरं वग्गलबम्मगट्टवं वसदिगे सले ।
धारिणियरियल्लिनट्ट-
र्भूरविशशितारमेरुगल्लिनल्लिवनेगं ॥ १३ ॥

परमजिनेश्वरपूजेगे
पिरिदुं सद्भक्तियिन्दे कोडियकेय्यं ।
वरगुणरायगवुण्डं
निरुतं कल्याणकीर्त्ति मुनिपङ्गित्तं ॥ १४ ॥

भूविनुतं कलि-बोप्पं
देवङ्गं चरुगिङ्गे नेमवेर्ग्गडेय मगं ।
भूविदितमागे कोट्टं
तावरेगेरेयल्लि गद्दे खण्डुग वोन्दं ॥ १५ ॥

कल्याणकीर्त्ति कीर्त्तिसु-
वल्ल्युदयं मूरुलोकमं व्यापिसि कै-
वल्यदोडगूडि सले मा-
ण्गल्यमुमादत्तु चिन्ते चिन्त्यङ्गलवोल् ॥ १६ ॥

(स्वदत्तां परदत्तां वा आदि श्लोक)

[चन्नरायपट्टन १६८]

[इस लेख में चालुक्यत्रिभुवनमल्ल व विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेव के राज्य में नयकीर्त्ति के स्वर्गवास हो जाने पर चामले द्वारा तगडूर में जिनालय निर्माण कराये जाने व अष्टविधार्चन, आहारदान तथा

जीर्णोद्धार के हेतु रायगवुण्ड और मल्लय नायक द्वारा 'तगडूर' और 'बम्मगुट्ट' का दान दिये जाने का उल्लेख है। रायगवुण्ड ने जिन-पूजन के लिए 'कोड' की भूमि कल्याणकीर्त्ति मुनि को दी। लेख में अन्य दानों का भी उल्लेख है। अन्त में कल्याणकीर्ति की प्रशंसा के पद्य हैं।]

४६८

गुम्मि ग्राम के मदलहसिगे नामक स्थल में एक स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० १०००)

भद्रमस्तु जिनशासनस्य। स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर-नघटरादित्य **त्रिभुवनमल्ल चोलकोङ्गाल्वदेवर** पादारा-धक ..तु-**रावसेट्टि**य मम्मगनदटरादित्य मावन्तवूवेय नायक-नुत्तरायण संक्रमणदन्दु हडुवण तुम्बिन मोदलेरियलु १ ½ खण्डुग वयलं २ खण्डुग अडुविन मण्णुमं **पद्मणन्दि-**देवरिंगे धारा-पूर्व्वकं माडिविट्टु कोट्टनु। (स्वदत्तां परदत्तां आदि श्लोक)

[होले नरसीपुर १६]

[त्रिभुवनमल्ल चोलकोङ्गाल्वदेव के पादाराधक व रावसेट्टि के पौत्र वूवेय नायक ने उक्त तिथि को पद्मनन्दि देव को उक्त भूमि का दान दिया।]

४६६

मललकेरे ग्राम में ईश्वर मन्दिर के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक सं० ११७०)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ २ ॥

वृ ॥ यदुवंशक्षितिपालकं शशपुरी वासन्तिका......
मदनागिर्प्पिन......बुराजित...मेरपाये शा ॢल...
...जैन मुनीश्वरं पिडिद.. ......
............पोडेदं......॥ ३ ॥

आ-होय्सलान्वयदोल ॥

वृ ॥ भूनाथासेव्यपादं निखिलरिपुमहीपालविध्वंस केली-
कीनाशं वैरिभूभृन्मृगगहनदवन्ताने दुर्गप्र......
...ना...रामनेत्रोभयश... ...श्रीललामं-
तानेन्दी विश्वलोक...सलिसिदं वीरबल्लालभूपं
॥ ४ ॥

गोपतिगातपनिकरं
गोपतिगे......वागोदडं ।

गोपतियादन्ता ..

गोपति **बल्लालगात्मजं नरसिंहं** ॥ ५ ॥

वृ ॥ जित्वा वैरिनरेन्द्रचक्रमखिलं संग्रामरङ्गेऽभव-

न्भूचक्रं लवणाब्धिवेष्टितमिदं स्वीकृत्य...

...श्वर वैष्णवाहुतमहो तन्मुख्यचक्रं सदा

श्रीसोमेश्वरदेव यादव...........॥ ६ ॥

भामानीकामनोजं

भीमाहितदैत्यततिगे **दशरथरामं** ।

सोमं सुजनसुधाब्धिगे

सोमेश्वरदेवनेन्दु वर्ण्णिपुदु जगं ॥ ७ ॥

व ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं **द्वारावती-**पुरवराधीश्वरं विद्विण्णिशाकरविधुन्तुदं । **कलिङ्गमत्त-**मातङ्गमस्तकविदारणोत्कण्ठकण्ठीरवं । **सेवु (णो)र्व्वी-**पालारण्य-दावानलं । **मालवमहीपालाम्भोधिकुम्भस-**म्भवं । **वासन्तिकादेवी**लब्धलसितप्रसाद । **यादवकुला-**म्बरद्युमणि । सम्यक्त्वचूड़ामणि । **मलेराजराज मलेपरोलु** गण्ड गण्डभेरुण्ड कदनप्रचण्ड **सनिवार-सिद्धि गिरिदुर्ग-**मल्ल । चलदङ्कराममसहायशूरनेकाङ्गवीरं । **मगर...** कुलिश...रं । **चोलराज्यप्रतिष्ठाचार्य्य पाण्ड्यकुलसंर-**क्षणदक्षदक्षिणभुजं । भुजबलार्ज्जितानेक-नामप्रशस्ति-समालङ्कृतं श्रीमद्-**गङ्गहोय्सलप्रतापचक्रवर्त्तिवीरसोमे-**

श्वरदेवरु दक्षिणमण्डलमं दुष्टनिग्रहशिष्टपरिपालनपू-
र्व्वकं राज्यं गेय्वुत्तमिरे ।

तत्पादपद्मोपजीवि सेनानाथशिरोमणि वन्दिजन-चिन्तामणि
सुजनवनजवनपतङ्गं राजदलपत...सलिगं कलिगलङ्कुश स्वामि-
द्रण्डेशनेन्तेप्पनेन्दडे ॥

वृ ॥ श्रीयं विस्तीर्णवक्षस्थलनिलयदो......
श्रीयं कून्र्गल केलीसदनदोलोलविं तालिद विख्यातकीर्त्ति-
श्रीयिन्दाशान्तमं रञ्जिसे निजविजय...स्वान्तजातं...
...य्यि सैन्याधिनाथं नेगल्दनुरुगुणस्तोमनुर्व्वीललामं
॥ ८ ॥

आतननुजं ॥
क ॥ ...रु देत.........
...सिरमं ब्रह्मसैन्यनाथं क्षिप्रं ।
धुरदोलतिचतुरं निज-
·········वीर···तिगे सिरदा···तिय···॥ ६ ॥

आमन्त्रि ॥
मालिनी ॥ मनुचरितनुदारं वत्समन्त्रिप्रगल्भं
जिनसदनसमूहाधारसारानुशा...म् ।
तनगे... .. . प्पिदं पूर्णपुण्यं
जननुतविजयण्णां मन्त्रिगोत्राप्रगण्यं ॥ १० ॥

क ॥ कामं कमनीयगुणं
धीमन्तसिरोजबन्धललित......।

श्रीमज्जिनपद्मनलिन-शि-

लीमुखनमृतांशुविशदकीर्त्तिप्रसरं ॥ ११ ॥

तज्जननीजनकरु ॥

लोकाश्चर्यनियोगयोगनिपुणं दुग्गस्त्रिकावल्लभं

नाकर्ण्य भुवनाभिराम च ..नेम्विनं कोङ्ग-दे-

शैकश्रीकरणाग्रगण्यनेसेदं तत्सूनु कामान्तु ..

शाकीर्ण्णायतकीर्त्तिकान्तनेसेवं सातं गुणव्रातदिं

॥ १२ ॥

आकामात्मजरु ॥

परमजिनचरणदामं

वरविद्वद्वार्द्धिसोमनवलाकामं ।

करणगणाग्रणी सोमं

कमलवाणीरामं ॥ १३ ॥

सुरकुजक्के कामधेनुगं

परुसक्क् इन-सुतगे समम......।

सुर...परिकिसे पुरुसरत्नं

निरुपमर्नी-सोमनमलगुणगणधाम ॥ १४ ॥

जीर्ण्णजिनभवनमं भू

वर्ण्णिसलुद्धरि...सरसगुण-मकीर्त्तिं दिगन्ता-

कीर्ण्णमेने धर्म्मसस्या-

...र्ण्ण...कर्ण्ण........संवर्ण्यं ॥ १५ ॥

आ-सातण्णनेन्तप्पं ॥

सातिशयचरितभरितं

भूतभवद्भाविभव्यजनसंसेव्यं ।

सातण्णनमलगुणसं-

भूतं जिनपदपयोरुहाकरहंसं ॥ १६ ॥

मल्लिकामाले ॥ देवदेवन शान्तिनाथन गेहमं पोसतागि स-

द्बोधिप...ओल्दु निर्म्मिसे तन्न कीर्त्ति दिगन्तम-

न्तिल्ले भव्यचकोरिचन्द्रमनेन्दु बन्देले वर्ण्णिसल्

कावणावरजं विचित्र चरित्रसातणनोप्पुवं ॥ १७ ॥

क ॥ सातणन वनिते गुण-

......रत्न...दि भूतलदोल् ।

नोन्तिल्लवे बोध...वे

सातिस...ख्यातियिन्दे रञ्जिसुतिर्प्पल् ॥ १८ ॥

आ-दम्पतिगल गर्भदो-

लादर्भकरेसेव-काम-सातङ्गल वि-

द्यादिगुणरूपिनोलिप-

न्दादु........धरित्रिगोर्वं पडेदं ॥ १९ ॥

स्वस्ति श्रीमूलसङ्घ देसियगण पोस्तकगच्छद कोण्डकुन्दा-न्वय सिद्धेश्वर...मानानूनचारुचरित्रं श्रीमाघणन्दिसिद्धान्त-चक्रवर्त्ति.........तप्पं ॥

वृ ॥ स्वान्तभवप्रसृति...रसं ॥

वरचारित्रननूनपुण्यजननं.........क-भा-
सुरनीरेजसुमित्रनार्जितदया..... ।
......पवित्रनेन्दु भुवनं मक्कीर्त्तिसल्वर्त्तिपं
वरसैद्धान्तिकमाघनन्दिमुनिपं श्रीकोण्डकुन्दान्वयं
॥ २० ॥

तच्छिष्यरु ॥

क ॥ चारुतरकीर्त्तिदिग्वि-
स्तारितनतनुप्रताप...... ।
......यं भानुकीर्त्ति वि......
... . बुधनिकरं ॥ २१ ॥

आ-मुनिय शिष्यनखिल-क-
लामयनुदारचरितनतिविशदयशो-
धामं मुनिपुङ्गव... ..
..... वर्णिपुदु माघणन्दिव्रतियं ॥ २२ ॥

वृ ॥ वरविद्यामहितं सुराचलदवोल् श्रीमाघणन्दिव्रती-
श्वरनिर्द......दद्रिसानुसुपरीतानूनशिष्यौघमं ।
..... त्रितुलप्रभृतियन्तारय्यें ता... ..को-
......मण्डलवेन्देोडिन्नवर पेम्प पेलनेनेनेन्दोडं॥२३॥

व ॥ यिन्तु विराजिसुत्तिर्द्दमसुदायदल्लि माघणन्दि-भट्टारकर
गुड्डं सोवरस-सूनु सान्तण्णनु......देन्तप्पुदु ॥

वृ ॥ जगतीसम्भूतधर्म्माङ्कुर...देम्बन्ते भूकान्ते रा...
जगदिं पोत्तिर्द्द पोण्गंलसद कलसविदेम्बन्ते भव्यावलीके-

लिगे रम्यंस्थानमेम्बन्तिरे सुकृतिसुधासूतिबिम्बोदयैन्द्रो-
नगवे बन्दावगं रञ्जिसिदुदु वसुधाचक्रदोल् जैनगेहं ॥२४॥

क ॥ आ-जिनभवनदोलोप्पुव
भुजगपतिशान्तिनाथ॰तन्नमलपदा-
म्भोजङ्गलोलदु भव्यस-
माजं.. ...लिगे......नुदितोदयमं ॥ २५ ॥

इन्तोल्दु मललकेरेयोल्
शान्तीशनिशान्तवेसेयॆ निर्म्मिसि निखिला-
शान्तायतकीर्त्ति ....
......सातनिप्पनुर्व्वीवर्ण्यं ॥ २६ ॥

व ॥ अन्तिर्द्दु तन्निष्टगोत्रमित्रपुत्रकलत्रादिसुखसम्भूतिनिमित्तं सातण्णनगण्यपुण्यप्रभावं शकवर्षद ११७० नेयप्लवङ्ग संवत्सरद फाल्गुण सु ५ आ श्रीशान्तिनाथस्वामियं प्रतिष्ठेय माडिया-जिनपरियच्चर्चेनेगमाहारदानककमेन्दु बिट्ट भूमि आ-नाडुसेनबोव विजयण्ण-सोवण्ण-मदुकण्णनुं समस्तनाडुगौडगलु मुख्यवागि सोवण्णनु मललकेरेयल्लि माडिसिद चैत्यालयक्के बिट्ट भूमिय सीमासम्बन्धवेन्तेन्दडे

(यहाँ सीमा-वर्णन और अन्तिम श्लोक है)

[अर्केल्गुद १२]

[इस लेख में प्रथम होय्सलवंश के बल्लालदेव, नरसिंह और सोमेश्वरदेव का वर्णन है। सोमेश्वरदेव के वर्णन में कहा गया है कि उन्होंने कलिङ्गनरेश का मस्तक विदीर्ण किया, सेवुण राजा को नष्ट

किया, मालव-नरेश को जीता, मगर राज्य की नीव खोद डाली, चोल राज्य की प्रतिष्ठा की, पाण्ड्यव श की रक्षा की, इत्यादि । इनके राज्यकाल में उनके सेनानाथ 'शान्त' ने शान्तिनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। शान्त की भार्या का नाम 'भोगब्बे' तथा पुत्रों के नाम 'काम' और 'सात' थे। उनके गुरु की परम्परा इस प्रकार थी:—मूलसघ, देशीयगण, पुस्तकगच्छ, कोण्डकुन्दान्वय में माघनन्दि व्रती हुए। उनके शिष्य भानुकीर्त्ति और उनके शिष्य माघनन्दि भट्टारक हुए। इन माघनन्दि भट्टारक के एक गृहस्थ शिष्य सोवरस के पुत्र सातण्ण ने मनलकेरे मे शान्तिनाथ मन्दिर का पुनर्निर्माण कराया और उस पर सुवर्ण कलश की स्थापना कराई तथा उक्त तिथि को जिनार्चन व आहारदान के हेतु उक्त भूमि का दान दिया।]

५००

सोमवार ग्राम मे पुरानी बस्ती के समीप एक पाषाण पर

(शक स० १००१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
श्रीप्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवो जीयाच्चिरं भुवि ।
विख्यातोभयसिद्धान्तरत्नाकर इति स्मृतः ॥ २ ॥
अवनीचक्रके पूज्यं निजपदमेनिसि-तैदे सन्मार्ग्ग......
......क्कोदात्तसैद्धान्तिकनेसेदपनम्मम्म काणूर्ग्गण-प्रो-
द्भवनु......धर कुलिशधरं.. ......।
....वि.. जिनागम . ..नीराजहंस ॥ ३ ॥

जगदाश्चर्यमिदत्यपूर्व्वमिदरन्दकञ्जजं कूड ब-
ट्टिगेयन्तिट्टमिडल्किदेन्नेरेदने पेर्लेम्ब कोङ्गाल्व जै-
नगृह नाडे वेडङ्गुवेत्तदट्टरादित्यावनीनाथ की-
र्त्तिंगहर्प्पिर्प्पेनोलिन्तु तोप्पुदेने मत्तं वर्ण्णिपं वर्ण्णिपं ॥४॥
जगदोल्वानीव दा...नेगलल् अदट्टरादित्य-चैत्यालयक्कयै-
दे गुणाम्भोराशि वीराग्रणि विजयभुजोद्धासिदिव्यार्च्चनक्क-
नदु गर्ड सद्धक्तियिन्दं तरिगलनिय मण्णल्लि नाल्वत्तेरल्ख-
ण्डुगश्रीजक्कित्तनत्युत्सवदिन् अदट्टरादित्यनादित्यतेजं॥५॥
इनिवं सिद्धान्तदेवगगुनयदरिदाचन्द्रतारं सलुत्ते-
न्तेने धारापूर्व्वकं कोट्टु दनुदधिजलस्थूलकल्लोललीला-
वनिचक्कदे पर्व्विर्त्तदनिदनुदनेनेन्दपै दानदोल्पा-
वनुमं मिक्किर्प्पिनं माडिसिदनेसेये सद्धर्म्मि कोङ्गाल्वभूपं ॥६॥
स्वस्ति सकवर्ष १००१ नेय सिद्धार्थिसंवत्सरं प्रवर्त्ति-
सुत्तिरे स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं ओरे-
यूर्प्पुरवराधीश्वरं जटाचोलकुलोदयाचलगभस्तिमालि सूर्य्य-
वंश-शिखामणि शरणागतवज्रपञ्जरं श्रीमद्राजेन्द्रपृथुवीको-
ङ्गाल्वं राज्यं गेय्युत्तुं श्रीमूलसङ्घद काणूर्गणद तगरिगलान्वद
गण्डविमुक्तसिद्धान्तदेवर्गे बसदिय माडिसि देवर्गंचर्चना-
सोगक्के तरिगलनेय मावुकल्लुं द्देदगेदा...बिलुवट्टं कोट्टु भूमि ख
४२। (अन्तिम श्लोक) चतुर्भाषालिखितथकविद्याधरं सन्धि-
विग्रहि श्रीमन्नकुलार्य्य बरेदं मङ्गलं महा श्री।

[अर्केल्गुद ६१]

[इस लेख में उभयसिद्धान्तरत्नाकर प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव के उल्लेख के पश्चात् कहा गया है कि कोङ्गाल्वनरेश अदटरादित्य ने जो 'अदटरादित्य चैत्यालय' निर्माण कराया था उसकी पूजन के हेतु राजा ने सिद्धान्तदेव को 'तरिगलनि' की ४२ खण्डुग भूमि दान कर दी।

चोलकुल के सूर्यवंशी महामण्डलेश्वर राजेन्द्र पृथुवीकोङ्गाल्व ने मूलसंघ, कानूरगण, तगरिगल् गच्छ के गण्डविमुक्तदेव के लिए एक बस्ती निर्माण कराई और देवपूजन के लिए उक्त भूमि का दान दिया।

यह लेख चार भाषाओं के ज्ञाता सान्धिविग्रहिक नकुलार्य का रचा हुआ है।]

अनुक्रमणिका

इस अनुक्रमणिका मे जैन मुनि, आर्यिका, कवि व संघ, गण, गच्छ और ग्रन्थोंके नाम ही समाविष्ट किये गये हैं। नाम के पश्चात् ही जो अङ्क दिये गये हैं उनसे लेख-नम्बर का अभिप्राय है। भू० के पश्चात् जो अङ्क दिये गये हैं वे भूमिका के पृष्ठ-नम्बर हैं।

इस अनुक्रमणिका में निम्न लिखित सकेताक्षरों का प्रयोग किया गया है.—

उ०=उपाधि । गं० वि०=गडविमुक्त । त्रै० च०=त्रैविद्यचक्रवर्ती । त्रै० यो०=त्रैकाल्ययोगी । पं०=पंडित । पं० आ०=पडिताचार्य । भ०=भट्टारक। म०=मलधारी। म० दे०=मलधारि देव। सि० च०=सिद्धान्तचक्रवर्ती । सि० दे०=सिद्धान्त देव । सै०=सैद्धान्तिक । श्वे०=श्वेताम्बर ।

ग

छ

ज

य

र

ल

व

श

ह

अनुक्रमणिका २

इस अनुक्रमणिकामें जैन मुनि, आर्यिका, कवि व संघादिको छोड शेष सब प्रकारके नामोंका समावेश किया गया है। नामके पश्चात्के अकोंसे लेख-नंबर व भू० के पश्चात्के अंकोंसे भूमिका-पृष्ठका तात्पर्य है।

इस अनुक्रमणिकामें निम्नलिखित संकेताक्षरोंका प्रयोग किया गया है।

उ०=उपाधि। को० न०=कोङ्गाल्व नरेश। ग० न०=गंग नरेश। गं० रा०= गंग राजकुमार। ग्रं०=ग्रंथ। ग्रा०=ग्राम। च० न०=चंगाल्व नरेश। चा० न०= चालुक्य नरेश। चामु०=चामुण्डराय। चो० रा०=चोल राजधानी। चो० से०= चोल सेनापति। जा०=जाति। जै० मं०=जैन मंदिर। तृ०=तृतीय। दा०=दार्श- निक। दु०=दुर्ग। द्वि०=द्वितीय। न०=नरेश। नि० सर०=निडुगल सरदार। नो० न०=नोलम्ब नरेश। पा० सर०=पाण्ड्य सरदार। पु०=पुरुष। पौ० ऋ०=पौरा- णिक ऋषि। पौ० न०=पौराणिक नरेश। प्र०=प्रथम। मं०=मंत्री। मै० न०= मैसूर नरेश। मौ० न०=मौर्य नरेश। रा० न०=राष्ट्रकूट नरेश। रा० रा०=राष्ट्र- कूट राजकुमार। रा० वं०=राजवंश। वि० न०=विजयनगर नरेश। शै० न०= शैशुनाग नरेश। सर०=सरदार। सरो०=सरोवर। से० सेनापति। स्था०=स्थान। हो० न०=होय्सल नरेश।

ख

ग

घ

च

फ

ब

य

माणिकचन्द-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थमालाका
सूचीपत्र

केवल संस्कृत-प्राकृतके ग्रन्थ।

[इस ग्रन्थमालाके तमाम ग्रन्थ लागत मूल्यपर बेचे जाते हैं,
अतएव इसके सभी ग्रन्थ बहुत सस्ते हैं।]

१ **लघीयस्त्रयादिसंग्रह**—(१ भट्टाकलंकदेवकृत लघीयस्त्रय अनन्तकीर्तिकृत तात्पर्यवृत्तिसहित, २ भट्टाकलंकदेवकृत स्वरूपसम्बोधन, ३–४ अनन्तकीर्तिकृत लघु और वृहत्सर्वज्ञसिद्धि) पृष्ठसंख्या २२४। मूल्य ।≈)

२ **सागारधर्मामृत**—पं० आशाधरकृत, स्वोपज्ञभव्यकुमुदचन्द्रिका टीकासहित। पृष्ठसंख्या २६०।

३ **विक्रान्तकौरवीय नाटक**—कवि हस्तिमल्लकृत। पृ० १७६। मू० ।≈)

४ **पार्श्वनाथचरित**—श्रीवादिराजसूरिप्रणीत। पृ० २१६। मू० ॥)

५ **मैथिलीकल्याण**—कविवर हस्तिमल्लकृत नाटक। पृ० १०४। मू० ।)

६ **आराधनासार**—आचार्य देवसेनकृत मूल प्राकृत और पण्डिताचार्य रत्नकीर्तिदेवकृत संस्कृतटीका। पृष्ठसंख्या १३२। मू० ।)॥

७ **जिनदत्तचरित**—श्रीगुणभद्राचार्यकृत काव्य। पृ० १००। मू० ।)॥

८ **प्रद्युम्नचरित**—परमार राजा सिन्धुलके दरबारी और महामहत्तर श्रीपप्पटके गुरु आचार्य महासेनकृत काव्य। पृ० ३३६। मू० ॥)

९ **चारित्रसार**—श्रीचामुण्डराय महाराजरचित। पृ० १०८। मू० ।≈)

१० **प्रमाणनिर्णय**—श्रीवादिराजसूरिकृत न्याय। पृ० ८४। मू० ।–)

११ **आचारसार**—श्रीवीरनन्दि आचार्यप्रणीत यतिधर्मशास्त्र। इसमें मुनियोंके आचारका वर्णन है। पृ० १०४। मूल्य ।≈)

१२ **त्रिलोकसार**—श्रीनेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्तीकृत मूल गाथा और माधवचन्द्र त्रैविद्यदेवकृत संस्कृतटीका। पृ० ४४०। मू० १॥)

१३ **तत्त्वानुशासनादिसंग्रह**—(१ श्रीनागसेनमुनिकृत तत्त्वानुशासन, २ श्रीपूज्यपादस्वामीकृत इष्टोपदेश पं० आशाधरकृत संस्कृतटीकासहित, ३ श्रीइन्द्रनन्दिकृत नीतिसार, ४ मोक्षपंचाशिका, ५ श्रीइन्द्रनन्दिकृत श्रुतावतार, ६ श्रीसोमदेवप्रणीत अध्यात्मतरंगिणी, ७ श्रीविद्यानन्दस्वामिप्रणीत बृहत्पचनमस्कार या पात्रकेसरीस्तोत्र सटीक, ८ श्रीवादिराजप्रणीत अध्यात्माष्टक, ९ श्रीअमितगतिसूरिकृत द्वात्रिंशतिका, १० श्रीचन्द्रकृत वैराग्यमणिमाला, ११ श्रीदेवसेनकृत तत्त्वसार (प्राकृत), १२ ब्रह्महेमचन्द्रकृत श्रुतस्कन्ध, १३ ढाढसी गाथा (प्राकृत), १४ पद्मसिंहमुनिकृत ज्ञानसार संस्कृतच्छायासहित।) पृष्ठसंख्या १८४ । मू० ॥≈)

१४ **अनगारधर्मामृत**—पं० आशाधरकृत स्वोपज्ञ भव्यकुमुदचन्द्रिकाटीकासहित। यह भी मुनिधर्मका ग्रन्थ है। पृष्ठसख्या ६९६ । मूल्य ३॥)

१५ **युक्त्यनुशासन**—श्रीमत्समन्तभद्रस्वामिकृत मूल और विद्यानन्दस्वामिकृत सस्कृतटीका । पृ० १९६ । मू० ॥−)

१६ **नयचक्रसंग्रह**—(१ श्रीदेवसेनसूरिकृत नयचक्र, २ आलापपद्धति और ३ माइल्ल धवलकृत द्रव्य-गुणस्वभाव प्रकाशक नयचक्र) पृष्ठसख्या १९४ । मू०॥≈)

१७ **षट्प्राभृतादिसंग्रह**—(१ श्रीमत्कुदकुन्दस्वामीकृत मूल षट्पाहुड और उसकी श्रुतसागरसूरिकृत संस्कृतटीका, २ श्रीकुन्दकुन्दकृत लिंगप्राभृत, ३ शीलप्राभृत, ४ रयणसार और ५ द्वादशानुप्रेक्षा सस्कृतछायासहित ।) पृष्ठसंख्या ४९२ । मू० ३)

१८ **प्रायश्चित्तसंग्रह**—(१ इन्दनन्दियोगीन्द्रकृत छेदपिण्ड प्राकृत छायासहित, २ नवतिवृत्तिसहित छेदशास्त्र, ३ श्रीगुरुदासकृत प्रायश्चित्तचूलिका, श्रीनन्दिगुरुकृतटीकासहित, ४ अकलंककृत प्रायश्चित्त) पृष्ठ २०० । मू० १≈)

१९ **मूलाचार**—(पूर्वार्ध), श्रीवट्टकेरस्वामीकृत मूल प्राकृत, श्रीवसुनन्दिश्रमणकृत आचारवृत्तिसहित । पृ० ५२० । मू० २॥)

२० **भावसंग्रहादि**—(१ श्रीदेवसेनसूरिकृत प्राकृत भावसंग्रह, छायासहित, २ श्रीवामदेवपण्डितकृत संस्कृत भावसग्रह, श्रीश्रुतमुनिकृत भावत्रिभगी और ४ आस्रवत्रिभंगी) पृ० ३२८ । मू २।)

२१ सिद्धान्तसारादिसंग्रह—(१ श्रीजिनचन्द्राचार्यकृत सिद्धान्तसार प्राकृत, श्रीज्ञानभूषणकृत भाष्यसहित, २ श्रीयोगीन्द्रकृत योगसार प्राकृत, ३ अमृताशीति संस्कृत, ४ निजात्माष्टक प्राकृत, ५ अजितब्रह्मकृत कल्याणालोयणा प्राकृत, ६ श्रीशिवकोटिकृत रत्नमाला, ७ श्रीमाघनन्दिकृत शास्त्रसारसमुच्चय, ८ श्रीप्रभाचन्द्रकृत अर्हत्प्रवचन, ९ आप्तस्वरूप, १० वादिराजश्रेष्ठीप्रणीत ज्ञानलोचनस्तोत्र, ११ श्रीविष्णुसेनरचित समवसरणस्तोत्र, १२ श्रीजयानन्दसूरिकृत सर्वज्ञस्तवन सटीक, १३ पार्श्वनाथसमस्यास्तोत्र, १४ श्रीगुणभद्रकृत चित्रवन्धस्तोत्र, १५ महर्षिस्तोत्र, १६ श्रीपद्मप्रभदेवकृत पार्श्वनाथस्तोत्र, १७ नेमिनाथस्तोत्र, १८ श्रीभानुकीर्तिकृत शखदेवाष्टक, १९ श्रीअमितगतिकृत सामायिकपाठ, २० श्रीपद्मनन्दिरचित धम्मरसायण प्राकृत, २१ श्रीकुलभद्रकृत सारसमुच्चय, २२ श्रीशुभचन्द्रकृत अगपण्णत्ति प्राकृत, २३ विबुधश्रीधरकृत श्रुतावतार, २४ शलाकाविवरण, २५ पं० आशाधरकृत कल्याणमाला) पृष्ठसंख्या ३६५ । मू १॥)

२२ नीतिवाक्यामृत—श्रीसोमदेवसूरिकृत मूल और किसी अज्ञातपण्डितकृत सस्कृतटीका । विस्तृत भूमिका । पृ० स० ४६४ । मू० १॥।)

२३ मूलाचार—(उत्तरार्ध) श्रीवट्टकेरस्वामीकृत मूल प्राकृत और श्रीवसुनन्दि आचार्यकृत आचारवृत्ति । पृ० ३४० । मू० १॥)

२४ रत्नकरण्डश्रावकाचार—श्रीमत्स्वामिसमन्तभद्रकृत मूल और आचार्य प्रभाचन्द्रकृत सस्कृतटीका, साथ ही लगभग ३०० पृष्ठकी विस्तृत भूमिका (हिन्दीमें) है, जिसमें स्वामी समन्तभद्रका जीवनचरित और मूल तथा टीकाग्रन्थकी निष्पक्ष तथा मार्मिक समालोचना की गई है । भूमिकालेखक बाबू जुगल किशोरजी मुख्तार हैं जो इतिहासके विशेपज्ञ हैं । सम्पूर्ण ग्रन्थकी पृष्ठसख्या ४५० मू० २)

२५ पंचसंग्रह—माथुरसघके आचार्य श्रीअमितगतिसूरिकृत । इसमें गोम्मटसारका सम्पूर्ण विपय संस्कृतमें श्लोकवद्ध लिखा गया है । प्राकृत नहीं जाननेवालोंके लिए वहुत उपयोगी है । पृष्ठसख्या २४० । मूल्य ।॥~)

२६ लाटीसंहिता—ग्रन्थराज पंचाध्यायीके कर्त्ता महान् पण्डित राजमल्लजीकृत श्रावकाचारका अपूर्व ग्रन्थ । पृष्ठसख्या १३२ । मूल्य ॥)

२७ पुरुदेवचम्पू—महापण्डित आशाधरके शिष्य कविवर्य अर्हद्दासकृत चम्पू ग्रन्थ। पं० जिनदासशास्त्रीकृत टिप्पणसहित। पृष्ठसंख्या २१२। मू० ॥।)

२८ जैन-शिलालेखसंग्रह—श्रवणबेलगोल (जैनबद्री) के तमाम शिलालेखोंका अपूर्व संग्रह, जो ४२८ पृष्ठोंमें समाया हुआ है। इसका सम्पादन अमरावतीके *किंग एडवर्ड कालेजके प्रोफेसर बाबू हीरालालजी जैन*, एम्० ए० एल० एल० बी० ने किया है। प्रत्येक लेखका साराश हिन्दीमें दे दिया गया है। भूमिका १६२ पृष्ठकी है जो बहुत ही विद्वत्तापूर्ण और कामकी है। सम्पूर्ण ग्रन्थ ६०० पृष्ठोंसे ऊपरका है। मूल्य २॥)

२९-३०-३१ पद्मचरित—(पद्मपुराण) आचार्य रविषेणकृत विशाल कथाग्रन्थ। यह तीन खण्डोंमें समाप्त होगा। पहला खण्ड प्रकाशित हो चुका है। मूल्य प्रत्येक खण्डका १॥)

सूचना—आगे अनेक बड़े बड़े और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंके छपानेका प्रबन्ध हो रहा है।

नोट—यह ग्रन्थमाला स्वर्गीय दानवीर सेठ माणिकचन्द हीराचन्दजी जे० पी० के स्मरणार्थ निकाली गई है। इसके फण्डमें लगभग १२-१३ हजार रुपयेका चन्दा हुआ था जो कि प्रायः खर्च हो चुका है। इसकी सहायता करना प्रत्येक जैनी भाईका कर्तव्य है। जो सज्जन यों सहायता न कर सकें उन्हें इसके प्रकाशित हुए ग्रन्थ ही खरीद कर अपने घर और मंदिरमें रखना चाहिए। यह भी एक तरहकी सहायता ही है। हमारे प्राचीन आचार्योंके बनाये हुए हजारों ग्रन्थ भंडारोंमें पड़े पड़े सड़ रहे हैं। यह ग्रन्थमाला उन ग्रन्थोंका उद्धार करके सबके लिए सुलभ कर देती है, इस लिये इसको सहायता पहुँचाना जिनवाणी माताका उद्धार करना और जैनधर्मकी प्रभावना करना है। जो महाशय एक ग्रन्थके छपाने लायक या उससे भी आधा रुपया देते हैं, उनका फोटू ग्रन्थके भीतर लगवा दिया जाता है। नीचे लिखे पतेपर पत्रव्यवहार करना चाहिए।

नाथूराम प्रेमी, मंत्री,
माणिकचन्द जैन-ग्रन्थमाला,
हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई।